अलहुदा

वत्तब्सिरतु-लिमंय्यरः

(हिदायत तथा समीक्षा
उसके लिए जो विचार करे)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: **अलहुदा** वत्तब्सिरतु-लिमंय्यर:
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी एच. डी. आनर्स इन अरबिक
टाइप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
संस्करण	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अक्टूबर 2019 ई०
संख्या	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	: **Al-Huda** Wa Tabsiratullimanyara
Author	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
Type Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
Edition	: 1st Edition (Hindi) October 2019
Quantity	: 1000
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "**अलहुदा** वत्तब्सिरतु-लिमंय्यर:" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद ने किया है। तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य, आदरणीय इब्नुल मेहदी एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए., ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

अलहुदा वत्तब्सिरतु-लिमंय्यरः

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हिन्दुस्तान के उलमा के पक्षपात और सच के इन्कार पर आग्रह को देख कर शाम और मिस्र इत्यादि के उलमा की ओर ध्यान दिया। शायद उनमें से कोई सच के समर्थन के लिए खड़ा हो जाए। शाम के संबंध में ज्ञात हुआ कि वहाँ धार्मिक मुबाहसों की अनुमति नहीं। इसलिए आप ने जहां मिस्र के कुछ उलमा और समाचार पत्रों और पुस्तकों के एडीटरों को "ऐजाज़ुल मसीह" की कुछ प्रतियां प्रेषित कीं वहां एक प्रति पुस्तक और लेखक की प्रशंसा के लिए अश्शेख़ मुहम्मद रशीद रज़ा एडीटर "अलमनार" को भी भिजवाई। "मनाज़िर" और "अलहिलाल" के ऐडीटर ने तो उसकी सरसता एवं सुबोधता की बहुत प्रशंसा की परन्तु अश्शेख़ मुहम्मद रशीद रज़ा ने नहवियों और साहित्यकारों की गवाहियां प्रस्तुत किए बिना लिख दिया कि पुस्तक भूल और ग़लती से भरपूर है और उसके सजअ (दो वाक्यों के अन्तिम शब्दों का सम क़ाफ़िया और सम वज़न होना) में बनावट से काम लिया गया है और उत्तम कलाम नहीं तथा अरब के मुहावरों के विरुद्ध है (पृष्ठ-252 से 257) और सत्तर दिन की मुद्दत जो आप ने उसके सहश लाने के लिए नर्धारित की थी उस का ज़िक्र करके उसने यह डींग मारी :-

”اِنّ کَثیرًا من اھل العلم یستطیعون ان یکتبون خیرًا منه فی سبعة ایّام“

(अलमनार जिल्द 4, पृष्ठ-266)

अर्थात् बहुत से अहले इल्म (विद्वान) इस से उत्तम सात दिन में लिख सकते हैं :-

जब इस की यह समीक्षा हिन्दुस्तान में प्रकाशित हुई तो हिन्द के उलमा ने उसकी आड़ लेकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध नए सिरे से विरोध का एक तूफ़ान खड़ा कर दिया। तब आप ने सच्चाई को सिद्ध करने और असत्य का खण्डन करने और हुज्जत को पूर्ण करने के लिए अल्लाह तआला से मार्ग-दर्शन चाहा तो आप के हृदय में यह डाला गया कि आप इस उद्देश्य के

लिए एक पुस्तक लिखें और फिर अलमनार के एडीटर और हर उस व्यक्ति से जो इन शहरों से विरोध के लिए उठे उस का सहश मांगें। अत: आप ने अल्लाह तआला के पास अत्यन्त विनय, विनम्रता और गिड़गिड़ा कर दुआ की। यहां तक कि दुआ की स्वीकारिता के लक्षण प्रकट हुए।

وفقت لتاليف ذلك الكتاب فسأ رسله اليه بعد الطبع و تكميل الا بواب۔ فان اتیٰ بالجواب الحسن و احسن ردّعليه فاحرق كتهی واقبّل قرميه واعلق بذيله واكيل الناس بكيله۔ وهاانا اقسم برب البريّة۔ اؤ كّد العهد لهذه الا ليّة۔

(इसी जिल्द का पृष्ट- 263, 264)

और मुझे इस पुस्तक के लिखने की अल्लाह तआला की ओर से सामर्थ्य प्रदान की गई। तो मैं अध्यायों की पूर्ति और उसके छपने के बाद उसे उसकी ओर भेजूंगा। यदि अलमनार के एडीटर उसका अच्छा उत्तर और उत्तम रद्द लिखा तो मैं अपनी पुस्तकें जला दूंगा और उसकी क़दम बोसी (पैर चूमूंगा) करूँगा और उसके दामन से सम्बद्ध हो जाऊंगा और फिर दूसरे लोगों को उसके पैमाने से नापूंगा। फिर संसार के प्रतिपालक की क़सम खाता हूँ और इस प्रकार के अहद को सुदृढ़ करता हूँ।

परन्तु साथ ही यह भविष्यवाणी भी कर दी :-

"امر له فی البراعة يدطولیٰ سيهذم فلا يُریٰ۔ نبأ من الله الذی يعلم السرّ واخفیٰ"

(इसी जिल्द का पृष्ठ-254)

अर्थात् क्या अलमनार के एडीटर को सरसता एवं सुबोधता में बड़ा कमाल प्राप्त है वह नि:सन्देह पराजित होगा और मुक़ाबले के मैदान में नहीं आएगा। यह भविष्यवाणी उस ख़ुदा की ओर से है जो गुप्त से गुप्त बातों का ज्ञान रखता है।

अलमनार के एडीटर के अतिरिक्त दूसरे साहित्यकार और उलमा के संबंध में भी फ़रमाया :-

"ام یزعمون انھم من اھل اللسان سیھزمون و یولّون الدبر عون المیدان"

(इसी जिल्द का पृष्ठ-268)

क्या वे दावा करते हैं कि वे अहले ज़ुबान (मातृ-भाषी) हैं?

शीघ्र ही पराजित होंगे और मैदान से पीठ फेर कर भाग जाएंगे।"

जब पुस्तक प्रकाशित हई और उस की एक प्रति शेख़ रशीद साहिब को भी उपहार स्वरूप भिजवाई गई तो उन्होंने मसीह की क़ब्र से संबंधित निबंध का बहुत सा भाग नक़द करके जो मसीह का कश्मीर की ओर हिजरत से संबंधित था अपने समाचार पत्र "अलमनार" में नक़द करके लिखा कि ऐसा होना बुद्धि और पुस्तकीय दृष्टि से असंभव नहीं है।

परन्तु उन्हें यह तौफ़ीक़ नहीं मिली कि उसके उत्तर में अपनी सरस एवं सुबोध पुस्तक लिखकर आप की भविष्यवाणी को असत्य सिद्ध करते। जब मैं हैफ़ा में ठहरा हुआ था उस समय शेख़ रशीद रज़ा ने अपने रिसाले "अलमनार" में यह ज़िक्र سیھزم فلا یُرٰی किया कि हज़रत मसीह मौऊद[अ.] ने उसकी मौत की भविष्यवाणी की थी जो ग़लत निकली। इस पर मैंने उनको विस्तृत उत्तर दिया था कि उसमें कोई मौत का भविष्यवाणी न थी अपितु यह भविष्यवाणी थी कि एडीटर अलमनार अलहुदा जैसी सरस-सुबोध पुस्तक लिखने की सामर्थ्य नहीं पाएगा। जैसा कि ऊपर विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है और इसके बावजूद कि अलमनार के एडीटर अलहुदा के प्रकाशित होने के बाद तीस वर्ष से अधिक समय तक जिन्दा रहा, परन्तु उसे यह सामर्थ्य न मिली कि उस पुस्तक के उत्तर में मुक़ाबले पर कोई पुस्तक लिखता। और अल्लाह तआला की भविष्यवाणी पूरी चमक-दमक से पूर्ण हुई।

इस पुस्तक का लेखन रबीउल अव्वल 1320 हि. में पूर्ण हुआ और 12 जून 1902 ई. को छप कर प्रकाशित हुई।

بسم الله الرحمٰن الرحيم

الحمد لله الذى أرى أولياء ه صراطا يضلّ فيه الغطاط وجلّى لهم نهارا لا يُبصر فيه الوطواط وأسلكهم مسالك لم يَرُضْها مطايا الابْصار وفجّر لهم ينابيع ما اهتدت إليها طيور الافكار والصلٰوة والسلام على خاتم الرسل الذى اقتضى ختم نبوّته أن تُبعث مثل الانبياء من أمّته

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हर प्रकार की प्रशंसा उस ख़ुदा के लिए है जिसने अपने दोस्तों को वह मार्ग बताया जिसमें पत्थर खाने वाला मुर्ग भी भटक जाता है और उनके लिए ऐसा दिन चढ़ाया कि उसमें चमगादड़ को कुछ दिखाई नहीं देता और उन्हें ऐसे मार्गों पर चलाया कि आँखों की ऊंटनियाँ उनमें कभी नहीं चलीं और उनके लिए ऐसे झरने जारी किए गए कि चिंतन के परिंदे उनकी ओर मार्ग नहीं पा सके और दुरूद एवं सलाम ख़ातमुर्रुसुल पर जिसकी नुबुव्वत

وأن تُنَـوّر وتُثمـر إلى انقطـاع هـذا العالـم أشـجاره ولا تُعفّـى آثـاره و لا تُغيّـب تـذكاره فلاجـل ذالـك جـرت عـادة الله أنـه يُرسـل عبـادًا مـن الذيـن اسـتطابهم لتجديـد هـذا الديـن ويعطيـهم مـن عنـده علـم أسـرار القـرآن ويُبلّغـهم إلى حـق اليقـين ليُظهـروا معـارف الحـق عـلى الخلـق بسـلطانها وقوّتهـا ولمعانهـا ويُبيّنـوا حقيقتهـا وهويّتهـا وسُـبلها وآثـار عرفانهـا ويُخلّصـوا النـاس مـن البدعـات والسـيئات وطوفانهـا وطغيانهـا وليُقيمـوا الشـريعة ويفرشـوا بسـاطها ويبسـطوا أنماطهـا ويُزيلـوا تفريطهـا وإفراطهـا وإذا أراد الله لاهـل الارض أن يُصلـح دينـهم ويُنـير براهينـهم أو ينصرهـم

के ख़तम ने चाहा कि आपकी उम्मत से नबियों के समान लोग पैदा हों और आपके वृक्ष युग के अन्त तक फलते-फूलते रहें और न आप के निशान मिटाए जाएँ और न आपकी याद दुनिया से भुलाई जाए। इसीलिए ख़ुदा की आदत है कि वह ऐसे बन्दों को भेजा करता है जिन्हें इस धर्म के नवीनीकरण के लिए पसंद कर लेता है और उन्हें अपने पास से क़ुर्आन के रहस्य प्रदान करता और अटल विश्वास तक पहुंचाता है। इसलिए कि वे लोगों पर सच के अध्यात्मज्ञानों को पूरी शक्ति, प्रभुत्व और चमक के रंग में प्रकट करें। और उन अध्यात्मज्ञानों की वास्तविकता, अवस्था, मार्गों तथा उनकी पहचान के निशानों का वर्णन करें। और लोगों को बिदअतों, बुराइयों से तथा उनके तूफ़ान और लहरों से छुड़ाएं तथा शरीअत को क़ायम करें और उसका पालन करें और न्यूनाधिकता को जो उसमें प्रवेश कर गई है, दूर करें और जब ख़ुदा दुनिया वालों के लिए चाहता है कि उनके धर्म को सुधारे तथा उनके तर्कों को रोशन करे और घबराहट एवं संकट के आने पर उनको सहायता प्रदान करे तब उन बुज़ुर्गों में से किसी को उनमें खड़ा कर देता है और निशानों और अकाट्य तर्कों से उसकी सहायता करता

عند حلول الاهوال والمصائب والآفات أقام بينهم أحدًا من هذه السّادات ويُؤيّده بالحجج القاطعة والآيات ويشرح صدور الاتقياء لقبوله ويجعل الرجس على الذين لا يتّقون ففريق من الناس يؤمنون به ويُصدّقون وفريق آخر يكفرون به ويُكذّبون ويقعدون بكل صراطٍ ويؤذون ويمنعون كل من دخل عليه ولا يُخلّصون فتهيج غيرة الله لإعدامهم ليُنجّي عبده من اجلِخمامهم فما زال بالكافرين يُهلك هذا ويدفع ذاك حتى تصير الارض خالية من تلك الهوام ويحصل الامن للابرار الكرام وتحتفل الملّة من نخب الإسلام كنجوم منيرةٍ مُشرقة فى الظلام

और भाग्यशालियों के सीनों को उसे स्वीकार करने के लिए खोल देता है। और संयम धारण न करने वालों पर अपवित्रता एवं मलिनता फेंकता है फिर यों होता है कि कुछ लोग तो उस पर ईमान लाते तथा सत्यापन करते हैं और कुछ नहीं मानते तथा कुछ झुठलाते हैं और उसके मार्ग में रोक बन जाते और दु:ख देते हैं और उसके पास किसी को आने नहीं देते। अंतत: ख़ुदा का स्वाभिमान उनको मिटाने के लिए जोश मारता है, इसलिए कि अपने बन्दों को उनके आक्रमणों से छुड़ाए। अत: ख़ुदा काफ़िरों के पीछे पड़ा रहता है किसी को मारता किसी को दूर करता है यहाँ तक कि पृथ्वी उन साँपों और बिच्छुओं से खाली हो जाती है तथा (ख़ुदा के) चुने हुए लोगों को अमन मिल जाता और उम्मत ऐसे सदाचारी लोगों से भर जाती है जो अंधकार में चमकदार रोशन सितारे होते हैं। और यह बड़ी भारी निशानी है उन लोगों की जो ख़ुदा की ओर से आते हैं और इस संसार में उतरते हैं। इसलिए कि मानवजाति को ख़ुदा की ओर खींच ले जाएँ और ख़ुदा उनके माध्यम से अंधकारों को टुकड़े-टुकड़े कर देता है, इसलिए कि अपवित्र और पवित्र को आज़माए तथा सफल और असफल को ज़ाहिर कर दे। तो कोई

وهـذا مـن أكـبر علامـات الذيـن يأتـون مـن حضـرة العـزة والجـبروت وينزلـون إلى الناسـوت ليجذبـوا خلـق الله إلى عالـم الملكـوت واللاهـوت وإنّ الله يجلـو بـهم الغياهـب ليبتـلى الخبيثـين والاطايـب ويُـرِى الفائـز والخائـب فتُسـعد نفـسٌ وأخـرى تشـقى ويُحيـى أخ وأخ آخـر يُفـنَى ويُنصـر المأمـور فى الارض ويُمهـل حـتى يفـل شـبا العـدا ويـزول الظـلام وتطلـع شـمس الهدى فالحاصـل أن أولياء الله لا يُهلكـون كالكاذبـين ولا يكـون مآلـهم كالمفتريـن بـل يُعصَمـون ويُقبلـون ويُنصـرن ويُؤثـرون عـلى العالمـين ولا يُضاعـون ولا يُجاحـون ويعيشـون أمـام أعـين ربـهم فائزيـن وإنـهم حجّـة الله عـلى الارض ورحمـة الحـق لاهـل الارضـين

भाग्यशाली बनता और कोई दुर्भाग्यशाली बनता है। किसी को जीवन प्रदान किया जाता और कोई फ़ना कर दिया जाता है। और मामूर को सहायता और मोहलत दी जाती है जब तक कि वह दुश्मनों की तलवार की धार को मोथरा कर देता और अंधकार दूर हो जाता तथा हिदायत का सूर्य उदय होता है। अत: ख़ुदा के दोस्त झूठों के समान मारे नहीं जाते और उनका अंजाम मुफ़्तरियों (झूठ गढ़ने वालों) के जैसा नहीं होता अपितु उन्हें बचाया जाता और स्वीकार किया जाता तथा सहायता दी जाती और समस्त संसार पर प्राथमिकता दी जाती है। और न तो नष्ट किए जाते हैं और न उनका उन्मूलन किया जाता है अपितु वे अपने रब्ब के सामने सफल जीवन व्यतीत करते हैं और वह पृथ्वी पर ख़ुदा का प्रमाण और अहले ज़मीन पर ख़ुदा की दया होते हैं और दुनिया में (ख़ुदा के) मामूरों के इन्कार जैसा कोई दुर्भाग्य नहीं और उन मान्य पुरुषों के मान लेने जैसा कोई सौभाग्य नहीं और वे अमन-व-अमान के क़िले की चाबी और प्रवेश करने वालों की शरण हैं। तो फिर क्या हाल होगा उसका जिसने इस चाबी को खो दिया और क़िले में

وليست شقوة فى الدنيا كإنكار المأمورين ولا سعادة كقبول هؤلاء المقبولين وإنهم مفتاح حصن الامن والامان وحرز الداخلين فما بال الذى فقد هذا المفتاح وما دخل الحصن وقعد مع المخرجين وإن أشقى الناس رجلان ولا يبلغ شقاوتهما أحدٌ من الإنس والجان رجلٌ كفر بخاتم الانبياء ورجل آخر ما آمن بخاتم الخلفاء وأبى واستكبر وأساء الادب عليه وترك طريق الحياء وما تأدّب مع الله وأهله الموعود وبلّغ التوهين إلى الانتهاء ولو لم يتولّد لكان خيرًا له من سوء العاقبة وسخط حضرة الكبرياء ولسوف يذوق ذواق السب والشتم والازدراء وإن الساعة آتية لا ريب فيها ثم الذين خُتمت على قلوبهم لا ينتهون

दाख़िल न हुआ और बाहर निकाले हुए लोगों के साथ मिलकर बैठा रहा और वास्तव में दो व्यक्ति बड़े ही अभागे हैं तथा इन्सान और जिन्नों में से कोई भी उन जैसा अभागा नहीं। एक वह जिसने खातमुल अंबिया को न माना। दूसरा वह जो ख़ातमुल ख़ुलफ़ा पर ईमान न लाया तथा इन्कार किया और अकड़ बैठा तथा उसका अनादर किया तथा लज्जा के मार्ग को त्याग दिया ख़ुदा और उसके मौऊद पात्र का मान-सम्मान न किया और अपमान को चरम सीमा तक पहुंचा दिया। यदि ऐसा अयोग्य पैदा ही न हुआ होता तो उसके लिए बुरे अंजाम और ख़ुदा को नाराज़ करने से अच्छा था। वह उन गालियों एवं तिरस्कार का स्वाद चखेगा और वह घड़ी अवश्य आने वाली है परन्तु मुहर लगे हुए दिल नहीं रुकते। और जब उन्हें कहा जाए कि ईमान लाओ और सुधार करो और फ़साद न करो तो कहते हैं कि तुम ही फ़साद करने वाले हो और गुमराही को सन्मार्ग और फ़साद का सुधार समझते हैं इसलिए रुजू नहीं करते तो उस दिन क्या हाल होगा जबकि उनके प्राण निकलेंगे और उनकी छुपाई हुई बातें प्रकट की जाएँगी और जब उन्हें कहा

وإذا قيل لهم آمنوا وأصلحوا ولا تُفسدوا قالوا بل أنتم مفسدون وحسبوا الغىّ رشدًا والفساد صلاحًا فهم لا يرجعون فكيف إذا زهقت نفوسهم وأُظهِرَ ما كانوا يكتمون؟ وإذا قيل لهم أما جاء رأس المائة قالوا بلى فقل أفلا تتّقون؟ إن مثل المؤمنين والمكذّبين كمثل حىّ وميّت هل يستويان مثلا؟ فبشرى للذين يُوفّقون وقالوا لستَ مُرسلا بل كذّبوا بما لم يحيطوا بعلمه فسوف يعلمون إن الذين صدقوا أولئك هم المنصورون ولا يرهق وجوههم قتر ولا ذلّة ولا هم يُفزعون إن الذين كفروا ما نفعهم خسوف ولا كسوف ولا آيات أخرى بل هم يستهزءون يعرفون ثم يبخلون بما آتاهم الله من العلم

जाएगा कि क्या शताब्दी का सर (आरम्भ) नहीं आ गया तो कहते हैं हाँ। तो तू उनसे कह कि क्या तुम डरते नहीं। मोमिनों और झुठलाने वालों का उदाहरण ज़िन्दा और मुर्दों का उदाहरण है क्या दोनों उदाहरण में बराबर हैं? अत: ख़ुशख़बरी उनके लिए जिन्हें सामर्थ्य दिया जाता है। कहते हैं कि तू अवतार नहीं। असल बात यह है कि यह लोग उस बात को झुठलाते हैं जिसका उनको ज्ञान नहीं। अत: उनको पता लग जायेगा। सत्यापनकर्ता अवश्य मदद किए जायेंगे तथा अपमान और अनादर की धूल उनके चेहरों पर न पड़ेगी और न उन्हें कोई घबराहट होगी। अफ़सोस कुफ्र करने वालों को न सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण ने लाभ पहुँचाया और न अन्य निशानों ने, अपितु वह ठट्ठा ही करते हैं पहचानते हैं फिर भी ख़ुदा के दिए पर कंजूसी करते हैं। हिदायत उन पर स्पष्ट हो गई फिर भी सन्मार्ग नहीं पाते और पक्षपात की रात उन पर छाई हुई है उसी में शाम गुज़ारते हैं और उसी में सुबह। अपनी आँखों से ख़ुदा के निशानों को देखते और फिर इन्कार करते हैं। इन मामलों में मैं अकेला नहीं बल्कि कोई ऐसा रसूल नहीं आया जिससे लोगों ने ठट्ठा न किया हो। यहाँ तक

وانكشف عليهم الهدى ثم لا يهتدون وجنّ عليهم ليلٌ من التعصّب فهم فيه يُمسون ويصبحون يرون آيات الله بأعينهم ثم يُنكرون وما كنتُ متفرّدًا فى هذا بل ما أتى الناس من رسول إلا كانوا به يستهزءون وهلمّ جرّا إلى ما تشاهدون وإنى رأيتُ دهرًا ظلم هؤلاء الاشرار فى هذه الديار وآنست غلوّهم فى الانكار والاحتقار وجرّبتُ أن لهم قلوبا سيرتها اللّدد والاحرنجام وفطرةً شيمتها التكذيب والاتهام فلما يئست منهم انصرف قلبى إلى بلادٍ أخرى لعلّى أرى الانصار أو أجد فيهم قلبًا أتقى فذكرت علماء الشام ومن بها من الكرام وأردت أن

कि तुम स्वयं अपनी आँखों से देख रहे हो। और मैं बहुत समय से इन उपद्रवियों का अत्याचार देश में सहन कर रहा हूँ और मैं उनका अत्याचार, इन्कार और तिरस्कार देखता हूँ तथा मैं अनुभव कर चुका हूँ कि यह उनके दिलों का चरित्र, झगड़ा, अहंकार और लड़ाई है और उनकी प्रकृतियों का आचरण झुठलाना और आरोप लगाना है। तो जब मैं उनसे निराश हुआ तब मेरे दिल ने अन्य देशों की ओर ध्यान दिया कि कहीं मुझे सहायक मिल जाएं और शायद कोई संयम धारण करने वाला दिल मेरे हाथ आ जाए। इतने में मुझे शाम (सीरिया) के उलमा और बुज़ुर्ग याद आ गए और इरादा किया कि उनकी ओर गवाही लेने के लिए पत्र भेजूं। इसलिए कि वे ईमानदारी और सच्चाई से उत्तर दें और सच को नीचाई के गढ़े से निकाल कर बुलन्दी पर पहुंचा दें। तो मुझे पता चला कि उनको धार्मिक शास्त्रार्थों की अनुमति नहीं और वे इन शास्त्रार्थों से कानून के द्वारा रोक दिए गए हैं। फिर मेरे दिल में आया कि मिस्र देश से तथा उसके बुद्धिमान लोगों से जो ज्ञानों की वर्षा से हरे भरे और बरखुरदार हो रहे हैं, वह मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी और मैंने समझा कि उनमें अन्वेषक और उच्च कोटि के साहित्यकार हैं और

أرسل إليهم للاستشهاد ليُجيبوا بالصدق والسداد وينقلوا الحق من الوهاد إلى النجاد فأُخبِرتُ أن المناظرات فيهم ممنوعة والقوانين لمنعها موضوعة فذهب وهلى بعد ذالك أن المراد يحصل من أرض مصر وأهلها المتفرّسين والمخصبين بعهاد العلم والمثمرين وزعمت أن فيهم قوما يُعدّون من المحققين ومن الإدباء المفصحين وخلتُ أنهم من المتدبّرين وليسوا من المستعجلين والجائرين فقادنى هذا الظنّ إلى أن أرسل إلى مدير المنار ورفقته كتابى الإعجاز ليُقرّظوا ويكتبوا عليه مالاق وجاز وآثرتهم على علماء الحرمين والشام والروم لعلّى أسرو

मैंने सोचा कि वे विचारक हैं और जल्दबाज़ और अन्यायी नहीं हैं तो इस गुमान के आधार पर मैंने अलमनार के सम्पादक और उसके साथियों को अपनी पुस्तक "ऐजाज़ुल मसीह" भेजी और उद्देश्य यह था कि इस पर उचित तथा अवसर के अनुसार समीक्षा लिखें। मैंने शाम, रोम और हरमैन (मक्का-मदीना) के उलमा को छोड़कर उन्हीं को चुना कि शायद उन्हीं से मेरी चिन्ता और ग़म दूर हो जाए और दु:ख दर्द की आग उन्हीं से बुझ जाए। और यही लोग नेकी और संयम पर मेरे मददगार हो जाएँ। फिर जब मनार के एडीटर को मेरी पुस्तक पहुंची और उसके साथ उसे कुछ पत्र पूछताछ के लिए मिले उसने उस कलाम के फलों में से एक फल भी न लिया और उसके अज़ीमुश्शान अध्यात्मज्ञानों में से किसी अध्यात्मज्ञान से भी लाभ प्राप्त न किया और जैसे कि अकड़बाज़ इर्ष्यालुओं की आदत हुआ करती है क़लम से ज़ख़्मी करने और कष्ट देने की ओर झुक पड़ा और तिरस्कार करने लगा तथा कष्ट देने लगा और उस तिरस्कार तथा जोश दिखलाने में तनिक भी कमी न की और जैसे कि बुज़ुर्गों की आदत है कृपा और सम्मान की ओर मुंह न किया और इरादा किया कि जनसामान्य की

بـهم غـواشي الإفـكار والهمـوم ولأُطفـأ بـهم مـا بي مـن جمـرة الأذى وليُعينـونى عـلى الـبرّ والتقوى ثـم لمـا بلـغ كتـابى صاحـب المنـار وبلغـه معـه بعـض المكاتيـب للاستفسـار مـا اجتـنٰى ثمـرة مـن ثمـار ذالـك الـكلام ومـا انتفـع بمعرفـةٍ مـن معارفـه العظـام ومـال إلى الكلـِم والإيـذاء بالإقـلام كمـا هـو عـادة الحاسـدين والمسـتكبرين مـن الإنـام وطفـق يـؤذى ويُـزرى غـير وانٍ فى الازراء والالتطـام ولا لاوٍ إلى الكـرم والإكـرام كمـا هـو سـيرة الكـرام وعَمَـدَ إلى أن يُؤلمـنى ويفضحـنى فى أعـين العـوام كالانعـام فسـقط مـن المنـار المنيـع وألقـى وجـوده فى الآلام ووطئـنى كالحصَـى واسـتوقد نـار الفتـن وحضَـى وقـال مـا قـال ومـا أمعـن كأولى النهٰـى وأخـلد إلى

दृष्टि में मुझे दु:ख पहुंचाए और बदनाम करे। तो वह बुलन्द मीनार से गिरा और स्वयं को दुखों में डाला और मुझे कंकरों की तरह पाँव के नीचे रोंदा और फ़ित्नों की आग बुझ जाने के बाद फिर भड़काया और कहा जो कहा तथा बुद्धिमानों की तरह विचार न किया और ज़मीन की ओर झुक पड़ा और संयमियों की तरह ऊपर को न चढ़ा और ऊंचा होने के बाद गिरा और गिरना तो स्वयं बड़ी भयावह बात है। फिर उस व्यक्ति का क्या हाल है जो मीनार से गिरा और पथभ्रष्टता को खरीदा और मार्गदर्शन को न पाया तो क्या सरसता एवं सुबोधता में उसे बड़ी खूबी प्राप्त है? शीघ्र ही वह इन्कार कर जायेगा और दिखाई न देगा। यह भविष्यवाणी है ख़ुदा की ओर से जो गुप्त से गुप्त को जानने वाला है वह संयमियों और नेक लोगों का साथ देता है, वह मैदानों में उनकी सहायता करता है। फिर उनकी ही बात विजयी रहती है और समस्त बोलियाँ ख़ुदा की हैं जिसे चाहता है उन से पर्याप्त हिस्सा प्रदान करता है और उसके (दुनिया से) अलग हुए बन्दे उसकी रूह की सहायता से बोलते हैं और यह सच का मार्ग अन्यों को नहीं दिया जाता

الارض وما استشرف كأهل التقى وخرّ بعد ما علا وإن
الخرور شيء عظيم فما بال الذى من المنار هوٰى واشترى
الضلالة وما اهتدى أم له فى البراعة يدٌ طُولىٰ؟ سيُهزَم فلا
يُرَى نبأٌ من الله الذى يعلم السرّ وأخفى إنه مع قوم
يتّقونه ويُحسنون الحسنٰى ينصرهم فى مواطن فتكون
كلمتهم هى العليا وإن الالسنة كلها لله فيجعل حظّا منها
لمن شاء وقضٰى وإن عباده المنقطعين ينطقون بروحه ولا
يُعطَى لغيرهم هذا الهُدى وكل نور ينزل من السماء فما
بيدكم أيها النّوكَى؟ أتغترّون بلسانكم وقد هبّت عليه
صراصر عُظمٰى؟ واليوم لستم إلا كعجمىّ فلا تفخروا

और प्रत्येक प्रकाश आकाश से उतरता है। फिर हे मूर्खों! तुम्हारे हाथ में क्या है क्या तुम अपनी बोली पर मुग्ध हो हालाँकि उस पर तो बड़ी-बड़ी आंधियां चल चुकी हैं और आज तुम अज्मियों (ग़ैर अरबी) से बढ़कर नहीं इसलिए गुज़रे पर गर्व न करो और तुम्हारी बोलियां तो बिल्कुल परिवर्तित हो गईं अब तुम इतनी दूर से कहाँ एक चीज़ को पकड़ सकते हो। क्या तुम्हें अपनी बोल-चाल याद नहीं या मूर्खों को धोखा देते हो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हारे देश को अरब में सम्मिलित नहीं किया। फिर ख़ुदा और रसूल पर झूठ मत बांधो और झूठ बाँधने वाला हमेशा असफल रहता है। हे शेख़ीबाज़ मुझे तुझ से क्या काम जा अपना मार्ग ले। मुझे तो तुझ से मदद की आशा थी तू उल्टा मुझे ही बरबाद करने को उठ खड़ा हुआ। और मुझे तेरी ओर से तकबीर, तस्दीक़ और तक़्दीस सुनने की आशा थी तूने मुझे बिगुलों की आवाज़ें सुना दीं और मैंने तेरी ज़मीन को शरण के लिए बहुत उत्तम स्थान समझा था परन्तु तूने मुझे मुश्तज़न या लक़ड़ज़न की तरह ज़ख़्मी कर दिया और तूने इस स्वाभाविक दरिन्दे से फ़िरऔनी आदतों

بما مضٰى وبُدّلت ألسنكم كل التبديل فأنى التناوش من مكان أقصٰى؟ أتنسون محاوراتكم أو تخدعون الحمقٰى؟ وإن رسول الله وسيد الورٰى ما سمّٰى أرضكم هذه ارض العرب فلا تفتروا على الله ورسوله وقد خاب من افترىٰ فدعنى أيها الفخور من هذا وامض على وجهك والسلام على من اتّبع الهدى و كنتُ رجوتُ أن أجد عندك نصرتى فقمتَ لتنددّ بهوانى وذلتى وتوقعتُ أن يصلنى منك تكبير التصديق والتقديس فأسمعتنى أصوات النواقيس وظننتُ أن أرضك للتحصّن أحسن المراكز فجرّحتنى كاللاكز والواكز وذكّرتنى بالنوش والنهش والسبعية نبذًا من

का युग याद दिला दिया और मैं इस बात में शर्मिन्दा नहीं इसलिए कि श्रेष्ठता पहल करने वाले को है और मुझे गुमान था कि तुम्हारी दोस्ती से मेरा ग़म दूर हो जायेगा और तुम्हारी सेना की सहायता से भय और ग़म की सेना पराजित हो जाएगी परन्तु अफ़सोस कि विवेक ने ग़लती की और बुद्धि सही न उतरी और तुम्हारा समस्त मामला उल्टा दिखाई दिया। यह तो आप की श्रेष्ठताओं का थोड़ा सा नमूना है। इस से मुझे पता मिल गया कि मिस्र के देश से भड़काने वाली आग कभी अलग नहीं हुई और अब तक उस से घमण्ड और अहंकार की आग जोश मार रही है। ख़ुदा मूसा पर दया करे कि उसे उसने छोड़ दिया और उसका नाम-व-निशान न मिटा दिया। अत: तुम्हारा दावा है कि मेरी पुस्तक भूल और ग़लती से भरी हुई है और तुम नह्वियों एवं साहित्यकारों से उस पर कोई तर्क नहीं लाए। अब मैं तुम्हारे अन्याय और इफ़्तिरा से ख़ुदा के पास फ़रियाद करता हूँ इसलिए कि तुम ने अकारण और निराश्रय पहले वैर और शत्रुता के कारण यह अन्याय और अत्याचार किया। क्या तुम अपनी उस बोली को सही होने का मापदण्ड

أيـام الخصائـل الفرعونيـة و لسـتُ فى هـذا القـول كالمتنـدّم
فـإن الفضـل للمتقـدّم و كنـتُ أتوقـع أن يتسـرّى بمؤاخاتـك
همّـى و يرفـض بجنـدك كتيبـة غمّـى فالاسـف كل الاسـف
أن الفراسـة أخطـأت والرويّـة مـا تحقّقـت ووجـدتُ بالمعـنى
المنعكـس ريّـاك فهـذه نمـوذج بعـض مزايـاك وعلمـتُ بـه أن
تلـك الارض ارض لا يُفارقهـا اللظـى وتفـور منهـا إلى هـذا الوقـت
نـار الكـبر والعُـلَى فعفـى الله عـن مـوسٰى لـم تركهـا ومـا عَفّـى
فحاصـل الـكلام إنـك زعمـتَ أن كتـابى مملـوٌّ مـن السـهو
والخطـأ ومـا أتيـتَ بدليـل مـن النحويـين أو الادبـاء فأشـكو
إلى الله مـن جـورك هـذا والافـتراء فإنّـك شمسـتَ لى مـن غـير
سـبب ومـن غـير أسـباب البغـض والشـحناء أو جعلـتَ معيـار

ठहराते हो जिस से तुम अपनी बेटियों और पत्नियों से बात करते हो। और तुम ने मेरी पुस्तक को अच्छी तरह नहीं पढ़ा और न ही उसके मुफ़्रदों और तरकीबों और कलाम की शैली को ग़लत सिद्ध कर के दिखाया तथा तुम ने अपने ख़ुदा को नाराज़ किया और उसके दण्ड से नहीं डरे। और झूठ बोल कर लोगों को धोखे में डाला तथा शैतान के पीछे दौड़ पड़े और कह दिया कि "ऐजाज़ुल मसीह" बहुत गलतियों से भरी हुई है और उसके सृजन में बनावट है और उत्तम कलाम नहीं है तथा उसका कलाम अरब के मुहावरे के विरुद्ध है। आह मैंने तो तुझे ऐसा दोस्त समझा था जो मुझे सुबह की वायु के समान आराम पहुंचाता। परन्तु हथियार बांधे दुश्मन नज़र आया और मेरा विचार था कि तू कबूतर की तरह प्यारी ख़ुशख़बरी पहुँचाने वाली आवाज़ में बोलेगा परन्तु तूने मौत का सा भयानक चेहरा दिखाया। मुझे तुम्हारी इस बिना जाँच पड़ताल तेज़ बोलने पर आश्चर्य हुआ। इसलिए मेरी वह हालत हुई जो अकेले भटके हुए यात्री की मार्ग भूल कर हुआ करती है। परन्तु मैंने फिर भी इस बात को दिल में रखा और समझा कि लिखने में कोई परिवर्तन हो

الصحّة لسانك الذى تكلّم به عشيرتك من البنات والنساء
وما تصفّحت كتابى وغلّطتَ مفرداته وتراكيبه وخطّأت
أفانينه وأساليبه وأسخطت حسيبك وما خشيت تعذيبه
وكذّبتَ وأغلطت الناس وخببتَ واتّبعت الخناس وقلتَ
كتاب مملوّ من الاغلاط المنكرة وفى سجعه تكلّف
وضعف وليس من الكلم المحبّرة والْمُلَح المبتكرة
ويوجد فيه ركاكة العُجمة وحسبتُك حبيبا يُريحنى
كنسيم الصباح فتراءيتَ كعدوّ شاكى السلاح وخلتُ
أنك تهدّر بصوت مبشر كالحمام فأريتَ وجهك المنكر
كالحمام وأعجبنى حِدّتك وشدّتك من غير التحقيق
فأخذنى ما يأخذ الوحيد الحائر عند فقد الطريق لكنى

गया हो और अपमान एवं तिरस्कार का कोई इरादा न हो और उस व्यक्ति ने क्योंकर ऐसी बुराई का इरादा किया जिसका काला दाग़ किसी उज्र और बहाने से मिट नहीं सकता और क्योंकर सम्भव है कि ऐसा योग्य विद्वान आदमी ऐसी खुली-खुली बातें मुंह से न निकाले। और जब खूब सिद्ध हुआ कि यह सब तुम्हारी करतूत है तो मैंने भी युद्ध के लिए सामान दुरुस्त कर लिया और कहा कि अपने स्थान पर खड़ा रह हे नीच दुश्मन कि मेरे मुकाबले पर आना तलवारों से कट जाना और काँटों में फँस जाना है और मुझे मालूम हो गया कि तुम ने ये बातें ईर्ष्या से की थीं घटनाओं की अभिव्यक्ति के लिए नहीं कहीं। इसलिए मैंने तुम्हारी ओर ध्यान दिया कि तुम्हारी इन शरारतों से लोग धोखा न खा जाएँ इसलिए कि हमारे देश के उलमा तो मेरे तिरस्कार के लिए बहाना ढूँढ़ते रहते हैं। अत: जो कुछ तूने मेरे तिरस्कार में कहा है उस से उनकी हिम्मत और भी बढ़ जाएगी और यदि फ़साद का भय न होता तो मैं इस मामले में बिल्कुल खामोश रहता परन्तु अब लोगों के बिगड़ जाने और शैतान के भ्रम डालने का डर है और

أســرتُ الامــر وقلــتُ فى نفســى لعــلّه تصحيــف فى التحريــر
ومــا عمــد إلى التوهــين والتحقــير وكيــف قصــد شــرّا لا يــزول
ســواده بالمعاذيــر وكيــف يمكــن الجهــر بالســوء مــن مثــل
هــذا الفاضــل النحريــر ولمــا تحقــق أنــه منــك تقــلّدتُ أســلحتى
للجهــاد وقلــتُ مكانــك يــا ابــن العنــاد فــدونى شــرط الحــداد
وخــرط القتــاد وعلمــتُ أنــك مــا تكلّمــتَ بهــذه الكلمــات
إلا حســدًا مــن عنــد نفســك لا لإظهــار الواقعــات فابتــدرتُ
قصــدَك لئــلا يُصــدّق النــاسُ حســدَك فــإن علمــاء ديارنــا هــذه
يســتقرون حيــلة لــلإزراء فيســتفزّهم ويُجــرءهــم عــلىّ
كلمــا قلــتَ لــلازدراء ولــولا خــوف فســادهم لســكتُّ ومــا
تفوّهــتُ فى هــذا الامــر ومــا تجــلّدتُ ولكــن الآن أخــافُ عــلى

यह पुख़्ता बात है कि कुछ गवाहियाँ चोट में तलवार से भी अधिक कठोर होती हैं। अब मुझे डर है कि मनार बातों से उत्तेजना बढ़ जाए और उसका मीम गिर कर निरा नार का रूप रह जाए। और हम तो लम्बे समय से दुश्मनों को भगा कर लड़ाई झगड़े से निवृत हो बैठे थे और हमें प्रत्येक युद्ध में विजय प्राप्त हुई और प्रत्येक युद्ध करने वाला अपनी पूरी शक्ति हमारे मुकाबले में व्यय कर चुका था नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी कि तुणीर (तर्कश) खाली हो चुके थे और बिल्कुल आराम चैन हो गया था। सब झगड़े ठण्डे पड़ गए और झगड़ने वाले हट गए थे तथा सब झगड़े वालों ओ ख़ुदा ने भगा दिया और मार डाला था अब वे नीच फिर मौत के बाद जलाये गए और मनार ने अपनी बेकार बातों से उन्हें दिलेर और पक्का कर दिया अब मैं देखता हूँ कि वे फिर डींगें मारने लगे और लड़ाई को ताज़ा करना चाहते हैं तथा अब लड़ाई चाहते और अनपढ़ों को धोखा देना चाहते हैं। फिर अपनी शरारतों की ओर लौट चले हैं और मनार को उस अपवित्र बात और टेढ़ेपन के कारण हठधर्मी में बढ़ चुके हैं इसलिए कुछ अंधों को

النـاس وأخشـى وسوسـة الخنّـاس وإن بعـض الشـهادات أبلـغ في الضـرب مـن المرهفـات فأخـاف أن يتجـدّد الاشـتعال مـن كلمـات المنـار و يسـقط ميمـه ويبقـى عـلى صـورة النـار و كنـا هزمنـا العـدا وفرغنـا مـن الوغـى ونابلنـا فـكان لنـا العُـلى وبـذل الجهـد كل مـن رمَـى حـتى نثلـت الكنائـن وفـاء ت السـكائن وركـدت الزعـازع و كـف المتنـازع وجعـل الله الهزيمـة عـلى كل مـن بـارٰى وأهلـك مـن مـارٰى فـالآن أُحْيِـيَ اللئـامُ بعـد الممـات وشـد المنـار عضدهـم بالخزعبيـلات فـأرى أنـهم يتصلّفـون ويسـتأنفون القتـال ويبغـون النضـال ويخدعـون الجهّـال ورجعـوا إلى شـرّهم و زادوا ضـدّا بمـا جـاء المنـار شـيئا إدًّا وجـاز عـن القصـد جـدّا فأكـبر كلمـه حـزبٌ

मनार की बातें अच्छी लगी हैं और पहलों की तरह कलाम के पारखी तथा जानकार कहाँ। अपितु यह लोग तो जो कुछ ईर्ष्यालुओं, उपद्रवियों से सुन पाते हैं उसी के पीछे हो जाते हैं। उनमें उच्चकोटि की इबारतों को समझने की रुचि कहाँ। और उत्तम तथा हरे भरे घास के मैदान तक इतनी पहुँच कहाँ यह लोग नमकीन अनुप्रासों का आनन्द और सजे हुए वाक्यों की उत्तमता को क्या जानें मुंह से कहते हैं कि हम उलमा हैं परन्तु ज्ञान और दक्षता उनके निकट नहीं आई। और वास्तव में मुझे इस क़िस्से के वर्णन करने और अपने कष्ट को व्यक्त करने की कोई आवश्यकता न थी इसलिए कि मनार का एडीटर ही तो कोई अकेला नया बुरा कहने वाला नहीं अपितु समस्त दुश्मन ऐसे ही अपमान के अभ्यस्त हो रहे हैं और उनका उद्देश्य तो यह है कि लोगों को हिदायत प्राप्तों के मार्ग से रोक कर सीमा से निकल जाने वालों में सम्मिलित कर दें इस प्रकार के बहुत से लोग इन शहरों में हैं और उनका निशान यह है कि दुश्मनी के तत्त्व के जोश से उनके मुख काले और विकृत हो चुके हैं। इस से तुम उनको पहचान लोगे। वे लोग मेरा

من العمين وأين جهابذة الكلام كالسابقين بل يتّبعون كل ما يسمعون من الحاسدين المفسدين وليس فيهم ذواق العبارات المهذّبة ولا الاعناق للوصول إلى المراعى المستعذبة لا يعلمون لطف الاساجيع المستملحة ولا لطافة الكلم الموَشّحة يقولون نحن العلماء ولا يشعرون ما العلم وما الدهاء وما كان لى حاجة إلى ذكر هذه القصّة وإظهار هذه الغصّة لما لم يكن مدير المنار وحده بدعًا من المزدرين والمحقّرين بل تعوّد العدا كلهم بالتوهين ليصدّوا الناس عن سبيل المهتدين ويُلحقوهم بالمعتدين وترى كثيرا منهم يوجدون فى هذه البلاد وتعرفهم بقتر رهقت وجوههم من ثور مواد العناد يذكرونى كمثل ما

ऐसा ही तिरस्कार और बुराई करते हैं जैसी मनार ने की परन्तु मैं उनको बातों की थोड़ी भी परवाह नहीं करता और यह कहता हूँ की जाहिल हैं। सर पर भारी चोट लगी है चिल्लाये नहीं तो क्या कहे और जब उन्हें पथभ्रष्टता पर इतना आग्रह है तो उनसे नेकी की आशा क्या की जाए, परन्तु मैंने देखा है कि इन उपद्रवियों की आँख में मनार के एडीटर की बुज़ुर्गी है। और कुछ आग के लादू टट्टुओं ने तो उसकी गवाही को बड़ा महत्व दिया है। और रात दिन उसी की चर्चा करते हैं। तो मुझे भी उनकी गुप्त बातें पहुँच गईं और उनके षड्यंत्रों और मशवरों की सूचना मिली और मालूम हुआ कि वे मुझ पर हँसते और उसमें प्रतिदिन उन्नति कर रहे हैं। फिर जब मैंने देखा कि वे जंगल की मृग-तृष्णा पर और ज़मीन के सफ़ेद कंकरों पर धोखा खा गए हैं तथा शत्रुता और बिगाड़ में बढ़ गए हैं और डर पैदा हो गया कि उनका फ़ित्न: इन शहरों में फैल जाएगा। और मैंने देखा कि वे मेरी ओर तिरस्कार की आँख से देखते हैं तथा तालियाँ बजाते हैं और मुझे एक खिलौना समझते हैं और हंसी खेल के लिए मुझे क़ैद करते हैं और मनार के

ذكر ويزدرونني كمثل ما احتقر فلا ألتفت إليهم ولا إلى أقوالهم وأعرض عنهم وأقول جهّال يصرخون بما ضُرِبَ على قذالهم وأى خير يُرجَى منهم مع إصرارهم على ضلالهم ولكن رأيت أن صاحب المنار عُظّم فى أعين هذه الاشرار وأكبر شهادته بعض زاملة النار وكانوا يذكرونها بالعشى والاسحار فبلغنى ما يتخافتون وعثرتُ على ما يُسرّون ويأتمرون وأُخبرتُ أنهم يضحكون علىّ وفى كل يوم يزيدون فلما رأيتُ أنهم اغترّوا بلامع القاع ويرامع البقاع وزادوا فى العناد والفساد وخيف أن يعم فتنهم هذه البلاد ورأيت أنهم يرونني بشزر عينيهم ويصفقون بيديهم ويأخذونني كالتلعابة ويُجعجعون بى

कलाम को बहाना बनाते हैं मुझे मूर्ख बनाने, ग़लती करने वाला ठहराने तथा तिरस्कृत जानने में, तो फिर मैंने भी एक पूर्ण मुजाहिद के समान कमर कस ली। जो कुल्हाड़ा मारता है उस व्यक्ति के सर में जो शत्रुता से उस पर पत्थर फेंके। क़सम उसकी जिसकी दया उसके प्रकोप पर बढ़ गई है और जिसकी मेहरबानी ने उसकी तलवार मोथरी कर दी है। मुझे मनार के लेखक के बारे में नेक गुमान था और मेरा विचार था कि उसने किसी हित से ऐसा कहा न कि हानि देने के इरादे से। परन्तु पीछे पता लगा कि उसने जीभ को नहीं रोका जैसे कि बुज़ुर्गों की आदत और नेक लोगों की विशेषता होती है। अपितु उसने अपने अखबार में तिरस्कार पर आग्रह किया। तो इर्ष्यालुओं ने उसके मुख के उगले हुए विष को स्वादिष्ट खाने की तरह खाया और उसकी बात को स्वीकार किया और समाप्त हो जाने के बाद नए सिरे से झगड़ा आरम्भ कर दिया जैसे कि मुर्ख उजड्ड प्रकृति वालों की आदत होती है। और उन्होंने मनार की बातों को तेज़ हथियार समझा तथा हिंदुस्तान के अख़बारों में उन्हें प्रकाशित किया। और ऐसी बातें लिखीं जिनका सुनना पवित्र

للدعابة ويجعلون كلام المنار كحيلةللتجهيل والتخطية والاحتقار شمّرت تشمير من لا يألو جهادًا ويضع فأسا فى رأس من رمى الجندل عنادًا و بالذى سبقت رحمته غضبه وفَلّت رأفته عضبه ما كنتُ أظن فى صاحب المنار إلا ظنّ الخير و كنتُ أخال أنه قال ما قال من مصلحة لا من إرادة الضير ولكن ظهر علىّ بعد ذالك أنه ما كفّ اللسان كما هو من سير الكرام والطبائع السعيدة بل أصرّ على الازدراء فى الجريدة فأكل الحاسدون حصيدة لسانه كالعصيدة وتلقّفوا قوله وجدّدوا الخصومة بعد ما قطعوها كما هو من شيم القرائح البليدة وحسبوا كلمه كالاسلحة الحديدة وأشاعوها فى الاخبار والجوائب الهندية و كتبوا كل ما يشق سماعها على الهمم البريئة

और बरी हिम्मतों को अप्रिय होता है और मेरे दिल को दुखाया जैसे कि कमीने और मूर्खों की आदत और तुच्छ शत्रुओं का चरित्र होता है। तथा वे बड़े घमण्ड से इतरा कर चलते थे। जैसे उन्हें बड़ी उच्च श्रेणी की सुन्दर पोशाकें पहनाई गयी हों या बड़े बड़े शहर उनके क़ब्ज़े में दिए गए हैं। या उनके मरे हुए दोस्त फिर अपने-अपने क़बीले में वापस किए गए हैं और मैंने महसूस किया कि उनका यह फ़ित्न: सामान्य लोगों को धोखे में डाल कर बहुत हानि देगा तथा इन बातों को वे बड़ी पक्की गवाही समझेंगे और कुछ मूर्खों के धोखा देने को तथा कुछ कम अक़्ल वाले सादा लोगों को धोखा देने को पर्याप्त हैं। अत: मैंने इसका उत्तर देना अपने ऊपर अनिवार्य अधिकार समझा जिसका क़र्ज़ अदा किए बिना उतर नहीं सकता और अनिवार्य क़र्ज़ ठहराया जिसमें से एक भी अदा करने के अतिरिक्त ज़िम्मा से उतर नहीं सकता। इसलिए कि जन सामान्य के भ्रमों को दूर करना समय

المبرّء ة وآذوا قلبي كما هي عادة الرذل والسفهاء وسيرة الاراذل من الاعداء و كانوا يمشون مرحا بالخيلاء والامتطاء كأنهم أُلبِسُوا من حلل الحبر والوشاء أو فُتِحَت عليهم مدائن أو رُدّ أحياء هم الميّتون إلى الاحياء وأَحْسَسْتُ أن فتنتهم هذه تضر العامة كالاغلوطات ويُعدّون هذه الاقوال من الشهادات القاطعات و كفى هذا القدر لخدع بعض الجهلاء وإغلاط بعض البله قليل الدهاء فرأيتُ جوابه على نفسي حقًّا واجبًا لا يوضع وزره بدون القضاء ودينا لازما لا يسقط حبة منه بغير الاداء فإن دفع أوهام العامة من واجبات الوقت وفرائض الإمامة فقلّبتُ وجهي في السماء وطلبتُ عون الله بالبكاء والدعاء ليهديني إلىٰ طريق إتمام الحجّة وإحقاق الحق وإبطال الباطل وإيضاح

की अनिवार्य बातों और इमामत के कर्तव्यों से है। फिर मैं आसमान की ओर मुँह करके देखने लगा। तथा दुआ और गिड़गिड़ाने से ख़ुदा से मदद मांगने लगा। इसलिए कि मुझे हुज्जत को पूर्ण करने और सत्य को सत्य कर दिखाने और असत्य को मिटाने और मार्ग को स्पष्ट करने का तरीक़ा बताए। तो मेरे दिल में डाला गया कि मैं इस उद्देश्य के लिए एक पुस्तक लिखूं फिर उसके सदृश उस एडीटर से मांगू तथा प्रत्येक ऐसे व्यक्ति से जो उन्हीं शहरों से शत्रुता के उद्देश्य से उठे। और मैं ने ख़ुदा की ओर पूर्णरूपेण ध्यान किया हुआ था तथा रोने और अनुयोग के मैदानों में दौड़ रहा था। अन्तत: स्वीकार होने के निशान प्रकट हुए और शंका व संदेह का पर्दा फट गया और मुझे इस पुस्तक के लिखने का सामर्थ्य प्रदान किया गया तो मैं उसके छप जाने और उसके अध्यायीकरण की पूर्णता के पश्चात् उसकी ओर भेजूंगा। फिर यदि मनार ने उसका भली भांति उत्तर दिया और उत्तम खण्डन

المحجّة فأُلقىَ فى روعى أن أُؤلّف كتابا لهذا المراد ثم أطلب مثله من هذا المدير ومن كل من نهض بالعناد من تلك البلاد و كنتُ أقبل على الله كل الاقبال وأسعى فى ميادين التضرّع والابتهال حتى بانت أمارة الاستجابة وانجابت غشاوة الاسترابة ووُفّقتُ لتأليف ذالك الكتاب فسأرسله إليه بعد الطبع و تكميل الابواب فإن أتىٰ بالجواب الحسن وأحسن الردّ عليه فأحرق كتبى وأقبّل قدميه وأعلق بذيله وأكيل الناس بكيله وها أنا أقسم بربّ البريّة أؤكد العهد لهذه الاليّة وإن كَلْمَ الاحرار بكلام أشدّ جرحًا من جرح سهام بل هو أشق عليهم من قتلهم بلهذم وحسام وإن جراحات السنان لها التيام

किया तो मैं अपनी पुस्तकें जला दूंगा और उसके पैर चूम लूँगा और उसके दामन से लटक जाऊँगा और फिर लोगों को उसके पैमाने से नापूंगा और लो मैं संसार के प्रतिपालक की क़सम खाकर कहता हूँ और उस क़सम से प्रण को पुख्ता करता हूँ और सुशील लोगों का ज़ख़्मी करना कलाम से ज़ख्म में कठिनतम होता है तीरों के ज़ख्म से। अपितु भाले और तलवार के साथ क़त्ल करने से बढ़कर उन पर भारी होता है और यह पुख्ता बात है कि भालों के ज़ख्म तो मिल जाते हैं परन्तु क़लम के ज़ख्म नहीं मिलते। परन्तु जो उसने अध्यात्म ज्ञानों और सरसता का दावा किया है जैसा कि प्रत्यक्ष में उसके कलाम से समझा जाता है यह उसका निरा दावा ही दावा है और हम उसे नहीं मान सकते जब तक वह अपनी बुज़ुर्गी का सबूत न दे और मेरे तो विचार में भी नहीं आ सकता कि मनार मेरी पुस्तक जैसे अध्यात्म ज्ञान लिख सके और मेरी तलवार जैसी चमक तथा धार दिखा सके और इस पर भी मेरे दिल में कभी-कभी आता है कि संभव है कि मनार का एडीटर इन

ولا يلتـام مـا جـرح كلامُ وأمّـا مـا ادّعـى مـن المعـارف والفصاحـة كمـا يُفـهم مـن قـوله بالبداهـة فهـى مقـالة هـو قائلهـا ولا نقبـله إلا بعـد ثبـوت النباهـة ومـا اتظـنّى أن يكتـب المنـار مـن معـارف كمعـارف كتـابى ويُـرى بريقـا كبريـق مـا فى قـرابى ثـم مـع ذالـك تُناجيـنى نفسـى فى بعـض الاوقـات ان مـن الممكـن أن يكـون مديـر المنـار بريئـا مـن هـذه الإلزامـات ويمكـن أنـه مـا عمـد إلى الاحتقـار والنطـح كالعجمـاوات بـل أراد أن يعصـم كلام الله مـن صغـار المضاهـات★ و إنمـا الاعمـال بالنيّـات فـإن كان هـذا هـو الحـق فـلا شـكّ أنـه ادّخـر لنفسـه بهـذه المقـالات كثـيرا مـن الدرجـات فـإن حُـبّ كلام الله يُدخـل فى الجنّـة ويكـون عاصمـا كالجُنّـة وأى ذنـب عـلى

★الحاشـية: واظـن انـه استشـاط مـن منـع الجهاد۔ووضـع الحـرب والسـيوف الحـداد۔وان الوقـت وقـت اراء ة الأيات۔لازمـان سـل المرهفات۔ولاسـيف الاسـيف الحجـج والبينات۔فلاشـكّ ان الحـرب لاعـلاء الديـن فى هٰـذه الاوقات۔مـن اشـنع الجهـلات۔ولا اكـراه فى الديـن كمـا لا يخفـى عـلى ذوى الحصات۔منـه۔

आरोपों से बरी हो और संभव है कि उसने तिरस्कार की ओर चोपायों के समान सींग से मारने का इरादा किया हो। अपितु यह चाहा है कि ख़ुदा के कलाम को समानता और समरूपता के अपमान से बचाए★ और कर्म अवलम्बित हैं नीयतों पर। और यदि यह सच है तो निस्संदेह उसने इन बातों से अपने लिए

★**हाशिया :-** मुझे तो विश्वास है कि वह क्रोध में आया है। जिहाद के रोकने और तेज़ तलवारों और लड़ाई के दूर कर देने से और अब निशानों के दिखाने का समय है तलवारों के खींचने का समय नहीं और हुज्जतों तथा सपष्ट तर्कों के अतिरिक्त कोई तलवार नहीं। इसमें संदेह नहीं कि इन दिनों में धर्म के लिए लड़ाई करना बहुत बड़ी मूर्खता है और धर्म में कोई जब्र नहीं जैसा कि यह बात बुद्धिमानों पर छुपी नहीं। इसी से।

الذى سبّنى لحماية الفرقان لا للاحتقار و كسر الشان ونحا به منحٰى نُصرة الدين لا لظى التحقير والتوهين وهل هو فى ذالك إلا بمنزلة حُماة الإسلام والدّاعين إلى عزّة كلام الله العلّام الذى هو ملك الكلام؟ والله يعلم السرّ وما أخفى ولكل امرئٍ ما نوى ولكنى مُعتذر كمثل اعتذاره فإن الفتن قد انتشرت من أقواله وأخباره فوجب أن اشمر عن ذراعى لثاره ولم يكن لى بد من أن أفضّ ختم سرّه والله يعلم حقيقة نيته و كيفية بريّته وبرّه فان كان نوى الخير فيما قال فسيعتذر ولا يبتغى النضال وإن كان قصد التوهين والاحتقار فسيقضى الله بينى وبينه ومن ظلم فقد بار وإنى سأرسل كتابا إلى مدير المنار ليُفكّر فيه

बहुत से दर्जे एकत्र कर लिए, इसलिए कि ख़ुदा के कलाम का प्रेम स्वर्ग में ले जाता है और ढाल के समान बचाने वाला भी होता है। और उस व्यक्ति का गुनाह ही क्या जिसने मुझे गाली दी फ़ुर्क़ान की सहायता के लिए न तिरस्कार और मानहानि के इरादे से, और इससे उसका संकल्प धर्म की सहायता है। तिरस्कार और अपमान का भड़कना न हो। ऐसा व्यक्ति तो इस्लाम का सहायक और ख़ुदा के कलाम के सम्मान की ओर जो सब कलामों का बादशाह है बुलाने वाला है और ख़ुदा प्रत्येक व्यक्ति के अंत:करण और रहस्य को जानता है और जिसकी जो नीयत होगी वही फल उसे मिलेगा किन्तु मैं भी उज्र करता हूँ जैसा उसने किया इसलिए कि कथनों और अखबार से फ़ित्ने फैल गए हैं। अत: आवश्यक हुआ कि बदला लेने की आस्तीनें ˙ चढ़ा लूँ और अब मुझे इसके अतिरिक्त चारा नहीं कि उसके रहस्य की मुहर तोड़ दूँ और ख़ुदा जानता है उसकी नीयत की वास्तविकता को तथा उसकी नेकी और बरी होने की हालत को। फिर यदि उसने अपनी बातों में नेकी की नीयत की होगी तो अवश्य बहाना करेगा और युद्ध तथा

حق الافكار فإمّا اكفهرار بعد وإمّا اعتذار وإنّما هو لإظهار الحق معيار فإن تنصّل المنار من هفوته وتندّم على فوهته فما لنا أن نأخذه على عثرته وإن لم يتوسم قرن نضاله ولم يطلع على حلى وعلى أسماله فعليه أن يكتب كتابا كمثل كتابي وعلى منواله ليحكم الله بيننا بعد بث الاسرار ونث الاخبار وأرجو من الله أن يبعث بعض أولى الابصار وفضلاء الديار ليفتحوا بالحق بيني وبين من يرقص على المنار وليتدبّروا كلامي وكلامه بالغور التام وليستشفوا جوهر الكلام ويُميّزوا النور من الظلام وأعترف أن بعض أهل الجرائد أُعْطوا نُبَذًا من الفصاحة ورُزِقُوا طُرُزًا من الملاحة ولكن لا لإعلاء

मुकाबला न चाहेगा और यदि अपमान और तिरस्कार का इरादा किया है तो ख़ुदा उसमें और मुझ में शीघ्र फैसला करेगा और अत्याचारी मरेगा। और मनार के एडीटर को पुस्तक भेजूंगा या तो वह फिर क्रोध और उत्तेजना में आया या बहाना बना दिया और सत्य की अभिव्यक्ति के लिए वह मापदण्ड होगा तो यदि मनार अपनी व्यर्थ बातों से रुक गया तथा अपनी बातों पर लज्जित हुआ तो हमें क्या अवश्य है कि उसकी ग़लती पर गिरफ़्त करें और यदि उस ने अपने मुकाबले के प्रतिद्वंद्वी को विवेक से न पहचाना और मेरे सुन्दर लिबासों पर तथा अपनी फटी पुरानी गुदड़ियों पर अवगत न हुआ तो उस पर अनिवार्य है कि मेरी शैली और तरीके की पुस्तक लिखे ताकि ख़ुदा हम में खबरों और रहस्यों के प्रकट होने के बाद फैसला करे। और मुझे ख़ुदा से आशा है कि वे ऐसे सुजाखे और विद्वान मनुष्य पैदा करेगा जो मेरे और मनार के मामले में सच्चा फैसला करेंगे तथा मेरे और उसके कलाम को पूर्ण ध्यान से सोचेंगे और कलाम के मोतियों को खूब परखेंगे और अंधकार एवं प्रकाश में अन्तर करेंगे तथा मैं मानता हूँ कि कुछ अख़बार

كلمة الله بل للاستماحة ليحرزوا العين ولو بالكذب والوقاحة فلا ننكر حذقهم بزرقهم وتمحل رزقهم طورا بالاطراء والاخرى بالازدراء لينثالوا على أنفسهم الدراهم وليتخلصوا من اللاءواء فلا شك أن لسنهم من الولاية الشيطانية لا من الكرامة الربّانية ومن حِيَل الاقتناء والاحتياز لا من بدائع الإعجاز وإن بلاغتي شيء يُجلى به صداء الاذهان ويجلى مطلع الحق بنور البرهان وما أنطقُ إلا بإنطاق الرحمان فكيف يقوم حذتي من قيّد لحظه بالدنيا و مال إليها كل الميلان ورضى بزينتها كالنسوان أم يزعمون أنهم من أهل اللسان سيهزمون ويولّون الدبر عن الميدان ومثلهم كمثل ظالع يريد ليدرك

लिखने वालों को कुछ सरसता एवं लावण्य दिया गया है परन्तु वे ख़ुदा की बातों को ऊंचा करने के लिए अपितु दुनिया का माल और ब्याज प्राप्त करने के लिए खर्च होता है। इसलिए कि झूठ और बेशर्मी से रुपया पैदा करें अत: हम इस से इन्कार नहीं करते कि वे छल में बड़े बुद्धिमान हैं और कभी प्रशंसाओं से जीविका अर्जित करते और खाते हैं और कभी किसी की निन्दा और बुराई से। इसलिए कि अपने लिए रुपया जमा कर लें तथा संकटों से छूट जाएँ। अत: इसमें संदेह नहीं कि उनकी जीभें शैतानी विलायत से हैं तथा रब्बानी करामत से नहीं तथा माल और रुपये जमा करने के हीले-बहाने हैं अद्भुत चमत्कार के प्रकार से नहीं और मेरी सुबोधता वह चीज़ है कि मस्तिष्कों के ज़ंग उस से दूर होते हैं और सत्य के उदय-स्थल को प्रमाण के प्रकाश से प्रकाशमान करती है और मैं रहमान (ख़ुदा) के बुलाये बोलता हूँ फिर मेरे मुकाबले में क्योंकर खड़ा हो सकता है जिसकी दृष्टि दुनिया तक सीमित है और मुकाबले पर उसकी ओर झुक पड़ा है तथा स्त्रियों के समान उसकी सजावट पर राज़ी हो गया है। क्या वे दावा करते हैं कि वह अहले

شأو الضليع فلا يمشى إلا قدمًا ويسقط على الدسيع أو كرجل راجل وحيد يسرى فى ليلةٍ شابت ذوائبها وانتابت شوائبها واشتدّ ظلامها و كثر هوامها وهو ينقل تائها من واد إلى واد وليس معه سراج ولا يسمع صوت هاد وما رافقه من رفيق وما تزوّد من زاد ولا يجد خفيرا ولا يرىٰ بشيرا ولا مصباحا منيرا ورجل آخر أراد سفرًا بالخيل والرجالة فتدثر فرسا كالغزالة وخرج من البلدة إذا ذرّ قرن الغزالة مع رفقة كالهالة عاصمين من الضلالة هل يستوى ذالك وهذا عند أولى النُهٰى وإن فى ذالك لعبرة لمن يخشٰى فالحق والحق أقول إن أهل الله يُرزقون من ربّ العباد ويُهدَون إلى طريق السداد ويُهيَّأُ لهم جميع لوازم الرشاد

ज़ुबान (मातृभाषी) है शीघ्र ही पराजित होंगे और मैदान से दुम दबा कर भागेंगे इनका उदाहरण उस लंगड़ी ऊंटनी का सा है जो पूर्ण मज़बूत घोड़े की पराकाष्ठा को पा लेना चाहती है तो एक ही क़दम चल कर गर्दन के बल गिर पड़ती है या उस अकेले पैदल का सा है जो चलता है ऐसी रात में जिसके बाल सफेद हो रहे हैं और उसकी आपदाएं निरंतर आ रही है और उसका अंधकार बढ़ रहा है तथा उसके कीड़े-मकोड़े बहुत हो गए हैं और वह एक घाटी से इसी में मारा-मारा फिरता है और न उसके पास दीपक है और न किसी पथ प्रदर्शक की आवाज़ सुनता है और न उसका कोई साथी है और न सफ़र खर्च पास है और न कोई उद्दण्ड घोड़ा मिलता और न कोई शुभ सन्देश पहुँचाने वाला दिखाई देता है और न प्रकाशमान दीपक। तथा एक और व्यक्ति है जिसने सफ़र करना चाहा है सवारों और पैदलों के साथ तो वह मृग जैसे आकृति वाले घोड़े पर सवार हुआ और सूर्य के उदय होते ही शहर से निकल पड़ा अपने कुछ साथियों के साथ जो चाँद की तरह थे और भटकने से बचाने वाले थे। क्या बुद्धिमानों के नज़दीक

ويُعطى لهم كل قوّة وجبت للعتاد و كفت للارتقاء على المصاد فما كان لاهل الدنيا أن يُسابقوهم ويأتوا بأكباد مثل تلك الاكباد ولو استنّوا استنان الجياد و كيف وإن قلوبهم منتشرة كانتشار الجراد وإن السنهم على النجاد وأرواحهم فى الوهاد يقولون إنّا نحن من العرب وغُذّينا من أمّهاتِنا درّ الادب وإنّا فى مُلْكِ النطق كاقيال وأبناء أقوال فقد استكبروا بنفوسهم الابيّة وألسنتهم العربيّة وأوطنوا أنفسهم امنع جنابٍ وزعموا أنهم يفلّون حدّ كل ناب وما عرفوا من غباوة الجنان أن أولياء الرحمان يُعطَون ما لا يُعطَى لاهل اللسان من المعارف وحسن البيان ولا يُدرك براعتهم غيرهم مع جهدٍ مُعنتٍ وصرف

यह दोनों व्यक्ति बराबर हैं। इस उदाहरण में डरने वाले के लिए नसीहत है। अत: सच यही है और मैं सच-सच कहता हूँ कि अल्लाह के लोगों को बन्दों के प्रतिपालक से जीविका मिलती है और सही मार्ग की ओर उनको चलाया जाता है तथा सफलता के समस्त आवश्यक पदार्थ उनके लिए उपलब्ध किए जाते हैं और उन्हें सामान के लिए जितनी शक्तियाँ चाहिए होती हैं और शिकार के स्थान पर चढ़ने के लिए पर्याप्त होती हैं प्रदान की जाती है। अत: सांसारिक लोगों की शक्ति में नहीं होता कि उनसे आगे निकल जाएँ और उनका सा दिल गुर्दा लाएँ तथा चाहे घोड़ों की तरह दौड़ें। और यह क्योंकर हो सकता है इसलिए कि अहले दुनिया के दिल टिड्डियों के समान अस्त-व्यस्त होते हैं उनकी जीभें तो निस्सन्देह ऊँची ज़मीन पर होती हैं परन्तु रूहें गड्ढों में। कहते हैं हम अरबी हैं और हमें हमारी माओं ने साहित्य का दूध पिलाया है और हम बोलने के देश के सरदार हैं और हम वार्तालाप के पुत्र हैं। अत: यह लोग उद्दण्ड नफ़्सों से गर्दनें अकड़ा रहे हैं और स्वयं को बड़ी सुदृढ़ बारगाह (दरबार) में स्थान देते हैं और गुमान

الزمان وأنّى لهم نصيب من هذا الشان ولو أوتوا بلاغة سحبان فإنهم ما صقلوا مرآة الإيمان وما ذاقوا طعم العرفان ثم جمعوا بين الحمق والحرمان وما استطاعوا أن يرجعوا إلى الرحمٰن بل صار شغل جرائدهم فى سُبُلهم كالصَّلات فهم يُحافظون عليه كفريضة الصلاة يشيعون الجرائد لقبض الصِلات واستنضاض الإحالات إلا قليل من أهل التقات وأكثرهم لا يطيرون إلا فى الاهواء وقُصّ جناحهم من الطيران إلى السماء يمشون فى الظلام المسبل وتراهم لدنياهم فى التململ وتصرخ أقلامهم للقَرى المعجّل يطلبون لَقُوحًا غزيرة الدرّ قليلة الضرّ يستقرون الصيد إلى السواحل والاحبولةَ على الكاهل ويقترون كل

करते हैं कि प्रत्येक महान आदमी को पराजित कर सकते हैं और मूर्खता के कारण से नहीं समझ सकते कि ख़ुदा के दोस्तों को वर्णन के वे माधुर्य और अध्यात्म ज्ञान दिए जाते हैं जो अहले ज़ुबान को भी नहीं मिलते और अन्य चाहे कितना ही कष्ट उठायें तथा समय व्यय करें उनके कमाल को नहीं पा सकते और सहबान की सुबोधता भी उन्हें मिल जाए तब भी उन्हें इस शान से कहाँ हिस्सा मिल सकता है। इसलिए कि उन्होंने ने ईमान के दर्पण को कभी चमक दी ही नहीं और इरफ़ान का स्वाद कभी चखा ही नहीं फिर इसके अतिरिक्त मूर्खता और दुर्भाग्य दो बातें उनके हिस्से में आई हैं और वे ख़ुदा की ओर रुजू नहीं कर सकते अपितु अख़बार लिखने का कार्य उनके मार्ग में बड़ी भारी चट्टान बन गया है। अत: वह इस कार्य में फ़र्ज़ नमाज़ की तरह लगे रहते हैं और वे अख़बारों को इनामों और सलात के हासिल करने और रुपया पैसा कमाने के लिए प्रकाशित करते हैं सिवाए बहुत थोड़े संयमियों के और अधिकतर तो कामवासना संबंधी इच्छाओं के बादलों की हवाओं में उड़ते हैं और आकाश की हवाओं में उड़ते हैं और आकाश की

شجراء ومرداء ويجوبون لها البيداء والصحراء وما ترٰى أحدا منهم قرير العين إلا بإحراز العين وتمضى ليلتهم جمعاء فى هذه الخيالات والنهار أجمع فى نحت العبارات فما لهم وللروحانيّين والعباد الربّانيّين الذين يُعطَون عذوبة اللسان وطلاقة كالعين ويُرزقون بصيرة القلب مع نور العين ويفوزون من ربّهم بالسهمين ويرجعون بالغُنْمَين وإنّهم قوم نزلوا عن متن ركوبة الاهواء وحلّوا فِناء الفَناء جلّت نيتهم و قلّت غفلتهم لا يرون فى سبيل الله أثرا إلا يقْفونه ولا جدارًا إلا يعلونه ولا واديا إلا يجزعونه ولا هاديا إلا يستطلعونه عُشّاق

ओर उड़ने से उनके बाल व पर काटे गए हैं। घटाटोप अँधकार में चलते हैं और तुम देखते हो कि वे दुनिया के लिए बेचैन रहते हैं और उनकी कलमें इसी नश्वर दुनिया की मेहमानदारी के लिए चीखती चिल्लाती हैं वे ढूँढ़ते हैं बहुत दूध देने वाली कम हानि वाली ऊंटनी को वे ढूँढ़ते हैं शिकार को किनारे पर और जाल और रस्सियों के काँधे पर हर वृक्ष वाले और वृक्षहीन जंगल में ख़ाक छानते फिरते हैं और उसके लिए वन और बियाबान तय करते हैं। तुम एक को भी उनसे न देखोगे शीतल आँख सिवाए रुपया-पैसा प्राप्त करने से और उनकी सम्पूर्ण रात गुज़रती है इन्हीं विचारों में और सम्पूर्ण दिन कटता है इबारतों के बनाने और छांटने में तो इनकी रूहानी और रब्बानी बन्दों से क्या तुलना जिन्हें दी जाती है ज़ुबान की मधुरता और झरने की तरह का प्रवाह, और इन्हें दिल की रौशनी और प्रकाश की आंख दोनों प्रदान की जाती हैं और वे पाते हैं अपने रब्ब से दो हिस्से तथा लौटते हैं दोहरी लूट लेकर। और वह वे लोग हैं जो उतर पड़े हैं नफ़्स की इच्छा की सवारी की पीठ पर से तथा उतरे हैं फ़ना के आँगन में। उनकी नीयतें और उद्देश्य बड़े हैं और लापरवाही उनमें नहीं। अल्लाह के मार्ग में कोई ऐसा

الرحمان وفى سبيله كالنشوان من ذا الذى يقرع صَفاتهم أو يُضاهى صِفاتهم ومن جاء هم كدبير فقد لُفح ولا كلفح هجير إنّهم يسعون إلى الحضرة عند المشكلات بدمع أحرّ من دمع المقلات وإنّ مثلهم كمثل سرحة كثيفة الاغصان وريقة الافنان مثمرة بثمار الجنان و من أتاها تُساقط عليه رُطَبًا جنيًّا فطوبٰى للجَوعان إنهم قوم زكّوا دثارهم وشعارهم وخرجوا من أنفسهم وزايلوا وجارهم ورحموا من جار عليهم وَجارَهم وأطفأوا نارالنفس وكمّلوا أنوارهم وأمّا نفوس أهل الدنيا فتشابه يومًا

निशान नहीं देखते जिसका अनुकरण न करें और कोई ऐसी दीवार नहीं देखते जिस पर चढ़ न जाएँ और न कोई ऐसी घाटी जिसे तय न करें और न कोई ऐसा पथ-प्रदर्शक जिस से मार्ग की खबर न पूछ लें। वह रहमान (ख़ुदा) के आशिक और उसके मार्ग में बेसुध और मतवाले होते हैं, वे हैं कौन जो उनका अपमान और तिरस्कार करें या उन जैसी विशेषताएं पैदा कर दिखाएँ। जो व्यक्ति उनके मुकाबले पर विरोधी बन कर आया वह अपमानित हुआ। वे लोग कठिनाइयों के समय ख़ुदा की ओर दौड़ते हैं जो गरम देगची से भी अधिक गर्म होते हैं। वे उस वृक्ष के समान होते हैं जिसकी टहनियां घनी हों और उसकी टहनियों पर खूब पत्तियां हों और उसे स्वर्ग के फल लगे हों और जो उसके पास आए ताज़ा-बताज़ा मेवे उस पर गिराए। अत: भूखे को ख़ुशख़बरी हो ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने अन्दर और बाहर दोनों को पवित्र किया होता है और अपने नफ़्स से निकल चुके और अपने नशेमन को छोड़ चुके होते हैं। वे अपने अत्याचारी और पड़ोसी से प्रेम करते हैं और उन्होंने नफ़्सों की अग्नि बुझा दी होती है और अपने प्रकाशों को पूर्ण किया हुआ होता है। परन्तु सांसारिक लोगों के नफ़्स उस दिन के समान होते हैं जिसके वातावरण में ख़तरनाक से ख़तरनाक सर्दी और उसके बादल बहुत घने और

جـوّه مزمهـر ودجنـه مُكفهـرّ وتراهـم عـارى الجـلدة مـن
حُلـل الاتّقـاء وبـادى الجـردة مـن غلبـة الفحشـاء قـد اعتمّـوا
بريطـة الاسـتكبار واسـتثفروا بفويطـة الخيـلاء والفخـار
فكيـف يؤيّـدون مـن ربّ العالمـين بـل وراء هـم ضفـف
وكـرش يدعونـهم إلى الشـياطين يبكـون أنـهم أهلكـوا مـن
الشـظف وصفـر الراحـة وحصّـهم جنـف وقشـف فمـا بقـى
معـهم ذرّة مـن الراحـة ثـم يقولـون نحـن سُـراة أنديـة الأدب
وحُمـاة لسـن العـرب كلا بـل ركـدت ريحـهم وخَبَـت
مصابيحـهم وأجدبـت بقعتـهم وتخلى بعـد الإخـلاء منتجعـهم
ونُجعتـهم ولـن يُـردّ إليـهم جـلالة شـأنهم حـتى يـردّوا أنفسـهم
إلى الحضـرة ولـن يُغـيّر مـا بـهم حـتى يُغـيّروا مـا فى الطويّـة ولـو

अंधकारमय हों ये लोग संयम के लिबासों से नंगे और व्यभिचारों के प्रभुत्व के बल के कारण नग्न होते हैं। उन्होंने घमण्ड और अहंकार के कपड़े पहने होते हैं। तो ऐसे हाल में उन्हें ख़ुदा की ओर से समर्थन क्योंकर मिले। उनके पीछे उनके बाल-बच्चे और परिवार पड़े रहते हैं जो उन्हें शैतान की ओर बुलाते हैं। वे रोते हैं कि दरिद्रता, अनशन और कंगाली से मर गए और कमज़ोरी और तंग गुज़ारे ने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया और उन्हें लेशमात्र भी चैन नहीं फिर भी कहे जाते हैं कि हम साहित्य की अन्जुमनों के सरदार और अरबी भाषा के सहायक हैं। झूठे हैं अपितु उनकी हवा स्थिर हो गई है और उनके दीपक बुझ चुके हैं और उनकी भूमि बंजर की मारी हुई है और उनसे खैर-व-बरकत बिल्कुल जाती रही है। उनकी ख़ुशहाली और बुज़ुर्गी कभी वापस नहीं आयेगी जबकि ख़ुदा की ओर रुजू नहीं करेंगे। और उनका बुरा हाल परिवर्तित नहीं होगा जब तक कि अपनी नीयतों को पवित्र और शुद्ध नहीं करेंगे और यदि पृथ्वी के रहने वाले समस्त उनके सहायक बन जाएँ ख़ुदा के मुर्सलों पर कभी विजय नहीं पा सकेंगे। चाहे संयमियों के

أن ما فى الارض أنصارا لهم ما كان لهم أن يُعجزوا المرسلين ولو أتوا بالاوّلين والآخرين من دون المتّقين ألا ينظرون إلى الذين خلوا من قبلهم هل هم غلبوا وأعجزوا رسل الله أو كانوا من المغلوبين ألا إن الاقلام كلها لله وهى معجزة من معجزات كتاب مبين ثم يتلقّاها المقرّبون على قدر اتّباع خير المرسلين فإن المعجزات تقتضى الكرامات ليبقى أثرها إلى يوم الدين وإن الذين ورثوا نبيّهم يُعطَون من نِعَمه على الطريقة الظلّية ولولا ذالك لبطلت فيوض النبوّة فإنهم كأثر لعين انقضى و كعكس لصورة فى المرآة يُرَى وإنهم اكتحلوا بمرود الفناء وارتحلوا من فناء الرياء فما بقى شيء من أنفسهم وظهرت صورة

अतिरिक्त अपने पिछले लोगों को भी लेते आए। वे गुज़रे हुए लोगों के हाल में विचार नहीं करते क्या। वे ख़ुदा के रसूलों पर विजयी हो गए थे या पराजित हुए थे? सुनो समस्त कलमें ख़ुदा के कब्ज़े में और वे स्पष्ट किताब के चमत्कारों में से एक चमत्कार हैं। फिर वही कलमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के मार्ग पर सानिध्य प्राप्त लोगों को प्राप्त होती हैं इसलिए कि चमत्कार चाहते हैं करामात को ताकि उनके निशान क़यामत तक शेष रहे और अपने नबी अलैहिस्सलाम के वारिसों को बतौर प्रतिबिम्बों के आपकी नेमतें मिलती हैं और यदि नियम जारी न रहता तो नुबुव्वत के लाभ सर्वथा असत्य हो जाते इसलिए कि यह वारिस नक्श होते हैं उस असल के जो गुज़र चुकी होती हैं और जैसे प्रतिबिम्ब होते हैं एक रूप के जो दर्पण में दिखाई देता है। इन लोगों ने फ़ना की सलाइयों से सुरमा आंख में डाला होता और दिखावे के आंगन से कूच कर चुके होते हैं। इस प्रकार से उनका अपना तो कुछ रहा नहीं होता और खातमुलअंबिया का रूप ही प्रकट हो जाता है तो इन लोगों से जो कुछ विलक्षण कार्य या

خاتم الانبياء فكل ما ترون منهم من أفعال خارقة للعادة أو أقوال مشابهة بالصحف المطهّرة فليست هى منهم بل من سيّدنا خير البريّة لكن فى الحلل الظلّية وإن كنتم فى ريب من هذا الشان لاولياء الرحمان فاقرءوا آية صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ بالإمعان أتعجبون ولا تشكرون وترون صوركم فى المرايا ثم لا تُفكّرون ألا إن لعنة الله على الذين يقولون إنّا نأتى بمثل القرآن إنه معجزة لا يأتى بمثله أحدٌ من الإنس والجان وإنه جمع معارف ومحاسن لا يجمعها علم الإنسان بل إنه وحىٌ ليس كمثله غيره وإن كان بعده وحيا آخر من الرحمان فإن لله تجلّيات فى إيحائه وإنه ما تجلّى من قبل ولا يتجلّى من بعد كمثل تجلّيه لخاتم أنبيائه وليس شأن وحى الاولياء كمثل شأن وحى

कथन पवित्र ग्रन्थों के समान तुम देखते हो वे उनकी ओर से नहीं बल्कि वह हज़रत सय्यद उल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से होते हैं। हाँ वह प्रारूप के लिबासों में होते हैं और तुम्हें ख़ुदा के वलियों के विषय में ऐसी बुज़ुर्गी और शान में सन्देह है तो पढ़ लो

صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(अलफ़ातिहा – 5)

को ध्यानपूर्वक और विचार से। क्या तुम आश्चर्य करते हो और कृतज्ञ नहीं होते और तुम दर्पणों में अपनी शक्लें देखते हो फिर भी नहीं सोचते। सुनो ख़ुदा की लानत उन पर जो दावा करें कि वे क़ुर्आन का सदृशय ला सकते हैं। पवित्र क़ुर्आन चमत्कार है जिसका सदृश कोई इन्सान और जिन्न नहीं ला सकता और इसमें वे अध्यात्म ज्ञान और खूबियाँ जमा हैं जिन्हें इंसानी ज्ञान जमा नहीं कर सकता बल्कि वह ऐसी वह्यी है कि उसका सदृशय और कोई भी वह्यी नहीं। यद्यपि रहमान (ख़ुदा) की ओर से उसके

الفرقان وإن أُوحِي إليهم كلمة كمثل كلمات القرآن فإن دائرة معارف القرآن أكبر الدوائر وإنها أحاطت العلوم كلها وجمعت فى نفسها أنواع السرائر وبلغت دقائقها إلى المقام العميقالغائر وسبق الكل بيانا وبرهانا وزاد عرفانا و إنه كلام الله المعجز ما قرع مثله آذانا ولا يبلغه قول الجنّ والإنس شأنا فمثل القرآن وغير القرآن كمثل رؤيا رآها ملك عادل رفيع الهمّة كامل الفهم والقياس ورأى هذه الرؤيا بعينها رجل آخر قليل الفهم قليل الهمّةومن عامّة الناس فلا شكّ أن رؤيا الملك ورؤيا هذا الرجل وإن كانت واحدة غير مميّزة فى ظاهر الحالات ولٰكن ليست بواحدة عند عارف تعبير الرؤيا وذيالحصات بل لرؤيا الملك العادل تعبير أعليوأرفع وأعمّ وأنفع

और कोई वह्यी भी हो। इसलिए कि वह्यी पहुँचाने में ख़ुदा की चमकारें भी हैं और यह निश्चित बात है कि ख़ुदा तआला की चमकार जैसी कि ख़ातमुल अंबिया पर हुई ऐसी किसी पर न पहले हुई और न कभी बाद में होगी और जो शान क़ुर्आन की वह्यी की है वह वलियों की वह्यी की शान नहीं। यद्धपि क़ुर्आन के वाक्यों के समान कोई कलिमा: उन्हें वह्यी किया जाए। इसलिए कि क़ुर्आन के अध्यात्म ज्ञानों का दायरा सब दायरों से बड़ा है और उसमें केवल ज्ञान और हर प्रकार की विचित्र और गुप्त बातें जमा हैं और उसकी बारीक बातें बड़ी उत्तम श्रेणी के गहरे मुक़ाम तक पहुँची हुई हैं और वह बयान तथा तर्कों में सब से बढ़ कर और उसमें में सबसे अधिक इरफ़ान है और वह ख़ुदा का चमत्कारिक कलाम है जिसका सदृश कानों में नहीं सुना और उसकी शान को जिन्नों और इन्सानों का कलाम नहीं पहुँच सकता। अत: क़ुर्आन और इसके कलाम का उदाहरण उस स्वप्न का है जिसे एक न्यायवान बुलंद हिम्मत और पूर्ण बुद्धिमान बादशाह ने और

وهـى للنـاس كلـهم خـير ومـع ذالكأصـح وألمـع وأمّـا رؤيـا رجـل هـو مـن أدنى النـاس فلا يتخلّـص فى أكثـر صورهـا مـن الالتبـاس، بـل مـن الادناس ثـم مـع ذالـك لا تجـاوز أثرهـا مـن الابنـاء والآبـاء أو شـرذمةمن الاحبّـاء وإنّ ركُـبَ هـؤلاء الاغيـار ينيخـون بأدنيـاالارض مطايـا التسـيار وينتقلـون مـن الاكـوار إلى الاوكار وأمّـا خيـل الفرقـان فيجوبـون كل دائـرة العمـران وهـو كتابتجـرى تحتـه بحـار العرفـان ولا يطـير فوقـه طـير التبيـان ومـا تكلّـم أحـد إلا ادّان مـن خزائنـه وأخـرج مـن بعـض دفائنـه وأريـكل متكلّـم صفـر اليديـن مـن غـير التطـوّق بهـذا الدّيُـن و كل غريـم يجـدّ فى التقاضـى

वही स्वप्न देखा एक अन्य साधारण मंद बुद्धि ने, कम हिम्मत व्यक्ति ने। तो इसमें संदेह नहीं कि बादशाह का स्वप्न और सामान्य व्यक्ति का स्वप्न यद्यपि ज़ाहिर में एक ही है परन्तु बुद्धिमान और स्वप्न फल जानने वाले के निकट एक नहीं अपितु न्यायवान बादशाह की ताबीर बहुत बुलंद, सामान्य और लाभ पहुँचाने तथा सब लोगों के पक्ष में खैर-व-बरकत और बहुत ही दुरुस्त और साफ़ है परन्तु साधारण मनुष्य का स्वप्न अधिकतर सूरतों में लिखने और मैल कुचैल से पवित्र नहीं होता। इसके अतिरिक्त उसका प्रभाव बेटों और बापों और थोड़े से दोस्तों से आगे नहीं जाता और यदि इस पर सवार भी हों तो भी बहुत ही निकट स्थान में डेरे डाल देते हैं। और पालनों से उतर कर आशियानों में घुस जाते हैं परन्तु पवित्र क़ुर्आन के सवारों क़ा यह हाल है कि वह आबादी के हर दायरे को ठीक करते हैं और किसी भी शक्ति का परिंदा उससे ऊपर नहीं उड़ सकता और हर पूंजी वाला उसी के ख़ज़ानों और दफ़ीनों से कुछ लेता है और मेरे नज़दीक हर बोलने वाला इस क़र्ज़े में ग्रस्त होने के बिना केवल खाली हाथ है और कर्ज़दार से सख्त

ويلجّ فى الاقتياد إلى القاضى وأمّا القرآن فيتصدّق على أهل الاملاق وينزع عن الارهاق بل يُعطى سبائك الخِلاص لاهل الإخلاص ولا يمن على الغرماء بالإنظار بل يُرغّبهم فى احتجانالنضار ولا يأخذ سارقا إن كان فارقًا★ وإنّا نحن تلاميذ الفرقان وأُترِعُنَا من بحره بعد ما صرنا كالكيزان فإن كان مدير المنار تزرّى علىّ لهذا الاعتذار فندعو له لغيرته لله الغيور الغفار ولو قمتُ على مقامه لقلتُ كمثل كلامه ولعنة الله على من أنكر بإعجاز القرآن وجوهر حُسامه وتفرّد دُرّة كلمه ونظامه ووالله إنّا نشرب من عينه ونتزين بزينه ولذالك يسعى على

★الحاشية: اعنى مَن اقتبس من القراٰن اٰيةً بصحةالنيّة خائفًامن الحضرة فلا اثم عليه عند عالم النيّات ذى الجود والمِنّةِ منه

मांग की जाती है और सख्त कोशिशें की जाती है कि क़ाज़ी (जज) तक पहुंचा कर उससे रुपया प्राप्त किया जाये परन्तु पवित्र क़ुर्आन दरिद्रों को दान देता और समस्त तंगियाँ दूर करता अपितु निष्कपटता वालों को सोने की डलियाँ देता है और अपने क़र्ज़दारों को मुहलत देने का उपकार नहीं जताता अपितु उनको सोना एकत्रित' करने की प्रेरणा देता है और किसी चोर को यदि वह डरने वाला व्यक्ति ही हो★ नहीं पकड़ता और हम तो प्रथम कूज़े बने फिर क़ुर्आन के दरिया से लबालब हुए। तो यदि मनार का एडीटर इस पहलू से मुझ से बिगड़ा है तो मैं उसके स्वाभिमान के कारण उसके लिए ख़ुदा से दुआ करता हूँ और यदि मोमिन उसके स्थान पर होता तो मैं भी

★**हाशिया :-** अर्थात् जो मनुष्य ख़ुदा से डरते हुए सही नीयत के साथ क़ुर्आन से किसी आय को बतौर वक्तव्य इस्तेमाल करे तो नीयतों के आलिम और दान पुण्य करने वाले के नज़दीक उस पर कोई गुनाह नहीं। इसी से।

كلامنا نور وصفاء وفى نطقنا يبهر لمعانٌ وضياء وبركة شفاء وطلاوة وبهاء وليس علىّ منّة أحدٍ من غير الفرقان وإنّه ربّانى بتربية لا يُضاهئها الابوان وسقانى الله به مَعينًا ووجدناه منيرًا ومُعينًا فلا نعرف التهابا ولا حرورا وشربنا من كأس كان مزاجها كافورا وإن كلامى هذا ليس من قلمى السقيم بل كلٌم أفصحت من لدن حكيم عليم بإفاضة النبي الرؤوف الرحيم فلا تجعلوا رزقكم أن تكذّبوها بل فكّروا كالزكىّ الفهيم أمظننتم أن الله لا يعلم ما تعلمون أو لا يقدر على ما تقدرون كلا بل لا تعرفونه حق المعرفة وتستكبرون واللّٰهيجعل لمن

वही कहता जो उसने कहा। मेरे नज़दीक ख़ुदा की लानत उस पर जो क़ुर्आन के चमत्कारों का इनकार करता और अपने कलाम और व्यवस्था को स्वयं कोई स्थायी चीज़ समझता है और ख़ुदा की क़सम हम तो उसी झरने से पीते और उसी के सौंदर्य से सजते हैं। इसी कारण से तो कलाम में प्रकाश और शिफ़ा और ताज़गी और सुन्दरता चमकती है और मुझ पर क़ुर्आन के अतिरिक्त अन्य किसी का उपकार नहीं और उसने मेरा ऐसा पोषण किया है कि वैसा माता-पिता भी नहीं करते। और ख़ुदा ने मुझे उस से रुचिकर पानी पिलाया और हमने उसको रोशन करने वाला तथा सहायक पाया पानी पिला दिया है कि अब मुझे कोई जलन कोई गर्मी महसूस नहीं होती। और हमने कपूर का प्याला पिया है और यह मेरा कलाम मेरी कमज़ोर बीमार क़लम की ओर से नहीं अपितु यह तो दूरदर्शी सर्वज्ञ की बातें हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यश के माध्यम से। अत: तुम झुठलाने पर ही कमर बाँध लो अपितु दक्ष और बुद्धिमान बन कर सोचो। क्या तुम्हें गुमान है कि जो तुम जानते हो वह ख़ुदा नहीं जानता, क्या वह सामर्थ्यवान नहीं उन पर जिन पर तुम सामर्थ्यवान नहीं हो। ऐसा नहीं अपितु तुम उसे अच्छी तरह

يشاء بسطة فى العلم أفلا تُفكّرون وقد كنتم على شفا حفرة فرحمكم الله أفلا تشكرون۔

مَا بال المسلمين وَمَا العلاج فى هٰذا الحِين۔

ظهر الفساد فى المسلمين وصارت ككبريت أحمر زُمر الصالحين ما ترى فيهم أخلاق الإسلام ولا مواساة الكرام لا ينتهون من التخليط ولو بالخليط ويُجرّعون الناس من الحميم ولو كان أحد كالولىّ الحميم ولا يُكافئون بالعشير ولو كان أخ أو من العشير لا يصافون

नहीं पहचानते और अंहकार करते हो और ख़ुदा तआला जिसे चाहे ज्ञान में विशालता और विस्तार प्रदान करे क्या तुम सोचते नहीं। और तुम सब गढ़े में गिरने के लिए तैयार थे तो ख़ुदा ने तुम पर दया की। क्या तुम धन्यवाद नहीं करते।

"मुसलमानों का क्या हाल और इस समय क्या उपचार चाहिए"

मुसलमानों में बिगाड़ पैदा हो गया है और नेक लोग लाल गंधक के समान हो गए हैं। उनमें न तो इस्लाम के शिष्टाचार रहे हैं और न बुज़ुर्गों की सी हमदर्दी रह गई है किसी से बुरा आने से नहीं रुकते चाहे कोई प्रिय यार क्यों न हो। लोगों को खौलता हुआ पानी पिलाते हैं चाहे कोई निष्कपट दोस्त ही हो। और बदले में दसवां भाग भी नहीं देते। चाहे भाई हो या पिता या कोई रिश्तेदार हो। तथा किसी दोस्त और सगे भाई से भी सच्चा प्रेम नहीं करते। और हमदर्दों की बड़ी भारी हमदर्दी को भी तुच्छ समझते हैं। और

شفيقا ولا شقيقا ويستقِلّون جزيل المواسين ولا يُحسنون إلى المحسنين ويُخَيّبون الناس من عوارف ولو كانوا من معارف ويبخلون بما عندهم مَرافقهم ولو كان مُرافقهم بل إذا أجلتَ فيهم بصرك وكرّرتَ فى وجههم نظرك وجدت أكثر طوائف هذه الملّة قد لبسوا ثياب الفسق وترك الديانة والعفّة وإنّا نذكر ههنا نبذًا من حالات ملوك زماننا وغيرهم من أهل الاهواء ثم نكتب بعده ما أراد الله لدفع تلك المفاسد وتدارك الإسلام والمسلمين من السماء۔

(فى حالات ملوك الإسلام فى هذه الايام)

(بادشاہوں کے حالات)

اعلم رحمك الله أن أكثر طوائف الملوك وأُولى الامر والإمرة الذين يُعدّون من كبراء هذه الملّة قد مالوا إلى

उपकारियों से नेकी नहीं करते तथा लोगों पर मेहरबानी नहीं करते चाहे कैसी ही जान पहचान का आदमी हो और अपने साथियों को भी अपनी वस्तुएं देने से कृपणता करते हैं। अपितु यदि तुम दोड़ाओ अपनी आँख को उनमें और बार-बार उनके मुँह को देखो तो तुम उस क़ौम की हर जमाअत को पाओगे कि पाप, बेईमानी और निर्लज्जता का लिबास पहना हुआ है। और हम इस स्थान पर थोड़ा सा हाल अपने युग के बादशाहों तथा अन्य लोगों का लिखते हैं जो अवसरवादी लोग हैं और फिर हम उस उपचार को लिखेंगे जो ख़ुदा ने इन उपद्रवों को दूर करने के लिए इरादा कर रखा है। और इस्लाम तथा मुसलमानों के निवारण के लिए प्रारब्ध कर रखा है।

(बादशाहों की हालतें)

زينة الدنيا بكل الميل والهمّة واستأنسوا بأنواع النعم واللّهنية وما بقى لهمشغل من غير الخمر والزمر والشهوات النفسانية يبذلون خزائن لاستيفاء اللذّات الفانية ويشربون الصهباء جهْرةً على شاطى الانهار المصرّدة والمياه الجارية والاشجار الباسقة والاثمار اليانعة والازهار المنوّرة جالسين على الانماط المبسوطة ولا يعلمون ما جرى على الرعيّة والملّة ليس لهم معرفة بالقانون السياسى وتدبير مصالح الناس وما أُعطِىَ لهم حظ من ضبط الامور والعقل والقياس والذين يُتَخَيّرون لتَأديبهمفى عهد الصبا فهم يُرغّبونهم فى الخمر والزمر وعلى منادمةٍعلى الرُبَى سيّما فى أوقات المطر وعند هزيز

जान ले! ख़ुदा तुझ पर रहम करे। कि अधिकतर बादशाह इस युग के और अमीर इस युग के जो धर्म के बुज़ुर्ग और सुदृढ़ शरीअत के सहायक समझे जाते हैं वे सबके सब अपनी समस्त हिम्मत के साथ दुनिया के सौन्दर्य की ओर झुक गए हैं। और मदिरा तथा बाजे और कामवासना संबंधी इच्छाओं के अतिरिक्त उन्हें अन्य काम ही नहीं। वे नश्वर आनन्दों को प्राप्त करने के लिए ख़ज़ाने खर्च कर डालते हैं और वे शराबें पीते हैं, नहरों के किनारों और बहुत पानियों, बुलंद वृक्षों, और फलदार पेड़ों और गुच्छों के पास उच्च श्रेणी के फर्शों पर बैठ कर और कोई ख़बर नहीं कि प्रजा और मिल्लत पर क्या बलाएं टूट पड़ी हैं और उन्हें राजनीतिक मामलों और लोगों के हितों का कोई ज्ञान नहीं, और उन्हें मामलों की व्यवस्था, बुद्धि और अनुमान से कुछ भी भाग नहीं मिला। और जो लोग बचपन में उनके शिक्षक बनाये जाते हैं वही उन्हें शराब बाजों और पहाड़ों पर मदिरापान की महफ़िल सजाने की प्रेरणा देते हैं। विशेष तौर पर वर्ष पर प्रात:काल की समीर के चलने के समय। इसी प्रकार ख़ुदा की अवैध चीज़ों के पास जाते हैं और

نسيمالصبا كذالك يقربون حرمات الله ولا يجتنبون ولا يُؤدّون فرائض الولاية ولا يتّقون ولذالك يرون هزيمة على هزيمة وتراهم كل يوم فى تنزّل ومنقصة فإنهم أسخطوا ربّ السماء وفُوِّضَ إليهم خدمة فما أدّوها حق الاداء أتزعمون أنهمخلفاء الإسلام كلا بل هم أخلدوا إلى الارض وأنّى لهمحظّ من التقوى التّام ولذالك ينهزمون من كل من نهض للمخالفة ويولّون الدّبر مع كثرة الجند والدولة والشوكة وما هذا إلا أثر السُّخط الذى نزل عليهم من السماء بما آثروا شهوات النفس على حضرة الكبرياء وبما قدّموا على الله مصالح الدنيا الدنيّة وكانوا عظيم النهمة فى لذّاتها وملاهيها الفانية ومعذالك

उनसे बचते नहीं तथा हुकूमत के कर्तव्यों का पालन नहीं करते और संयमी नहीं बनते। यही कारण है की पराजय पर पराजय देखते हैं और प्रतिदिन अवनति और कमी में हैं। इसलिए कि उन्होंने आकाश के प्रतिपालक को नाराज़ किया और जो सेवा उनके सुपुर्द हुई थी उनका कोई हक़ अदा न किया। क्या तुम दावा करते हो कि वे इस्लाम के ख़लीफ़े है। ऐसा नहीं अपितु वे ज़मीन की ओर झुक गए हैं और पूर्ण संयम से उन्हें कहाँ हिस्सा मिलता है। इसलिए प्रत्येक से जो उनके विरोध के लिए उठ खड़ा हो पराजित होते हैं और सेनाओं की प्रचुरता, दौलत और प्रतिष्ठा के बावजूद भाग निकलते हैं। और यह वह सब प्रभाव उस लानत का है जो आकाश से बरसती है इसलिए कि उन्होंने नफ़्स की इच्छाओं को ख़ुदा पर प्राथमिक कर लिया। और तुच्छ दुनिया के हितों को अल्लाह पर ग्रहण कर लिया और दुनिया के नश्वर खेल-कूद और आनंदों में बहुत लोलुप हो गए और इसके साथ अहंकार घमण्ड और आत्मप्रदर्शन के अपवित्र दोष में क़ैद हैं, धर्म में सुस्त और हार खाए हुए तथा गन्दी इच्छाओं में चुस्त चालाक हैं। तो एक

كانوا أُسارى فى ذميمة النخوة والعجب والرياء الكسالى فى الدين والفاتكين فى سبل الاهواء فكيف يُعطَى لسقط جُلّى ومكرمة و كيف يوهب لفُضلةٍ فضيلة ومرتبة فإنهم بسأوا بالشهوات ونسوا رعاياهم ودينهم وما أدّوا حق التكفّل والمراعات يحسبون بيت المال كطارف أو تالد ورثوه من الآباء ولا يُنفقون الاموال على مصارفها كما هو شرط الاتّقاء ويظنّون كأنهم لا يُسألون وإلى الله لا يرجعون فيذهب وقت دولتهم كأضغاث الاحلام والفىء المنتسخ من الظلام ولو اطّلعتَ على أفعالهم لاقشعرّت منك الجلدة واستولت عليك الحيرة ففكروا أهؤلاء يشيّدون الدين ويقومون له كالناصرين؟ أهؤلاء يهدون

कम हिम्मत को बुज़ुर्गी क्यों कर दी जाए और एक विष्ठा को श्रेष्ठता और पद क्यों दिया जाए इसलिए कि उन्होंने इच्छाओं से प्रेम पकड़ लिया और अपनी प्रजा और धर्म को भुला दिया और पूरी देख-भाल नहीं करते। बैतुल माल को बाप दादों से विरासत में आया हुआ माल समझते हैं और प्रजा पर उसे खर्च नहीं करते जैसे कि संयम की शर्त है और गुमान करते हैं कि उनसे पूछ-ताछ न होगी और ख़ुदा की ओर लौटना नहीं होगा तो उनकी दौलत का समय डरावने स्वप्न की तरह गुज़र जाता है या उस छाया की तरह जिसे अंधकार दूर कर देता है। यदि तुम उनके कार्यों पर सूचना पो तो तुम्हारे शरीर पर रौंगटे खड़े हो जाएं और हैरत तुम पर विजयी हो जाए अत: विचार करो क्या ये लोग धर्म को पुख़्ता करने और उसके सहायक हैं? क्या यह लोग पथभ्रष्टों को मार्ग बताते और अंधों का उपचार करते हैं। नहीं-नहीं अपितु उनके मतलब और उद्देश्य और ही हैं जिन्हें सुबह-शाम पूरा करते हैं उन्हें शरीअत के आदेशों से संबंध ही क्या अपितु वे तो चाहते ही हैं कि उसकी क़ैद से निकल कर पूर्ण आज़ादी से जीवन व्यतीत करें और सच्चे

الضالّين و يعالجون العمين؟ كلا بل لهم أغراض دون ذالك فهم يعملون بها مصبحين وممسين ما لهم و لاحكام الشريعة بل يريدون أن يخرجوا من ربقتها و يعيشوا بالحريّة وأين لهم كالخلفاء الصادقين قوة العزيمة و كالاتقياء الصالحين قلب متقلّب مع الحق والمعدلة؟ بل اليوم سُرُرُ الخلافة خالية من هذه الصفات وأُلقيَ عليها أجساد لا أرواح فيها بل هي أردء من الاموات وإن وجودهم أعظم المصائب على الإسلام وإن أيامهم للدين أنحس الايام يأكلون ويتمتّعون ولا ينظرون إلى المفاسد ولا يحزنون ولا يرون الملّة كيف ركدت ريحها وخبت مصابيحها و كُذّب رسولها وغُلّط صحيحها بل تجد أكثرهم مُصرّين على المنهيات المُجترئين على سَوْق الشهوات إلى سُوق

खलीफों की सी शक्ति संकल्प उनमें कहाँ और सदाचारी और संयमियों का सा दिल कहाँ जिसका आचरण हक़ और अदालत हो, अपितु आज ख़िलाफ़त के तख्त इन विशेषताओं से रिक्त हैं और उन पर रूह रहित शरीर बिठाये गए हैं। अपितु वे मुर्दों से भी अधिक रद्दी हैं और उनका अस्तित्व इस्लाम के पक्ष में बहुत बड़ा संकट है और धर्म के लिए उनके दिन बहुत अशुभ दिन हैं, खाते-पीते हैं और ख़राबियों की ओर नहीं देखते और न कुढ़ते हैं तथा ध्यान नहीं करते कि मिल्लत की हवा ठहर गई है और उसके रसूल को झुठलाया जा रहा है तथा उसके सही को ग़लत कहा जा रहा है। अपितु उनमें से बहुत से ख़ुदा की विशेष चीज़ों से अड़े बैठे हैं और बड़ी दिलेरी से इच्छाओं को अवैध चीज़ों के बाज़ारों में ले जाते हैं दुराचारों के स्थानों में शीघ्र दौड़ कर जाते हैं। सुन्दर स्त्रियों और रागरंग तथा हर प्रकार की मूर्खताओं पर झुके हुए हैं सुबह शाम उनका प्रसन्न जीवन प्रत्येक प्रकार के आनंदों में व्यतीत होता है तो ऐसे लोगों को ख़ुदा से मदद क्योंकर मिले

المحرمات المسارعين بنقل الخطوات إلى خطط الخطيات المتمايلين على الغيد والاغاريد وأنواع الجهلات المصبحين فى خُضُلّة من العيش والممسين فى أنواع اللذّات فكيف يُؤَيّدون من الحضرة مع هذه الاعمال الشنيعة والمعصية بل من أول أسباب غضب الله على المسلمين وجود هذه السلاطين الغافلين المترفين الذين أخلدوا إلى الارض كالخراطين وما بذلوا لعباد الله جهد المستطيع وصاروا كظالع وما عدوا كالطِرِّفِ الضليع ولاجل ذالك ما بقى معهم نصرة السماء ولا رعبٌ فى عيون الكفرة كما هو من خواص الملوك الاتقياء بل هم يفرّون من الكفرة كالحُمُر من القسورة و كفى لالف منهم اثنان فى موطن الملحمة فما سبب هذا الجبن وهذا الادبار إلا عيشة

जबकि उनके ऐसे गुनाह से भरे और बुरे कर्म हों अपितु उन आराम पसंद लापरवाह बादशाहों का अस्तित्व मुसलमानों पर ख़ुदा तआला का बड़ा भारी क्रोध है जो गंदे कीड़ों की तरह जमीन से लग गए हैं और ख़ुदा के बन्दों के लिए पूरी शक्ति खर्च नहीं करते और लंगड़े ऊंट के समान हो गए हैं और चुस्त चालाक घोड़े के सामान नहीं दौड़ते। इसी कारण से आकाश की सहायता उनका साथ नहीं देती और न ही काफ़िरों की आँख में उनका डर-भय रहा है जैसे कि संयमी बादशाहों की विशेषता है अपितु यह काफ़िरों से यों भागते हैं जैसे शेर से गढ़े और लड़ाई के मैदान में इनके दो हज़ार के लिए दो काफ़िर पर्याप्त हैं। तो जब इस कायरता और पतन का कारण व्यभिचारियों की तरह ऐश-व-आराम में जीवन व्यतीत करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं और ऐसी बेईमानी और गुमराही के होते उन्हें ख़ुदा से मदद क्योंकर मिले। इसलिए ख़ुदा अपनी अनश्वर सुन्नत को परिवर्तित नहीं करता और उसकी सुन्नत है की काफ़िर को तो सहायता देता है परन्तु दुराचारी को

التنعّم والا تراف كالفجّار و كيف يُعضّدون بالنصرة والإعانة مع هذه الغواية والخيانة فإن الله لا يُبدّل سُنّته المستمرة ومن سُنّته أنه يؤيّد الكفرة ولا يؤيّد الفجرة ولذالك ترى ملوك النصارٰى يؤيّدون ويُنصَرون ويأخذون ثغورهم ويتملّكون ومن كل حدَبٍ ينسلون وما نصرهم الله لرحمته عليهم بل نصرهم لغضبه على المسلمين لو كانوا يعلمون و كيف أُظْهِرَ عليهم أعداء هم إن كانوا يتّقون بل لمّا تركوا الدعاء و التعبّد ما عبأ بهم ربهم فهم بما كسبوا يُعَذّبون وإن شرّ الدواب قوم فسقوا بعد إيمانهم ويعملون السيئات ولا يخافون فبما نكثوا عهد الله ونقضوا حدود الفرقان طوّحت بهم طوائح الزمان وخرج من أيديهم كثير من البلدان وأنأتهم غفلتهم

कदापि नहीं देता। यही वह है कि ईसाई बादशाहों को सहायता मिल रही है और वे इनकी सीमाओं हुकूमतों पर क़ब्ज़ा कर रहे हैं और प्रत्येक रियासत को दबाते चले जा रहे हैं। ख़ुदा तआला ने उनको इसलिए सहयता नहीं दी कि वह उन पर दयालु है, अपितु इसलिए कि उसका क्रोध मुसलमानों पर भड़का हुआ है काश मुसलमान जानते। और यदि यह सयंमी होते तो क्योंकर संभव था कि इनके शत्रु इन पर विजयी किए जाते। अपितु जब उन्होंने दुआ और इबादत को त्याग दिया तब ख़ुदा ने भी इनकी कुछ परवाह न की। तो यह अब अपनी करतूतों के कारण दंड पा रहे हैं। और निस्संदेह ख़ुदा के निकट सब प्राणियों से निकृष्टतम वे लोग हैं जो ईमान के बाद पापी हो जाएँ। और व्यभिचार करें तथा न डरें। ख़ुदा की प्रतिज्ञा तोड़ने और क़ुर्आन की हदों का अपने करने के कारण उन पर भयानक घटनाएँ उतर रही हैं। और उनके हाथों से बहुत से शहर निकल गए हैं। लापरवाही ने उनको अधिकारों से दूर कर दिया है। और सलीब के उपासकों के तम्बू उनके देशों

عن حقوقهم وضُربت عليهم خيام أهل الصلبان نكالا من الله وأخذًا من الديّان إنّهم بارزوا الله بالمعصية فولّوا الدبر من الكفرة وما أخزاهم عداهم ولكن الله أخزاهم فإنهم عصوا أمام أعين الله فأراهم ما أراهم وتركهم فى آفات وما نجّاهم ووزراؤهم قوم مغشوشون يأكلون أموالهم ولا يخلصون لا يمنعونهم من التعامى و التصابى ويُغمضون لهم كالفطن المتغابى وينضحون عنهم كالمداهن المُحابى وإنهم قسمان قسم كالعقارب وقسم كالنسوان أو نقول بتبديل البيان قسم كعُمر جاهل ما أعطى لهم حظ من العرفان وقسم كذى غمر متجاهل لا يريدون إلا هلاك ملوكهم كالشيطان يرون سلاطينهم يقربون حرمات الله ومناهى الشرع ثم ينددون بأنه من

में आ लगे हैं। ये सब ख़ुदा तआला की ओर से दंड और गिरफ़्त है। यथाशक्ति उन्होंने व्यभिचार करके ख़ुदा का मुक़ाबला किया। इसका परिणाम यह हुआ कि काफ़िरों से पराजित हो गए। दुश्मनों ने इन्हें बदनाम नहीं किया, अपितु ख़ुदा ने किया। इसलिए कि ख़ुदा की आँख के सामने इन्होंने अवज्ञाएं कीं तो उसने इन्हें दिखाया जो दिखाया, और इन्हें आपदाओं में छोड़ दिया और न बचाया और इनके वज़ीर बेईमान ख़यानत करने वाले हैं उनका माल खाते हैं और निष्कपट नहीं और उन्हें अंधा बन जाने और ग़लती की ओर झुक जाने से नहीं रोकते, और लापरवाह आचरण वाले बुद्धिमान की तरह अनदेखा करते हैं और चापलूसी करने वाले बच-बच कर चलने वाले की तरह उनकी सहायता और प्रतिरक्षा करते हैं और उन लोगों के दो प्रकार हैं कुछ तो बिच्छू के समान हैं और कुछ स्त्रियों के समान या अन्य शब्दों में हम लोग कहते हैं कि एक भाग तो वे मूर्ख असभ्य हैं जिन्हें इरफ़ान से कुछ भी भाग नहीं मिला और एक भाग वे हैं जो जानबूझकर मूर्ख बने हुए

المباحات وليس مما يخالف طريق الورع ويُزيّنون فى أعينهم أمرا هو أقبح السيئات ويريدون أن يجعلوهم كالعجماوات بل الجمادات ولا يخرج من أفواههم قول يقرب الصدق والصواب ولا يبغون فى أنفسهم إلا الهلاك والتباب لا يذاكرون ملوكهم بما هو خير لهم فى هذه ويوم المكافات بل يتركونهم كالسباع المفترسة والحيوات ويسعون فى كل وقت من الاوقات أن ينبأ سمعهم عن أوامر الله وسنن خير الكائنات ولا يُخوّفونهم من عواقب الغفلة ولا يؤثّمونهم عند ارتكاب المعصية فهل هم بهذه السيرة لهذه الملوك إلا كحُفرة للرجلين المتخاذلين أو كوقود لنار أو كغشاوة على العينين لا

हैं और शैतान की तरह अपने बादशाहों की मौत चाहते हैं देखते हैं कि उनके बादशाह ख़ुदा और शरीअत की अवैध की हुई वस्तुओं के क़रीब जाते हैं फिर भी कहते हैं कि यह वैध चीज़ें हैं और संयम की पद्धति के विपरीत नहीं और दुराचारों को उनकी आंखों में सजाते हैं और उनको चौपाए या पत्थर बनाना चाहते हैं और कोई हक़ तथा सत्य की बात उनके मुँह से नहीं निकलती और अपने दिलों में तबाही और मौत के अतिरिक्त और कुछ नहीं। और उनको बादशाहों से इन बातों की चर्चा नहीं करते जो इस संसार में और आख़िरत में उनके काम आएं अपितु उनको शिकारी दरिंदों और सांपों के समान रहने देते हैं और हर घड़ी इस कोशिश में रहते हैं कि उनके काम ख़ुदा के आदेश और ख़ुदा के रसूल की सुन्नत के सुनने से दूर रहें। और लापरवाही के बुरे अंजाम से उन्हें नहीं डराते और व्यभिचार करते समय उन्हें व्यभिचारी नहीं ठहराते। अत: ऐसी आदत और चाल चलन के लोग उन बादशाहों के पक्ष में ऐसे हैं जैसे गड्ढा लड़खड़ाने वाले पाँव के पक्ष में, या

يُطفئــون أُوارهــم بــل يحمــدون عثارهــم ولذالــك صــارت ملوكــهم غرضًــا لحصائــد الألسـنة وسُــمّوا قومًــا كُســالى فى الجرائــد المغربيــة بــل أجمــع أهــل الــرأى مــن النصــارى نظــرًا عــلى هــذه الحــالات عــلى أن أيامــهم ايّــام معــدودة وســيزول أمرهــم وإمرتــهم فى أســرع الأوقــات وإذا هلــك ســلطان الــروم مثــلا فــلا ســلطان بعــده عنــد هــؤلاء الذيــن رمــوا أحجــار الآراء والله يعلــم مــا كتمــه ومــا يفعــله رأىٌ فى الارض ورأىٌ فى الســماء فمــن ذا الذى يُنبّــه هــؤلاء ومــن يوقــظ النائمــين ويُخبرهــم مــن هــذا البــلاء ولا شــك أن أكثــر هــذه الملــوك أســرفوا عــلى أنفســهم وجــاوزوا الحــدّ فى التنعــم واللُّهنيّــة وجعلــوا نفوســهم رهينــة الفســق والكســل

जैसे इंधन अग्नि के लिए, या पर्दा आंखों पर। उनकी प्यास को नहीं बुझाते अभी तो उनकी ग़लतियों की प्रशंसा करते हैं इसी कारण से उनके बादशाह लोगों की बातों के निशाना बने हुए हैं और यूरोप के अखबार इन्हें सुस्त और अयोग्य लिखते हैं। अपितु इन हालतों को देखकर ईसाई बुद्धिमान लोग सहमत होकर कहते हैं कि उनके दिन अब थोड़े रह गए हैं। और बहुत शीघ्र इन का ताना-बाना उधिड़ने वाला है। और जब उदाहरणतया रूम का बादशाह मर गया तो इन राय देने वालों के नज़दीक इसके बाद कोई और सुल्तान नहीं। अल्लाह तआला जानता है उसे जो गुप्त रखा है और जो कुछ करता है। एक राय ज़मीन में है और एक राय आकाश में। तो अब कौन उनको जगाए और कौन सोने वालों को जगाए और इस बला की सूचना दे। इसमें संदेह नहीं कि अधिकतर बादशाह किसी कार्य में सीमा से बहुत आगे बढ़ जाते हैं और ऐश-व-आराम में सीमा से निकल गए हैं और पाप एवं सुस्ती तथा गुनाह में ग्रस्त हैं। सुंदर स्त्रियों की तलाश में रहते हैं और उनसे मिलने

والمعصية لا يزالون يبغون غانية من النساء ويستقرون حيلة لوصالها ولو بالفحشاء ويبذلون بدرة لو نزل البدر من السماء تفانت قواهم من الفسق والفجور وذهبت نَضرتهم و نُضارهم فى فكر النسوة والقصور وترٰى كثيرًا منهم خلت صرّتهم وسرت مسرّتهم وبُدّل بالخطر خطرتهم وضاعت لامرأة إمرتهم وظهر قتر الفقر بعد ما أودع سر الغنى أسرّتهم وحسر بصرهم من الحزن ودامت حسرتهم ومع ذالك لا يتركون الشهوات والشهوات تتركهم بالشيب والامراض والآفات ولا يتّقون شططا وغلوًّا فى استيفاء الحظوظ كالفجرة حتى ينجر الامر إلى تلاشى الصحّة واختلال البنية وتزهق أنفسهم وهم يتمنّون أن تعود أيام الصحّة والقوّة كأنهم وقفوا

के बहाने सोचते रहते हैं। चाहे अवैध बहाने क्यों न हों, और बुरे मार्ग पर खर्च करते हैं यदि चौदहवीं का चांद आकाश से उतर आए। व्यभिचार से उनकी शक्तियां समाप्त हो गई हैं। और हूर व महलों की चिंता में ज़ोर तथा धन सब जाता रहा है। अधिकतर की थैलियाँ खाली हो गईं और प्रसन्नता जाती रही तथा सामान तबाह हो गया। और स्त्री के पीछे अमीरी मिट्टी में मिल गई और दौलत तथा समृद्धि के पश्चात अब शाम की रोटी के मोहताज हो गए हैं। और ग़म के मारे आंखें ख़राब हो गई हैं और निराशा बढ़ गई है। इस पर भी वह स्वयं इच्छाओं को नहीं त्यागते। हां इच्छाएं उन्हें रोगों और आपदाओं के समय छोड़ जाती हैं। और जब व्यभिचारियों की तरह नफ़्स के आनंद को पूर्ण करने पर आते हैं तो कोई सीमा बंधन रहने नहीं देते। अंतत: शरीर की शक्तियों और स्वास्थ्य की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। और यों स्वास्थ्य और शक्ति के दोबारा मिलने की इच्छाओं में प्राण निकल जाते हैं। जैसे उन लोगों ने अपने शरीर और शक्ति को व्यभिचारी

أبدانهم وقواهم على البغايا وآثروا حبّهن على عصمة النفس والعرض والملّة إن هٰؤلاء قوم صاروا للشيطان كفيء وليسوا من الخير فى شيء ترى طبائعهم كأرض ذات كسور غير المسحاء متلوّنة فى الصباح والمساء وترى قلوبهم مظلمة من الكبر والخيلاء كَاَنّها هزيع من الليلة الليلاء يفرحون بمرابط مملوة من طرف وبغال وبقر وجمال أو نساء ذات بهاء وحسن وجمال ولا يتعهّدون فرائضهم ولا يخافون يوم ارتحال وساعة أخذٍ وسؤال وينفدون يومهم فى الزينة والمشط والاكتحال وما بقى فيهم سيرة من سير الرجال وإذا رأيتهم بذأتهم وحسبتَهم نساء الاسواق أو عبيدًا زُيّنوا للبيع بعد الاسترقاق لا يُداومون على الصلاة وصارت أهواءهم فى

स्त्रियों पर समर्पित कर रखा है और उनकी मुहब्बत को प्राण और सम्मान तथा माल और मिल्लत के बचाव पर प्राथमिक कर लिया है। ये लोग शैतान का प्रतिबिंब हैं और इनके अस्तित्व में कोई भलाई नहीं। इनकी तबियतों को तू देखता है जैसी ज़मीन नीची ऊंची, असमतल सुबह शाम नए-नए रंग निकालती हैं और घमंड तथा अंहकार से उनके दिल काले हो गए हैं जैसे वे घोर अंधकारमय रात के टुकड़े हैं। उन्हें इस बात की प्रसन्नता है कि उनके अस्तबल उच्च श्रेणी के घोड़ों और खच्चरों, गायों और ऊंटों से भरपूर हों, या सुंदर स्त्रियां उनके पास हों, अपने कर्तव्यों का कुछ भी ध्यान नहीं रखते और कूच के दिन का और पूछताछ तथा गिरफ़्त की घड़ी का कोई भय नहीं। कंघी पट्टी और सुरमा लगाने में सारा दिन खर्च कर देते हैं और पुरुषों की आदत और गंध उनमें रही ही नहीं। यदि तुम उन्हें देखो तो घृणा करो और बाज़ारी स्त्रियां समझो या वे दास जो गुलाम करने के बाद देखने के लिए सजाए जाते हैं। नमाज़ की पाबंदी नहीं करते और इच्छाएं उनके

سبلهم كالصلات و إن صلّوا فيُصلّون فى البيوت كالنساء ولا يحضرون المساجد كالاتقياء و كيف و إنهم لا يُفارقون كأس الصهباء ولا يتركون أدناس الندماء ولا يطيقون أن يسمعوا من الوعظ كلمة فيأخذهم عزة كبرٍ أو نخوة ويتوغّرون غضبا وغيرة ويكون أكرم الناس عندهم من زيّن لهم حالهم وحمدهم وأعمالهم و كذالك فسدت أخلاقهم من مداومة المُدام واستأصلتهم شجرة الكرم مع كونهم من أبناء الكرام ما بقى هممهم من غير أن يكون لهم قصر منيف وغذاء لطيف وشراب حرّيف وما سُمع منهم تطريف ولذالك لحقهم وبالٌ وخسران وجُزّوا كما يُجَزّ ضان وقُضّبوا كما تُقضّب اغصان وأخِذُوا كما يوخذ دابّة وقطعوا كما يقطع قضابة وسقطوا من ذرَى

मार्ग में चट्टान और रोग बन गई हैं और यदि नमाज़ पढ़ें भी तो औरतों के समान घर में पढ़ते हैं। और संयमियों की तरह मस्जिदों में उपस्थित नहीं होते और हों भी क्योंकर, मदिरा के जाम से तो पृथक नहीं होते और साथियों की गंदगियों को नहीं त्यागते, तथा उपदेश की कोई बात सुन नहीं सकते तुरंत घमंड और अहंकार का सम्मान उन्हें जोश दिलाता है, और ग़ज़ब (क्रोध) और स्वाभिमान में नीले-पीले हो जाते हैं। और उनके नज़दीक बड़ा आदरणीय वह होता है जो उनका हाल उन्हें सुंदर करके दिखाए और उनकी तथा उनके कर्मों की प्रशंसा करे। अत: इस प्रकार मदिरापान से उनके आचरण बिगड़ गए हैं और अंगूर के वृक्ष ने उनका उन्मूलन कर दिया है। हालांकि ये लोग बुज़ुर्गों की संतान थे। इनका मतलब और उद्देश्य अब यही रह गया है कि बड़ी बुलंद हवेलियां हों, उत्तम भोजन हो और जीभ को तेज़ी के साथ काटने वाली शराब हो। कभी नहीं सुना गया कि इन्होंने ने दुश्मन पर चढ़ाई की हो। इसी कारण से उन पर बवाल पड़ा और भेड़ बकरी की तरह उनकी ऊनें

دولة و إمارة كما يسقط ثوب من كارة بغرارة ولما رأى الله فسقهم وفجورهم وظلمهم وزورهم وبطرهم و كفورهم سلّط عليهم قوما يتسوّرون جدرانهم و كل ما علا يتسلّقون ومما ملكه آباء هم يتملّكون ومن كل حدَبٍ ينسلون و كان ذالك أمرًا مفعولا وأنتم تقرء ونه فى القرآن ولكن لا تُفكّرون وقفّى على آثارهم بقسوس فهم يُضلّون الناس ويخدعون ويرغّبونهم فى دينهم الباطل بمال ونساء وبكل ما يُزيّنون فيبيع السفهاء دين الله برغفان ونسوان وأمانى أخرى كما أنتم تنظرون والاثم كله على الملوك بما لم يصلحوا أمر رعاياهم وما رأوا مفاسدهم بوبلة و كانوا لا يبالون فقلبت أمور دنياهم بما قلبوا تقوى القلوب و كانوا على المعاصى يجترء

काटी गईं। और शाखाओं की तरह काटे गए और चौपायों के समान पकड़े गए तथा लकड़ी के सामान काटे गए। और अमीरी और दौलत की ऊँचाई से गिर गए जिस प्रकार अचानक गट्ठ से कोई कपड़ा गिर जाता है। और जब ख़ुदा ने उनका दुराचार, अत्याचार, झूठ, इतराना, कृतघ्नता देखी इन पर ऐसे लोगों को कब्ज़ा दिया जो उनकी दीवारों को फांदते और हर ऊंची जगह पर चढ़ जाते हैं। और उनके बाप दादा की जायदाद पर कब्ज़ा करते हैं तथा प्रत्येक रियासत को दबाते चले जाते हैं। और यह सब कुछ होने वाला था। और तुम क़ुर्आन में यह बातें पढ़ते हो और सोचते नहीं। और उनके पीछे-पीछे पादरियों को भेजा जो लोगों को धोखा देते तथा गुमराह करते और अपने झूठे धर्म का शौक दिलाते हैं। माल तथा स्त्रियों का लालच देकर तो मूर्ख लोग ख़ुदा के धर्म को रोटियों, स्त्रियों और अन्य इच्छाओं के बदले बेच डालते हैं। और यह समस्त गुनाह बादशाहों की गर्दन पर है जिन्होंने प्रजा के हाल का सुधार न किया और उनकी बुराइयों को गुनाह

ون وإن الله لا يغيّر ما بقوم حتى يُغيِّروا ما بأنفسهم ولا هم يُرحمون بل الله يلعن بيوتا يفسق الناس فيها وبلادا فيها يجترمون وتنزل الملائكة على دار الفسق والظلم ويقولون ما عمّرك الله يا دار وخرّبك يا جدار وينزل أمر الله فيهلكون ويحدث الله سببا لهدم تلك الحيطان وتخريب تلك البلدان فيأتى قوم فيهدّونها من أساسها وكذالك يفعلون فلا تسبّوا ملوك النصارى ولا تذكروا ما مسّكم من أيديهم ولا تلوموا إلا أنفسكم أيها المعتدون أتسمعون ما أقول لكم؟ كلا بل تعبسون وتشتمون وانّى لكم آذان تسمع وقلوب تفهم وأين لكم الفراغ أن تنقلوا من الاكل إلى العقل وإلى الديّان من الدنان وأين فيكم فتيان يتذكّرون؟ أتسبّون أعداء كم وما

और कुछ बुरा न समझा। तथा कुछ भी परवाह न की फिर जबकि उन्होंने दिलों का संयम बदल दिया, ख़ुदा ने उनके सांसारिक मामलों को बदल दिया और इसलिए भी कि वे पापों पर दिलेर थे और ख़ुदा तआला किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक वह अपनी आंतरिक हालत को स्वयं न बदल लें। और न ही उन पर दया की जाती है। अपितु ख़ुदा उन घरों पर लानत करता है और उन शहरों पर जिन में लोग दुराचार और अपराध करें और दुराचार के घरों पर फ़रिश्ते उतर कर कहते हैं। हे घर! ख़ुदा तुझे वीरान करे, और है दीवार! ख़ुदा तुझे ध्वस्त कर दे, और ख़ुदा का आदेश उतरता है तो वे मर जाते हैं। और ख़ुदा उन दीवारों और शहरों की बर्बादी के लिए कारण पैदा करता है तो एक क़ौम आती है और उनको तबाह और वीरान कर देती है। इसलिए ईसाइयों के बादशाहों को मत कोसो और जो कुछ तुम्हें उनके हाथों से पहुंचा है उसे याद मत करो। हे दुष्कर्मियो! स्वयं अपने आप की भर्त्सना करो क्या तुम मेरी बातें सुनते हो, नहीं तुम तो मुंह बनाते और

نالكم إلا جزاء ما كنتم تكسبون واعلموا أنكم إن كنتم صالحين لاصلح الملوك لكم و كذالك جرت سُنّة الله لقوم يتّقون وانتهوا من اطراء ملوك الاسلام واستغفروا لهم أن كنتم تنصحون ولا تتقدّموا إليهم بموائد فيها سمٌّ فيأكلون ويموتون وأنتم تعيشون معهم فى رخاء وتغترفون من فُضالتهم فان مسّهم ضرٌّ فكيف تُعصمون وإنهم ملكوا رقابكم وأعراضكم وأموالكم فانصحوا للذين يملكون وقد جعلهم الله لكم كمعدّات وجعلكم لهم كآلاتٍ فتعاونوا على البر والتقوى ان كنتم تخلصون ونبّهوهم على سيئاتهم واعثروهم على هفواتهم إن كنتم لا تنافقون ووالله إنهم قوم لا يؤدّون حقوق عباد أُمِّروا عليهم ولا يُحافظون الفرائض ولا يتعهّدون وتعرفونه بوجه أكسف

गालियां देते हो। और तुम्हें सुनने वाले कान और समझने वाले दिल तो मिले ही नहीं और तुम्हें इतनी फ़ुरसत ही कहां कि खाने पीने से बुद्धि की ओर आओ और मदिरा के प्याले से पृथक होकर ख़ुदा की ओर ध्यान करो। तथा तुम में सोचने वाले जवान ही कहां हैं। क्या तुम शत्रुओं को कोसते हो? और तुम्हें जो कुछ पहुँचा है अपने दुष्कर्म के कारण पहुँचा है। सुनो तुम यदि सदाचारी होते तो बादशाह भी तुम्हारे लिए सदाचारी बनाए जाते। इसलिए कि संयमियों के लिए ख़ुदा तआला की ऐसी ही सुन्नत है। और मुसलमान बादशाहों की प्रशंसा करने से रुक जाओ और यदि उनके शुभचिंतक हो तो उनके लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) पढ़ो और उनके आगे ऐसे भोजन न ले जाओ जिनमें विष है। जिन्हें खा कर वे मर जाएं। तुम उनके अस्तित्व के कारण बड़े आनंद में गुज़ारा करते हो और उनके बचे-खुचे खाते हो। फिर यदि उन्हें हानि पहुँची तो तुम्हारा ठिकाना कहां, और वे तुम्हारी गर्दनों, सम्मानों और धनों के मालिक हैं इसलिए अपने मालिकों की सच्ची हमदर्दी

مـن بالـهم وزىّ أوحـش مـن حالـهم كأنّ بواطنـهم مسـخت و
كأنـهم أُنشِـئوا فى مـا لا يعلمـون وتـالله إنّـا نـرى أن قلوبـهم
قاسـية بـل أشـد قسـوة مـن أحجـار الجبـال وإن طبائعـهم
متوقـدة ولا كالنمـور وأفاعـى الدحـال وإنـهم قـوم لا
يتضرّعـون فثبـت مـن هـذه الافعـال والاعمـال أنـهم أسـخطوا
ربـهم واختـاروا طـرق الضـلال وأكلـوا سـمّا زعافـا ثـم
أشـركوا فيـه رعاياهـم فلـهم سـهمان مـن الوبـال يـرِدُون
جهنـم ويـوردون وكل مـا نـزل عـلى الإسـلام فهـو نـزل مـن
سـوء أعمالـهم وفسـاد الافعـال فهـل فيكـم رجـل يفـهم نتائـج
هـذه الخصـال أيهـا المتكلّمـون فإنـهم قـوم ضيّعـوا دينـهم
للاهـواء والاعمـال وصـاروا كأحـول فى جميـع الاحـوال
بـل أراهـم عميـا لا يبصـرون ولا أقـول لكـم أن تخرجـوا

करो ख़ुदा ने उन्हें तुम्हारे हक़ में समान और तुम्हें उनके उपकरण बनाया है तो यदि मुख़्लिस हो तो संयम और नेकी पर एक-दूसरे के सहायक बन जाओ, और उन्हें उन के दुराचार पर अवगत करो और व्यर्थ बातों पर उन्हें सूचना दो। यदि तुम कपटाचारी नहीं। ख़ुदा की क़सम वे अपनी प्रजा के अधिकार अदा नहीं करते, और कर्तव्यों की पूरी देखभाल नहीं करते। तुम इस बात को उनका मुंह देख कर पहचान लोगे जो उनके दिल से भी अधिक भोंडी और लिबास से जो उनके हाल से अधिक भयानक है। जैसे उनके अंत:करण विकृत हो गए हैं और जैसे उन्होंने किसी अन्य संसार में पोषण पाया है। ख़ुदा की क़सम उनके दिल पर्वतों के पत्थरों से भी अधिक कठोर हैं, और उनके स्वभाव सांपों और चीतों से भी अधिक भयावह हैं, और वे कभी ख़ुदा के सामने गिड़गिड़ाते नहीं। इन कार्यों और कर्मों से सिद्ध हो गया कि उन्होंने ख़ुदा को नाराज़ कर के गुमराही के तरीके ग्रहण किए हैं और स्वयं घातक विष खाकर प्रजा को भी उसमें सम्मिलित कर लिया है।

من ربقتهم وتقصدوا سبيل البغاوة والقتال بل اطلبوا صلاحهم من الله ذى الجلال لعلهم ينتهون ولا تتوقّعوا منهم أن يُصلحوا ما أفسدت أيدى الدجّال أو يقيموا الملّة بعد تهافتها وبعد ما ظهر من الاختلال ولكل موطن رجال كما تعلمون وهل يُرجى إحياء الناس من الميّت أوالهداية من الضال أو المطر من الجهام أو الولوج فى سم الخياط من الجمال فكيف منهم تتوقعون وتالله إنّا لا نتوقّع صلاحهم حتى يوقظهم الاحتضار ولكن نُدِب إلينا الاذكار وإنّا لا نحسبهم إلا كطير محلّق لا يُصاد أو كعمر لا يُستعاد أو كخفافيش خربت منها البلاد أو كبلدة ما أصابها العهاد أو كظل غير ظليل لا تأوى إليه العباد أو كسم قُطّعت منه الاكباد عظمت صدمة عثرتهم وما أرى

अत: उनके लिए बवाल से दो भाग हैं। वे नर्क में स्वयं भी पड़ेंगे और दूसरों को अपने साथ डालेंगे। इस्लाम पर जो कुछ उतरा उनके दुष्कर्मों से हुआ। तो हे कलाम करने वाले! तुम में कोई ऐसा है जो उन्हें इन आदतों के परिणामों से अवगत करे। इसलिए कि इन लोगों ने अपवित्र इच्छाओं के पीछे अपना धर्म खो दिया है और समस्त हालतों में भेंगे बन गए हैं। अपितु मेरे नज़दीक तो वे बिल्कुल अंधे हैं। मैं तुम्हें यह नहीं कहता कि तुम उनका आज्ञा पालन करना त्याग कर उनसे युद्ध और लड़ाई करो। अपितु ख़ुदा से उनकी भलाई मांगो ताकि वे रुक जाएं और उनसे यह तो आशा न रखो कि वे सुधार कर सकेंगे उन बातों का जिन्हें दज्जाल के हाथों ने बिगाड़ दिया है। या वे इतनी तबाही और परेशानी के बाद मिल्लत की हालत सही कर लेंगे। और तुम जानते हो कि प्रत्येक मैदान के लिए विशेष-विशेष मर्द हुआ करते हैं तथा क्या संभव है कि मुर्दा दूसरों को ज़िन्दा कर सके, या गुमराह अन्य को हिदायत दे या खुश्क बादल से वर्षा, और ऊंट का सूई के नाके

مـن يُقلـهم مـن صرعتـهم تـراء وا كحطـب لا كأشـجار ذات الثمـار والحطـب لا يليـق إلا للنـار فقـدوا قـوّة الفراسـة وأصـول السياسـة وأرادوا أن يتعلّمـوا مكائـد جيرانـهم مـن النصـارى فمـا بلغوهـم فى دقائـق الدساسـة وحيـل الحراسـة فمثلـهم كمثـل دِيـكٍ أراد أن يُضاهـى النسـر فى الطـيران فزايـل مركـزه ومـا بلـغ مقـام النسـر فخـر لاغبـا فلقفـه صقـر فى الميـدان هـذا مثـل ملـوك الإسـلام بمقابـلة أهـل الصلبـان أعرضـوا عمّـا عُلّمـوا مـن وصايـا الاتّقـاء ومـا كُمّلـوا فى المكائـد كالاعـداء فبقـوا لا مـن هـؤلاء ولا مـن هـؤلاء وقـد كتـب الله لملـوك دينـه أن لا ينصرهـم أبـدًا إلا بعـد تقواهـم وأراد للنصـارٰى أن يجعلـهم فائزيـن بمكرهـم إذ أسـخط

में दाखिल होना, संभव है तो फिर उनसे क्या आशा रख सकते हो। हमें तो आशा नहीं कि वे समझ जाएं जब तक उन्हें मौत ही आकर न जगाए। हां उपदेश और नसीहत करने का आदेश है और हम तो उन्हें उन परिंदों के समान समझते हैं जो हवा में उड़ते और पकड़े नहीं जाते। या आयु के समान जो वापस नहीं आती। या उन चमगादड़ों के समान जिनसे शहर वीरान हो गए। या उस शहर के समान जिस पर वर्षा ना बरसी हो। या उस बरकतविहीन छाया के समान जिसके नीचे लोग आराम नहीं पाते। या उस विष के समान जिससे जिगर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। इनकी ठोकर का आघात बहुत भारी है और कोई ऐसा दिखाई नहीं देता जो इन गिरते हुओं को संभाले, वे सूखी लकड़ियां हैं फलदार वृक्ष नहीं, और इंधन तो आग के लिए उचित होता है। इनमें विवेक शक्ति और शासन करने के सिद्धान्तों का ज्ञान नहीं। इन्होंने चाहा कि अपने ईसाई पड़ोसियों के छलों को सीखें परंतु बारीक धोखों और बचाव के उपायों में उन तक पहुंच न सके। वे उस मुर्ग़ के समान हैं जिसने उड़ने में बाज़ बनना चाहा तो अपने स्थान से तो उड़

المؤمنون مولاهم ومن سوء القدر أنّا لا نرى فى هذه الايام ملوك الإسلام قائمين على حدود الله العلام لا فى أنفسهم ولا فى الاحكام بل ما بقى فيهم إلا نهمة عشرين لونا من القلايا وسبعين حسناء من المحصنات أو البغايا ولا يعلمون ما فصل القضايا أتحسبون سريرهم حمى الامن؟ وما بقى هو إلا كالدمن أتظنون أنهم يحفظون ثغور الإسلام من الكفرة؟ كلا بل هم يدعونهم بأيدى الغفلة ليتملّكوا ما بقى من أطلال الملّة أتزعمون أنهم كهف الإسلام يا سبحان الله ما أكبر هذا الغلط و إنّما هم يجيحون ببدعاتهم دين خير الانام ولكم أن تُحسنوا الظن فيهم وتنزّهوهم عن السيئات ولكن بأى

गया और बाज़ के स्थान को न पहुंच सका, अंत में थक कर गिरा फिर एक बाज़ ने मैदान में उसे आ दबाया। यह है उदाहरण मुसलमान बादशाहों का ईसाइयों के मुकाबले पर उन्हें जो कुछ ख़ुदा के संयम के बारे में शिक्षा मिली थी उससे तो मुंह फेर लिया और अपने विरोधियों की तरह वे चालाकियां और दाव भी पूरे न सीखे। और मुसलमान बादशाहों के बारे में अल्लाह तआला वादा कर चुका है कि जब तक संयमी न बनेंगे उनकी कभी सहायता न करेगा, और उसने ऐसा ही चाहा है कि ईसाइयों को उनके छल में सफ़ल कर दे जबकि मोमिनों ने उसे नाराज़ किया है। और दुर्भाग्य से हम इस समय मुसलमान बादशाहों को ख़ुदा की हदों पर स्थापित नहीं देखते। अपितु ऐश-व-आराम के लालच के अतिरिक्त उनकी दृष्टि के सामने और कुछ नहीं और प्रजा के मामलों तथा मुक़द्दमों के फ़ैसले की ओर कोई ध्यान नहीं। क्या तुम उनके तख़्त को अमन का सुरक्षित स्थान समझते हो हालांकि वे तो एक अपवित्र और व्यर्थ स्थान है। क्या तुम विचार करते हो कि वे इस्लाम की सीमाओं को काफ़िरों से बचा सकेंगे, नहीं, अपितु वे तो स्वयं उन्हें

العلامات؟ أتخالون أنهم يحفظون حرم الله و حرم رسوله كالخدّام؟ كلا بل الحرم يحفظهم لادّعاء الإسلام وادّعاء محبة خير الانام وقد حقّت العقوبة لو لم يتوبوا إلى الله المقتدر العلام فمن فيكم يُذكّرهم بأيام الله و يُخوّفهم من سوء الايام؟ ألا ترون أن الإسلام قد تكسّر من دهر هاضٍ وجور فاضٍ وإن الفتن مطرت عليه ولا كمطر الوابل وقام لصيده أفواج العدا كالحابل وما بقى شيء تسر القلوب وتدرأ الكروب وظهر المسلمون كعُطاشى فى فلوات و كمثل مرضٰى عند سكرات وما بقى فيهم إلا رمق حياة أو قطرة من فرات أو قشرة من ثمرات وإنهم قد ابتلوا بأنواع أمراض وأقسام أعراض وفسدما ظهر وما بطن ووهن من جهل ومن فطن وتعامى منتغرّب

लापरवाही के हाथों से बुलाते हैं कि मिल्लत के रहे-सहे के आसार पर भी कब्ज़ा कर लें। क्या तुम गुमान करते हो कि वह इस्लाम की पनाह हैं, सुबहानअल्लाह बड़ी भारी ग़लती है। अपितु वे तो बिदअतों से ख़ैरुलअनाम के धर्म का उन्मूलन करते हैं। तुम्हारा अधिकार है कि तुम उनके बारे में नेक गुमान करो और दुराचारों से उनकी बरीयत सिद्ध करो। परन्तु किन निशानियों से तुम ऐसा दावा करोगे? क्या तुम्हारा विचार है कि वे हरमैन शरीफ़ैन के सेवक और सिरंक्षक हैं, ऐसा नहीं अपितु हरम उन्हें बचा रहा है। इसलिए कि वे इस्लाम और ख़ुदा के रसूल के प्रेम के मुद्दई हैं, और यदि वे तौबा न करें तो दंड सर पर खड़ा है। तो तुम में कोई है जो इन्हें बुरे दिनों से डराए। तुम देखते नहीं इस्लाम अन्याय करने वाले युग के हाथों से चूर हो गया है, और मूसलाधार वर्षा के समान फ़ित्ने उस पर बरस रहे हैं, और शत्रुओं की सेनाएं शिकारियों के समान उसके फंसाने को तैयार हैं। और अब ऐसी कोई बात नहीं जो दिलों को प्रसन्न करे और दु:खों को दूर करे।

ومن قطن وغابت الايام الغُرّ ونابت الاحداث الغبر وغُيّر الدين وقرب إلى تلف وصار بحره كجلف وآثر الناس على الصدق الاراجيف وعلى القصر المنيف من الحق الكنيف ولما ضلوا ما بقى معهم دنياهم وآنسوا التكاليف وودّعوا مع توديع الصرف والعدل الذهب والصريف وهذا أمر لا يخفى على ابن الايام والمطّلع على نار تضرّمت فى الخواص والعوام فاليوم ليالى المسلمين محاق وعليها من النظارة أطواق ومن الزحام أطباق فقوم يمرّون على المسلمين ضاحكين وآخرون ينظرون إليهم باكين وترون أن القلوب قست والذنوب كثرت والصدور ضاقت والعقول تكدّرت وعمّت الغفلة والكسل والعصيان وغلبت الجهالة والضلالة و الطغيان

तथा मुसलमान जंगल के प्यासे या उस रोगी के समान हैं जो सांस तोड़ रहा है। थोड़ी सी जान उनमें रह गई है और भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों में गिरफ़्तार हैं। तथा बाहरी एवं आंतरिक बिगड़ गया और मूर्ख एवं बुद्धिमान बोदे हो गए, और मुसाफ़िर तथा मुकीम (ठहरे हुए) अंधे बन गए, और अच्छे दिन दूर हो गए तथा बुरे दिन आ गए, और धर्म परिवर्तित होकर मिटने पर आ गया तथा उसका दरिया खाली मटके के समान हो गया, और लोगों ने सच्चाई पर झूठी व्यर्थ बातों को तथा सच की भव्य इमारत पर टट्टी को ग्रहण कर लिया। और गुमराह होने के बाद दुनिया भी जाती रही और संकट देखे तथा न्याय और इंसाफ़ को छोड़कर सोने-चांदी को भी खो बैठे। और ये बातें गुप्त नहीं ऐसे व्यक्ति पर जो युग से परिचित तथा उस अग्नि को जानता है जो विशिष्ट और सामान्य को जला रही है। तो आज मुसलमानों की रातें चंद्रमा के डूबने की रातें हैं और विभिन्न स्वभावों के लोग देख रहे हैं। कुछ लोग तो मुसलमानों पर हंसी उड़ाते हुए गुज़र जाते हैं, और कुछ

وما بقى التقوى وخطفه الشيطان ولم يبق فى القلوب نور يقوى منه الإيمان ونجس الابصار والالسن والآذان وفسدت الاعتقادات وسُلبت الدرايات وظهرت الجهلات و العمايات ودخل الرياء فى العبادة والخيلاء فى الزهادة وظهرت الشقاوة وانتفت آثار السعادة ولم يبق التحابب و الاتّفاق وظهر التباغض والشقاق وما بقى ذنب ولا جهالة إلا وهو موجود فى المسلمين ولا ضيم ولا ضلالة الا وهو يوجد فى نسائهم والرجال والبنين سيّما أمراء هم تركوا الصراط أو قعدوا أو مشوا كالذى عرَجَ وترى بعضهم أظلم ممّن دبّ ودَرَجَ وعُرِضَ عليهم أمر الله

रोते हुए उनकी ओर देखते हैं। और तुम देखते हो कि दिल कठोर हो गए हैं और पाप बढ़ गए हैं। तथा सीने तंग हो गए और बुद्धि अंधकारमय हो गई और लापरवाही एवं सुस्ती और भूलने की उन्नति तथा जहालत और गुमराही एवं फ़साद का प्रभुत्व हो गया है और संयम का नाम व निशान नहीं रहा तथा दिलों में वे प्रकाश जिससे ईमान को शक्ति हो, नहीं रही। और आंखें तथा जीभ और कान गंदे हो गए हैं और आस्था बिगड़ गई तथा समझें छीनी गईं और मूर्खताएं प्रकट हो गई हैं। और इबादत में दिखावा और संयम में अहंकार दाखिल हो गया है। दुर्भाग्य प्रकट हो गया और सौभाग्य के निशान मिट गए हैं और प्रेम और एकता जाती रही तथा वैर और फूट पैदा हो गई है। और कोई गुनाह तथा जहालत नहीं जो मुसलमानों में नहीं और कोई ज़ुल्म एवं गुमराही नहीं जो उनकी स्त्रियों और पुरुषों तथा बच्चों में नहीं। विशेष तौर पर उनके अमीरों ने सच्चाई के मार्ग को त्याग दिया है या बैठ गए हैं या एक लंगड़े के समान चलते हैं और कुछ तो सब मुर्दों और जीवितों से अधिक अत्याचारी हैं और ख़ुदा का आदेश उनके सामने प्रस्तुत किया गया और वे गूंगो की तरह खामोश हो गए और सर्वप्रथम सच

فسكتوا كأخرس وصاروا أوّل من كفر بالحق وتدلّس ولذالك أُخِذَ الناسُ بالطاعون والعجماوات بالموتان وظهرت الآيات فما قبلوها فنزل سخط الرحمان ولما رأوا العذاب قالوا إنّا تطيّرنا بك وبكذبك جاء الطاعون قيل طائركم معكم أئن ذُكّرتم بل أنتم قوم مسرفون وما أرسل الله من رسول إلا وأرسل معه عذاب من السماء والارض لعلهم يرجعون و كذالك كان النغف فى زمن المسيح عذابا موقتا وإن فى ذالك لآية لقوم يتدبّرون ألا ينظرون كيف حفظ الله هذه القرية وصدق وعده وجعلها أرضا آمنة ويؤخذ الناس من حولها إن فى ذالك لآية لقوم

के इन्कारी हुए। इसी कारण से ख़ुदा ने मनुष्य पर ताऊन भेजी और जानवरों तथा चौपायों पर दुर्भिक्ष, और निशान प्रकट हुए। परंतु उन्होंने स्वीकार न किया तो ख़ुदा का प्रकोप उतरा और जब इन्होंने अज़ाब देखा कहने लगे तेरे अस्तित्व को हम अशुभ समझते हैं और ताऊन तेरे झूठ के कारण फैली है। कहा गया तुम्हारी अमांगलिकता तुम्हारे साथ है क्या यदि तुम को स्मरण कराया जाए अपितु तुम सीमा से निकलने वाले लोग हो और ख़ुदा ने कोई रसूल नहीं भेजा जिसके साथ आकाश और पृथ्वी से अज़ाब न भेजा गया हो इसलिए कि वे रुक जाएं। इसी प्रकार हज़रत मसीह के युग में भी फोड़ा निकलता था जो एक सामयिक अज़ाब था। और इसमें विचार करने वाले के लिए निशान है। देखते नहीं कि अल्लाह ने कैसी सुरक्षा की और अपने वादों को सच्चा किया और इस ज़मीन को अमन वाली कर दिया और इसके आस-पास के लोग मर रहे हैं इसमें सोचने वाले के लिए निशान है क्या नहीं देखते कि प्रत्येक प्रकार की ताऊन ने इसके देहात में क्यों कर अपने दांत दिखाए हैं, और इस गांव को ख़ुदा ने अपने में ले लिया ताकि उस वादे को पूरा करे जो इससे पहले प्रकाशित किया गया और ख़ुदा से अधिक सच

يتفكّرون ألا ينظرون كيف ارى الطواعين نواجذها فى قُرًى أخرٰى وأوى الله إليه هذه القرية ليتم وعدًا أُشيع من قبل فى الورٰى ومن أصدق من الله قيلا ففكّر إن كنتَ بالتقوى تتحلّى ووالله إنها آية عظمٰى لاناس يُبصرون فاسئلوا الذين رأوها ويرونها إن كنتم لا تعلمون ولا تتّبعوا شياطينكم وتوبوا إلى الله ايها المُكذّبون ألا تتنبّهون وقد صُبّت المصائب عليكم وعلٰى ملوككم أيها المعتدون وظهر الادبار وما بقى لهم العيش النضير ولا النضار و ترى أكثرهم بادى المترتبةْ كماء يغور أو كرجل يغار ثم صالت عليهم طوائف القسوس فى اليوم المنحوس فدخل كثير من الناس فى الملّة النصرانية وصاروا

बोलने वाला और कौन है। अत: विचार कर यदि तू संयमी इन्सान है और ख़ुदा की क़सम यह बड़ा निशान है सूजाखों के लिए। अत: तुम उनसे पूछो जिन्होंने यह निशान देखा है और देख रहे हैं यदि तुम्हें ज्ञान नहीं। और तुम अपने शैतानों का अनुकरण मत करो। हे वे लोगो! जो झुठला रहे हो क्या तुम होशियार नहीं होते और नि:संदेह ख़ुदा की ओर रुजू करो क्या तुम सतर्क नहीं होते। और तुम पर तथा तुम्हारे बादशाहों और अमीरों पर संकट टूट पड़े और पतन आ गया तथा आनंददायक जीवन और सोना नहीं रहा और बहुत से अत्यंत दरिद्र हो गए हैं उस पानी के समान जो खुश्क हो जाता या उस आदमी के समान जिस पर डाका पड़ता है। इसके अतिरिक्त पादरियों के गिरोहों ने अशुभ दिन में उन पर आक्रमण किया और बहुत से लोग ईसाई हो गए, और ख़ुदा तथा रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शत्रु हो गए। तो आप मुझे बताओ कि तुम्हारे बादशाहों से किस बादशाह ने इस तूफान के समय कश्ती बनाई? अपितु वे स्वयं भी डूबने वालों के साथ डूब गए। और युग की कैंची ने उनके नाखून काट डाले और उनके

أعداء الله وأعداء رسوله خير البريّة فأروني أي ملك من ملوككم صنع فلكا عند هذه الطوفان بل أُغرقوا مع المغرقين وقلّم أظفارهم مقراض الزمان ورهق وجوههم القتر وانتزف ماء هم الدهر وفارقهم الاقبال واحتالوا فما نفعهم الاحتيال وظهرت فتن ما كانوا أن يُصلحوها بالشورٰى والمنتدٰى ولا بتجمير البعوث على ثغور العدا وربما تقلّدوا أسلحة و بعثوا جنودًا مُجنّدة فما كان مآلهم إلا الخزى والهزيمة والهوان والذلة العظيمة وما نفع وجودهم الشريعة الغرّاء بل تدثّر الإسلام ظالعا ذا عدواء في أرض متعادية موات مرداء بما كان الملوك في سجن الاهواء كالمحبوس وعبدة نار الشهوات كالمجوس

मुंह को धूल और मिट्टी ने ढक लिया, और युग ने उनका पानी खुश्क कर दिया और सौभाग्य उनसे अलग हो गया और उन्होंने बहाने तो किए परन्तु उनसे कुछ लाभ न पाया और ऐसे फ़ित्ने प्रकट हुए कि वे अपनी कमेटियों और पार्लियामेंटों के द्वारा और दुश्मनों की सीमाओं पर सैनिकों की छावनी डाल देने के माध्यम उनका सुधार न कर सके। कभी उन्होंने हथियार सजाए और बड़ी-बड़ी सेनाएं भेजीं परन्तु परिणाम पराजय और बड़े अपमान के अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ उनके अस्तित्व से सच्ची रोशन शरीअत को कुछ भी लाभ न पहुंचा, अपितु इस्लाम लंगड़े मरियल असहाय रोग वाले ऊंट पर सवार होकर ऐसी भूमि में चला जिसमें न हरियाली है और न पानी है और अत्यंत असमतल है। इसलिए कि बादशाह इच्छाओं की जेल में बंद है और मजूसियों (अग्निपूजकों) की तरह इच्छाओं की अग्नि के उपासक हैं। और जो व्यक्ति शैतानी चरागाहों में चरता चुगता हो उसे रहमानी (ख़ुदाई) बागों से क्या सरोकार। मेरे नज़दीक उनके समय में धर्म का उदाहरण उस शरीर के समान है जिस पर अंदर से तो चेचक और फोड़े तथा फुंसियां निकले हों

ومن كان راتعا فى الاجمة الشيطانية ما له وللرياض الرحمانية؟ فأرى الدين فى زمنهم كمثل جسم ثارت به من الداخل حصبة ودماميل وأنواع البثرات وجرحه من الخارج كثير من المدى والقنا والمرهفات وأُجْبِئَ زرعه المخصب وأُحرِق عذيقه المرجّب و كان فى زمان كحديقة ترتع النواظر فى نواضرها ويصقل الخواطر بشيم مواطرها وأمّا اليوم فهو كشجرة اتخذت الخفافيش أو كارها فى أظلالها و كعين ما بقيت قطرة من زلالها واشمعلت للرحل كل شوكة وبركة كانت فى هذا الدين وما بقى إلا قصص من الآيات وقشرة من الكتاب المبين وتراه كدارٍ مات صاحبها وقامت نوادبها وهُدم جدرانها وزُلزل بنيانها فانظروا ماذا

और बाहर से छुरियों, भालों और तलवारों ने उसे घायल किया हो। और उसके हरे भरे खेतों में रद्दी और बेकार चीज़ होती हो और उसके उच्च श्रेणी के खजूर के वृक्ष जला दिए गए हों और कभी वह ऐसा बाग़ था कि आंखें उसके हरे-भरे नौनिहालों को देख-देख कर प्रसन्न होतीं और उसके बरसने वाले बादल को देखकर दिलों को चमक और ताज़गी मिलती थी। परन्तु वही आज उस वृक्ष के समान है जिसकी छाया में चमगादड़ों ने घोंसले बनाए हैं और उस झरने के समान हैं जिसके रुचिकर पानी की एक बूंद भी नहीं रही। और इस धर्म की प्रत्येक दबदबा और बरकत कूच पर तैयार हो रही है और निशानों के बारे में कथा कहानियां रह गई हैं। और किताबे मुबीन से केवल खाल और छिलका रह गया है और वह उस घर के समान हैं जिसका मालिक मर गया है और (मौत पर) रोने वालियाँ उस पर शोक कर रही हैं और उनकी दीवारें ध्वस्त हो गईं और इमारतें भर-भरा गईं। अब बताओ हे तबीबो! तुम्हारे नज़दीक इलाज का क्या तरीक़ा है? क्या

ترون طرق المداوات يا طوائف الاساة؟ أتجدون هٰؤلاء الامراء يدفعون تلك البلاء أتتوقّعون من هذه الملوك أنهم يُطهّرون حديقة الدين من تلك الشوك أو تزعمون أن هذه الامراض تَبرأ من الدول الإسلامية وبجهدهم المعلوم كلا بل هو أمر أعسر من أن تتوقعوا الرطب الجنى من الزقّوم و كيف وهم فى غشية الوجوم و كيف يرفعون رأسهم وهم تحت ألوف من الهموم والحق والحق أقول ان هذه آفات ليس دفعها فى وُسع الملوك والامراء أيهدى الاعمٰى أعمٰى آخر يا ذوى الدهاء ؟ ثم إن هذه الملوك وإن كانوا من المسلمين أو من المخلصين المواسين ولكن ليست نفوسهم كنفوس الكاملين المطهّرين وما أُعطَى لهم نورٌ وجذبٌ كالمقدّسين فإن

तुम्हारी राय में यह उमरा इस बला को दूर कर सकते हैं, और क्या तुम आशा करते हो कि ये बादशाह उन कांटो से धर्म को पवित्र कर सकेंगे, या तुम सोचते हो कि ये रोग इस्लामी हुकूमतों और उनकी मालूम कोशिशों से अच्छे हो जाएंगे नहीं, नहीं यह बात इससे भी अधिक कठिन है कि तुम थूहर से ताज़ा खजूरों की आशा रखो। और उनसे क्या आशा की जाए तथा वे तो बड़े पत्थरों के नीचे दबे हुए हैं, और वे क्योंकर सर उठाएं और वे हज़ारों ग़मों के नीचे आए हुए हैं। मैं सब सच कहता हूं कि इन आपदाओं का निवारण करना बादशाहों और अमीरों की शक्ति नहीं। क्या कभी अंधा अंधे को मार्ग बता सकता है। हे बुद्धिमानो! इसके अतिरिक्त यद्यपि ये बादशाह मुसलमान और हमदर्द भी हों परंतु फिर भी उनके पवित्र कामिल लोगों के नुफ़ूस के समान नहीं हैं और मुकद्दसों की तरह उन्हें नूर और आकर्षण नहीं दिया जाता। इसलिए कि नूर (प्रकाश) आकाश से उसी दिल पर उतरता है जो फ़ना की अग्नि से जलाया जाता है फिर उसे सच्चा प्रेम दिया जाता

النور لا ينزل قط من السماء إلّا على قلب أُحرِق بنيران الفناء ثم أُعْطِى من حُبّ شغفه و غُسِلَ من عين الرضاء و كُحل بكحل البصيرة والصدق والصفاء ثم كُسِىَ من حُلل الاجتباء والاصطفاء ثم وُهِبَ له مقام البقاء و كيف يُزيل الظلمة من هو قاعد فى الظلمات؟ و كيف يوقظ من هو نائم على أرائك اللذّات والحق إن ملوك هذا الزمان ليست لهم مناسبة بالإمور الروحانية وقد صرف الله هممهم إلى السياسات الجسمانية ونصبهم بمصلحة من عنده لحماية قشرة الملّة وقيّد لحظهم بالإمور السياسية فما لهم للبّ والحقيقة وليست فرائضهم أزيد من أن يُحسنوا الانتظام لحفظ ثغور الإسلام ويتعهدوا ظواهر الملك ويعصموه من براثن الإعداء اللئام وأمّا بواطن الناس وتطهيرها من الإدناس وتنجية الخلق من شر

है, और प्रसन्नता के झरने से उसे स्नान दिया जाता है, तथा दृष्टि सच्चाई और सफाई का सुरमा उसकी आंखों में लगाया जाता है, फिर उसे चुने हुए लोगों के लिबास पहनाए जाते हैं, और फिर उसे अनश्वरता का मुकाम प्रदान किया जाता है। और जो आप ही अंधेरे में बैठा हो वह अंधेरे को क्योंकर दूर कर सकता है। और जो आप ही आनंदों के तख़्तों पर सोता हो तो किसी को क्या जगा सकता है, और सच बात यह है कि इस युग के बादशाहों को रूहानी मामलों से कोई अनुकूलता नहीं। ख़ुदा ने उनका समस्त ध्यान भौतिक राजनीतियों की ओर फेर दिया है, और किसी हित से उन्हें इस्लाम की खाल की सहायता के लिए नियुक्त कर रखा है। राजनीतिक मामले ही उनके दृष्टिगत रहते हैं। इसलिए उन्हें सार और वास्तविकता से क्या तुलना। उनका कर्तव्य इससे अधिक नहीं कि इस्लाम की सीमाओं की

الوسواس الخنّاس وحفظهم من الآفات بعقد الهمّة والدعوات فهذا أمر أرفع من طاقة الملوك وهممهم كما لا يخفى على ذوى الحصاة وما فُوّضَ زمام الملك إلى أيدى السلاطين إلا لحفظ الصور الإسلامية من بطش الشياطين لا لتزكيةالنفوس وتنوير العمين فما كان مبلغ جهدهم إلا أن تدفع إليهم الخراج بالجبر أو التراضى ويرتب الديوان الذى تُحصٰى فيه مقادير الاراضى وانتهيّأ جنود بحذة عساكر الاعداء وأن ينصب فوج للسياساتالداخلية وفصل الاحكام والقضاء والإمضاء فإن تطلبوامنهم خدمة اصلاح النفوس وتهذيب الاخلاق والتنجية من أوهام القسوس فذالك أمر أرفع من هممهم و دهائهم ومنارٌ أسنى من بنائهم بل هم قوم مشتغلون بالإصلاح المادى والسياسى فما لهم وللإصلاح العلمى والعملى فحاصل

देखभाल का अच्छा प्रबंध करें, और प्रत्यक्षतया देश की निगरानी करके उसे शत्रुओं के पंजों से बचाएं। रहे लोगों के अंत:करण और उनका मैल कुचैल से पवित्र करना और बचाना लोगों को शैतान से और उनकी देखभाल करना आपदाओं से दुआओं के साथ और हिम्मत के प्रण के साथ। तो यह मामला बादशाहों की शक्ति और हिम्मत से बाहर और श्रेष्ठतर है। और बुद्धिमानों पर यह बात छुपी हुई नहीं और बादशाहों को देश की लगाम इसलिए सुपुर्द की जाती है कि वे इस्लामी सूरतों को शैतानों के हस्तक्षेप से बचाएं। इसलिए नहीं कि वे लोगों को पवित्र और साफ़ करें तथा आंखों को नूरानी (प्रकाशमय) बनाएं। वास्तव में उनकी बड़ी कोशिश यही है कि उनको खुशी से या जब्र से टैक्स दिया जाए। और उनके यहां ऐसे दफ्तर संपादित हों जिनमें ज़मीनों की मात्राएं दर्ज रहें। और शत्रुओं की सीमाओं के मुकाबले पर सेनाएं तैयार

الـكلام ان الملـوك والامـراء لا يقـدرون عليـأن يزيلـوا الاهـواء و كيـف يهـدون غيرهـم وهـم يمشـون كناقـة عشـواء و كيـف يُتَوَقّـع مـن قلـب زايـغ أن يُقـوّم نفسًـا ذات عـدواء وأن يُسـعد الاشـقياء ؟ وأن يأخـذ بيـد المتخاذلـين ويقـود الضعفـاء وأن يفتـح عيـون العمـين وأن يرفـع حجـب المحجوبـين؟ بـل ملـوك الإسـلام فى هـذه الايـام كالسـكارى أو الاسـارى أو القمـر المنخسـف بـين هـالة النصـارى فكيـف يصـدر مـن عضدهمفعـل مـن بـارز وبـارٰى؟ بـل هـم قعـدوا فى البيـوت كالعـذارٰى ثـم مـن معائـب هـذه الملـوك أنـهم لا يشـيعون العربيـة ويشـيعون التركيـة أو الفارسـية و كان مـن الواجـب أن يُشـاع هـذه اللسـان فى البـلاد الإسـلامية فإنـه لسـان

और सजी रहें। तथा आंतरिक राजनीति और व्यवस्था संबंधी मामलों के लिए एक सेना नियुक्ति की जाए। तो यदि तुम इनसे लोगों के सुधार की, और शिष्टाचार के सजाने की तथा पादरियों के भ्रमों से बचाने की सेवा चाहो तो यह कार्य उनकी हिम्मत और बुद्धि से श्रेष्ठतर है। और यह ऐसा मनार है जो उनकी इमारत से बहुत बुलंद शान है। अपितु वे लोग भौतिक और राजनीतिक सुधार में व्यस्त हैं। उन्हें ज्ञान संबंधी और क्रियात्मक सुधार से क्या अनुकूलता तथा क्या संबंध। बादशाहों और अमीरों को क़ुदरत नहीं कि बुरी इच्छाओं को दूर कर सकें और वे अन्यों का मार्गदर्शन क्योंकर करें। जबकि वे स्वयं भी अंधी ऊंटनी के समान चलते हैं। टेढ़े दिल से क्या आशा हो सके कि वह किसी रोग ग्रस्त प्राण को सीधा करेगा। और दुर्भाग्यशालियों को भाग्यशाली करेगा। और लड़खड़ाने वाले के हाथ पकड़ेगा और कमज़ोरों का मार्गदर्शन करेगा। और अंधों की आंखें खोलेगा। और महजूबों के परदे दूर करेगा। अपितु इस्लाम के बादशाह आजकल मतवालों या क़ैदियों की

الله ولسان رسوله ولسان الصحف المطهّرة و لا ننظر بنظر التعظيم إلى قوم لا يُكرمون هذا اللسان ولا يشيعونها فى بلادهم ليرجموا الشيطان وهذا من أوّل أسباب اختلالهم وأمارات وبالهم فإنهم تمايلوا على دمنة من حديقة مطهّرة ونبذوا من أيديهم حريبتهم ومزّقوا عيبتهم واستبدلوا الذى هو أدنى بالذى هو أرفع وأعلٰى وشابهوا قوم موسٰى ولو أرادوا لجعلوا العربية لسان القوم ولو سلكوا هذاالمسلك لعُصموا من اللوم فإن العربية أم الالسنة وفيها أصناف العجائب و ودائع القدرة فمثل رجل مسلم يترك العربية ويُفضّل عليها ألسنة أخرى كمثل دنىء يتمشش الخنزير ويترك طعاما هو أطيب وأحلى فلا

तरह हैं, या ग्रहण लगे चंद्रमा की तरह हैं हाल में। तो इनके बाज़ू से युद्ध के योद्धाओं का कार्य क्योंकर निकल सके। अपितु वे तो बैठे हुए हैं घरों में जैसा कि उजाड़। इसके अतिरिक्त उनमें यह दोष भी है कि वे अरबी भाषा का प्रसार नहीं करते और तुर्की या फ़ारसी भाषा का प्रसार करते हैं। और आवश्यक था कि इस्लामी शहरों में अरबी भाषा फैलाई जाती इसलिए कि वह भाषा है अल्लाह की और उसके रसूल की तथा पवित्र ग्रंथों की। और हम सम्मान की दृष्टि से उन मुसलमानों को नहीं देखते जो उस भाषा का सम्मान नहीं करते और न ही उसे अपने शहर में फैलाते हैं। इसलिए कि शैतान को पथराव करें, और यह बड़ा कारण है उनकी तबाही का और उनके बवाल का निशान है। इसलिए कि वे सुथरे बाग को छोड़कर गोबर के दामन पर झुक पड़े हैं। और अपने हाथों से अपना माल फेंक दिया है और अपना थैला (जिस में माल और सामान रखा जाता है) टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। और तुच्छ को श्रेष्ठ के बदले ले लिया है तथा

شـك أن التركيّـة والفارسـيّة تصـدت لـهم كطـرّار نقصـت دينـهم وخلسـت مـا لـهم أو كذئـب افترسـت عنقـهم ومزّقـت اقبالـهم وأضـرّت دنياهـم ومآلـهم وجعلـهم كالكحـل سـحقا وكالطحـن دقّـا ومـا نقـول إلا حقّـا فقـد كـذَبَ مـن ذكرهـم بحمـد وفّـاه وبنشـرٍ مـلاٍ بـه فـاه وحسـبهم خلفـاء الله عـلى الارض وفسّـق مـن أنكـر دعـواه إنـه يرتـاد جفنـة الجـواد لا خليفـة البـلاد ويسـتقرى أن يرشـح له ويسـح عليـه بكلمتيـه ويحـرز العـين بغـض عينيـه فالحـق أن نسـبة الخلافـة إليـهم

यहूदियों के समान हो गए हैं और यदि चाहते तो अरबी को अपनी भाषा बनाते इसलिए कि अरबी भाषा समस्त भाषाओं की माँ है। और उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के चमत्कार और क़ुदरत की अमानतें हैं। तो उदाहरण उस व्यक्ति का जो अरबी भाषा को छोड़ता और उस पर अन्य भाषाओं को प्राथमिकता (तरजीह) देता है। उस कम हिम्मत का उदाहरण है जो अच्छे शुद्ध खाने को छोड़कर सुअर की हड्डियों को खाता है। इसमें संदेह नहीं कि तुर्की और फ़ारसी ने एक जेब कतरों के समान उनके धर्म को कम कर दिया और माल उड़ा लिया है या भेड़िए के समान उनके रईसों को फाड़ खाया और उनकी समृद्धि को चाक कर दिया है और उनकी दुनिया तथा आख़िरत को हानि पहुंचाई है और उन्हें कूट-पीसकर सुरमा और आटे की तरह कर दिया है। अत: झूठ बोला उसने जिसने उनकी चर्चा प्रशंसा के साथ की और उनको पृथ्वी पर ख़ुदा के ख़लीफ़ा समझा और अपने दावे के इन्कारी को पापी ठहराया। ऐसा व्यक्ति तो नक़दी और दान का अभिलाषी है। उसे ख़लीफ़ा, ख़िलाफ़त से क्या संबंध। वह तो इस बात का अभिलाषी है कि दो बातें कीं और इनाम उपाधि ले ली। और इस अनदेखा करने से उसका मतलब रुपया कमाना है। तो सच्ची बात यह है कि उनको ख़लीफ़ा कहना सच्चाई के विरुद्ध और अन्याय की बात है। हे

خلاف و كذب واعتساف هذا حال السلاطين★ أيها الفتيان ونذكر بعد ذالك علماء هذا الزمان الذين يُعزَى إليهم الفضل والعرفان والله المستعان ولا حاجة إلى الترجمة والترجمان فإنّهم يدعون علم اللسان

★ ★ ★

★ ليس مرادنا ههنا من ذكر ملوك الاسلام ان كلهم ظالمون او كلهم مفسدون بل بعضهم صالحون لا يظلمون الناس ويرحمون كماهو سلطان الروم ونثنى عليه لبعض خليقة المعلوم بيد ان امر الخلافة امر عسير ولا يعطى الا البصير لا لضرير وما اعطى هٰذا السهم لكل كنانةٍ وان كانوا ذا مرتبة ومكانةٍ منه

नौजवानो! यह है हाल बादशाहों★ का। अब हम युग के उलमा का हाल वर्णन करते हैं। जिनकी ओर बुज़ुर्गों और मारिफ़त को सम्बद्ध किया जाता है। अब इससे आगे अनुवाद की कोई आवश्यकता नहीं है इसलिए कि वे स्वयं भाषा जानने के मुद्दई हैं। (अगले भाग का अनुवाद बोर्ड ने किया है।)

★ ★ ★

★मुसलमान बादशाहों के वर्णन से हमारा अभिप्राय यह नहीं कि वह सब के सब अत्याचारी या वे सब के सब फ़सादी हैं, अपितु उनमें से कुछ सदाचारी हैं, लोगों पर अत्याचार नहीं करते अपितु दया करते हैं। जैसे रोम का बादशाह जिसके कुछ मालूम गुणों के आधार पर हम उसकी प्रशंसा करते हैं यद्यपि ख़िलाफ़त की बात एक कठिन मामला है जो केवल प्रतिभाशाली को ही दिया जाता है अंधे को नहीं और हर तुणीर के भाग्य में ऐसा तीर कहां चाहे वह कितना ही साहिबे मुक़ाम और पद वाला हो। (इसी से)

فی ذکر عُلماء هٰذاالزمان

لمّا ثبت ممّا سبق من البیان أن ملوك الإسلام فی هذا الزمان لایطیقون أن یُصلحوا المفاسد التی تضرّمت کالنّیران بقی لك حق أن تقول ان هذه الفتن قد تولّدت من جهل الجهلاء وستنعدم من تعلیم العلماء فإنهم ورثاء النبی و کماة هذا المیدان وإنهم مُنوّرون بنور العلم فیُرجی منهم أن یُصلحوا ما لم یُصلحه سلاطین البلدان فاعلم أنی طالما حضرت مجالس هذه العلماء وخلوت بهم کالاحبّاء وربما جئت بعضهم بزیّ نکرته کالغرباء أو الجهلاء وجرّبتهم عند محبّتهم والشحناء والبؤس والرخاء وعلمت دخلة أمرهم ومبلغ هممهم

इस युग के उलमा के वर्णन में

जब पहले वर्णन से यह सिद्ध हो गया कि इस युग के मुसलमान बादशाह उन ख़राबियों का सुधार करने की शक्ति नहीं रखते जो अग्नि के समान भड़की हुई हैं। आपका यह अधिकार बनता है कि आप कहें कि ये समस्त फ़ित्ने और फ़साद मूर्खों की मूर्खता के कारण पैदा हुए। और उलमा की शिक्षा के द्वारा नापैद (अप्राप्य) हो जाएंगे। क्योंकि वे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वारिस और इस मैदान के पहलवान हैं। और विज्ञान के प्रकाश से प्रकाशमान किए गए इसलिए उनसे यह आशा की जा सकती है कि वे उन ख़राबियों का सुधार कर सकेंगे। जिनका सुधार शासन के बादशाह न कर सके। अत: आप को मालूम हो कि मैं इन उलमा की मज्लिसों में बड़ी प्रचुरता से जाता रहा और इनसे दोस्तों की तरह संगत

وما عندهم من الاتّقاء فظهر علىّ أن أكثرهم للإسلام كالدّاء لا كالدواء وللدين كالهجوم المظلم والهوجاء لا كالسراج المنير والضياء جمعوا كل عيب فى السيرة والمريرة ولطّخوا أنفسهم بالمعايب الكثيرة يجلبون أموال الناس إلى أنفسهم من كل مكيدة بأى طريق اتفق وبأية حيلة يقولون ولا يفعلون ويعظون ولا يتعظون ويتمنّون أن يحصدوا ولا يزرعون قلوبهم قاسية وألسنهم مفحشة وصدورهم مظلمة وآرائهم ضعيفة وقرائحهم جامدة وعقولهم ناقصة وهممهم سافلة وأعمالهم فاسدة ما ترى نيتهم فيمن خالفوه من غير أن يُفيضوا فيه بأى حيلة يُكفّرونه أو يؤذونه وفى ماله الذى يُرجى حصوله

रखी और कभी इनके पास अजनबियों और अनपढ़ के रूप में आया और इन्हें प्रेम, शत्रुता, दरिद्रता और समृद्धि हर हालत में आज़माया। और इनकी आंतरिक हालतों, हिम्मत और हौसले की पहुंच तथा जिस संयम के वे मालिक थे उसे परखा। तो मुझ पर प्रकट हुआ कि इनमें से अधिकतर इस्लाम के लिए रोग तो हैं दवा नहीं, धर्म के लिए एक गहरा घोर अंधकार तो हैं, प्रकाश और रोशनी का दीपक नहीं। इन्होंने अपने चरित्र और आदत में हर दोष एकत्रित कर रखा है, तथा अपने आप को बहुत सी बुराइयों में लिप्त कर रखा है और हर प्रकार के छल, प्रपंच, चालाकी और चालबाज़ी के मार्ग से लोगों के माल अपने लिए समेटते हैं। वे कहते हैं, परंतु करते नहीं। नसीहत करते हैं किंतु स्वयं नसीहत प्राप्त नहीं करते। ऐसी फ़सल काटने की अभिलाषा करते हैं जो इन्होंने बोई नहीं। इनके दिल कठोर जीभें अश्लील बोलने वाली और सीने अंधकारमय हैं। और उनकी राय कमज़ोर, उनके स्वभाव जमे हुए, बुद्धि अपूर्ण, हिम्मतें पस्त और कर्म गंदे हैं। तू उनकी नीयत अपने विरोधियों के बारे में केवल यही देखता है कि वे किसी

بأى طريق يأخذونه ويتكبّرون بعلم قليل يسير وليسوا
إلا كحمير [ق] يأمرون الناس بترك الدنيا وزخرفها ثم
يطلبونها أزيد من العوام ويسعون أن يتعاطوها ولو
بطريق الحرام ينتهزون مواضع صدقات الإمراء فإذا
أُخبِروا فوافوهم فى الطمرين كالغرباء ويسألون إلحافًا
ولو لُكِموا لكمةً أو ثُنّىَ عليهم بلطمة يتبعون الجنائز
ولكن لا للصلواة بل للصدقات لا يقبلون الحق ولا
يفهمونه ولو كان بيان يُسمع الصم ويُنزل العصم الجبن
من صفاتهم وطير الاهواء فى وكناتهم البخل فطرتهم و
الحسد ملّتهم وتحريف الشريعة شرعتهم هم عند

भी अंतिम बहाने से उसे काफ़िर ठहरा देंगे या कष्ट पहुंचाएं और उसका वह माल जिसकी प्राप्ति की आशा हो उसे हर उपाय से हथिया लें। वे अपने थोड़े मामूली ज्ञान पर बहुत अहंकारी हैं। वे तो निरे गधे★ हैं। वे लोगों को तो दुनिया और उसके सौंदर्य को त्यागने का आदेश देते हैं परंतु स्वयं जनसाधारण से कहीं बढ़ कर उनके अभिलाषी हैं। वे उसे प्राप्त करने का प्रयास करते हैं चाहे अवैध तरीके से ही हो। उमरा के दान बांटने के अवसरों को जानते हैं। फिर जब उन्हें उन स्थानों का पता लग जाए तो उनकी प्राप्ति के लिए दरिद्र, मोहताजों की तरह चीथड़ों में लिपटे हुए उनकी ओर लपकते हैं और चाहे उनके मुंह पर घूंसा लगा दिया जाए या थप्पड़ मारा जाए फिर भी वे लीचड़ की तरह मांगते हैं। वे जनाज़े के पीछे-पीछे तो चलते हैं परन्तु नमाज़ जनाज़ा पढ़ने के लिए नहीं अपितु दानों की प्राप्ति के लिए। वे न तो सच को स्वीकार करते हैं और न उसको समझते हैं चाहे सच का वर्णन ऐसा स्पष्ट हो कि जिसे बहरे भी सुन लें और वह आवाज़ इतनी बुलंद हो कि पर्वत की चोटी से बकरियों को नीचे उतार लाए। कायरता उनकी

★हमारा यह कलाम उनके सुशील के बारे में नहीं बल्कि लोगों के बारे में है।

الغضب ذياب وفى وقت الاكل دواب ليس سخطهم ولا رضاهم إلا لنفوسهم الامّارة وليس ذكرهم وتسبيحهم إلا للنظّارة انظر إليهم فى المجامع ولا تنظر إليهم فى الخلوة لترى السبحة فى أيديهم ولا ترى فعلا آخر يفسد ظنّك فى هذه الفرقة يُكرهون الناس ليدفعوا إليهم مما هو عندهم من الدرهم أو الكساء وإن بلغهم المتربة إلى فِناء الفَناء يحسبون أنفسهم مالك رقاب الناس إن شاء وا يُسمُّوهم ملائكة وإن شاء وا يسموهم إخوان الخنّاس إن كانت عندهم شهادة فلا يصدقون وإن يُستفتوا فلطمع قليل يكتمون الحق ويكذبون يؤمّون الناس فى صلواتهم

विशेषताओं में से है और लोभ-लालच के परिंदे उनके घोंसलों में हैं। कृपणता उनकी प्रकृति और ईर्ष्या उनका आचरण है। शरीअत में अक्षरान्तरण करना उनका पथ है। क्रोध के समय वे भेड़िए हैं और खाते समय में जानवर हैं। उनकी नाराज़गी और रज़ामंदी केवल तामसिक वृत्ति के लिए है। उनका ज़िक्र और तस्बीह केवल देखने वालों के लिए है। उन्हें देखना हो तो मज्लिसों में देखो। एकांत में न देखो तो उनके हाथों में तस्बीह देखेगा और कोई ऐसा कार्य नहीं देखेगा जो उस फ़िर्के के बारे में तुम्हें बदगुमान कर दे। वे लोगों को विवश करते हैं ताकि जो नक़दी और लिबास में से उनके पास मौजूद है वह सब उनके सुपुर्द कर दें। चाहे दरिद्रता ने उनको फ़ना के भोजन तक पहुंचाया हुआ है। वे अपने आप को लोगों की गर्दनों का मालिक समझते हैं वे चाहें तो उन्हें फरिश्तों का नाम दें और चाहें तो उन्हें शैतान के भाई ठहरा दें। यदि उनके पास गवाही हो भी तो वे सच नहीं कहते और यदि उनसे फ़त्वा मांगा जाए तो वे मामूली लोभ के लिए सच को छुपाते हैं और झूठ बोलते हैं। वे मज़दूरी पेशा लोगों की तरह नमाज़ में लोगों की इमामत करते हैं। अपितु तुम देखोगे कि उनमें से कुछ तो मस्जिदों के नाम

كالمستأجَرين بل ترى بعضهم يأكل أوقاف المساجد من غير حق ويُتلف حقوق المساكين ويأبى أن يؤمّ غيره ويقول هذا مسجدى أؤمّ فيه من الستين وإن كان غيره أفضل منه وأعلم ومن المتّقين بل وإن كان الناس يكرهون إمامته ويعدّونه من الفاسقين ويُرافع الى الحكّام إن عُزِلَ من إمامة المسجد طمعا فيما وُقف عليه من العسجد وترٰى بعضهم لو اطّلعوا على مال كسبتَه أو كنز أصبتَه جمعوا عليك كاذبة وجاءوك كأحبّة ثم لا يبرحون فناء دارك حتى يأكلوا من ثمارك وتجد قلوب أكثرهم كالارض التى أجدبت وكانت من أردء أقسام حرة

समर्पित (वक़्फ़) जायदादों को अन्याय पूर्वक खाते हैं, और दरिद्रों के अधिकार नष्ट करते हैं। और वे अपने अतिरिक्त किसी अन्य की इमामत से साफ़ इनकार करते हैं और कहते हैं कि यह मेरी मस्जिद है और इसमें तो मैं साठ वर्ष से इमामत कर रहा हूं। चाहे अन्य व्यक्ति उस से श्रेष्ठ आलिम और संयमी हो। अपितु चाहे लोग उसकी इमामत को पसंद न करते हों और उसे पापियों के वर्ग में गिनते हों। यदि उसे मस्जिद की इमामत से हटा दिया जाए तो वे मस्जिद के लिए समर्पित किए हुए माल और दौलत के लालच में मामले को अधिकारियों तक ले जाते हैं। और उनमें से कुछ को तू देखेगा कि यदि तुम्हारे मेहनत से कमाए हुए माल का या उस ख़ज़ाने का जो तुम्हें मिला है पता लग जाए तो वे मक्खियों के समान तेरे चारों ओर एकत्र हो जाते हैं और दोस्तों का रूप धारण करके तेरे पास आते हैं और उस समय तक तेरे घर में डेरा डाले रहते हैं जब तक वे तेरे फलों से कुछ खा न लें। तू उनमें से अधिकांश के दिलों को बंजर भूमि के समान पाएगा जो काले पत्थरों वाली भूमि का बहुत रद्दी प्रकार हो। जो उत्तम वनस्पति (हरियाली) नहीं उगाती और हानि के अतिरिक्त तू उससे कुछ नहीं पाता। उन लोगों में

لا تنبت نباتا حسنا وما ترى منها من غير مضرّة لا يوجد فيهم أثر حلم بل سبقوا السباع بحدّة الاسنان وأسلة اللسان يأتونكم فى جلود الضأن وهم ذياب مفترسة بأنواع البهتان بشرط أن لا يعرض عليهم ترس العقيان يخرجون على الناس بدنّيّة تقلّسوها وفوطة تطلّسوها وعمامة تعمّموها وجبّة جمّلوها وكتب حملوها وزُغُب شملوها هذا ما يُظهرون وذالك ما يعملون خرجوا فى طلب الدنيا ونسوا الدار التى إليها يرجعون وإذا قيل لهم أتأكلون رزقا فيه شبهة قالوا لا بأس علينا إنّا لمضطرّون وليسوا بمضطرين وإن هم إلا

ज्ञान का नामोनिशान तक नहीं पाया जाता। अपितु दांतो की तेज़ी और जीभ की काट में दरिंदों से भी आगे बढ़ गए हैं। वे तुम्हारे पास भेड़िए के लबादे में आते हैं। हालांकि विभिन्न प्रकार के आरोपों से चीरने फाड़ने वाले भेड़िए हैं। बशर्ते कि उनके सामने शुद्ध सोने की ढाल प्रस्तुत न की जाए। वे लोगों के सामने ऊंची टोपी पहने, रेशमी चोगा ओढ़े, पगड़ी बांधे, जुब्बा शरीर पर पहने, पुस्तकें उठाए तथा मखमली चादरें ओढ़ कर आते हैं। यह तो वह है जो उनका ज़ाहिर है। और वे उनके कर्म हैं कि वे दुनिया को मांगने के लिए खड़े हुए हैं और उस घर को जिसकी ओर उन्होंने ने लौट कर जाना है भूल चुके हैं। जब उनसे यह कहा जाए कि "क्या तुम वह रिज़्क़ (अन्न) खाते हो जिसमें संदेह है" तो उत्तर में कहते हैं कि हम पर कोई गिरफ़्त नहीं। क्योंकि हम विवश हैं। हालांकि उन्हें कोई विवशता नहीं वे केवल झूठ बोलते हैं। उन्होंने संयम के शांतिकुंज (दारुल अमन) को छोड़ दिया और ऐसी पृथ्वी में पड़ाव किया है जहां अचानक आक्रमण करके लोगों का वध किया जाता है और वे उचक लिए जाते हैं। वे रोटी के लिए ईमान की दौलत दे देते हैं और मुफ़्त वस्तु पर टूट पड़ते हैं। उनके हाथ झूठ और

يكذبون تركوا دار الامن من التقوى وحلّوا بأرض فيها يُغتال الناس و يُخطفون يؤتون نض الإيمان للرغفان ويتمايلون على المجان وتكتب أيديهم فتاوى الزور والبهتان ويجبح إيمانهم درهم أو درهمان يمنعون الناس من الحق ويوسوسون كالشيطان وإذا رأوا أوانى نظيفة فيها ألوان أطعمة سقطوا عليها كأذبة أو كأنسر على جيفة يستوكفون الاكف بالوعظ المخلوط بالبكاء ويستقرون الصيد بتقمّص لباس الفقهاء ما بقى شغلهم إلا المكائد وكمثلهم أين الصائد ولذالك نُحِتَت كتب السمر لإرائة أعمالهم وبُيِّنَ فى القصص الفرضية حقيقة أحوالهم فسماهم بعض السامر بأبى الفتح الاسكندرى والآخر

आरोप पर आधारित फ़त्वे लिखते हैं। एक या दो दिरहम उनके ईमान को लड़खड़ा देते हैं। वे लोगों को सच से रोकते और शैतान की तरह भ्रम पैदा करते हैं। साफ़ सुथरे बर्तनों में भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन देखते हैं तो उन पक्षियों के समान गिरते हैं या मुर्दार पर गिद्धों के समान। वह आर्द्रतामय उपदेश से लोगों के हाथों से माल निकलवाते हैं और फ़ुक़्हा (इस्लामी धर्म शास्त्र के विद्वान) के लबादे पहनकर (लोगों का) शिकार करते हैं। छल और प्रपंच के अतिरिक्त उनका कोई अन्य कार्य नहीं। उन जैसा शिकारी भला कहां दिखाई देगा। यही कारण है कि उनके कर्मों को प्रकट करने के लिए दास्तानें गढ़ी गईं और काल्पनिक किस्सों में उनके हालतों की वास्तविकता वर्णन की गईं। जिसके कारण कुछ क़िस्सा वर्णन करने वालों ने उन्हें अबुल फ़तह इस्कंदरी के नाम से तथा कुछ ने अबू ज़ैद सुरूजी के नाम से नामित किया। और वे दोनों यही (उपरोक्त कथित) उलमा हैं। अत: हे बुद्धिमानो! नसीहत प्राप्त करो। जिन लोगों ने अपनी ओर से इस प्रकार के किस्से गढ़ लिए हैं वे इन उलमा को देख कर उनके दिलों पर कंपन छा जाने और उन

بـأبی زیـدن ا لسـر و جی و مـا همـا إلا هـذه العلمـاء فاعتـبر و ا
یـا أو لی الدهـاء و إن الذیـن نحتـو ا کمثـل هـذه القصـص مـن
عنـد أنفسـهم مـا نحتو هـا إلا بعـد مـا ا ر تعـدت قلو بـهم مـن
رؤ یـة تلـك العالمـین و اقشـعرّ ت جلدتـهم مـن مشـاهدة مکائـد
هـؤلاء المکّار یـن و رأوا أنـهم قـوم آمـن بیانـهم و کفـر
جنانـهم فأنشـأوا مقامـات تنبیهـا للغافلـین و عـز و ا نشـأتها
ورو ا یتهـا إلی رجـال آخر یـن بمـا کانـو ا خائفـین مـن
الخبیثـین و کذالـك أدّوا شـهادة کانـت عندهـم عـلی العلمـاء
ولـو کانـوا فی هـذا الز مـن لاقـرّوا بمکائدهـم و لکـن مـا
عدّو هـم مـن الادبـاء فـإن العلمـاء الذیـن خلـوا مـن قبـل کان
کلامـهم لطیفًـا و إن کان دینـهم ر غیفًـا و أمّـا المتصلّفـون

मक्कारों की चालबाज़ियों के अवलोकन से उनके रोंगटे खड़े होने के बाद ही गढ़ लिए गए। उन्होंने देखा कि ये उलमा वे हैं कि जिनकी बातचीत मोमिनों वाली है और दिल काफ़िरों वाले। तो उन्होंने लापरवाहों को सतर्क करने के लिए निबंध लिखे और उनके लेख और रिवायत को अन्य लोगों की ओर संबद्ध किया। क्योंकि वे उन दुष्ट लोगों से डरते थे। इस प्रकार उन्होंने उलमा के विरुद्ध अपनी गवाही दे दी। यदि यह (निबंधकार) इस युग में होते तो वे खुल्लम-खुल्ला उनके षड्यंत्रों का इक़रार करते और उन्हें साहित्यकार न गिनते। यद्यपि पहले उलमा का कलाम उत्तम होता था। यद्यपि उनका धर्म भी रोटी ही था। जहां तक उन डींगें मारने वालों का संबंध है जिन्हें हमारे इस युग में हर शहर में भेड़ बकरियों के रेवड़ की तरह पाते हो, वे केवल रोटियों के दास हैं। वे न साहित्यकार हैं और न ही अहले क़लम। न तो उन्होंने भाषण कौशल के स्तन से दूध पिया और न तर्क एवं प्रमाण का जाम पिया है। उनका हाल "खामोशी हज़ार बार गुफ़्तार बे मुहार" की तरह है। उन्हें अरबी विद्या में कोई गहरी समझ प्राप्त नहीं और न ही वह साहित्य

الذين تجدونهم فى زماننا فى كل بلدة كقطيع الغنم فهم ليسوا إلا عبيدة الرغفان لا من الادباء ولا من أهل القلم وما غُذّوا بلبان البيان وما أُشرِبوا كأس الحجة والبرهان يسكتون ألفًا وينطقون خلفًا ليسوا متوغلين فى العلوم العربية ولا مُرتوين من العيون الادبية كثر تكبّرهم وقلّ تدبّرهم لا يقدرون على نطق يفيد الناس بل يزيدون بقولهم الشبهة والوسواس إذا صمتوا فصمتهم ترك للواجب وصقع وإذا نطقوا فنطقهم ميت ليس له وقع قصرت همّتهم وفترت عزمتهم لا يعلمون الا الامانى كاليهود وليس صلواتهم من دون القيام والقعود ما بقى

के झरनों से सैराब हुए हैं। उनमें अहंकार अधिक और सोच विचार कम है। वे ऐसे वार्तालाप पर क़ुदरत नहीं रखते जो लोगों के लिए लाभदायक हो अपितु वे अपनी बात से और अधिक संदेह तथा भ्रम पैदा कर देते हैं। जब वे खामोश हों तो उनकी यह खामोशी कर्तव्य को छोड़ना और पथभ्रष्ट करना है। और जब वे बोलें तो उनका यह बोलना बिल्कुल मुर्दा और प्रभावहीन होता है। उनकी हिम्मत पस्त और इच्छा शक्ति में विकार आ गया है। यहूदियों की तरह बेकार इच्छाओं के अतिरिक्त उन्हें कुछ ज्ञान नहीं और उनकी नमाज़ केवल उठक बैठक हैं। शरीअत को पेचीदा समस्याओं से उन्हें कोई रुचि नहीं। और न ही तरीकत* की बारीकियों में उन्हें कोई महारत है। यदि तू उनका समीक्षात्मक निरीक्षण करे तो तू अधिकांश को अधर्म और चौपायों जैसा पाएगा तथा तुझे विश्वास हो जाएगा कि उनका अस्तित्व इस्लाम के लिए संकटों में से एक बहुत बड़ा संकट है। निर्लज्जता की बातों में तू उन्हें नीच इन्सान और अन्यों पर आक्रमण करने में कुत्तों की तरह पाएगा।

*तरीकत : दिल की पवित्रता सूफियों का तरीका जिससे रूहानी कमाल प्राप्त होता है। (अनुवादक)

لهم مسٌّ بمعضلات الشريعة ولا دخلٌ فی دقائق الطریقة
ولو انتقدتهم لوجدت أکثرهم سقطًا و کالانعام و أیقنت
أن وجودهم إحدی المصائب علی الإسلام تجدهم کزمع
الناس فی الإفحاش و کالکلاب فی الهراش یحسبون کأنهم
یُترکون سُدَی ولیس مع الیوم غدا ما کان علی الحق
الغشاء ولکن تغلّب علیهم الشقاء عندهم تکفیر الناس
أمرٌ هیّنٌ والاعتقاد بموت عیسٰی له وجه بیّنٌ وتاللّٰه إنهم
ما یقصدون فتح الإسلام بل یقصدون فتح القسوس
کالاعداء اللئام ویترکون الدین فی الظلام وینصرون
عقیدةالنصاری بخزعبیلاتهم وبهفوات آباءهم وجهلا

वे सोचते हैं कि वे बेलगाम छोड़ दिए जाएंगे तथा आज के बाद कल नहीं आएगा। सच पर तो पर्दा नहीं है परंतु उन पर दुर्भाग्य विजयी हो गया है। उनके नज़दीक लोगों को काफ़िर ठहराना एक साधारण बात है। हालांकि (हज़रत) ईसा (अलैहिस्सलाम की मृत्यु की आस्था अपने अंदर एक स्पष्ट सबूत रखती है। ख़ुदा की क़सम ये इस्लाम की विजय नहीं चाहते अपितु कमीने शत्रुओं के समान पादरियों की विजय चाहते हैं। वे धर्म (इस्लाम) को अंधकारों में छोड़ते हैं। और अपनी तथा अपने बाप दादों की ग़लतियों और मूर्खताओं से ईसाईयों की सहायता करते हैं। हालांकि उन्हें यह आदेश दिया गया था कि वे आकाश से उतरने वाले **हकम** का अनुकरण करें और उसके साथ झगड़ा न करें। किन्तु उन्होंने अत्यंत प्रेम करने वाले अल्लाह के आदेश का आज्ञापालन न किया, अपितु जब उन में मसीह मौऊद प्रकट हुआ तो उन्होंने उसका इन्कार किया जैसे कि वे यहूदी हैं। यह मौऊद सलीबी तूफ़ान और इस्लाम के पूर्णतया पलटा खाने के समय उतरा। क्या इन उलमा ने इस मसीह मौऊद का अनुकरण किया? बिल्कुल नहीं, अपितु उन्होंने उसको काफ़िर ठहराया और निकृष्ट कुफ्र का प्रदर्शन किया। झूठी

تـــهم وقـــد أُمِـــروا أن يتّبعـــوا الحَكَـــمَ الذى هـــو نـــازل مـــن السـماء ولا يتصـدّوا له بالمـراء فمـا أطاعـوا أمـر الله الـودود بـــل إذا ظهـــر فيـــهم المســـيح الموعـــود فكفـــروا بـــه كأنـــهم اليهـــود وقـــد نـــزل ذالـــك الموعـــود عنـــد طوفـــان الصليـــب وعنـــد تقليـــب الإســـلام كل التقليـــب فهـــل اتّبـــع العلمـــاء هـــذا المســـيح؟ كلا بـــل اكفـــروه وأظهـــروا الكفـــر القبيـــح وأصـــرّوا عـــلى الإباطيـــل وخدمـــوا القســـوس فأخذهـــم القســـوس وشـجوا الـرؤوس وأذاقوهـم مـا يذيقـون المحبـوس فـرأوا اليـوم المنحـوس سـيقول السـفهاء أن الدولة البرطانيـة أعانـــت القسيســـين ونصرتـــهم بحِيـــلٍ تُشـــابه الجبـــل الركـــين

आस्थाओं पर आग्रह किया और पादरियों की सेवा की। पादरियों ने इन्हें पूर्ण रूप से अपने काबू में कर लिया और उनका सर फोड़ा और उनको ऐसा स्वाद चखाया जैसा कैदी को चखाते हैं। उन्होंने अशुभ दिन देखा। मूर्ख अवश्य कहेंगे कि बर्तानवी हुकूमत ने उनकी सहायता की और सुदृढ़ पर्वत के समान उपाय से उनकी सहायता की ताकि वे मुसलमानों को ईसाई बना लें। फिर भला इसमें उलमा का क्या दोष? बात यों नहीं है और उलमा (बिल्कुल) निर्दोष नहीं हुकूमत ने अपने माल और अपनी लड़ाका सेनाओं के साथ पादरियों की सहायता नहीं की और उसने इन्हें तुमसे अधिक आज़ादी नहीं दी कि जिसके आधार पर कोई संदेह करने वाला संदेह कर सके। उसने ऐसा कानून प्रचलित किया जो हमारे और उनके मध्य समान था। यदि तुम कृतज्ञ हो तो इस बर्तानवी हुकूमत का तुम पर अधिकार बनता है। क्या तुम चाहते हो इन लोगों से दुर्व्यवहार करो जिन्होंने तुमसे प्यार किया है। अल्लाह तआला कृतघ्नता और आदर न करने वालों को पसंद नहीं करता। यह उनका उपकार है कि तुम अमन और सुरक्षापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हो। हालांकि इस हुकूमत से पहले तुम्हारा इस पृथ्वी पर उन्मूलन होता था। परंतु

ليُنصّروا المسلمين فما جريمة العالمين والامر ليس كذالك والعلماء ليسوا بمعذورين فإن الدولة ما نصر القسوس بأموالها ولا بجنود مقاتلين وما أعطتهم حريّة أزيَد منكم ليرتاب من كان من المرتابين بل أشاعت قانونًا سواء بيننا وبينهم ولها حق عليكم لوكنتم شاكرين أتريدون أن تُسيئوا إلى قوم هم أحسنوا إليكم والله لا يُحب الكفّارين الغامطين ومن ائحسانهم أنكم تعيشون بالامن والامان وقد كنتم تُخطفون من قبل هذه الدولة فى هذه البلدان وأمّا اليوم فلا يؤذيكم ذباب ولا بقّة ولا أحد من الجيران وإن ليلكم أقرب إلى الامن من

आज कोई मक्खी, मच्छर और कोई पड़ोसी तुम्हें कोई कष्ट नहीं पहुंचा सकता। इस युग से पहले गुज़री हुई क़ौम के दिन की अपेक्षा तुम्हारी आज की रात कहीं अधिक अमन के करीब है। तुम्हें चोरों और अत्याचारियों से बचाने के लिए बर्तानवी सरकार के रक्षक नियुक्त हैं। क्या उपकार का प्रतिफल उपकार के अतिरिक्त भी कुछ हो सकता है। इससे पूर्व हमने नर्क से भी बढ़कर कष्टदायक युग देखा है। आज इस हुकूमत की ढाल तले हमारे सामने स्वर्ग रख दिया गया है जिसके फल हम चुन रहे हैं और हम इसके वृक्षों के नीचे शरण लिए हुए हैं। इसलिए मैंने यह बहुत बार कहा है कि इनके विरुद्ध जिहाद और तलवार उठाना बहुत बड़ा गुनाह है। एक सुशील आदमी अपने उपकारी को कैसे कष्ट पहुंचा सकता है जो अपने उपकारी को कष्ट पहुंचाए वह अंतिम श्रेणी का कमीना मनुष्य होता है। किसी इन्सान या जानवर की ओर से तुम पर की गई नेकी की कृतघ्नता वास्तव में रहमान ख़ुदा की नेमत की कृतघ्नता है। कृपालु ख़ुदा के नज़दीक कठोरतम हृदय वह हृदय है जो अपने मेहरबान और कृपालु उपकारी के उपकार को भुला दे और ऐसे व्यक्ति को कष्ट पहुंचाने के दर पर हो जाए

نهار قوم خلت قبل هذا الزمان ومن الدولة حفظة عليكم لتُعصَموا من اللصوص وأهل العدوان وهل جزاء الإحسان الا الإحسان إنّا رأينا من قبلها زمانا موجعا من دونه الحطمة واليوم بجُنّتها عُرضت علينا الجنّة نقطف من ثمارها ونأوى إلى أشجارها ولذالك قلتُ غير مرّة أن الجهاد ورفع السيف عليهم ذنب عظيم و كيف يؤذى المحسن من هو كريم؟ ومن آذى محسنه فهو لئيم و إن كُفران خيرٍ أصابك من الإنسان أو الحيوان ما هو الا كُفران نعمة الرحمان وإن أقسى القلوب عند الله الكريم قلبٌ ينسٰى إحسان المحسن الرحيم ويؤذى رجلا أواه إليه كالمحبوب ونجّاه من الكروب ومن أساء إلى المحسن فهو قلب ملعون أو كلب مجنون ولذالك ليس من شأن المؤمنين أن يقتلوا القسّيسين فإنهم ما تقلّدوا أسلحة

जो उसे एक प्रियतम की तरह अपनी शरण में ले लेता है और हर प्रकार के रंज-व-गम से मुक्ति दिलाता है। उपकारी से बुराई करने वाला दिल मलऊन दिल है या पागल कुत्ता है। इसलिए मोमिनों को यह शोभनीय नहीं कि वे पादरियों को कत्ल करें क्योंकि वे हथियारों से लैस नहीं हुए और न ही उन्होंने किसी मुसलमान पुरुष या स्त्री को धर्म के लिए क़त्ल किया है। इसलिए यह नेकी नहीं कि तुम उनके सामने तलवारें सूंतो या उन्हें कष्ट पहुंचाने के लिए भाले चलाओ। अपितु जैसी उन्होंने तैयारी की है तुम भी वैसी ही तैयारी करो। यह क़ुर्आन का आदेश है। अत: इस को समझो और संजीदगी से प्रयास करो और अत्याचार न करो। निस्संदेह अल्लाह तआला अत्याचार करने वालों को पसंद नहीं करता। मुझ पर दुष्ट और अंधे अवश्य आक्रमण करेंगे और कहेंगे तुझ पर अफसोस क्या तू जिहाद को अवैध ठहराता है जबकि हम उस महदी के प्रतीक्षक हैं जो रक्त बहाएगा तथा देशों

وما قتلوا للدين مسلمًا أو مسلمة فليس من البرّ أن تسلّوا سيوفا بحذائهم أو تثقفوا أسنّة لإيذائهم بل أعدّوا كمثل ما أعدّوا وذالك حكم القرآن فافهموا وجدّوا ولا تعتدوا إن الله لا يحب المعتدين سيصول علىّ شرير أو ضرير ويقول ويحك أتحرّم الجهاد وإنّا ننتظر المهدى الذى يسفك الدماء ويفتح البلاد ويأسر كل من أرى الكفر والعناد فالجواب أن هذه القصص ما ثبتت بالقرآن بل ياتى المهدى بوقار وسكينة لا كمجنون بالسيف والسنان أيقبل عقل سليم وفهم مستقيم أن يخرج المهدى بسيف مسلول ويقتل الغافلين؟ وما كان الله أن يُعذّب أمّة قبل أن يُفهّم بالآيات والبراهين وإن هذا أمر لا نجد نموذجه فى سُنن المرسلين ولا يصدر كمثل هذا الفعل الا من المجانين فعدّلوا ميزان العقل ولا تميلوا كل الميل إلى

पर विजय प्राप्त करेगा और हर उस व्यक्ति को जो कुफ़्र और वैर की अभिव्यक्ति करेगा क़ैदी बना लेगा। तो इसका उत्तर यह है कि ये क़िस्से और कहानियां पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध नहीं। अपितु महदी बड़ी मान मर्यादा और धैर्य पूर्वक आएगा, न कि सिरफिरे पागलों की तरह तलवार और भाले लेकर आएगा। क्या सद्बुद्धि और सीधी समझ इस बात को स्वीकार कर सकती है कि महदी तलवार सूंत कर निकले और ग़ाफ़िल् लोगों को क़त्ल करता फिरे। अल्लाह तआला निशानों और तर्कों के साथ समझाने से पूर्व किसी उम्मत को अज़ाब नहीं देता और यह ऐसी बात है जिसका उदाहरण हम मुर्सलों की सुन्नत में नहीं पाते और उस जैसा कार्य पागलों से ही जारी होता है। इसलिए बुद्धि की तराज़ू को सीधा रखो और पुस्तकीय कहानियों की ओर पूर्णतया झुक न जाओ। बुद्धिमानों के कटाक्ष से बचो और काटने वाली तलवार को दूर फेंको। भाला और तलवार चलाने को प्राथमिकता मत

سمر النقل واتّقوا طعن العقلاء وانبذوا السيف الذربَ
ولا تؤثروا الطعن والضربَ ولا تنسوا حديث يضع
الحرب مالكم لا تأخذون حظا من المِقَةِ كإخوان الصدق
والثّقة؟ أليس عندكم الا المرهفات واللهذم والقناة أو
برأتم من سبل الحصاة وإن المهدى قد أتى وعرفه العارفون
وهو الذى يُكلّمكم أيها النائمون فوجدتم ثم فقدتم
كأنّكم لا تعرفون كفّرنى هذه العلماء من التزوير
والتلبيس و كيف لا والشيخ المفتى إبليس؟ وإن القسوس
طربوا وشهقوا بوجود هذه العلماء وآووهم إلى سررهم
إعزازًا للرفقاء فإنهم آثروا الكذب لإحياء عيسٰى

दो। और "यज़उल हर्ब" की हदीस को न भुलाओ। तुम्हें क्या हो गया है तुम सच्चे और विश्वसनीय भाइयों के समान प्रेम से हिस्सा नहीं पाते। क्या तुम्हारे पास केवल तेज़ तलवारें और भाले ही हैं? या तुम बिलकुल ही बुद्धि से खाली हो? महदी तो आ चुका और अध्यात्म ज्ञानियों ने उसे पहचान भी लिया। है सोने वालो! यह वही तो है जो तुमसे कलाम कर रहा है। तुमने उसे पाया फिर उसे खो दिया। इस प्रकार कि जैसे तुम कुछ जानते-पहचानते ही नहीं। इन उलमा ने झूठ और जालसाज़ी से मुझे काफ़िर ठहराया। तथा ऐसा क्यों न होता जबकि फ़त्वा देने वाला शेख ही इब्लीस है। इन उलमा के अस्तित्व से पादरी लोग आत्मविस्मृति से झूम उठे और खुशी के गीत गाए और अपने साथियों का सम्मान बढ़ाते हुए उन्हें अपने तख्त पर बिठाया क्योंकि उन्होंने ईसा के जीवित रहने को सिद्ध करने के लिए झूठ को प्राथमिकता दी तथा झूठ को सजाया। कश्मीर में इब्ने मरयम की आरामगाह को भूल गए फिर जब पादरी लोगों ने परखने और अनुभव के पश्चात् यह देखा कि ये उलमा ईसा को उपास्य बनाने में उनके सहायक हैं तो उन्होंने कहा कि हमारे ख़ुदावंद मसीह की श्रेष्ठता के संबंध में हमारे पक्ष में

وزيّنوا دقاريـر ونسـوا مضجـع ابـن مريـم بكشـمير فلمـا
رأى القسـوس بعـد التمـرّس والتجربـة أنـهم حُماتـهم فى جعـل
عيسٰـى مـن الآلهـة قالـوا لنـا عنـد المسـلمين شـهادة فى عظمـة
ربنـا المسـيح فإنـهم يُقـرّون بصفاتـه الربانيـة بالتصريـح
ومـا كذبـوا فى هـذا البيـان وإن كانـوا كاذبـين عنـد الرحمـان
فإنّـك تعلـم أن هـذه العلمـاء قـد تفوّهـوا بألفـاظ فى شـأن
عيسٰـى ليـس معناهـا مـن غـير أنـهم جعلـوه لله كالمتبـنّى ولـن
تعـود دولة الإسـلام إلى الإسـلام مـن غـير أن يتّقـوا ويوحّـدوا
ويدوسـوا هـذه العقيـدة تحـت الاقـدام إنـهم يُحطّـون
ويدَعّـون كل يـوم إلى تحـت الثـرى الا إذا اتّقـوا وجعلـوا

मुसलमानों के पास गवाही मौजूद है क्योंकि वह उसकी ख़ुदाई विशेषताओं का स्पष्ट तौर पर इक़रार करते हैं। तो उनका यह कहना कुछ झूठ भी नहीं। यद्यपि दयालु ख़ुदा के निकट वे झूठे हैं। तुम्हें मालूम ही है कि इन उलमा ने ईसा अलैहिस्सलाम की शान में अपने मुंह से वे शब्द कहे हैं जिनका इसके अतिरिक्त कोई और मतलब नहीं निकलता कि उन्होंने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह के मुतबन्ना (लेपालक) की हैसियत दे दी है। अब इस्लाम की शान और शौकत वापस नहीं आ सकती सिवाए इसके कि ये उलमा संयम धारण करें, एकेश्वरवादी बनें और मसीह के ख़ुदा होने की आस्था को पांव तले रौंद डालें। ये उलमा दिन प्रतिदिन गिराए जाएंगे सिवाए इसके कि संयम ग्रहण करें और ईसा (अलैहिस्सलाम) की मुर्दों में गणना करें। ख़ुदा की क़सम मैं इब्ने मरयम की मृत्यु में इस्लाम का जीवन देखता हूं। अत: मुबारक वह जिसने इस रहस्य को समझा और समझाया। क्या तुम इस बात पर विचार नहीं करते कि ये पादरी किस प्रकार ईसा के जीवित रहने पर आग्रह करते हैं और उसकी विशेषताओं से उसकी ख़ुदाई सिद्ध करते हैं। तुम में वह मर्द (मैदान) कहां हैं जो अल्लाह और उसकी प्रसन्नता

عيسٰى من الموتٰى ووالله إنى أرى حياة الإسلام فى موت ابن مريم فطوبٰى للذى فهم هذا السرّ وفهّم ألا ترون القسيسين كيف يُصرّون على حياته؟ ويُثبتون ألوهيته من صفاته؟ فأين فيكم رجل يردّ عليهم لله ومرضاته؟ ويُثبت أنه من الموتى ويسدد قوله من جميع جهاته ويقوّم سهمه مع موالاته ويهزم العدوّ بصايبه ومصمياته؟ كلا بل أنتم تعاونونهم وتنصرون وبأصوات النواقيس تفرحون ولا تُسفرون عن أوجهكم أأنتم القسوس أم المسلمون؟ أتحولون حولهم لعلكم تُرزقون؟ أوَتُوَقّرون بهم وتُعزّزون؟ ولله العزّة جميعا وله خزائن السماوات والارض وكل ما

प्राप्त करने के उद्देश्य से उनकी इस गलत आस्था का खंडन करे? और यह सिद्ध करे कि वह मुर्दों में सम्मिलित हैं और प्रत्येक पहलू से अपनी (आस्था को) सही सिद्ध करे? और अपने तीर को उसकी संबंधित बातों सहित सीधा करे? और अपने निशाने पर लगने वाले घातक तीरों से शत्रु को पराजित करे। ऐसा नहीं अपितु तुम तो उनका साथ दे रहे हो और उनकी सहायता कर रहे हो और भिन्न-भिन्न प्रकार के शंखों के साज़ और आवाज़ से तुम प्रसन्न होते हो और अपने चेहरों से पर्दा नहीं उठाते। क्या तुम पादरी हो या मुसलमान, क्या तुम उनके चारों ओर इसलिए चक्कर लगाते हो कि तुम्हें अन्न दिया जाए या उनके कारण तुम्हारा सम्मान और सत्कार किया जाए। हालांकि संपूर्ण सम्मान का अधिकारी अल्लाह है। तथा आकाश एवं पृथ्वी के खज़ाने और हर चीज़ जिसके तुम अभिलाषी हो उसी स्रष्टा के अस्तित्व के स्वामित्व में हैं। तुम्हें क्या हो गया है कि अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और उस पर भरोसा नहीं करते (हां) उलमा के समस्त गिरोह एक जैसे नहीं। एक गिरोह संयमी है और एक गिरोह दुराचारों में लिप्त है। वे लोग जो संयमी हैं हम उनका अच्छा ज़िक्र ही करते हैं। अल्लाह उनका

تطلبون فما لكم لا تؤمنون بالله ولا تتوكّلون ليسوا سواء زمر العلماء فريق اتقوا وفريق يفسقون إن الذين اتّقوا لا نذكرهم الا بالخير وسيهديهم الله فإذا هم يُبصرون وإذا قيل لهم كفّروا هذا الرجل الذى يقول إنى أنا المسيح قالوا ما لنا أن نتكلّم بغير علم وإنّا خائفون وقد أخطأ كل من استعجل فى موسٰى وعيسٰى وفى نبيّنا المصطفٰى فلم تستعجلون؟ إن يك كاذبا فعليه كذبه وإن يك صادقا فنخاف أن نعصى الله والذين يُرسلون وقوم آخرون منهم آمنوا بالحق وأُوذوا فصبروا عليه وأُخرِجوا من دورهم ومساجدهم وحُقّروا بعد ما كانوا يُعَظّمون وإذا رأوا آية

अवश्य मार्गदर्शन करेगा और वह प्रतिभाशाली हो जाएंगे। जब उन्हें कहा जाए कि तुम उस व्यक्ति को काफ़िर कहो जो अपने आप को मसीह कहता है, तो वे उसके उत्तर में कहते हैं कि हमें यह अधिकार प्राप्त नहीं कि हम बिना जानकारी के बात करें। हमें तो भय आता है (सच्ची बात यह है) कि जिसने मूसा, ईसा और हमारे नबी मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाने में शीघ्रता से काम लिया उसने बड़ी गलती की। फिर तुम क्यों शीघ्रता करते हो? यदि वह झूठा निकला तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा और यदि वह सच्चा हुआ तो इस स्थिति में हमें भय है कि हम अल्लाह और उसके मुर्सलों की अवज्ञा करने वाले बनेंगे। और इन्हीं में से कुछ अन्य लोग हैं जो सच पर ईमान ले आए और उन्हें कष्ट दिए गए तथा उन्होंने इस पर सब्र किया। उन्हें उनके घरों और मस्जिदों से निकाला गया वह मान सम्मान वाले थे। परंतु उनका तिरस्कार किया गया कि जब वे कोई निशान देखते हैं और आकाश से प्रकाश उतरते हुए देखते हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है तथा उनका इरफ़ान चमक उठता है। सच को पहचानने के कारण वे हर संकट में प्रसन्न हो जाते हैं और इस दुनिया से मर जाते हैं। तथा प्रतिदिन

من الآيات والانوار النازلة من السماوات زاد إيمانهم وأشرق عرفانهم ورضوا بكل مصيبة بما عرفوا من الحق وماتوا من هذه الدنيا و كل يوم إلى الله يُجذبون ترى أعينهم تفيض من الدمع ربنا إننا سمعنا مناديا و رأينا هاديا فآمنّا به فاغفر لنا ربّنا و كفّر عنّا سيئاتنا ولا تمتنا الا ونحن عليه ثابتون أولئك الذين أرضوا ربّهم وله تركوا صحبهم وصيل على بعضهم فقضوا نحبهم أولئك عليهم صلوات الله وبركاته وأولئك هم المهتدون إن الذين بَلَغَتْهُم بشارة بعث المسيح فما قبلوها أولئك هم المحرومون يضاهئون النصارى بعقائدهم و لا يشعرون يقولون إن القسوس أقرب منكم إلى الحق أولئك الذين لعنهم الله والملائكة والصلحاء أجمعون وإن الذين شقوا

अल्लाह की ओर खींचे जाते हैं। तुम उनकी आंखों को यह दुआ करते हुए रोते हुए देखोगे कि हे हमारे रब्ब! हमने एक मुनादी को सुना और पथ प्रदर्शक को देखा तो हम उस पर ईमान ले आए इसलिए हे हमारे रब्ब! हमें क्षमा कर दे, हमारी बुराइयां हम से दूर कर दे और हमें ईमान पर सुदृढ़ रहने की हालत में मौत दे। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब को राज़ी कर दिया और उसके लिए अपने दोस्तों को छोड़ दिया। उनमें से कुछ पर आक्रमण किए गए जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अपनी मनोकामना को पा लिया। यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह की रहमत और बरकतें हैं और यही लोग हिदायत प्राप्त हैं। जिन लोगों को मसीह के अवतरित होने की ख़ुशख़बरी मिली परंतु फिर भी उसे स्वीकार न किया तो ऐसे लोग वंचित हैं। वे अपनी आस्थाओं में ईसाइयों से समानता रखते हैं और वे समझ नहीं रखते। वे कहते हैं कि "पादरी तुमसे अधिक सच के करीब हैं"। इन्हीं पर अल्लाह और समस्त नेक लोगों की लानत है इन अभागों से वही दोस्ती रखता है जो

ما والاهم الا من ولّى وما صافاهم الا القلب الذى صار كالكلب ومن النور تخلّى ونُشِّأ فى الجهل وبالعلم ما تحلّى فسيعلم إذا الله تجلّى ألا يرون الطاعون؟ ألا يرون سهام أشرار كأنها شواظ من نار؟ وقدنزل العدا بساحتهم وتشمّروا لإجاحتهم فما بارزوا الاعداء وما أعدّوا وما فكّروا فى حيل أجاحوا الدين بها و ردّوا انظروا إلى هذه العلماء إنهم ما دخلوا الدار من بابها البيضاء بل تسوّروا جدران الحق من الاجتراء وإن المسيح قد وافاهم مع العلوم النخب رُحَمًا من الله ذى العجب وما أنضوا إليه ركاب الطلب بل اضطرمت نار الفتن فاقتضت ماء السماء فنزل مسيح الله بعد ما نزلت على الناس أنواع البلاء وترون كيف صالت القسوس وشاعت الملّة النصرانية

(सच के मार्ग से) फिर चुका हो और इनसे वही दिल प्रेम संबंध रखता है जो कुत्ते की विशेषता रखता हो और प्रकाश से खाली हो और जहालत में जवान हुआ हो और ज्ञान के आभूषण से सजा हुआ न हो। जब अल्लाह झलक दिखलाएगा तो उसे मालूम हो जाएगा। क्या वे ताऊन को नहीं देखते क्या उनकी दृष्टि दुष्ट लोगों के तीरों पर नहीं जो अग्नि के लपकते हुए शोलों के समान हैं। शत्रु उनके आंगन में उतर आए हैं और उन्होंने उनके उन्मूलन के लिए अपनी आस्तीनें चढ़ा ली हैं। परन्तु फिर भी ये उन शत्रुओं के मुकाबले पर न निकले और न तैयारी की और न उन्होंने उनके इस्लाम के उन्मूलन करने वाले षड्यंत्रों पर कभी ध्यान दिया और न ही उत्तर दिया। इन उलमा की हालत पर दृष्टि डालो घर में उसके सफ़ेद दरवाज़े से दाखिल नहीं हुए अपितु बड़ी धृष्टता से उन्होंने सच की दीवारों को फांदा है। चमत्कारों वाले ख़ुदा की दया से वह मसीह उनके पास उच्च विद्याएं लेकर आया परंतु उन्होंने मांग और जिज्ञासा की सवारियों को उसकी ओर नहीं

وقلّت الانوار الإيمانية ودقّت المباحث الدينية فى هذا الزمان وصارت معضلا تها شيء لا تفتح أبوابها من دون الرحمان فاليوم إن كان زمام الدين فى أكفّ هذه العلماء فلا شك فى خاتمة الشريعة الغرّاء فإنهم إذا بارزوا فولّوا الدبر كالمبهوت المستهام و كانوا سببا لاستخفاف الإسلام و كيف يتصدّى رجل للحرب قبل أن يُمرّن على عمل الطعن والضرب؟ ووالله إنهم قوم لا توجد فى كلامهم قوّة ولا فى أقلامهم سطوة ثم مع ذالك يوجد فى أقوالهم سمّ الرياء ولا يتفوّهون من الإخلاص والاتّقاء بل تشاهد فيها أنواع العفونة من الجهل والتعصّب والرعونة ولا يُرى فيها صبغ من الروحانية ولا يُؤنس شيء من النفحات

दौड़ाया। अपितु फिर फ़ित्नों की अग्नि भड़क उठी और उसने आकाशीय पानी की मांग की। फिर लोगों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की बलाओं के उतरने के बाद अल्लाह का मसीह उतरा। तुम देखते हो कि पादरियों ने किस प्रकार आक्रमण किए और इसाई धर्म फैला। और इस युग में ईमान के प्रकाश कम हो गए। धार्मिक मामले कठिन हो गए और ऐसी-ऐसी आहें पड़ीं कि दयालु ख़ुदा के अतिरिक्त उनकी आंखें खोलना संभव न था। इसलिए आज धर्म की बागडोर इन उलमा के हाथ में हो तो फिर रोशन शरीअत की समाप्ति में कोई संदेह नहीं। क्योंकि वे जब भी मुकाबले पर निकले तो पीठ फेर कर आतुर चकित व्यक्ति की तरह भाग गए और वे इस्लाम की लज्जा का कारण बने। भाला चलाने और तलवार चलाने की कला का अभ्यास किए बिना कोई मनुष्य युद्ध के लिए कैसे निकल सकता है। ख़ुदा की क़सम यह (उलमा का) फ़िर्का ऐसा है जिनके कलाम में कोई शक्ति नहीं। और न उनके कलमों में कोई वैभव है। इस पर अतिरिक्त यह कि उनकी बातों में दिखावे का विष पाया जाता है। वे निष्कपटता और संयम पूर्वक बात नहीं

الإيمانية ولا يكون محصلها الا ذخيرة الشك والريب ولا يُرَشَح على قلوبهم علم من الغيب ولذالك لا يقدرون على تسلية المرتابين وتبكيت المعترضين بل هم فى شك ومن المتذبذبين و كثير منهم نجد منهم ريح الدهريين وليس قولهم الا كالسرجين أو كميّت قُبر من غير التكفين وليسوا الا عارا على الإسلام وتبارا للمسلمين لاسيما فى هذا الحين فإن الناس يتطلّبون فى هذا الاوان من يُخرجهم من ظلمات الشك إلى نور الإيقان ويحتاجون إلى نطق يُشفى النفس وينفى اللبس ويكشف عن الحقيقة الغمّى و يوضح المعمّى فأين فى هؤلاء رجل توجد فيه هذه الصفات و كيف من غير حديد تُكسر الصفات؟ وأين

करते। अपितु तू उनकी बातों में जहालत, पक्षपात और अहंकार की विभिन्न प्रकार की दुर्गंध पाएगा और उन में रूहानियत का कोई रंग दिखाई नहीं देगा और उन्हें ईमानी गंद की लपटें बिल्कुल महसूस नहीं होतीं केवल संदेह और शंका का भंडार ही उनकी प्राप्ति है। उनके दिलों पर ज्ञान का छींटा तक नहीं पड़ा। इसी कारण से वे संदेह करने वालों की संतुष्टि कराने तथा ऐतराज़ कर्ताओं का मुंह बंद (निरुत्तर) करने पर क़ुदरत नहीं रखते अपितु वे तो स्वयं संदेह और असमंजस में गिरफ़्तार हैं। उनमें से अधिकतर ऐसे भी हैं जिनमें हम नास्तिकता की गंध पाते हैं। उनकी बातचीत ऐसे जैसे गोबर या कोई मुर्दा जिसे बेकफ़न कब्र में डाल दिया गया हो। वे इस्लाम के लिए नंग और मुसलमानों के लिए तबाही हैं। विशेष तौर पर इस युग में। इस युग में लोग ऐसे व्यक्ति के खोजी हैं जो उन्हें संदेह के अंधकारों से निकाल कर विश्वास के प्रकाश में ले आए। वे ऐसे कलाम के मोहताज हैं जो दिल को सांत्वना दे और भ्रम दूर करे तथा गुप्त वास्तविकता से पर्दा उठा दे और पहेली को स्पष्ट कर दे। इनमें वे मर्द कहां जो इन विशेषताओं वाला है।

فيهم رجل بليغ يتمايل عليه الجلاس؟ وأين فصيح يتفوّه بكلم يستملحها الناس؟ وأين فيهم مُزَكًّى يُحيى القلوب ويهب السكينة ويدرأ الكروب؟ وأين كلام تحكى لآلى منضدة؟ وأين بيان يضاهى قطوفا مذلّلة؟ بل أخلدوا إلى الارض بحرص شديد فأنَّى لهم التناوش من مكان بعيد؟ وما كان لاحد أن يكون قادرًا على حُسن الجواب وفصل الخطاب ومستمكنًا من قول هو أقرب إلى الصواب من غير أن ينفخ فيه من رب الارباب فانظروا أتجدون فيهم من يُبكّت المخالف فى كل مورد تورّده ويُسكّت الزارى عند كل كلام أورده؟ أتجدون فيهم من

और लोहे के बिना पत्थर कैसे तोड़ा जा सकता है। इनमें ऐसा कामिल व्यक्ति कहां है जिस पर मज्लिस में उपस्थितगण आकर्षित हों और कहां है ऐसा सरस वक्ता जो ऐसा काम करे जिसे लोग उत्तम और लावण्य समझें? कहां है उनमें ऐसा पवित्र किया हुआ जो दिलों को ज़िन्दा करे और सांत्वना प्रदान करे और कष्ट दूर करे। तथा कहां है वह कलाम जो सुंदर जड़े हुए मोतियों के सदृश हो। और कहां है ऐसा बयान जो झुके हुए गुच्छों से समानता रखता हो। तीव्र लाभ के कारण वे ज़मीन की ओर झुक गए हैं। अत: दूर के स्थान से उनका उसे पकड़ लेना कैसे संभव हो सकता है। किसी के लिए संभव नहीं कि वह उत्तम उत्तर देने और निर्णायक कलाम पर सामर्थ्यवान हो और रब्बुल अरबाब की रूह के फूंकने के बिना बहुत सही बात पर हो। विचार करो! क्या तुम्हें उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति नज़र आता है कि उसका विरोधी जिस मैदान में भी उतरे वह उसे उसी मैदान में निरुत्तर कर सके? और प्रत्येक आलोचक को उसकी प्रस्तुत की हुई हर बात पर खामोश करवा सके। और क्या तुम उनमें कोई ऐसा व्यक्ति पाते हो जो उच्चतम साहित्य और चमकते हुए वर्णन के चरमोत्कर्ष आगे निकल जाने

كان سبّاق غايات فى مُلح الادب وغُرر البيان ولا يأخذه خجالة فى أساليب التبيان ثم مع ذالك كان البيان فى معارف الفرقان مع التزام الحق والصدق والاجتناب من الهذيان؟ أرأيتم فيهم من يُخوّف قرنه بالبلاغة الرائعة ويذيب النفوس بالكلم الذائبة المائعة أو يُرِى الكلام فى الصورة كالدرر المنثورة؟ ولن ترى فيه صرِّيعًا ومن كان فى العلوم يَحْكِى بقيعًا نعم ترى فيهم أمواج تكبّر وخيلاء من غير فطنة ودهاء ثم مع هذا الجهل بلَغَتْ رؤوسهم إلى السماء ولا يمشون على استحياء ولا ينتهون من تصلّف واستعلاء ورعونة ورياء وتحقير وازدراء وكأيّن من آية

वाला हो और सरसता एवं सुबोधता की किसी भी शैली में उसे शर्मिंदगी का सामना न करना पड़े। इसके बावजूद वह वर्णन हक़ और सच की अनिवार्यता के साथ-साथ डींगें मारने से पवित्र क़ुर्आनी मआरिफ़ पर आधारित हो, क्या तुम्हें इनमें कोई ऐसा व्यक्ति दिखाई देता है जो उत्तम बलाग़त (वार्ता-माधुर्य) से अपने प्रतिद्वंद्वी पर रोब डाल सके और जो अपने प्रवाहपूर्ण और सुवार्ता से लोगों को पिघला दे और अपने कलाम को बिखरे मोतियों के रूप में प्रस्तुत कर सके। तुम उन में कदापि कोई मर्दे मैदान नहीं देखोगे जो विद्याओं में प्रतिभावान दक्ष के समान हो। हां यद्यपि उनमें घमंड और अहंकार की लहरें देखोगे जिनमें समझ और प्रतिभा का नाम तक न होगा। फिर इस जहालत के बावजूद उनके सर आकाश तक पहुंचे हुए हैं और वे शर्म के साथ नहीं चलते वे डींगें मारने, घमंड, अहंकार, दिखावा तथा अन्यों के तिरस्कार और अपमान से रुकते नहीं। कितने ही महान निशान थे जिन्हें अल्लाह ने उतारा परंतु वे उनकी ओर ध्यान नहीं देते तथा अल्लाह और उसके रसूलों पर हंसते और उपहास करते हुए गुज़रते हैं। वे केवल अपनी कामवासना संबंधी इच्छाओं की पूजा करते हैं और सोच विचार से काम नहीं

أنزلها الله ثم لا يُصغون و يمرّون ضاحكين على الله و رسله
ويستهزءون ولا يعبدون الا أهواء هم ولا يتدبّرون و
قالوا أرنا آية من الله وقد ظهرت الآيات من السماوات
والارض لقوم يتّقون وقيل إن كنتم فى شكّ من كلامى
فأتوا بكلام من مثله فما آتوا بمثله وما تركوا الظن
الذى به أنفسهم يُهلكون و إن منصب العلماء خطب خطير
وأمر كبير لا يليق لهذه الخدمة الا الذى فُتحت عليه
أبواب الحجّة البالغة ورُزِق نظرًا مُنَقّحًا من حضرة الغيب
وعِلمًا مُنزّها عن الشك والريب ومع ذالك أُعطى
عذوبة البيان والْمُلَح الادبية والحلل المستحسنة لإراءة

लेते। तथा कहते हैं कि हमें अल्लाह का कोई निशान दिखाओ। हालांकि संयम ग्रहण करने वालों के लिए आकाशों से भी और पृथ्वी से भी असंख्य निशान प्रकट हो चुके हैं। उनसे कहा गया कि यदि मेरे कलाम में किसी संदेह में हो तो उस जैसा कलाम प्रस्तुत करो। तो न तो वे उस जैसा कलाम लाए और न ही उन्होंने वह बदगुमानी छोड़ी, जिसके कारण वे स्वयं को मार रहे हैं। उलमा का पद इतनी अहम ज़िम्मेदारी और महान मामला है कि इस सेवा को केवल वही व्यक्ति संपन्न कर सकता है जिस पर सुदृढ़ तर्क के दरवाज़े खोल दिए गए हों और जिसे ग़ैब (परोक्ष) से अनुसंधानात्मक दृष्टि प्रदान की गई हो और उसे ऐसा ज्ञान दिया गया हो जो संदेह एवं शंका से पवित्र हो तथा इसके अतिरिक्त उसे वार्ता की मधुरता, साहित्य के मांस के मास्टर पीसों और मन की बात को सुंदर शैलियों में अदा करने की योग्यता दी गई हो और वह वर्णन की कमी और हकलाहट के दोष से सुरक्षित हो और भाषा की पूर्ण रूप से जानकारी से मालामाल किया गया हो। परंतु यह लोग जो अपने आप को उलमा कहते हैं अल्लाह ने उनके भाग्य में कोलाहल के अतिरिक्त कुछ नहीं रखा। वे क़ुर्आन पढ़ते हैं परंतु

ما فى الجنان وعُصِم من معرّة الحصر واللكن وأُسبِغ عليه عطاء اللسن ولكن هؤلاء الذين يُسمّون أنفسهم علماء ما أعطاهم قسمة الله الا الضوضاء قرءوا القرآن وما مس القرآن الا اللسان وما رأى القرآن جنانهم وما رأى جنانهم الفرقان وأروا أفعالا خجّلوا بها الشيطان ترى عقدة على لسانهم وقبضًا فى جنانهم ودَجَلا فى بيانهم ما أُيِّد نطقهم بالحجة وما سلك قولهم فى سلك البلاغة تراهم كغبيّ غمر ليس له معرفة ولا يُدرَى أقُفِل على لسانه أو لكنة كأنهم حُصروا فى مكان ضيّق ولا يتراءى سبيل وأكل تمرهم دودة النفس وما بقى الا فتيل تمترس ألسنهم

केवल भाषा की सीमा तक क़ुर्आन उनके दिलों से और उनके दिल क़ुर्आन से परिचित नहीं। उन्होंने ऐसी हरकतों का प्रदर्शन किया जिनसे शैतान को भी शर्मिंदा कर दिया। तुझे उनकी जीभ में गांठ दिल में घुटन और वर्णन में छल दिखाई देगा। उनके कलाम को तर्क का समर्थन प्राप्त नहीं और उनका वार्तालाप बग़ावत की लड़ी में पिरोया हुआ नहीं। तू उन्हें एक जाहिल, मंदबुद्धि के समान पाएगा जिसे कोई अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं और यह पता नहीं लगता कि क्या उसकी जीभ पर ताला लगा हुआ है या हकलाहट है। जैसे वे एक तंग जाल में घेरे में कर दिए गए हैं जहां से निकलने का कोई उपाय दिखाई नहीं देता। उनकी खजूर को अहंकार के कीड़े ने खा लिया है और केवल गुठली की झिल्ली बची है। उनकी जीभें झगड़ों में लगी हुई हैं और वे शत्रुओं के मुकाबले के लिए कोई तैयारी नहीं करते जिससे मुबाहसों के समय में उनका मुंह बंद कर दें। वे इस्लाम का जौहर प्रकट नहीं करते अपितु वे लड़खड़ाते कदमों से धोकेबाज़ के समान बात करते हैं। इसलिए इस्लाम को तीरों का लक्ष्य बनाते हैं। वे चौपायों जैसे हैं और चौपायों के कलाम में मर्यादा और सांत्वना नहीं होती और बात न कर सकने

فى الخصومات ولا يُعدّون للعدا ما يُبكّتهم عند المباحثات ولا يُظهرون جوهر الإسلام بل يتكلمون كمدلّس متزلزلة الاقدام فيجعلون الإسلام غرضا للسهام أولئك كالانعام وإن نطق الانعام ليس به هين وندامة الخرس أشد من الحين يطلبون قنطارا من العين ولا يطلبون بصارة العين يُظهرون جهامهم وابلا وسقطهم جوهرا قابلا ولا يضاهئون الا حابلا ولا أقول حسدا من عند نفسى ولا من الابتدار والعجلة وأعوذ بالله من الحسد والكذب والتهمة بل قلتُ كل ما قلتُ بعد التمرّس والتجربة الا الذين طابت طينتهم وصلحت نيّتهم فأولئك مُنزّهون عن هذه الملامة ولا أُفَسّق الا الذين فسقوا ولا

की शर्म मौत से भी निकृष्टतर होती है। वे सोने के ढ़ेर के इच्छुक हैं परंतु उन्हें आंख की रोशनी अभीष्ट नहीं। वे अपने जल रहित बादल को मूसलाधार वर्षा बरसाने वाला, और जो उनमें सबसे कमीना है उसे योग्य जौहर प्रकट करते हैं। वे शिकारी के सदृश हैं। मैं यह बात अपनी ओर से ईर्ष्या, जल्दबाज़ी और जल्दी से नहीं कह रहा। मैं ईर्ष्या, झूठ और आरोप से ख़ुदा की शरण मांगता हूं। अपितु जो कुछ मैंने कहा है पूरी छानबीन और अनुभव से कहा है यद्यपि जो पवित्र स्वभाव और नेक नीयत हैं उस निंदा से पवित्र हैं। मैं तो केवल पापियों को पापी और जाहिलों को जाहिल ठहरा रहा हूं। और इस खलियान में उन्हीं दानों की बहुतायत है। यदि तुम्हें संदेह है तो बार-बार दृष्टि डालो। प्रत्येक दृष्टिकोण से नज़र दौड़ाओ और गंभीरता एवं मर्यादापूर्वक सोच-विचार करो और फिर देखो कि क्या तुम इन (उलमा) को इस्लाम के सहायक और मिल्लत के सेवक पाते हो? और क्या इनमें नेक और प्रतिभाशाली लोगों का कोई निशान नज़र आता है? अपितु यह जल रहित बादल के समान हैं। डींगें मारने वाले छली से

أُجَهّل الا الذين جهلوا وتلك الحبوب هى الاكثر فى هذه العرمة وإن كنتم فى شك فامعنوا النظر مرارًا وسرحوا الطرف أطوارًا وتدبّروا تؤدة ووقارًا وانظروا هل تجدونهم من حماة الإسلام وخدّام الملّة؟ وهل تتوسّمون فيهم ميسم الابرار وذوى الفطنة؟ بل هم يشابهون جهاما وخُلّبًا ويُضاهئون متصلّفًا قُلّبًا لا تجد فيهم ريح الصادقين ولا راح العارفين ينقلبون فى قواليب العلماء ولا تجدهم الا كقالب من غير قلب الاتقياء إن هم الا كالانعام ما أُرضعوا ثدى العلم وما أُشرِبوا كأس الكرام يخدعون الناس بحلل العلماء وسناعة المتاع وحسن الرواء وإن هم الا قبور مُبيّضة عند العقلاء وليس

समानता रखते हैं। सच्चों की गंध और महक न पाएगा और न अध्यात्म ज्ञानियों जैसा आनंद। वे उलमा के रूप में घूमते हैं तू उन्हें ऐसे ढांचे जैसा पाएगा जिसमें संयमियों का दिल नहीं। वे तो केवल चौपायों जैसे हैं न उन्होंने ज्ञान के स्तनों से दूध पिया और न सुशील लोगों के जाम से पिया। उलमा के लबादों में और दुनिया के सामान की चमक-दमक तथा अपने सौंदर्य से वे लोगों को धोखा देते हैं। बुद्धिमानों के नज़दीक वे चमकती कब्रों जैसे हैं। उनके पास लंबी दाढ़ियों, ऊंची नाकों, त्योरी चढ़े चेहरों, टेढ़े दिलों, तेज़ बोलने वाली ज़बानों और दुर्गंध युक्त बातों के अतिरिक्त कुछ नहीं। वे निर्दोषों पर इल्ज़ाम लगाते और मुसलमानों को काफ़िर ठहराते हैं। उनकी बहुत सी आदतें दरिंदों की आदतों के समान और काम कमीनों के कर्मों जैसे हैं। तथा कितने ही डंक हैं जो रेगिस्तान के सांपो के डसने से आगे निकल गए हैं। और कितने ही कटाक्ष हैं जिन्होंने युद्ध के भालों को भी लज्जित कर दिया। दावा तो इदरीस के शिष्टाचार का परंतु अभिव्यक्ति शैतानी प्रकृति की करते हैं। सारांश यह कि ये इस मैदान के मर्द नहीं

عندهم من غير لُحًى طُوّلت وأنف شمخت و وجوه عبست وقلوب زاغت وألسن سُلّطت و كلم تعفّنت يرمون البريئين ويُكفّرون المسلمين و كم من خصال فيهم تحكى خصائل سباع و كم من أعمال تشابه عمل لكاع و كم من لدغ سبق لدغ حَيَوَات الصحراء و كم من طعن خجّل قنا الهيجاء يدّعون أنهم على خلق إدريس ثم يُظهرون خليقة إبليس فالحاصل أنهم ليسوا رجال هذا الميدان بل هم قوم استولى عليهم الوهن والكسل كالنسوان ورضوا بالدنيا الدنيّة واطمأنوا بها فيخلدون كل يوم إلى وهاد العصيان يُأثّمون الناس ويُفَسّقونهم

अपितु वे लोग हैं जिन पर स्त्रियों जैसी कमज़ोरी और सुस्ती छाई हुई है। वे इस दुनिया पर प्रसन्न और संतुष्ट हो गए हैं और दिन-प्रतिदिन अवज्ञा की नीतियों में झुके चले जा रहे हैं और अपनी गालियों के द्वारा लोगों को गुनहगार और पापी ठहराते हैं जबकि उनके लोग गुनाह के कई प्रकार के मैल-कुचैल से लिप्त हैं। वे लोभ तथा लालच के स्थानों पर लपकते हैं और धर्म की सहायता के मैदानों से पीछे हट जाते हैं। वे इस घटिया दुनिया के सामान की ओर झुकते हैं और बहुत थोड़े तुच्छ माल ने इन्हें धोखे में डाला हुआ है। मिम्बरों पर चढ़कर उपदेश देते हैं और एक धैर्यवान संयमी जैसा रूप धारण करते हैं। जब वे नमाज़ अदा कर लेते हैं और वापस जाने का इरादा करते हैं तो एक मुर्दा व्यक्ति की तरह अपने स्वयं दिए हुए उपदेश को भूल जाते हैं। उनमें से कौन है जिसमें धर्म की हमदर्दी और सुदृढ़ शरीअत के लिए कठोरता सहन करने की भावना पाई जाती है। और कौन है जो मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के लिए नर्म हुआ हो और इस चिंता ने उसकी नींद उड़ा दी हो और (इस्लाम पर) आने वाले संकटों ने उसकी हड्डियों को कमज़ोर कर दिया

بالإلسنة المتطاولة مع أن نفوسهم قد انّسخت بدرن المعصية يبادرون إلى مواضع الشح والنهمة ويتقاعسون من ميادين نصرة المِلّة يتمايلون على عرض هذا الادنى وخدعهم متاع قليل أكدى يعظون على المنابر ويتراءون كالمتّقى الصابر وإذا قضوا الصلاة وازمعوا الانفلات فنسوا ما وعظوا كرجل مات فمن فيهم يوجد فيه مواساة الدين ومقاساة الشدة للشرع المتين؟ ومن ذا الذى ذاب لدين المصطفٰى والوجدُ نفَى عنه الكرى وبرَى اعظُمه لما انبرَى؟ ثم مع ذالك كثر فيهم الكسل والغفلة وقلت الفطنة وأَنّى فيهم قوم يستقرون مجاهل ويردون

हो। फिर इसके अतिरिक्त उन में सुस्ती और लापरवाही बढ़ गई और बुद्धिमता कम हो गई है। उनमें वे लोग कहां हैं जो रेगिस्तानों में गुम हो चुके मार्गों को खोजें और झरनों पर आएं और समुद्रों से अध्यात्म ज्ञान के ऐसे मोती निकालें जिनकी युग को अति आवश्यकता है। अत: तू उन्हें नफ़्स की भावनाओं के कारण बेसुध की तरह और उसकी इच्छाओं में क़ैदियों की तरह देखता है। उनमें इतनी शक्ति नहीं कि वे जटिल समस्याओं के चेहरे से पर्दा हटा सकें और जो मिट गया या गायब हो गया उसका नवीनीकरण कर सकें तथा मामलों का सुधार करें और सही तथा उत्तम चीज़ों को जमा करें और तर एवं ख़ुश्क से पृथक रहें और वास्तविकताओं की जिज्ञासा में उमरें खर्च कर दें और बारीक बातें ग्रहण करने के लिए अपने शरीर घुला दें और उन (बारीक बातों) की प्राप्ति के आंगन में बस धूनी रमा लें ताकि उन मार्गों पर चलना उपलब्ध हो जाए। और उनके मार्गदर्शन स्पष्ट हो जाएं और धर्म के गुप्त रहस्य उनके सीनों में डाले जाएं और विश्वास का ज्ञान उनके दिलों में इलक़ा किया जाए। कदापि नहीं अपितु उनकी समस्त कोशिशें सांसारिक जीवन की चाह में गुम हो

مناهل ويستخرجون دُرر العرفان من بحار اشتدّت إليها الحاجة للزمان؟ بل تراهم من جذبات النفس كالسُكارى وفى أهوائها كالاسارى مالهم أن يكشفواعن وجه المعضلات النقاب ويجدّدوا ما دُرس وغاب ويُنقّحواالامور ويجمعوا ما صلح وتاب ويجتنبوا الاحتطاب ويُنفدوا الاعمار لتعرّف الحقائق و يُذيبوا الابدان لاخذ الدقائق وأن لا يبرحوا فناء تحصيلها حتى يتيسّر سلوك سبيلها ويتضح معالم دليلها ويرشح على صدورهم خفايا الدين ويُلقى فى قلوبهم علم اليقين كلا بل ضل سعيهم فى الحياة الدنيا وهم يحسبون أنهم من المحسنين وما ترى فى

गईं। और वे समझते हैं कि वे अच्छे कार्य कर रहे हैं। और तू उनकी बातों में रूहानियत नहीं देखेगा। अपितु तू उन्हें तर और ख़ुश्क़ जमा करने वाला पाएगा। हमारे इस युग में इस्लाम को सही रायों, परिणाम ग्रहण किए हुए विचारों, रोशन तबीयतों, स्वच्छ हृदयों को सुदृढ़ इरादों, स्वीकार्य दुआओं और अल्लाह तआला के निरंतर दानों और अल्लाह तआला के लिए जारी रहने वाले प्रयासों की नितांत आवश्यकता है। वास्तविकता यह है कि उम्मत के सुधार के लिए समय तंग हो चुका है और प्राण की केवल एक थोड़ी ही जान शेष है आंख की दृष्टि समाप्त हो जाने के बाद लक्षणों की जिज्ञासा क्या लाभ देगी। हे इस्लाम के सरदारो! युग पर दृष्टि डालो। सदी के सर से और उस बद्र (चौदहवीं सदी) के मेहमान का पांचवा भाग गुज़र चुका फिर हमें दिखाओ कि इस शासन केंद्र (राजधानी) पर कौन बैठा है? और दिखाओ कि इस टूटे तख्त और रोशन चेहरा जो छुप गया है के सुधार के लिए कौन खड़ा हुआ है। अत: जान लो कि यह दरवाज़ा कभी भी ख्याति (प्रचलित) हथियारों से हथियार बंद होने से नहीं खोला जाएगा। अपितु यह ठोस तर्कों और प्रकाशमान निशानों का मोहताज

كلمهم روحانية وتراهم كالمحتطبين واشتدّت حاجة الإسلام فى زمننا إلى اُراء صائبة وأفكار مستنبطة وطبائع متوقّدة وقلوب صافية وهمم منعقدة وأدعية مقبولة وفيوض من الله متوالية ومساعى لله جارية وقد ضاق وقت إصلاح الاءمّة وما بقى إلا كرمق المهجة وما يُجدى طلاب الآثار بعد ما فُقد العين من الابصار انظروا إلى الاءيام يا سراة الإسلام وقد مضى خُمسٌ من رأس المائة ومن هذا الضيف البدر فأرونا من جلس على هذا الصدر وأرونا من قام لجبر سرير انكسر ووجه منير استتر واعلموا أن هذا الباب لن يُفتح بأسلحة متقلّدة

है तथा पहले मारिफ़त का मोहताज है जो शरीअत के ज़ाहिरी और गुप्त पहलुओं पर सोच विचार करते हैं तथा मिल्लत के बाह्य एवं आंतरिक मामलों की सेवा में लगे रहते हैं ताकि उससे दिल सांत्वना पाएं और जो बातें गुप्त हैं वे प्रकट हो जाएं। और अक्ल के अंधे भी उससे लाभ प्राप्त करें। हे प्रतिष्ठित और सरदारो! वह आफ़त जो तुम पर आ गई है वह बहुत बड़ी है और जो संकट उतर गया है वह बहुत बड़ा है। मुझे बताओ! तुमने इसे इस सेना की भीड़ से प्राप्त प्रतिरक्षा के लिए क्या तैयारी की है? क्या तुम उन उलमा, शेखों तथा फ़ुक़रा को हमारे सामने प्रस्तुत करते हो? यह कठिन घड़ी जो हम पर आन पड़ी है और वह संकट जो हमारी रोशन शरीअत पर उतरा है उस पर इन्नालिल्लाह पढ़ो। अब इस्लाम को एक ऐसे मर्द (मुजाहिद) की आवश्यकता है जिसे ग़ैब के हाथ ने वह कुछ दिया है जो उसके ग़ैर को नहीं दिया गया। और जिसे अल्लाह तआला ने वह कुछ दिखाया है जो किसी और ने अपने जीवन के सफ़र में न देखा हो। साहिबे तौफीक और समर्थन प्राप्त लोगों में से तथा नबियों का वारिस बनाया हो और उसे ज्ञान हार्दिक दृष्टि, हिम्मत, मारिफ़त, सही और उत्तम राय तथा

بل يحتاج إلى دلائل قاطعة وآيات ساطعة وإلى العارفين الذين يتدبّرون بشرة الشريعة وخوافيها ويخدمون ظواهر الملّة وما فيها لتطمئن بها القلوب وتنكشف الغيوب وينتفع المحجوب أيها الكرام وسراة الإسلام قد جلّ ما عراكم من الداهية وعظم ما نزل من المصيبة فأروني ما هيّأتم لدفاع هذه الجنود المجنّدة أتعرضون علينا هذه العلماء وهذه المشائخ والفقراء فانّا لله على وقت جاء ومصيبة حلّت شريعتنا الغرّاء الآن يحتاج الإسلام إلى رجل آتته يد الغيب مالم يُعطَ لغيره وأراه الله ما لم يره أحد في سيره وجعله الله من الموفقين

इच्छा शक्ति से विशेष तौर पर कृपा की हो और विलक्षण दिरायत* प्रदान की हो और उसे फलों की प्रचुरता से लाभान्वित किया हो और उसे वृक्षों से लटकने वाले गिरगिट की तरह न रखा हो ताकि सत्य का अभिलाषी उस मर्द से वे वास्तविकताएं पा लें जिनका उन्होंने इरादा किया था। और उन मआरिफ़ की सुगंध पा लें जिनका उन्होंने प्रण किया था। और ताकि वे उससे अद्भुत बातें प्राप्त कर सकें और ताकि मखलूक उसकी और भूखे और मोहताज आदमी की तरह दौड़ती चली आए और वे उसकी शरण में उसी प्रकार आ जाएं जिस प्रकार बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरण ली थी ताकि वे उस के माध्यम से रहस्य और भेदों का स्वाद चखें और प्रकाशों की चरागाह में चरें। इसके अतिरिक्त अहले ज़माना के सुधारक की निशानियों से एक यह भी है कि वह धर्म के संबंध में बुद्धिमान और वर्णन शक्ति में अपने अन्य पर श्रेष्ठता रखता हो और समझाने के अंतिम प्रयास को पूर्ण करने पर उसे हुनरमंदो से भी

*दिरायत - वह नियम जिनका उद्देश्य किसी रिवायत को बौद्धिक तौर पर परखना है। (प्रकाशक)

المنصورين وورثاء النبيين ومنَّ عليه بالامتياز بالعلم والبصيرة والهمّة والمعرفة والإصابة والإجادة وقوّة الإرادة ووهب له دراية تُعد من خرق العادة ومتّعه بكثير من الثمار وما تركه كحرباء يتعلق بالاشجار ليُلفى الطلابُ عنده حقائق نَووها ويجدوا نشر معارف طووها وليأخذوا منه العجائب ولينالوا الغرائب وليُهرع الخلق إليه كذى مجاعة وبوسَى ويأووا إليه كبنى إسرائيل إلى موسَى وليذوقوا به طعم الاسرار ويسرحوا فى مسرح الانوار ومع ذالك من شرائط مصلح أهل الزمان أن يفوق غيره فى التفقّه وقوة البيان وأن يقدر على إتمام

अधिक क़ुदरत हो और सरसता की पद्धति पर प्रवाहपूर्वक कलाम करे और रायों में वह ग़लती करने से निर्दोष हो और सत्य एवं असत्य के प्रकाशमान दिन और अंधकारमय रात के समान पृथक करके दिखा दे। ताकि उसके द्वारा लोग साफ़ और शुद्ध बातों के झरने को पा लें और अपनी स्मरण शक्ति की पोटली में अध्यात्म ज्ञानों के मोती एकत्र कर लें। एक सुधारक की निशानियों में से यह भी है कि वे निबंध रचना में कमाल रखता हो और वह जिस प्रकार चाहे उसमें अपनी ओर से कुछ परिवर्तन कर सके और अधम वर्णन से बचे और अपनी बात को प्रमाण के साथ सुदृढ़ करे। और यह तू देख ही रहा है कि यह निशानियां इस फ़िर्के में आप्राप्य हैं। इन्हें बहुत कम इन्सानी शक्लें प्रदान की गई हैं अपितु उनकी हालत यह है कि वे उपदेश एवं नसीहत से नहीं जागते तथा बुद्धि और विवेक के मार्गों पर नहीं चलते। मैं तो इन्हें स्थूल पदार्थों की तरह या मुर्ग़ी के उन चूज़ों की तरह समझता हूं जिन पर अंडे से निकले हुए एक रात भी नहीं गुज़री। तेरा क्या विचार है कि ये पादरियों के उन हथियारों को बेकार बना सकते हैं जो उन्होंने विनाश और तबाही के लिए बनाए हुए हैं। ख़ुदा की क़सम

الحجة ولا كأهل الصناعة ويسرد الكلام على أسلوب البراعة ويعصم نفسه من الخطأ فى الآراء ويرى الحق والباطل كالنهار والليلة الليلاء ليحرز الناس به عين الامور المنقّحة وليجمعوا دُرر المعارف فى صرّة قوّة الحافظة ومن شرائط المصلح أن يُنقّح الإنشاء ويتصرّف فيه كيف شاء ويجتنب ركاكة البيان ويؤكّد قوله بالبرهان وأنت ترٰى ان هذه الشرائط مفقودة فى هذه الفرقة وما أُعطى لهم الا قليل من الصور الإنسانية بل لا يستيقظون بمواعظ ولا ينتهجون مهجة الحزم والفطنة

अपितु वे तो मरे हुए हैं न कि हृष्ट-पुष्ट पहलवान। न तो उनमें कोई हरकतें रही हैं और न प्रण और इरादे का कोई निशान। उन्होंने दुनिया की क़द्र और क़ीमत को बहुत ऊंचा समझा और उसके पानी और वर्षा ऋतु के बादल को प्रचुर समझा और उसके ऐश और उसी की सुंदरता और बाह्य सजावट तथा सुसज्जा से धोखा खाया। कामवासना संबंधी इच्छाओं ने उनकी इंसानी विशेषताओं को बिल्कुल परिवर्तित कर रख दिया यहां तक कि वे रहमानियत (दया) के अधिकारों से अपरिचित हो गए। फिर उनसे धर्म की सहायता की आशा किस प्रकार की जा सकती है। और कफ़न दफ़न के बाद मुर्दा किस प्रकार जीवित हो सकता है। धर्म की सहायता करना कोई आसान कार्य नहीं है। मर कर ही उस तक तेरी पहुंच हो सकती है। और यह विजय जनसाधारण को कदापि नहीं दी जाएगी और शत्रुओं को उनकी लाठियों और बरछियों से कदापि पराजित नहीं किया जा सकेगा। बहुत बड़ी मूर्खता होगी कि आदमी उनके अस्तित्व पर गर्व करे या उन कीड़े मकोड़ों से भलाई की आशा रखे। इसलिए दुर्भिक्ष के इस युग में किसी यूसुफ़ को तलाश करो चाहे दूर का सफ़र हो और (उसके) लिए सवारियां तैयार करनी पड़ें। इन उलमा के जुब्बों पर मत जाओ। क्योंकि

وما أراهم إلا كجمادات أو كفرخ الدجاجة وما مرّ عليهم الا ليلة على الخروج من البيضة فما ظنك أ يُبطل هؤلاء ما صنع القسوس من أسلحة للإهلاك والإبادة؟ لا والله بل هم كصرعٰى لا رجال الجلادة وما بقى فيهم حركة ولا علامة من القصد والإرادة قد استسنوا قيمة الدنيا ووزنها واستغزروا ماء ها ومُزنها غرّوا باجمال عشرتها وتجميل قشرتها وأحالت الاهواء صفاتهم الإنسانية حتى جهلوا الحقوق الرحمانية فكيف يُتَوقّع منهم نصرة الدين؟ و كيف يحى الميّت بعد التجهيز والتكفين؟ وإن نصرة الدين ليس بهين وما تصل إليها الا

उनमें कृपणता और दिखावे के अतिरिक्त कुछ नहीं। और न उनकी अन्य आदतों की ओर (देखो) जो नेक लोगों की प्रतिष्ठा के यथायोग्य नहीं। मैंने उन्हें बुलाया जैसे कि बुलाने का हक़ था। परंतु वे केवल इन्कार में ही बढ़ते चले गए। मैंने कितनी ही पुस्तकें लिखीं अनेकों पुस्तकें बिना सोचे लिखी और कई अखबार प्रकाशित किए बहुत से उत्तम रहस्य मैंने फैलाए किंतु मेरे मोतियों और मेरे दूध ने उन्हें कोई लाभ न दिया। तू उन्हें अन्य लोगों की अपेक्षा मुझे कष्ट और हानि पहुंचाने में सबसे अधिक लोलुप पाएगा। जब अल्लाह ने उनके भड़कते शोले देखे तो उसने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया। और उन की बुद्धियों पर पर्दा डाल दिया। ये टेढ़े लोग हैं जो अपनी व्यर्थ बातों से तौब: नहीं करते और अपनी धोखेबाज़ियों से नहीं रुकते। वे स्वयं देखते हैं कि इस्लाम के झरने सूख गए और वे देखते हैं कि उस का किला किस प्रकार ध्वस्त हुआ परंतु वे फिर भी आकाशीय बादलों से वर्षा नहीं मांगते और यह नहीं चाहते कि ख़ुदा तआला की ओर से कोई व्यक्ति अवतरित किया जाए। जैसे वे सूरह नूर पर ईमान नहीं रखते और न ही सूरह फ़ातिहा की तिलावत के समय आमीन कहते हैं।

بعد أن تصل إلى الحين ولن يؤتَى هذا الفتح لعُرْض الناس وعامّتهم ولن تهزم العدا بعصيّهم وحربتهم فمن الغباوة أن يفرح رجل بوجودهم أو يتمنّى خيرا من دودهم فتحسّسوا يوسف عند الامحال ولو بالسفر البعيد وشدّ الرحال ولا تنظروا إلى حُلل هذه العلماء فإنه ليس فيها من دون البخل والرياء وسير اخر لا تليق بالصلحاء وإنى دعوتهم حق الدعاء فما زادوا الا فى الإباء و كم من كتبٍ كتبتُ ورسائل اقتضبتُ وجرائد أشعتُ وفرائد أضعتُ فما نفعهم دُرّى ودَرّى وتراهم أحرص الناس على ضيرى وضرّى فلما رأى الله اُلهوبهم أزاغ قلوبهم وغشّى لبوبهم قوم زايغون لا يتوبون من أباطيلهم ولا ينتهون من تسويلهم يرون شِرب الإسلام كيف غاض ويرمقون حصنه كيف انهاض ثم لا يستمطرون سحب السماء ولا

अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है। इसलिए वे हिदायत नहीं पाते अपितु वे किसी नसीहत करने वाले मनुष्य की ओर कृपा दृष्टि नहीं करते और उसके लिए सहानुभूति के पर नहीं बिछाते। और उन में से कोई एक आदमी भी ऐसा नहीं जो उनके ज़ख़्मों का इलाज करे और उनको बाल-व-पर दे और उनके हृदयों को रोग मुक्त करे तथा उनकी बेचैनियों को दूर करने का इच्छुक हो। और जब कभी भी कोई आदमी अवतरित होकर आया तो उन्होंने कहा कि यह मुफ़्तरी और झूठा है। ख़ुदा के अज़ाब के दिन आने वाले हैं। और वे बहुत शीघ्र एक कठोर अज़ाब देने वाले सत्तावान की ओर लौटाए जाएंगे। हे उलमा के गिरोह! अल्लाह के वादे पर भलीभांति विचार करो और उस सत्तावान ख़ुदा का संयम धारण करो जिसकी ओर तुम लौट कर जाने वाले हो। उसने बनी इस्राईल में नुबुव्वत और ख़िलाफ़त रखी। फिर उसने सीमा से बाहर जाने के कारण उन्हें मार

يريدون أن يُبعَث رجل من حضرة الكبرياء كأنهم بسورة النور لا يؤمنون وعند قرائة الفاتحة لا يُؤمّنون وطبع الله على قلوبهم فلا يهتدون بل لا ينظرون إلى ناصح بعين عاطف ولا يخفضون له جناح ملاطف وليس فيهم أحد يريد أن يأسو جراحهم ويريش جناحهم ويُشفى قلوبهم ويزيل كروبهم وإذا قام فيهم رجل أُرسِلَ إليهم قالوا مفترى كذّاب وسيعلمون من الكذّاب وتأتى أيّام الله وسيرجعون إلى مقتدر شديد العقاب أيها العلماء فكّروا فى وعد الله واتّقوا المقتدر الذى إليه تُرجعون إنه جعل النبوّة والخلافة فى بنى إسرائيل ثم أهلكهم بما كانوا يعتدون وبعث نبيّنا بعدهم وجعله مثيل موسٰى فاقرءوا سورة المزّمل إن كنتم ترتابون ثم

दिया। उसके बाद उसने हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अवतरित किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मूसा का मसील (समरूप) बनाया। यदि तुम को इस बारे में कोई संदेह और शंका है तो सूरह मुज़्ज़म्मिल पढ़ो। और फिर उसने मोमिनों से ख़िलाफ़त का वादा पूरा फ़रमाया। और फिर इस बारे में यदि तुम्हें कोई संदेह है तो सूरह नूर की आयत इस्तिख़्लाफ़ पर विचार करो। यह अल्लाह की ओर से दो वादे हैं यदि तुम सही हो तो अल्लाह के कलाम में अक्षरांतरण न करो। यही कारण है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिलसिले का प्रारंभ मूसा के मसील से हुआ और उसका अंत ईसा के मसील पर हुआ। ताकि अल्लाह तआला का वादा सच्चाई के साथ पूरा हो। नि:सन्देह इसमें सोच विचार करने वालों के लिए एक बहुत बड़ा निशान है। और अवश्य था कि ये दोनों सिलसिले समान होते। प्रथम, प्रथम के समान और अंतिम, अंतिम के समान। क्या तुम क़ुर्आन नहीं पढ़ते या फिर तुम उसका

وعد الذين آمنوا وعد الاستخلاف ففكروا فى سورة النور إن كنتم تشكّون هذان وعدان من الله فلا تُحرّفوا كلم الله إن كنتم تتّقون ولذالك بُدِئَ سلسلة نبيّنا من مثيل موسٰى وخُتِمَ على مثيل عيسى ليتم وعد الله صدقا وحقًّا إنّ فى ذالك لآية لقوم يتفكّرون و كان من الواجب أن يتساوى السلسلتان الاول كالاول والآخر كالآخر ألا تقرءون القرآن أو به تكفرون؟ فإن تمنّيتم أن ينزل عيسٰى بنفسه فقد كذّبتم القرآن وما اقتبستم من سورة النور نورًا وبقيتم مع النور كقوم لا يُبصرون أتبغون عوجا بعد أن تساوى السلسلتان؟ اتّقوا الله وعدّلوا

इन्कार करते हो? यदि तुम यह आशा लगाए बैठे हो कि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ उतरेंगे तो निश्चय ही तुमने क़ुर्आन को झुठलाया है और सूरह अन्ननूर से नूर (प्रकाश) प्राप्त नहीं किया। और उस प्रकाश की मौजूदगी में भी तुम अंधे लोगों के समान रहे। क्या दोनों सिलसिले के एक समान होने के पश्चात भी तुम टेढ़ेपन के इच्छुक हो? अल्लाह से डरो और तराज़ू सीधी रखो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम समझते नहीं। और अल्लाह का वादा था कि वह तुमसे खलीफ़े बनाएगा और उसका यह वादा न था कि वह बनी इस्राईल में से खलीफ़े बनाएगा। इसलिए फैज-आवज का अनुकरण न करो। अपितु अपने रब्ब के हक में अपने रब्ब के हुक्म की ओर आओ। यदि तुम हिदायत पाना चाहते हो। क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने नबी के सिलसिले पर मूसा के सिलसिले को श्रेष्ठता दो। यदि ऐसा करोगे तब तो यह बहुत बड़ा बहुत दोषपूर्ण विभाजन है। फिर तुम क्यों नहीं रुकते। क्या तुम सूरह अन्ननूर नहीं पढ़ते? या दिलों पर ताले पड़े हुए हैं या तुम अल्लाह की ओर लौटाए नहीं जाओगे। पवित्र क़ुर्आन में तो मैदान में न्याय किया है पवित्र क़ुर्आन ने तो नापतोल में न्याय किया

الميزان مالكم لا تتفقّهون؟ و كان وعد الله أنه يستخلف منكم وما كان وعده أن يستخلف من بنى إسرائيل فلا تتّبعوا فيُجًّا أعوج وتعالوا إلى حَكَمِ ربّكم إن كنتم تسترشدون أتريدون أن تُفضّلوا على سلسلة نبيّكم سلسلة موسٰى؟ تلك إذًا قسمةٌ ضِيزى فلِمَ لا تنتهون؟ ألا تقرءون سورة النور أو على القلوب أقفالها أو إلى الله لا تُردّون؟ و إن القرآن عدّل الميزان و أعطى نبيّنا كل ما أعطى مُهْلِك فرعون وهامان فما لكم لا تعدلون؟ و قد بلّغ القرآن أمره فمن كفر بعد ذالك فأولئك هم الفاسقون أتختارون أهواء كم على كتاب الله أو بلغكم

है और हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कुछ दिया जो उसने फ़िरओन और हामान को मारने वाले (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम) को प्रदान किया था। फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम न्याय से काम नहीं लेते। पवित्र क़ुर्आन ने तो अपना संदेश पहुंचा दिया। फिर जो लोग इसके बाद भी इन्कार करें तो वही पापी हैं। क्या तुम अपनी कामुक इच्छाओं को ख़ुदा की किताब पर महानता देते हो या तुम्हारे ज्ञान की पहुंच क़ुर्आन के समान है। यदि तुम सच्चे हो तो हमारे सामने कोई सबूत लाओ। ऐसा कदापि नहीं अपितु उन्होंने अपने बड़ों को इस ग़लत आस्था पर पाया और वे उन्हीं के पद चिन्हों पर सरपट दौड़े जा रहे हैं। अल्लाह तआला ने तो निस्संदेह दोनों सिलसिलों को समान ठहराया है। परंतु वे उनमें कमी-बेशी कर रहे हैं। उस मनुष्य से बढ़कर कौन ज़ालिम हो सकता है जो क़ुर्आन के मार्ग को छोड़कर कोई और मार्ग अपनाए। सुनो! ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। हाय निराशा उन पर कि यह लोग क़ुर्आन पर विचार नहीं करते या फिर यह अंधी क़ौम है। जब उनसे यह कहा जाए कि क्या तुम अल्लाह की किताब को छोड़ रहे हो? तो वे कहते हैं कि

علم يُساوى القرآن فأخرجوه لنا إن كنتم تصدقون كلا بل وجدوا كُبراء هم عليه فهم على آثارهم يُهرعون وقد سوّى الله السلسلتين وهم يزيدون وينقصون فمن أظلم ممن اتّخذ سبيلا غير سبيل القرآن ألا لعنة الله على الذين يظلمون يا حسرة عليهم ألا يتدبّرون القرآن أو هم قوم عمون؟ وإذا قيل لهم أتتركون كتاب الله قالوا وجدنا عليه آباء نا، ولو كان آباء هم لا يعلمون شيئا ولا يعقلون أتتركون كلام ربّكم لآبائكم؟ أفّ لكم ولما تعملون وقالوا انّا رأينا في الاحاديث ومافهموا قول رسول الله وإن هم الا يعمهون يريدون أن يُفرّقوا بين كتاب الله

हमने अपने बाप दादों को इसी तरीके पर पाया चाहे उनके यह बाप-दादे कुछ भी ज्ञान न रखते हों और बुद्धिहीन हों। क्या तुम अपने बापों के लिए अपने रब्ब के कलाम को छोड़ते हो? अफ़सोस है तुम पर और तुम्हारे कर्मों पर। वे कहते हैं कि हमने हदीसों को देखा है। किंतु वे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन को समझ नहीं सके और वे भटक रहे हैं। वे चाहते हैं कि अल्लाह की किताब और उसके रसूल के कथन में अंतर डालें। ये लोग मुफ़्तरी हैं। अल्लाह (तआला) ने फ़ुरक़ान (हमीद) में इसका भलीभांति स्पष्टीकरण कर दिया है। फिर इसके पश्चात वे और किस बात पर ईमान लाएंगे? वे संदेह को विश्वास पर प्राथमिकता देते हैं। ये आचरण तो मरने वाली क़ौम के होते हैं। हे मानव जाति! यह अल्लाह का वादा था और इसी वादे के अनुसार उसने दोनों सिलसिलों को समान बनाया फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर वादे के विरुद्ध करने की बात करते हो और डरते भी नहीं। क्या तुम अल्लाह तआला की ओर अहद तोड़ने और वादे के विरुद्ध करना संबद्ध करते हो? अल्लाह तआला पवित्र है जो तुम गुमान करते हो। क्या तुम सोचते हो कि हज़रत

وبين قول رسوله قومٌ مُفترون وقد صرّح الله حق التصريح
فى الفرقان ۝ يؤثرون الشك على اليقين وهذا هو من
سير قوم يهلكون أيها الناس إنّ هذا كان وعدًا من الله
فسوّى السلسلتين كما وعد فما لكم تُجوّزون الخُلف
على الله ولا تخافون؟ أتعزون إلى الله نكث العهد والوعد؟
سبحانه وتعالىٰ عما تزعمون أظننتم أن سلسلة المصطفى
لا تُشابه سلسلة موسى؟ وإن هذا الا تكذيب القرآن إن
كنتم تفهمون ألا يُشابه أولها بأولها وآخرها بآخرها؟
ساء ما تحكمون أرفعتم موسٰى ووضعتم المصطفٰى؟ أفّ
لكم ولما تصنعون أتخسرون القسطاس بعد تعديله ولا

(मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सिलसिला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के सिलसिले से समानता नहीं रखता? यह तो सर्वथा क़ुर्आन को झूठलाना है। यदि तुम समझो क्या पहला सिलसिला पहले से और अंतिम सिलसिला अन्तिम से समानता नहीं रखता? बहुत बुरा है जो तुम निर्णय करते हो। क्या तुम मूसा अलैहिस्सलाम को उठा रहे हो और (मुहम्मद) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गिरा रहे हो? अफ़सोस है तुम पर और तुम जो करते हो। क्या तुम तराज़ू को सीधा किए जाने के पश्चात उस में डंडी मार रहे हो और तराज़ू के दोनों पलड़ों को बराबर न रखकर अन्याय कर रहे हो? अल्लाह तआला ने इस पर मामले का अंत करके इस सिलसिले की श्रेष्ठता को प्रकट कर दिया। फिर तुम जानबूझकर (हज़रत) ईसा अलैहिस्सलाम को ले आते हो तुम्हें क्या हो गया है। कि साहिबे फ़ज़ीलत को उसका स्थान नहीं दे रहे हो। और तुम अन्याय कर रहे हो। क्या तुम इस सिलसिले की टांगे काटते और उसके सर को शेष रखते हो। यह केवल पागलों का कार्य है। क्या तुम अल्लाह के कलाम में अक्षरांतरण करते हो जिस प्रकार कि पहले तुमने अक्षरांतरण किया। और

تعدلـــون كفّتيـــه ولا تقســـطون؟ وإن الله أرى فضـــل هـــذه السلســـلة بختـــم الامـــر عليهـــا ثـــم تأتـــون بعيسٰـــى وأنتـــم تعلمـــون مـــا لكـــم لا تُؤتـــون ذا فضـــل فضـــله وتظلمـــون؟ أتقطعـــون رِجـــلَ هـــذه السلســـلة وتُبقـــون رأســـها ومـــا هـــذا الا فعـــل المجنـــون أتُحرّفـــون كلام الله كمـــا حرّفتـــم مـــن قبـــل وقلتـــم مـــا قلتـــم فى آيـــةٍ ومـــا خفتـــم ربّكـــم الذى إليـــه تُســـاقون ومـــا جـــزاء المحرّفـــين الا النـــار فمـــا لكـــم لا تتوبـــون؟ إن الذيـــن يُحرّفـــون كلـــم الله متعمّديـــن مأواهـــم جهنّـــم وهـــم فيهـــا يُحرقـــون الا الذيـــن أخطـــأوا مـــن قبـــل زمـــانى هـــذا ومـــن قبـــل أن يبلغـــهم أمـــر الله وأمـــر حَكَمِـــهٖ أولئـــك قـــوم يُغفَـــر لـــهم بمـــا

तुमने आयत فَلَمَّاتَوَفَّ ,تَـنِ के बारे में जो तुम्हारे मन में आया कहा। और तुमने अपने उस रब्ब का भय न किया जिसकी ओर तुम अंतत: हांक कर ले जाए जाओगे। अक्षरांतरण करने वालों का दंड अग्नि ही है। तुम्हें क्या हो गया है कि तौब: नहीं करते। निस्संदेह जो लोग अल्लाह के कलाम में जान बूझकर अक्षरांतरण करते हैं उनका ठिकाना नर्क है वे उसमें जलाए जाएंगे सिवाय उन लोगों के जिन्होंने मेरे इस युग से पूर्व अल्लाह के आदेश और उसके उस हकम के आदेश के अंत तक पहुंचने से पूर्व ग़लती की। ऐसे लोगों को उनकी अज्ञानता के कारण क्षमा कर दिया जाएगा। परंतु वे लोग जो चेतावनी के बाद भी इस पर आग्रह करते हैं तो यह वही लोग हैं जिन्होंने अपने रब्ब की अवज्ञा की और वही लोग सीमाओं से बाहर जाने वाले हैं। जिसने अल्लाह के कलाम में अक्षरांतरण किया तो वास्तव में उसने समस्त कायनात का खून बहाया। यही लोग मलऊन हैं। निस्संदेह यही लोग ऐसे अंधे हैं कि जिन्हें आंखें नहीं दी गईं। उनके और सच के मध्य एक दीवार रोक है। उनके शैतान ने उन्हें शराब पिलाई है जिसे वे मज़े ले लेकर पी रहे हैं और उसमें विष है परन्तु वे

كانوا لا يعلمون والذين يُصرّون عليه بعد ما نُبّهوا أولئك الذين عصوا ربّهم وأولئك هم المعتدون من حرّف كلام الله فقد سفك دماء العالمين فأولئك هم الملعونون إن هؤلاء عُميٌ ما أعطيت لهم أبصار وبين الحق وبينهم جدار وسقاهم شيطانهم شربة فيتحسّونها وفيها سمّ فلا يرونها فلا تحسبهم أحياءًا فإنهم أموات وسيذكرون ما فعلوا بالامس إذا رأوا يومًا له سطوات جحدوا بالحق الذى حصحص وتراهم كخفّاش أبغض النور وتدلّس جاء هم داع إلى الله فما رحّبوا وتنفّس لهم الصبح فما استيقظوا وفُتح لهم باب الرحمة فما دخلوا

उसे देख नहीं पाते। इसलिए तुम उन्हें ज़िन्दा न समझो, वे मुर्दा हैं और कल वे जो कर चुके हैं उसे अवश्य याद करेंगे। जब वे कठिनाइयों से भरे दिन को देखेंगे। उन्होंने उस सच का इन्कार कर दिया जो पूर्ण रूप से प्रकट हो गया। और तुम उनको चमगादड़ों के समान पाओगे जो प्रकाश से वैर रखते हैं और उससे छुपते फिरते हैं। उनके पास ख़ुदा की और बुलाने वाला आया परंतु उन्होंने उसे स्वागत न कहा। उनके लिए सुबह उदय हुई परंतु वे न जागे। उनके लिए दया का द्वार खोला गया परंतु वे उस में दाखिल न हुए। और पीछे हट गए वे उस व्यक्ति की हंसी उड़ाते हैं जिसके आंसू उनकी हालत पर दया करने के कारण थमते नहीं और उसकी आंखें उनके अंजाम पर हसरतों के कारण आंसू बहाती हैं। उन्होंने अनेकों निशान देखे परंतु फिर भी ईमान नहीं लाए। हमने अल्लाह की क़सम खाई, परन्तु वह उसका सत्यापन नहीं करते। हमने उनके सामने क़ुर्आन प्रस्तुत किया फिर भी वह कोई ध्यान नहीं देते। इसलिए अब हम अल्लाह के पास जो समस्त मख़लूक़ का रब्ब है इन विवादों की जटिलताओं की फ़रियाद करते हैं। क्योंकि इन मुक़द्दमों के फैसले न तो गवाहियों से

وتقاعسوا يضحكون على رجل لا يرقأ دمعه رُحمًا على حالهم وتتحدّر عبراته حسرات على مآلهم رأوا آيات فلا يؤمنون وحلفنا بالله فلا يُصدّقون وعرضنا القرآن عليهم فلا يلتفتون فنشكو إلى الله ربّ البرايا من اعضال هذه القضايا فإنها ما قُضِيَت لا بالشهود ولا بالإلايا وإنى دعوتهم مذ يفعتُ و كم من وقت لهم أضعتُ و كنتُ رجلا يتمطّى فى حُلل الشباب ويحكى النُشّاب والآن ترون ذالك الشاب قد شاب وإن هذا مقام تدبّر للمتدبّرين وهل مثلى يتقوّل ويُمهل إلى الستين؟ ليس على الحق غشاء أيها الطالبون بل طُبع على قلوبهم بما كانوا يكسبون إن الشمس قد طلعت ولكن لا تُفتح الّا

निर्णय पा सकते हैं और न क़समों से। मैंने जवानी के प्रारंभ ही से उन्हें सच की ओर बुलाया और उनके लिए बहुत सा समय बर्बाद किया। एक वह भी समय था कि मैं एक जवान मर्द था जो जवानी के लिबास को पहने हुए कुछ गर्व महसूस करता हो और तीर के समान था। और अब तुम देखते हो कि जवान बूढ़ा हो चुका है और यह सोच-विचार करने वालों के लिए ध्यान और चिंता का स्थान है। क्या मेरे जैसा कोई और है जो इस तरह करे और उसे साठ वर्ष तक मोहलत दी जाए। हे अभिलाषियो! सच पर तो कोई पर्दा नहीं। उनके कर्मों के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है। निस्संदेह सूर्य उदय हो चुका है। और वे केवल संयमियों की आंखों को खोल सकता है। पापियों पर गंदगी थोप दी जाएगी। वे अल्लाह के निशानों को देखते हैं कि वे कैसे चमकदार हैं परंतु फिर भी नहीं देखते। वे देखते हुए भी कि उपद्रव किस प्रकार छा गए हैं फिर भी कोई परवाह नहीं करते। जब उनसे कहा जाए कि पृथ्वी और आकाश से बहुत से निशान प्रकट हो चुके हैं तो कहते हैं कि हम उन सब के इन्कारी

عين الذين هم يتّقون و يُجعل الرجسُ على الذين يفسقون ينظرون إلى آى الله كيف أشرقت ثم لا يُبصرون و يرون فتنًا كيف أحاطت ثم لا يُبالون و إذا قيل لهم إن الآيات قد ظهرت من الارض و السماوات قالوا إنّا بكلٍ كافرون أفينتظرون عذاب الله و قد جاء الطاعون ألا ينظرون إلى رأس المائة و قد مضى قريبا من خمسها و مُلئت الارض ظلما و جورًا أفلا يعلمون أنسوا ما قال ربهم

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ إِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

أأخلف الله هذا الوعد و قد رأى أن الناس من أيدى القسوس يهلكون لهم عيون كليلة و قلوب عليلة و همٌ مصروفة إلى فكر البطون و إلى زغب محددة العيون

हैं। क्या वे अल्लाह के प्रकोप की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जबकि ताऊन तो आ चुकी है। क्या वे सदी के प्रारंभ को नहीं देखते और उसका भी लगभग पांचवां भाग गुजर गया है। और पृथ्वी अन्याय एवं अत्याचार से भर गई है। क्यों वे ज्ञान नहीं रखते, क्या वे अपने रब्ब के इस आदेश को भूल गए हैं।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ إِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

(सूरत अलहिज्र-10)

क्या अल्लाह ने इस वादे के विरुद्ध किया है? हालांकि उसने यह देखा कि लोग पादरियों के हाथों मारे जा रहे हैं। उनकी आंखें बंद, दिल बीमार और समस्त दौड़-धूप पेट पूजा की चिंता और सहायता की प्रतीक्षक, बच्चों में लगी हुई है। यही कारण है कि वे पूर्णतया पृथ्वी की ओर झुक गए हैं। झूठ बोलते हैं और झूठलाते हैं। फिर पक्षपात ने उन्हें दरिंदों के स्थान पर खड़ा कर दिया है और उन्होंने उसे स्वीकार करने अपितु सुनने तक से रोका हुआ है। फिर कौन है उनमें जो यह

فلذالك أخلدوا إلى الارض كل الإخلاد و يكذبون و يُكذّبون
ثم التعصب أحلّهم محلة السباع و منعهم من القبول بل
من السماع فمن منهم أن يقول صدق فوك و لله أنت و أبوك
بل هم على التكذيب يُصرّون و يسبّون و يشتمون و سيعلم
الذين ظلموا أى منقلب ينقلبون ليس دينهم الا الاهواء
و الرغفان و الدراهم البيضاء أتزعمون أنهم يؤمنون كلا
بل ينافقون و يكذبون و تركوا نبيّهم و اتّخذوا أهل الدنيا
صحبا و حسبوا فناء هم رحبا يرون أن العدا يصولون
على المسلمين كرثان متوالٍ إلى السنين و لا رشاش
منهم بحذائهم لغيرة الدين و ارتدّ فوج من الإسلام
و ما أرى على وجههم أثرا من الاغتمام اتّخذوا إبليس

कहे कि "तेरे मुंह ने सच बोला" और अल्लाह तेरा और तेरे बाप का भला करे। अपितु वे तो झूठ लाने पर हठ करने वाले हैं और गालियां देते हैं। जिन्होंने ज़ुल्म किया शीघ्र ही जान लेंगे कि वह किस लौटने के स्थान पर लौट जाएंगे। उनका धर्म तो केवल कामवासना संबंधी इच्छाएं, रोटियों के टुकड़े और चमकते सिक्के हैं। क्या तुम विचार करते हो कि वह ईमान ले आएंगे, कदापि नहीं। अपितु वे कपट से काम ले रहे हैं तथा झूठ बोलते हैं। उन्होंने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़ दिया है और दुनिया वालों से मित्रता गांठ ली है और उन्हीं के सहन को विशाल समझ लिया है। वे देख रहे हैं कि शत्रु मुसलमानों पर वर्षों से निरंतर बरसने वाली वर्षा के समान आक्रमण कर रहे हैं और धार्मिक स्वाभिमान के लिए इन शत्रुओं के सामने उनकी ओर से कोई प्रतिरक्षक नहीं। इस्लाम की एक फ़ौज मुर्तद हो चुकी है। और मैं उनके चेहरों पर ग़म का कोई निशान तक नहीं देखता उन्होंने इब्लीस को अपना

وليجة فيتّبعونه وقاسموه التعبّد فما دونه لا يعرفون ما الدين
وما الإيمان و كفاهم لحم طرىّ والرغفان ينفدون العمر
ببطالة وما أرى فيهم بطل هذا الميدان بل لهم أفكار دون ذالك
أُحُرضوا فيها من الاحزان ترتعد فرائصهم برؤية الحكّام
ولا يخافون الله ذا الجلال والإكرام يمشون فى الليل البهيم
وبعدوا من النور القديم وتهادى بعضهم بعضا غفلة ولا ينتج
اجتماعهم الا فتنة و كم من كتب النصارى فشا ضرّها بين
القوم وصار الإسلام غرض الضحك واللوم ولكنهم يعيشون
كالمتجاهلين أو كالعمين ويسمعون كلم النصارى ثم يقعدون
كالمتقاعسين ونسوا الوصايا التى أُكِّدَت لتأييد الإسلام

जिगरी दोस्त बनाया हुआ है। अत: वे उसी का अनुकरण कर रहे हैं और इबादत तक में उसे भागीदार बना लिया। फिर इसके अतिरिक्त क्या रह गया। और न उन्हें धर्म की पहचान है न ईमान की। उन्हें तो ताज़ा गोश्त और रोटियां मिलनी चाहिएं। वे अपनी आयु बेकार नष्ट कर रहे हैं। मैं उनमें से किसी को भी इस मैदान का अच्छा घुड़सवार नहीं देखता अपितु उनके विचार कुछ और ही हैं कि जिस के कारण वे ग़मों से मरे जा रहे हैं। अधिकारियों को देख कर तो उन पर कंपन छा जाता है परन्तु वे प्रतापी ख़ुदा से नहीं डरते। वे अंधकारमय रात में चल रहे हैं और अनादि प्रकाश से दूर हो गए हैं और एक दूसरे को लापरवाही में बढ़ाते हैं और उनका इकट्ठा होने का परिणाम फ़ित्न: ही होता है। ईसाइयों की कितनी ही पुस्तकें हैं कि जिन के हानिप्रद प्रभाव क़ौम में फैले हैं। और इस्लाम हंसी और निन्दा का निशाना बन गया परन्तु वे जान-बूझ कर जाहिलों या अंधों की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे ईसाइयों की बातें सुनते हैं फिर भी पराजित व्यक्ति के समान बैठे रहते हैं। इस्लाम की सहायता के लिए जिन निर्देशों की उन्हें ताक़ीद की गई थी वे उन को भूल चुके हैं। उनके दिल

وقست قلوبهم واستبطأوا حين الحمام لا يأخذهم خوف بشيوع الضلال ويشاهدون ظهور الفتن وحلول الاهوال ويعلمون أن القسوس أمَرّوا عيشنا بأكاذيب الكلام وأرادوا أن يطمسوا آثار الإسلام ومع ذالك أعرضوا عن شبهاتهم كأنهم فرغوا من واجباتهم وأدّوا فرائض خدماتهم ومنهم قوم لم يُواجهوا فى مُدّة عمرهم تلقاء المخالفين وأنفدوا أعمارهم فى تكفير المؤمنين وتكذيب الصادقين و كنتُ أتحفّى بإكرام تلك العلماء وأظن أنهم من الاتقياء ولكن لمّا لحظت إلى خصائص أسرارهم وخبىّ ما فى دارهم علمتُ أنهم من الخائنين لا من الصالحين المتديّنين وفى سبل الله من المنافقين لا من المخلِصين المخلَصين ورأيتُ أنهم كل ما يعلمون ويعملون

कठोर हो गए और मौत की घड़ी को अन्त में लिया गया समझा उन्हें गुमराही के फैलने का भय दामन पकड़ कर रोकने वाला नहीं होता हालांकि वे फ़ित्नों का प्रकटन और बलाओं का उतरना देख रहे हैं। और वे यह भी जानते हैं कि पादरियों ने अपनी झूठी बातों से हमारे जीवनों को कड़वा कर दिया है और उन्होंने यह संपल्प कर लिया है कि इस्लाम का नामों निशान मिटा दें परन्तु इसके बावजूद वे उनके पैदा किए हुए सन्देहों से इस प्रकार मुंह फेरे हुए हैं जैसे वे अपने अनिवार्य कर्तव्यों से निवृत्त हो चुके हैं और अपनी सेवाओं की ज़िम्मेदारियां अदा कर चुके हैं। इन उलेमा में से एक वर्ग तो वह है जिन्होंने जीवन पर्यन्त कभी विरोधियों का सामना नहीं किया और अपना सम्पूर्ण जीवन मोमिनों को काफ़िर और सच्चों को झूठा ठहराने में समाप्त कर दिया और मैं बड़ी गर्मजोशी से उन उलेमा का आदर और सम्मान करता था और मैं उन्हें संयमी समझता था, किन्तु जब मैंने उनकी आन्तरिक विशेषताओं और उनके दिल के तहख़ाने को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वे तो बद्-दियानत (माल में ख़ुर्द-बुर्द: करने वाले) हैं न कि नेक

فهو منصبغ بالرياء وصدورهم مظلمة كالليلة الليلاء
فرجعتُ مما ظننت مسترجعا وبدّلتُ رأيى متوجّعا وأيقنتُ أن
فراستى أخطأت وان القضية انعكست إنهم قوم آثروا الدنيا
الدنيّة وطلبوا الوجاهة واللهنيّة يرون المفاسد فى الامصار
والموامى ثم يغضّون الابصار كالمتعامى وترامى الجرح إلى
الفساد ولكن لا يرون الترامى ما أجابوا داعى الله مع دعوى
العينين ولاجابوا لودعوا إلى مرماتين لا يُفكّرون فى أنفسهم
أى شيء يفعلون للدين أخُلقوا لاكل المطائب والتزيين؟ ولقد
فسدت الارض بفسادهم وشاع الطاعون فى بلادهم وإنه بلاء
ما ترك غورًا ولا نُشُزًا وإذا قصد بلدة فجعله صعيدًا جُرُزًا
والذين آووا إلى قريتى مخلصين وأطاعونِ فأرجوا أن يعصمهم

और धार्मिक। अल्लाह तआला के मार्गों में वे कपटाचारी हैं न कि शुद्ध निष्कपटों में से और मैंने यह भी देखा कि उनका प्रत्येक ज्ञान और कर्म दिखावे के रंग में रंगीन है और उनके सीने अंधकारमय रात के समक्ष काली हैं। तो मैंने इन्ना लिल्लाह पढ़ते हुए अपने विचार से रुजू कर लिया और बड़े दु:ख के साथ अपनी राय परिवर्तित कर ली और मैंने विश्वास कर लिया कि मेरे विवेक ने ग़लती खाई और मसला तो बिल्कुल विपरीत था। यों तो वे लोग हैं जिन्होंने इस तुच्छ दुनिया को प्रधानता दी और प्रतिष्ठित एवं चढ़ावे और भेंट के अभिलाषी हुए। वे आबादियों और वीरानों में ख़राबियां देखते हैं फिर भी वे अपनी आंखें अंधा बनने वालों की तरह झुका लेते हैं। और ज़ख़्म बिगड़ कर नासूर बन चुका है, किन्तु वे उस नासूर को देखते नहीं। आंखें रखने के बावजूद उन्होंने अल्लाह (की ओर) बुलाने वाले का दावा करने को स्वीकार नहीं किया। किन्तु यदि उन्हीं बकरी के दो पायों की ओर दावत दी जाती तो वे उसे अवश्य स्वीकार कर लेते। वे अपने दिलों में नहीं सोचते कि धर्म के लिए क्या कर रहे हैं। क्या वे उत्तम भोजन खाने

الله من الطاعون إنّ هذا وعدٌ من ربّ العزّة والقدرة وإن أنكرته العيون التى ما أُعطَى لها حظ من البصيرة فالاسف كل الاسف على العلماء لا يرون ما اراهم الله من السماء وأكلوا رأس المائة كرأس الضان وما فكّروا فى مواعيد الرحمان وانجلى الشمس والقمر بعد كسوف رمضان وما انجلى قلبهم من ظلمة خجّلت الشيطان أما رأوا هاتين الآيتين من السماء؟ مرّة فى أرضنا هذه ومرّة فى أهل الصلبان من الاعداء؟ فما لهم لا ينتهون وبآيات الله لا يؤمنون؟ أم أسألهم من أجرٍ فهم من مغرم مثقلون؟ فليفرّوا من آيات الله فسوف يعلمون ألا يرون أن المفاسد كثرت والفتن علت وغلبت والفسق قطع الإيمان وجذّم وأكلت الناس نار تضاهى جهنّم فمن ذا الذى يُصلح

और सजावट और सौन्दर्य के लिए ही पैदा किए गए हैं। उनके उपद्रव के कारण समस्त संसार बर्बाद हो गया है। और उनके इलाक़ों में ताऊन फैल गई है। यह (ताऊन) ऐसी बला है जिसने किसी ऊंचाई और नीचाई को नहीं छोड़ा और जब वह किसी इलाक़े की ओर मुंह करती है तो उसे चटियल मैदान बना देती है और जिन लोगों ने मेरी इस बस्ती (क़ादियान) में निष्कपटता से शरण ली और मेरा आज्ञापालन किया मुझे आशा है कि अल्लाह तआला उन्हें ताऊन से सुरक्षित रखेगा। यह ग़ालिब और शक्ति सम्पन्न रब्ब का वादा है। यद्यपि उन निगाहों ने जिन्हें प्रतिभा से कुछ भाग नहीं मिला उसको नहीं पहचाना। अफ़सोस, सौ अफ़सोस इन उलेमा पर कि वे नहीं देखते जो अल्लाह ने उन्हें आकाश से दिखाया। उन्होंने सदी के सर को दुंबे के सर की तरह खा लिया है और रहमान ख़ुदा के वादों पर सोच-विचार नहीं किया। रमज़ान में ग्रहण लगने के बाद सूर्य एवं चन्द्रमा भी प्रकाशमान हो गए। परन्तु उनके हृदय ऐसे अंधकार से बाहर न निकले जो शैतान को भी शर्मिन्दा कर दे। क्या उन्होंने इन दो आकाशीय निशानों (सूर्य

عند فساد غلب و كيّادٍ خلب؟ و كيف يُظَنّ أنّ هذه المفاسد ما قرعت آذانهم وما بلغت أخبارها رجالهم ونسوانهم؟ فإن هذه داهية مهيبة ومصيبة مذيبة وما من يوم يمضى ولا شهر ينقضى الا وتزداد هذه المحن وتنتاب هذه الفتن ثم مع ذالك اختار العلماء طورًا نكرًا وأبقوا لهم فى المخزيات ذكرًا وإن القسوس قد زرعوا زرعهم كسروة الجراد وما تركوا أثرًا من التقوٰى وجعلوا البلاد كألسنة الجماد فانظروا هل تجدون من أرضٍ محفوظة أو بلدة غير مدلوظة؟ أشاعوا أنواع الوسواس و كادوا كيدا هو أرفع من القياس وأضلوا صبيان المسلمين والجهلاء المتعلّمين وجذبوهم بأنواع الحِيَلِ والتّرغيب فى

एवं चन्द्र ग्रहण) को नहीं देखा जो एक बार हमारी इस पृथ्वी में प्रकट हुआ और एक बार शत्रुओं में से ईसाइयों की पृथ्वी में। इन्हें क्या हो गया है कि वे नहीं रुकते और अल्लाह के निशानों पर ईमान नहीं लाते। क्या मैं उन से किसी प्रत्यपकार का अभिलाषी हूँ कि वे उस जुर्माने के कारण उथल-पुथल हो रहे हैं? वे अल्लाह तआला के उन निशानों से नि:सन्देह भाग कर देख लें। उन्हें अति शीघ्र मालूम हो जाएगा। क्या उन्हें दिखाई नहीं देता कि फ़साद की प्रचुरता हो गई है और फ़ित्ने सर उठाए हुए विजयी हो रहे हैं पाप और दुराचार ने ईमान को काट दिया है और चूर-चूर कर दिया है और नर्क से समानता रखने वाली अग्नि ने लोगों को भस्म कर दिया है फिर कौन है जो फ़साद के प्रभुत्व और मक्कार की चालबाज़ियों के समय सुधार कर सके। और यह कैसे समझा जाए कि ख़राबियों ने उनके कानों पर दस्तक नहीं दी और उनके पुरुष और स्त्रियों को उन (ख़राबियों) की ख़बर नहीं पहुंची। नि:सन्देह यह एक भयानक आपदा है और घुला देने वाला संकट है। कोई दिन नहीं गुज़रता तथा कोई महीना समाप्त नहीं होता परन्तु ये आज़मायशें बढ़ती ही चली जाती हैं और फ़ित्नें निरन्तर आ रहे हैं इस पर

الاهـواء فارتـدّوا وصـاروا كحساسـةٍ أُخرِجَت مـن المـاء و كذالك احتلسـوا نيتـهم وأظهـروا خُضرتـهم فى هـذه البـلاد و كثـروا فى كل طـرف و لا ككثـرة الجـراد فاسـأل هـذه العلمـاء مـا فعلـوا عنـد هـذه الآفـات أأرادوا أن يُموّنـوا خطـط الإسـلام و يـؤدّوا حـق المواسـات و يقومـوا للمـداوات أو تسـتّروا فى الحجـرات وا كتسـوا لفائـف الاموات وتصـدّى للإسـلام سـنة حسـوس و يـوم عبـوس وزمـان منحـوس فمـن ذا الذى يـذوب قلبـه لهـذه الاحـزان وأىّ قلـب يبكـى لفسـاد أشـاعها أهـل الصلبـان؟ كلا بـل الذيـن يقولـون نحـن علمـاء الامّـة وورثـاء ديـن الرحمـان هـم أرضـوا بأعمالـهم ذرارى الشـيطان ومـا بقـى لـهم شـغل مـن

अतिरिक्त यह कि इन उलेमा ने नितान्त अप्रिय आचरण ग्रहण कर रखा है और अपने लिए बदनाम करने वाली यादें छोड़ रहे हैं। पादरियों ने अपनी फ़सल इस प्रचुरता से बोई है जैसे टिड्डी प्रचुरता से अण्डे देती है। इन्होंने संयम का कोई निशान तक नहीं छोड़ा तथा देशों को दुर्भिक्षग्रस्त कर दिया है। इसलिए विचार करो कि क्या पृथ्वी का कोई भाग भी तुम सुरक्षित पाते हो या कोई शहर आक्रमण से बचा हुआ है। उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार के भ्रम फैलाए और अनुमान से उच्चतर यत्न किए तथा मुसलमानों के बच्चों और अनभिज्ञ स्टूडेण्टस को बहकाया। विभिन्न धोखेबाज़ियों और लोभ-लालच की प्रेरणाओं के माध्यम से उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। तो वे मुर्तद हो गए और उनकी हालत पानी से निकल कर ख़ुश्क़ की हुई मछली के समान हो गई। इस प्रकार उन्होंने अपनी असल नीयतों को छुपाया और उन देशों में अपनी तरोताज़गी को प्रकट किया तथा हर ओर उनकी इतनी प्रचुरता हो गई कि टिड्डी दल की भी ऐसी प्रचुरता न होगी। इन उलेमा से पूछो कि इन आपदाओं के अवसर पर इन्होंने क्या किया? क्या इन्होंने कभी इरादा किया कि इस्लामी क्षेत्रों की आवश्यकताओं का ध्यान रखें तथा हमदर्दी और

غير الفسق والتفسيق والتكفير وإضلال الائمّة بالدقاريـر وأفتاهم خُبثهم بأن الفوز في المكائد وان الكيد منزل الموائد فيرصدون مواضعه كالصائد ولو بوساطة الحكّام والعمائد شابهوا اليهود في جميع صفاتهم وأتوا بجندل بحذاء صفاتهم وزادوا جهلات على جهلاتهم يُحبّون أن يُحمَدُوا بما لم يفعلوا ويغضبون إذا لم يُعَظّموا يستكبرون كالسلاطين وما هم الا دود التراب كالخراطين يريدون من الخلق الإطاعة ولا عقل لهم ولا براعة فمن خالفهم فكأنه خرّ من حالق أو تُرِك كطالق يحجرون على الناس نساء هم إذا لم يُوفّوا أهواء هم وإنّ من كذبٍ الا وهو يخرج من فيهم وإنّ من شرٍّ الا وهو يوجد فيهم وفريق منهم أصبي قلوبهم هوى الجهاد ويُغرون الجهلاء على

सहानुभूति का हक़ अदा करें और कठिनाइयों का इलाज करें या वे हुजरों में छुप गए और मुर्दों के कफ़न पहन लिए इस्लाम पर प्रचण्ड दुर्भिक्ष की आपदाओं से भरे हुए दौर और मन्हूस (अशुभ) युग आया। फिर कौन है जिस का दिल इन ग़मों से पिघला और कौन सा दिल है जो इस ख़राबी पर रोया जो अहले सलीब ने खड़ी की। कदापि नहीं। यद्यपि उन्होंने जो स्वयं को उलेमा-ए-उम्मत और रहमान ख़ुदा के धर्म के वारिस कहते थे अपने दुष्कर्मों से शैतान की सन्तान को प्रसन्न किया। स्वयं पाप और दुराचार में लिप्त हुए और दूसरों को पापी एवं दुराचारी बनाने और बुरे झूठ से उम्मत को गुमराह करने के अतिरिक्त उनका और कोई कार्य नहीं था। उनकी आन्तरिक मलिनता ने उन्हें यही फ़त्वा दिया कि समस्त सफ़लता चालबाज़ियों में है और छल ही दस्तरख़्वान तक पहुंचने वाला है। तो वे शिकारी की तरह उन अवसरों की घात में हैं चाहे हाकिमों और सरदारों के माध्यम से ही क्यों न हों। वे अपनी समस्त विशेषताओं में यहूदियों के समान हो गए हैं और उनके पत्थर के सामने चट्टान ले आए और वे अपनी मूर्खता में उनकी

ضرب العناق بالمرهفات الحداد فيغتالون كل غريب وعابر سبيل ولا يرحمون ضعيفا ولا يصغون إلى صراخ وعويل ولا يتّقون فويل لهم ولما يعملون أيقتلون قومًا هم يُحسنون؟ أيقتلون الذين لا يقتلون للدين الإنسان ويفشون الإحسان ويُنشئون الاستحسان ولا يستعملون للدين السيف والسنان؟ بل هم منتجع الراجي والكهف عند البلاء المفاجي تنهل لُهاهم عند الطلب ولا انهلال السحب ينصرون من خاف ناب النُوب ويُحاربون من تصدّى للحرب ويدفعون ما أسلمكم للكرب ويهيّئون لكم أسباب الطرب أتضربون أعناق هذه

मूर्खता से भी बढ़ गए। वे पसन्द करते हैं कि उनकी उन कार्यों में भी प्रशंसा की जाए जो उन्होंने नहीं किए। और जब उनका सम्मान न किया जाए तो क्रोधित हो जाते हैं। वे बदमाशों की तरह अहंकार करते हैं। हालांकि वे केचुए की तरह केवल मिट्टी के कीड़े हैं। वे दूसरे लोगों से आज्ञापालन करवाना चाहते हैं हालांकि उनमें कोई बुद्धि और कला नहीं जो व्यक्ति उनका विरोध करे तो वह जैसे ऊंचे पहाड़ से गिर गया, या तलाक़ प्राप्त की तरह उसे छोड़ दिया गया हो। जब लोग उनकी कामुक इच्छाओं को पूरा नहीं करते तो लोगों की पत्नियां उन पर हराम (अवैध) कर देते हैं। और ऐसा कोई झूठ नहीं जो उनकी जीभ से न निकला हो और कोई ऐसी बुराई नहीं जो उनमें न पाई जाती हो। उनमें से एक पक्ष है जिनके हृदय जिहाद के आशिक़ हैं और मूर्ख लोगों को काटने वाली तलवार से गर्दनें उड़ाने पर उकसाते हैं और हर यात्री और मुसाफ़िर को धोखे से क़त्ल करते हैं। किसी कमज़ोर पर दया नहीं करते और किसी की चीख़-व-पुकार तथा रोने-धोने पर कान नहीं धरते और संयम ग्रहण नहीं करते। अत: हलाकत हो उन पर और उनके कर्मों पर। क्या वे उपकारी क़ौम को क़त्ल करते हैं? क्या वे उन्हें क़त्ल करते हैं जो धर्म के लिए किसी मनुष्य का क़त्ल नहीं करते? और

الحماة؟ ما أفهم سرّ هذه الغزاة أ هذا نصرة الدين أو الاهواء ؟ وما هذا الجهاد الذى يأباه الحياء ولا يقبله العقل السليم والدهاء ؟ وما بال قوم أمّهم هذه العلماء؟ كلا بل مثلهم كمثل ذئاب أو كنمر و كلاب ووالله إنهم ليسوا إلا خطباء الدنيا الدنيّة ولو تراء وا بالعمامة أو الدنية وليس هذا الجهاد الا شَرَكُ الرّدا فيضحكهم اليوم ويبكى غدا أيذبحون المحسنين بالمُدَى؟ فأين هذا الحكم وفى أىّ الهدى؟ أيجوّز هذا الفعل العقل السليم؟ ويستحسنه الطبع المستقيم بل لبسوا الصفاقة وخلعوا الصداقة ونصروا الكفرة فى زراية الإسلام

उपकार को रिवाज देते और पसन्द करने को कामयाब करते हैं और धर्म के लिए तलवार और भाला इस्तेमाल नहीं करते अपितु वे हर प्रत्याशी की उम्मीदगाह और हर अचानक आने वाले संकट के समय शरण स्थल होते हैं। उनके उच्च श्रेणी के दान आवश्यकता के समय मूसलाधार वर्षा से भी बढ़ कर बरसते हैं। वे निरन्तर आने वाले संकटों से भयभीत व्यक्ति की सहायता करते हैं। और जो युद्ध के लिए तैयार हो वे उस ये युद्ध करते हैं। और तुम्हें संकट में डालने वाली हर चीज़ से बचाते हैं। और तुम्हें ख़ुशी के सामान उपलब्ध करते हैं। क्या तुम ऐसे सहायता करने वालों की गर्दनें मारोगे? मुझे इस जिहाद के रहस्य की समझ नहीं आती क्या यह धर्म की सहायता है या केवल कामवासना संबंधी इच्छाएं हैं? यह कैसा जिहाद है जिसे शर्म धक्के देती है? और सद्बुद्धि एवं बुद्धिमत्ता स्वीकार नहीं करती ऐसी क़ौम का क्या हाल है जिसकी इमामत करने वाले ये उलेमा हैं? कदापि नहीं। अपितु उनका उदाहरण भेड़ियों या चीतों या कुत्तों जैसा है। ख़ुदा की क़सम यह तो केवल तुच्छ दुनिया के ख़ुत्वा देने वाले हैं। यद्यपि अमामा या पगड़ी के साथ दिखाई दें। यह जिहाद तो मौत का एक फन्दा है जो आज उन्हें हंसा रहा है और कल रुलाएगा। क्या वे उपकारियों को छुरियों से

وأعانوهم على نحت الاعتراضات ورمي السهام؟ ولن يلقى الإسلام فلجًا بوجود هذه المجاهدين بل وجودهم عار على الإسلام والمسلمين فالخير كله في موتهم أو أن يكونوا من التائبين أيقتلون الناس لإعراضهم عن حكم الرحمان؟ مع أن الإعراض موجود في أنفسهم لارتكاب الفحشاء والفسق والعصيان فكيف يجوز أن يضربوا أعناق الكفار وإنهم يستحقون أن يضرب أعناقهم بالسيف البتّار بما فسقوا واختاروا عيشة الفجّار فإن الجهاد لو كان من الضرورات الدينية فما معنى ترك هذه الفجرة؟ ولِمَ لا يُقطع رؤوسهم بالمرهفات المذربة؟ ولِمَ لا يُمَزّق لحمهم بالمُدَى المُشَرّحة؟

ज़िब्ह करते हैं? ऐसा आदेश कहां है और किस हिदायतनामे में है? क्या सद्बुद्धि ऐसे कृत्य को वैध ठहराती है? और क्या सीधी प्रकृति इसे अच्छा समझती है? अपितु उन्होने बेशर्मी का लिबास पहन लिया है और सच्चाई को त्याग दिया है। इस्लाम पर नुक़्त: चीनी में उन्होंने काफ़िरों की सहायता की। और आरोप गढ़ने तथा तीर बरसाने में उनका मदद की। इन (नाम मात्र) के मुजाहिदों की मौजूदगी में इस्लाम कभी सफलता और विजय प्राप्त न कर सकेगा, अपितु उन का अस्तित्व तो इस्लाम और मुसलमानों के लिए शर्म है। इसलिए सम्पूर्ण भलाई इसी में है कि या तो ये मर जाएं और या फिर तौब: कर लें। क्या रहमान ख़ुदा के आदेश से मुंह फेरने के कारण उन लोगों को क़त्ल करते हैं जब कि व्यभिचार, वादा ख़िलाफ़ी और अवज्ञा करने के कारण स्वयं उनमें यह विमुख होना मौजूद है? यह कैसे वैध हो सकता है कि वे काफ़िरों की गर्दनें काटें जब कि वे स्वयं इसके पात्र हैं कि उनकी गर्दनें काटने वाली तलवार से इसलिए काटी जाएं कि उन्होंने अवज्ञा की और दुराचारियों जैसा जीवन अपनाया। फिर यदि इस प्रकार का जिहाद धार्मिक आवश्यकताओं में से होता तो इन दुराचारियों को छोड़ना क्या मायने रखता

فإنهم فسقوا بعد الإيمان فليُفتِ المفتون أيُقتل هؤلاء بالسيف أو السنان؟ فإن أوّل غرض الجهاد قوم فسقوا بعد ما أسلموا وأظهروا آثار الارتداد وخرجوا من حدود الاوامر الفرقانية ونقضوا عهدا عاهدوه أمام الحضرة الربّانية ولا حاجة لربّ العالمين أن يتّخذ عضدًا زمر المفسدين وإنه قادر على أن يُنزل عذابًا من السماء إن كان يريد أن يُهلك الكافرين وما للقدوس والفاجر ولا حاجة له إلى جهاد الفاسقين وقد جرت سُنّة الله أنه ينصر الكافر ولا ينصر الفاجر الظالم وكذالك اقتضت غيرة رب العالمين ووالله من يُجرّب هذه العلماء يجد أكثرهم كقوم يصنعون الدراهم المغشوشة ويغطّون على

है? और क्यों न उनके सर तेज़ तलवारों से काट दिए जाएं? और क्यों न उनके मांस तेज़ धार छुरियों से टुकड़े-टुकड़े किए जाएँ? ये लोग तो वे हैं जो ईमान लाने के पश्चात् पापी हो गए। इसलिए मुफ़्तियों को फ़त्वा देना चाहिए कि क्या उन्हें तलवार से मारा जाए या भालों से? (इस) जिहाद का पहला लक्ष्य तो वे लोग हैं जिन्होंने इस्लाम लाने के बाद पाप ग्रहण किया और मुर्तद होने के लक्षण प्रकट किए और पवित्र क़ुर्आन के आदेशों और हुक़्मों की सीमाओं से निकल गए और ख़ुदा तआला के सामने उन्होंने जो अहद (प्रतिज्ञा) किया था उसे भंग कर दिया। समस्त लोकों के रब्ब को इसकी आवश्यकता नहीं कि वह ऐसे उपद्रवियों को अपना हाथ और बाज़ू बनाए। और वह इस बात पर सामर्थ्यवान है कि यदि वह काफ़िरों का मारना चाहे तो आकाश से अज़ाब उतार दे। उस पवित्र अस्तित्व का किसी दुराचारी से क्या संबंध। और न उसे इन पापियों के जिहाद की आवश्यकता है। अल्लाह तआला की यह जारी सुन्नत है कि वह काफ़िर की तो सहायता कर देता है परन्तु दुराचारी अत्याचारी की सहायता नहीं करता और यही रब्बुल आलमीन के स्वाभिमान की मांग है। ख़ुदा की क़सम! जो व्यक्ति भी

ظاهرها الفضة ويُراءون الناس كأنها حرش خشن جياد حديثة السكة وليس فيها غش بل هي من السبكية الخالصة و كذالك تجد أكثر العالمين يخافون الناس ولا يخافون ربهم وتجد أكثرهم كالعمين ولو خافوا ربهم لفُتحت عيونهم ولصاروا من المبصرين أهلكهم شح هالع وجبن خالع ما بقى العقل السليم ولا الطبع المستقيم وصاروا كالمجانين يقولون ما نحن لك بمؤمنين وقد افترقوا إلى فرق وليسوا بمتّفقين والله أرسل عبدًا ليُحكّموه فيما شجر بينهم وليجعلوه من الفاتحين وليُسلّموا تسليمًا ولا يجدوا فى أنفسهم حرجًا ممّا قضٰى وذالك هو الحَكَمُ الذى أتى فالذين اتّبعوه فى ساعة الاذى وجاءوه بقلب أتقى وسمعوا لعنة الخلق وخافوا لعنةً تنزل من السماوات

इन उलेमा को आज़माएगा तो वह इन में से अधिकतर को उन लोगों के समान पाएगा जो खोटे सिक्के बनाते हैं और उन पर चांदी की तह चढ़ाते हैं। और लोगों पर यह प्रकट करते हैं कि जैसे वे शुद्ध खरे सिक्के, उत्तम और नए हैं और उनमें कोई खोट नहीं अपितु वह शुद्ध चांदी की डेली से बने हुए हैं। और अधिकांश उलेमा को तुम ऐसा ही पाओगे वे लोगों से डरते हैं परन्तु अपने रब्ब से नहीं डरते। उनमें से अधिकतर को तुम अंधों की तरह पाओगे। यदि वे अपने रब्ब से डरते तो उनकी आंखें खोल दी जातीं और वे देखने वाले हो जाते। बेचैन करने वाला लालच और लज्जाजनक कायरता ने उन्हें तबाह कर दिया। इनमें थोड़ी सी भी सद्बुद्धि और सही प्रकृति नहीं रही और वे पागलों जैसे हो गए हैं। वे कहते हैं कि हम तुझ पर ईमान लाने वाले नहीं। हाल यह है कि कई फ़िर्क़ों में बंट चुके हैं और एक मत नहीं। अल्लाह ने अपना एक बन्दा भेजा ताकि वे अपने विवादित मामलों में से अपना हकम (निर्णायक) और उसे अपना मुंसिफ़ बना लें और उसके सामने सर झुकाएं और वह जो भी फ़ैसला करे उसे स्वीकार करें और अपने दिलों

العُلٰی أولئك هم الصالحون حقا وأولئك من المغفورين

أيها الناس كنتم تنتظرون المسيح فأظهره الله كيف شاء فأسلموا الوجوه لربكم ولا تتّبعوا الاهواء إنكم لا تُحلّون الصيد وأنتم حُرُم فكيف تُحلّون أراء كم وعندكم حَكَم★

★**हाशिया :-** ان الاٰراء المتفرقة تشابه الطير الطائرة فی الهواء والحَكَم يشابه الحرم الاٰمن الذی يؤمن من الخطأ فكما ان الصيد حرام فی الحرم اكراما لارض الله المقدسة فكذالك اتباع الاٰراء المتفرقة واخذها من اوكار القوی الدماغية حرام مع وجود الحكم الذی هو معصوم وبمنزلة الحرم من حضرة العزة بل يقتضی مقام الادب ان تعرض كل امر عليه ولا يوخذ شیئٌ الا من يديه منه

बिखरी हुई रायें हवा में उड़ने वाले परिन्दों की तरह होती हैं। हकम एक ऐसे अमन से भरे हरम के समान है जो ग़लती से सुरुक्षित रखता है जिस प्रकार अल्लाह की मुक़द्दस पृथ्वी के सम्मान के कारण से हरम में शिकार करना वैध होता है। इसी प्रकार हकम की मौजूदगी में जो मासूम और अल्लाह के पास से हरम के स्थान पर है। अपनी बिखरी हुई रायों का अनुकरण और मानसिक शक्तियों के घोंसलों से उन्हें लेना अवैध है अपितु सम्मान के स्थान की मांग है कि हर मामले को उस (हकम) के सामने प्रस्तुत किया जाए और हर चीज़ केवल उसी के हाथों से ली जाए। इसी से।

में कोई संकीर्णता न पाएं। यह वही **हकम** है जो आ चुका इसलिए वे लोग जिन्होंने परेशानी की घड़ी में उस का अनुकरण किया और संयम से आबाद दिल के साथ उस के पास आए और मख़्लूक़ की भर्त्सना सुनी और उस लानत से डरे जो बुलन्द आकाशों से उतरती है। तो ऐसे लोग ही वास्तविक नेकी करने वाले हैं और वही अल्लाह तआला की क्षमा प्राप्त करने वाले वर्ग में सम्मिलित हैं।

फिर हे लोगो! तुम मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे अब अल्लाह ने अपनी इच्छानुसार उसे प्रकट कर दिया। इसलिए (तुम्हारा कर्तव्य है कि) तुम स्वयं को अपने रब्ब के सुपुर्द कर दो और इच्छाओं का अनुकरण न करो। अहराम की हालत में तुम शिकार करना वैध नहीं समझते तो फिर किस प्रकार हकम

وإن الحَكَم لرحمة نزلت للمؤمنين ولولا الحَكَم لما زالوا مختلفين ظهر المهدىّ عند غلبة الضالين وسُمِع دعاء اِهْدِنَا بعد مئين وتمّ ما قال ربّكم فى الفاتحة والفرقان المبين وقد أخذ الله ميثاق المسلمين فى هذه السورة وما حذّرهم الا من اليهود والنصارى إلى يوم القيامة فأين ذكر الدجّال وأين ذكر فتنته الصمّاء؟ أنسى الله ذكره عند تعليم هذا الدعاء؟ ويعلم الراسخون فى العلم أن اسم الدجّال ما جاء فى الفرقان والقرآن مملوّ من ذكر فتنة أهل الصلبان وهى الفتنة العظيمة عند الله وكاد أن يتفطرن منها السماوات وقد عُمّروا ألف سنة

की मौजूदगी में तुम अपनी रायों को वैध ठहरा सकते हो। हकम नि:सन्देह एक रहमत (दया) है जो मोमिनों के लिए उतरी है। यदि हकम न होता तो वे हमेशा मतभेद में पड़े रहते। गुमराहों के प्रभुत्व के समय महदी प्रकट हुआ और सदियों बाद اِهْدِنا की दुआ सुनी गई और तुम्हारे रब्ब ने जो (सूरह) फ़ातिहा और पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया था वह पूरा हुआ। अल्लाह ने इस सूरह में मुसलमानों से वादा लिया था और उन्हें यहूदियों तथा ईसाइयों से ही क़यामत के दिन तक के लिए होशियार रहने को कहा था। फिर (बताओ कि) दज्जाल का ज़िक्र कहां है? और उसके बहुत ख़तरनाक फ़ित्ने का ज़िक्र कहां है? और उसके बहुत ख़तरनाक फ़ित्ने का ज़िक्र कहां है? क्या यह दुआ सिखाते समय अल्लाह तआला ज़िक्र करना भूल गया था? पुख़्ता ज्ञान वाले जानते हैं पवित्र क़ुर्आन में कहीं दज्जाल का नाम नहीं आया जबकि पवित्र क़ुर्आन अहले सलीब ईसाइयों को फ़ित्ने के ज़िक्र से भरा पड़ा है। अल्लाह के नज़दीक यह बहुत बड़ा फ़ित्न: है और क़रीब है कि इस से आकाश फट जाए। हे बुद्धिमानो! तीन सदियों के बाद एक हज़ार वर्ष तक उन्हें आयु दी गई। प्रारंभ में उनका निकलना सांप की सरसराहट की तरह महसूस किया गया जब वह फैलता और लम्बा होता है। फिर यह अहसास और अधिक बढ़ा

بعد القرون الثلاثة يا ذوى الحصاة وأُحسّ خروجهم فى أوّل الامر ككشكشة الافعى إذا تمدّد وتمطّى ثم تزَيّد الإحساس حتى ظهر الخناس و كان هو إلى ستّة آلافٍ كالجنين فى غلاف فتولّد هذا الجنين بعد تسع مئين أعنى بعد القرون الثلاثة فعدّ الزمان إن كنتَ من المرتابين إنهم قوم ينفقون جبال الذهب لإشاعة الضلالات فهل رأيتم مثلهم فى الاصرار على الجهلات؟ ولهم فى أرضكم مستقرّ مع صراصر السطوات ويريدون أن ينزعوا عنكم لباس التقوى و يلطّخوكم بالسوءات فظهر ما كان ظاهرا من الله وتمت أنباء الفتن والآفاف فأىّ ظلمة بقيت

यहां तक कि ख़न्नास (शैतान) प्रकट हो गया। और वह छ: हज़ार वर्ष तक जनीन (पेट में रहने वाला शिशु) की तरह पर्दे में छुपा रहा। फिर पहली तीन सदियां गुज़रने पर नौ सौ वर्ष बाद यह जनीन पैदा हो गया। यदि तुम्हें इस बारे में कोई सन्देह हो तो नि:सन्देह इस मुद्दत की गणना करके देख लो। यह ईसाई क़ौम भिन्न-भिन्न प्रकार की गुमराहियों को फैलाने के लिए सोने के पर्वत व्यय कर रही है। क्या ऐसी मूर्खताओं पर आग्रह करने में तुम ने उन जैसा कोई और देखा है। तेज़ और तीव्र आक्रमणों के साथ उनका तुम्हारे देश में स्थायी ठिकाना है। वे यह चाहते हैं कि तुम्हारे संयम के लिबास को छीन लें और तुम्हें बुराइयों में सना दें। जो अल्लाह की ओर से प्रकटन में आता था वह तो प्रकटन में आ गया। और फ़ित्नों तथा आपदाओं के बारे में जो ख़बरें थीं वे भी पूरी हो गईं। इन अंधकारों के बाद अब कौन सा अंधकार शेष रह गया है। तुम्हारा दज्जाल केवल तुम्हारे मस्तिष्कों में ख़यालों की तरह है। युग ने केवल इन्हीं फ़ित्नों और इन्हीं बुराइयों का संकट व्यक्त किया है। अल्लाह के नज़दीक यह बहुत बड़ा फ़ित्न: है। और क़रीब है कि इस से आकाश फट जाएं और दृढ़ता से गड़े हुए पर्वत गिर जाएं। पहली तीन सदियां गुज़रने के बाद वे एक हज़ार वर्ष तक आयु दिए गए। प्रारंभ में उनका निकलना

بعد هذه الظلمات؟ وليس دجّالكم الا فى رؤوسكم كالتخيّلات ما أرى الزمان الا هذه الفتن وبلاء هذه السيئات وهى الفتنة العظيمة عند الله و كاد أن يتفطّرن منه السّماوات وتهدّ الجبال الراسخات وقد عُمّروا ألف سنة بعد القرون الثلاثة وأُحسّ خروجهم فى أوّل الامر كالكشكشة أعنى ككشيش الافعٰى إذا تمدّد وتمطّٰى ثم زاد الاحساس حتى ظهر الخناس وأشيعت الضلالة والوسواس و كثرت الاوساخ والادناس وقد مضٰى عليه تسع مائة كتسعة أشهر وهو فى الرحم كالجنين وما سُمعَ منه ركزٌ ولا فحيحٌ ولا صوتٌ كالطنين ولا أثر من الرد

सरसराहट अर्थात् सांप की सरसराहट की तरह महसूस किया गया जब वह फैलता और लम्बा होता है। फिर उस अहसास में वृद्धि होती गयी यहां तक कि दज्जाल प्रकट हो गया तथा गुमराही और भ्रम फैल गए तथा मैल और गन्दगी की बहुतायत हो गई उस पर नौ सदियां नौ माह की तरह गुज़र गईं इस हालत में कि वह गर्भाशय में जनीन की तरह था। इस बीच उसकी कोई आहट, कोई सरसराहट तथा कोई मिनमिनाहट नहीं सुनी गई और न इस्लाम के खण्डन में कोई प्रभाव प्रकट हुआ और न इस्लाम के रद्द में कोई पुस्तक लिखी। और ये नौ सदियां दज्जाल के गर्भ का युग है और नौ की संख्या गर्भ की मुद्दत के लिए विशिष्ट है। अधिकांश परिस्थितियों में यही दस्तूर है। यदि तुम चाहो तो तीनों सदियों के गुज़रने के प्रारंभ से नौ की मीआद पूर्ण होने तक के युग की गणना कर लो फिर दज्जाल की पैदायश दसवीं सदी के सर पर हुई। अर्थात् यह कि दज्जाल तीन सदियों के बाद उस सदी के सर पर पैदा हुआ जो दसवीं सदी थी और इस से पहले उसकी हालत उस जनीन जैसी थी जो माँ के गर्भाशय में हो और उस ने मुंह से एक शब्द भी न निकाला हो। और उसने किसी एक शब्द और वाक्य से भी इस्लामी मिल्लत का रद्द नहीं किया था। फिर इस दज्जाल का बाहर आना हुआ। फिर वह उस सैलाब

على الإسلام والتأليف والتدوين فتلك التسع هى أيام حمل الدجّال والتسع مخصوص بعدة الحمل كما هى العادة فى أكثر الاحوال وإن شئت فعدّ من ابتداء انقراض القرون الثلاثة إلى زمان يكمل عدّة التسعة ثم تولّد الدجّال على رأس المائة العاشرة أعنى على رأس المائة التى هى عاشرة بعد القرون الثلاثة وكان قبل ذالك كجنين فى البطن ما تفوّه قط بكلمة وما ردّ على الملّة الإسلامية بلفظ ولا بفقرة ثم خرج وصار كسيل يأتى من ماء الجبال ويتوجّه إلى الغور والوهاد والدحال وصار قويّا ببّا وهيّج فتنًا لا توجد مثلها من آدم

के समान हो गया जो पर्वतों के पानी से बनता है और हर नीचाई तथा हर गढ़े और खोह की ओर जाता है। और वह सुदृढ़ एवं शक्तिशाली हो गया तथा ऐसे-ऐसे फ़ित्ने भड़काए कि जिनका उदाहरण आदम से लेकर अन्तिम युग तक नहीं पाया जाता। उसने इस्लामी मामलों को उलट-पुलट दिया और अधिकतर मिल्लत के सुपुत्रों को चाट गया जैसा कि हे बुद्धिमानो! तुम देख रहे हो। उसने दाएं-बाएं हर ओर पृथ्वी में तबाही मचा दी है तथा फ़साद एवं गुमराही फैला कर रख दी है। और इस्लाम धर्म मरने के किनारे तक पहुंच गया है। फिर मसीह चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट हुआ। और वह अल्लाह की ओर से आकाशीय दाव के साथ उतरा और वह उसकी तलाश करने लगा और उसको ढूंढ़ने लगा जिस प्रकार जंगल में शिकार की तलाश की जाती है। और बहुत शीघ्र वह बाबुल लुद्द में उसे पकड़ेगा और एक ही ज़र्ब (चोट) से समस्त झगड़ों को चुका देगा। अत: तुम कमज़ोरी न दिखाओ और ग़म न करो और अल्लाह तुम्हारे साथ है यदि तुम श्रद्धा और आज्ञापालन से उसके साथ हो ख़ुदा ने बद्र में अर्थात् इस चौदहवीं सदी में तुम्हें अपमान में देखकर तुम्हारी सहायता की। अब वह बद्र की हालत तुम्हारी ओर दोबारा लौटाई गई है। और नि:सन्देह विजय क़रीब है परन्तु तलवार और युद्ध से नहीं अपितु

إلى آخر الايام وقلّب كل التقليب أمور الإسلام وأكل كثيرا من وُلْدِ المِلّة كما أنتم تنظرون يا ذوى الفطنة وعاث فى الارض يمينًا وشمالًا وأشاع فسادًا وضلالًا وبلغ ديننا إلى التهلكة ثم ظهر المسيح على رأس ألف البدر ونزل من الله بالحربة فجعل يستقريه ويطلبه كما يطلب الصيد فى الاجمة وسيلقيه على باب اللد ويقطع كل لدد بواحد من الضربة ★ فلا تهنوا ولا تحزنوا وإن الله معكم إن كنتم معه بالصدق والطاعة ولقد نصركم الله ببدر وأنتم أذلّة والآن أُعيدَ إليكم البدر فى المرّة الثانية وإنّ الفتح قريب ولكن لا بالسيف والملحمة بل بالتضرّعات وعقد الهمّة والادعية فلا تظنّوا ظنّ السوء

★**हाशिया :-** اوّل بلدةٍ بَايعنى الناسُ فيها اسمها لدهَيانه۔ وهى اوّل ارضٍ قامت الاشرار فيها للاهانة۔ فلما كانت بيعة المخلصين۔ حربةً لقتل الدجال اللعين۔ باشاعة الحق المبين۔ اشير فى الحديث ان المسيح يقتل الدجال علىٰ باب اللُدّ بالضربة الواحدة۔ فاللُدّ ملخّصُ من لفظ لدهيانه كما لا يخفٰى على ذوى الفطنة۔ منه

सर्वप्रथम जिस शहर में लोगों ने मेरी बैअत की उसका नाम लुधियाना है। यही वह पहली ज़मीन है जिसमें फ़सादी लोग मेरे अपमान के दर पै हुए जब खुली सच्चाई के प्रकाशन के द्वारा निष्कपट लोगों का बैअत करना मलऊन दज्जाल के क़त्ल का एक हथियार हुआ। हदीस में इसी ओर संकेत किया गया है कि मसीह दज्जाल को एक ही वार से बाबुललुद्द कर क़त्ल करेगा जैसा कि बुद्धिमान पर यह बात गुप्त नहीं कि लुद्द शब्द लुधियाना का ही कमी किया हुआ है। (इसी से)

गिड़गिड़ाने, साहस के संकल्प और दुआओं से होगी। इसलिए बदगुमानी न करो और सहाबा की तरह मेरी ओर दौड़ो। और तुम न मरना परन्तु इस हालत में कि तुम आज्ञाकारी हो और मख़्लूक़ में सर्वोत्तम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजो। यह सदी गणना की दृष्टि से बद्र की रात (चौदहवीं)

واسعوا إلىّ كالصحابة ولا تموتوا الا وأنتم مسلمون وصلّوا على محمد خير البريّة وإن هذه مائة كليلة البدر عدّة وكليلة القدر مرتبة فأبشروا ببدركم وانتظروا أيام النصرة

فى ذكر أهل الجرائد والإخبار

لعلك تقول بعد ذالك أن أهل الجرائد والإخبار يستحقون أن يُصلحوا مفاسد البلدان والديار فأقول رحمك الله إنه خطأ فى الإفكار أتُبرَئُ من هؤلاء أمراض النفوس ووساوس القسوس نعم لا شك أن هذه الصناعات تفيد قومنا لو رعوه حق المراعات وتكون كهاد إلى مجاهل وتقود إلى مناهل

के समान और श्रेणी की दृष्टि से लैलतुल क़द्र के समान है। इसलिए तुम अपने बद्र पर प्रसन्न हो जाओ और सहायता के दिनों की प्रतीक्षा करो।

समाचार पत्रों तथा अख़बार के सम्पादकों के वर्णन में

इसके बाद शायद तू यह कहे कि ये समाचार पत्रों और अख़बार वालों का कार्य है कि वे देश और शहरों की ख़राबियों के सुधार की योग्यता रखते हैं तो मैं यही कहता हूँ। अल्लाह तुम पर दया करे। यह ग़लत सोच है। क्या इन लोगों से नफ़्सों के रोग शिफ़ा पा सकते हैं? हाँ! नि:सन्देह! ये ऐसे पेशे हैं जो क़ौम को लाभ दे सकते हैं यदि वे उसका यथायोग्य ध्यान रखें तो उनकी हैसियत अज्ञात मार्गों में मार्गदर्शक तथा झरनों की ओर पथ-प्रदर्शक और धार्मिक मामलों में सहायक हो सकती है। और समाचार पत्र एक दर्पण है जो ग़ाइब को उपस्थित और भूतकाल को वर्तमान काल की तरह दिखा देते हैं तथा कुछ गुप्त मामलों तक पहुंचने का माध्यम हैं, अपितु मुक़द्दमों

وتكون كناصر للدينيات وإن الجرائد مرآة تُرى الغائب كالمشهود والغابر كالموجود وتكون الوصلة إلى بعض الخفايا بل قد تُعين على فصل القضايا وتُرى الامور القريبة والبعيدة كتقابل المرايا وتُهيّء كل عبرة لاولى الالباب وتخبر من طرق النجاة والتباب وتُنبّئكم كل يوم كيف تتغير الايام و كيف تقوى المجامع وتغور المنابع العظام و كيف تخلو المرابط ويهوى الامراء من امرتهم بعد ما أودعت سرّ الغنى أسرتهم وتخبر من أخبار المحاربين الغالبين منهم والمنهزمين والفائزين منهم والخائبين ولولا الاخبار لانقطعت الآثار وجُهِل الدُوَلُ وما عُلِم الابرار

का फ़ैसला करने में भी मदद देते हैं। निकट और दूर की परिस्थितियों को ऐसे दिखाते हैं जैसे आमने सामने के दर्पण। और वे बुद्धिमानों के लिए इब्रत का हर सामान उपलब्ध करते हैं तथा मुक्ति और मौत के मार्गों का पता देते हैं और प्रतिदिन तुम्हें अवगत करते हैं कि युग कैसे परिवर्तित हो रहा है और मज्लिसें कैसे वीरान हो रही हैं और बड़े-बड़े झरने कैसे सूखते हैं और अस्तबल किस प्रकार ख़ाली हो रहे हैं और उमरा अपनी अमारत की मस्नद से कैसे गिर रहे हैं। इसके पश्चात् कि उनकी शक्ल-सूरत में दौलत का राज़ बस चुका था ये (अख़बार और समाचार पत्र) दो परस्पर युद्ध करने वाले पक्षों में से विजयी होने वाले तथा पराजित पक्ष और सफल होने वाले तथा विफल पक्ष के संबंध में सूचना देते हैं। यदि अख़बार न होते तो (इतिहास के) लक्षण मिट जाते और हुकूमतें बेख़बर रहतीं तथा नेक एवं भले लोगों की पहचान न हो सकती। और परस्पर विचारों का आदान-प्रदान तथा दृष्टिकोणों को पूर्ण करने का सिलसिला कट जाता। और प्रतिभाशाली लोगों की अधिकतर रायें तथा उन के अनुभव बेकार हो जाते। और राजनीतिज्ञों, विद्वानों और विवेचना की योग्यताएं रखने वालों की पहचान का कोई उपाय

والاخيار وتقطّعت سلسلة تلاحق الافكار وتكميل الانظار ولضاعت كثير من آراء وتجارب أهل عقل ودهاء وما بقى سبيل إلى تعرّف أهل السياسات ومعرفة أهل العقول والاجتهادات ولولا التاريخ لصار الناس كالانعام ولضيّعوا سلسلة الايام والاعوام وقد سُلّمت ضرورته مذ سُلّت السيوف من أجفانها وبُرئَ الاقلام لجولانها ولا نقدر على موازنة الاوّلين والآخرين إلا بإمداد المؤرّخين وهو الذى يحمل آثار بنات المجد ويشيع أذكار أرباب الجدّ وهو زينة للدين وسنة الله فى كتبه والفرقان المبين والدين الذى لم يُحصّله تحت أسره ولم يصاحبه فى قصره فليس

शेष न रहता। यदि इतिहास का विधान होता तो लोग बिल्कुल चौपायों की तरह हो जाते और वे माह तथा साल के मेल-मिलाप के रिश्ते को बिल्कुल खो बैठते। जब से तलवारों ने अपने म्यानों से निकलना और कलमों ने अपनी फुर्ती दिखाना आरंभ की है इसकी आवश्यकता मान्य है। इतिहासकारों की सहायता के बिना हम पहलों और बाद में आने वालों की तुलना कर ही नहीं सकते और यही वह ज्ञान है जो अहले मज्द (नेक लोग) के आसार और रिवायतों का ग्रहण करने वाला होता है तथा प्रयास करने वालों के यादगार कारनामों को सार्वजनिक करता है। यह धर्म के (इतिहास) के लिए सजावट और ख़ुदाई लेखों तथा पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह की सुन्नत है। वह धर्म जो इस (इतिहास) को अपनी गिरफ़्त में न ले और अपने यहां स्थान न दे उस धर्म की हालत उस घर के समान है जिसे ऐसे स्थान पर बनाया गया हो जिस के बारे में यह आशंका हो कि वह (प्रचंड) सैलाब के थपेड़ों की चोट में है। और यह सैलाब कभी उसके बहुमूल्य सामान को बहा ले जाता है और उसे घोड़ों के सुम्मों से उठने वाले ग़ुबार की तरह कर देता है (स्मरण रखो) कि जिस मनुष्य ने इतिहास के दण्ड को खो दिया वह

هـو الا كبيـت بُـنى فى موضـع يُخـاف عليـه مـن صدمـات السـيل وربّمـا يذهـب السـيل بمتاعـه و يغـادره كغبـار سـنابك الخيـل ومـن فقـد عصـا التاريـخ يمشـى كأقـزل ولا تتحـرك رجـله مـن غـير أن تتخـاذل فيُنهَـب ذالـك البيـت مـن صـول الجهـل وسـيله ومـن تبـوّأه يتلـف دُررًا جمعهـا فى ذيـله وربمـا يُنسـيه الشـيطان مـا هـو كعمـود المـلّة و يغـادر بيتـه أنقـى مـن الراحـة فيكـون مـآل هـذا الديـن أنـه يُرمَـى بالكسـاد و يتلطّـخ بأنـواع الفسـاد والديـن الذى يؤيَّـدُ بصحـف التاريـخ والجرائـد وضبـط الاخبـار لا تُعفّـى آثـاره بـل يُـؤتَى كعذيـق أُكُله كل حـين مـن أنـواع الثمـار و يخـرج كل وقـت مـن معـادن الصـدق سـبائك الفضـة والنضـار

मनुष्य लंगड़ाता हुआ चलेगा और उसका पांव लड़खड़ाए बिना हरकत नहीं करेगा। ऐसा घर जहालत के आक्रमण और सैलाब से लूटा जाता है और उस मकान को निवास स्थान बनाने वाला व्यक्ति उन बहुमूल्य रत्नों को व्यर्थ कर देगा जो उसने अपने दामन में जमा किए हों। और शैतान प्राय: उसे धर्म के बुनियादी स्तंभ भी भुला देता है और उसके घर का पूरा सफ़ाया कर देता है। फिर उस धर्म का अंजाम यह होता है कि वह घाटे का शिकार हो जाता है। यद्यपि ऐसा धर्म जिसका समर्थन ऐतिहासिक ग्रन्थ, समाचार पत्र और अख़बारों का रिकॉर्ड करे तो उस धर्म के आसार को मिटाया नहीं जा सकता। अपितु वह धर्म फलदार शाख़ा की तरह हर पल विभिन्न प्रकार के फल देता है। और सच्चाई की खानों से हर समय चांदी और सोने की डेलियां निकालता है। उसकी ख़बरें ग़मों और बेचैनियों के आक्रमण के समय दिलों में सांत्वना पैदा करती हैं। और शोकाकुल हृदय पर संकट ग्रस्त लोगों की घटनाएं वर्णन करती हैं। और बड़े-बड़े ख़तरों में घुस जाने पर हिम्मतें सुदृढ़ करती हैं और प्रतिष्ठित नौजवानों के नमूने से डरे-सहमे दिलों में दिलेरी पैदा करती हैं। इसलिए कि बहादुर नौजवानों के नमूने दिलों को

وأخباره تُسكّن القلوب عند مساورة الهموم والكرب وتقص قصص المصابين على القلب المكتئب وتشدد الهمم للاقتحام فى الامور العظام وتُشجّع القلوب المزء ودة بنموذج الفتيان الكرام فإن نموذج الفتيان والشجعان يُقوّى القلوب ويزيد جرأة الجنان فوجب شكر الذين يُعثرون على سوانح زمن مضى أو على سوانح أهل الزمان ويخبرون عن ضعف الإسلام وقوّة أهل الصلبان وكم من جهالة مسّت قومنا من قلّة التوجّه إلى التواريخ وأخبار الازمنة والديار و عَرَض عليهم النصارى بعض القصص محرّفين مبدّلين كما هو عادة الاشرار وأهلكوهم وبلّغوا أمرهم إلى

शक्ति प्रदान करते और उनके साहस को बढ़ाते हैं। इसलिए ऐसे लोगों का धन्यवाद अदा करना अनिवार्य है। जो भूतकाल और युग के लोगों के जीवन-चरित्र से सूचित करते हैं। और इस्लाम की कमज़ोरी तथा अहले सलीब की शक्ति से पूर्ण रूप से अवगत करते हैं। इतिहास और युगों और देशों की हालतों के बारे में कम ध्यान देने के कारण हमारी क़ौम कितनी जहालतों का शिकार है। और जैसा कि उपद्रवियों का तरीक़ा है ईसाइयों ने कुछ क़िस्से अक्षरांतरित एवं परिवर्तित करके मुसलमानों के सामने प्रस्तुत किये हैं। और इस प्रकार उन्हें वधित तथा उनके उद्देश्य को तबाह-व-बर्बाद कर दिया है। अपनी आस्थाओं की ओर लालच दिला कर उन्हें आकर्षित किया, अपितु उनमें से एक गिरोह को अपनी सलीब की ओर खींच लाए हैं। उनका यह आचरण बुद्धिमानों की परेशानियों को बढ़ा देता है और उपद्रवियों के इस अमल पर अफ़सोस में बेचैनी पैदा कर देता है। इन ख़ूबियों के होते हुए भी हमारे युग के अधिकतर समाचार पत्रों के सम्पादक घटियापन की ओर झुके हुए हैं। उन्होंने अपने अन्दर इतने दोष जमा कर लिए हैं कि जिन के कारण उन की समस्त अच्छी आदतों का ख़ून हो गया है। उनमें ईमानदारी,

البوار والتبار وطمعوا فى إيمانهم بل جذبوا فوجا منهم إلى صلبانهم وهذا أمر يزيد بلبال العاقلين ويُهيّج الاسف على عمل المفسدين ثم مع هذه الفضائل مال أكثر أهل الجرائد فى زمننا هذا إلى الرذائل وجمعوا فى أنفسهم عيوبا سفكت جميع ما هو من حسن الشمايل ما بقى فيهم ديانة ولا صدق وأمانة يسيل من أقلامهم سيل الاكاذيب ويسفكون دم الحق عند الترغيب والترهيب يحمدون لاغراض ويسبّون لاغراض وجعلوا أهواء هم قِبلتهم فى كل توجّه وإعراض وازدراءٍ وإغماض يتقاعسون من مُبارز ويصولون على احراض يكذبون كثيرا وقَلّما يصدقون وفى كل واد يهيمون ليس فيهم من غير خلابة العارضة والهذر عند المعارضة

सच्चाई और अमानत शेष नहीं रही। उनके क़लमों से हर प्रकार के झूठों का सैलाब बह रहा है और प्रत्येक दिलचस्पी और भय के अवसर पर वे सच्चाई का ख़ून करते हैं। कुछ मतलबों के लिए कभी वे लोगों की प्रशंसा करते हैं और कभी अपने अन्य मतलबों के लिए उन्हें गालियां देते हैं। उन्होंने प्रत्येक ध्यान और विमुख होने तथा तिरस्कार और दोषों से दर गुज़र करने (दोनों स्थितियों) में अपने कामवासना संबंधी इच्छाओं को अपना क़िब्ला बना रखा है। वे मुक़ाबला करने वाले से पीछे हट जाते हैं यद्यपि कमज़ोरों पर ख़ूब आक्रमण करते हैं। वे अधिकतर झूठ बोलते हैं और बहुत कम सच बोलते हैं। उनमें धोखा देने के रोग और मुक़ाबले के समय मौखिक छल करने और बकवास के अतिरिक्त कुछ नहीं। झूठ, उपहास, बीच की चाल को त्यागने के बिना वे मधुर पानी की शक्ति नहीं रखते। निरर्थक और जाहिलों वाली बातों की मिलावट के बिना वे उत्तम कलाम तक पहुंच भी नहीं सकते । वे डींगे मारने के द्वारा जन सामान्य को प्रसन्न करना चाहते हैं। हंसाने और रुलाने वाली बातें करके उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। वे दिलों को मोह

لا يقدرون على عذوبة الإيراد من غير كذب وهزل وترك الاقتصاد ولا يمسّون نفائس الكلمات الا بمزج الإباطيل والجهلات يبغون نزهة سوادهم بالهزليات ويستميلونهم بالمضحكات والمبكيات ويريدون اختلاب القلوب ولو كان داعيا إلى الذنوب ويقولون كل ما يقولون رياءً ا و استمالة للإعوان لينهلّ نداى أهل الثراء والثروة عليهم ولير جعوا بالهيل والهيلمان وليتسنوا قيمتهم ويستغزروا ديمتهم ولذالك يرقبون ناديهم ونداهم وإن خُيّبوا فيلعنون مغداهم وكثير منهم يعيشون كالدهريين والطبيعيين وينظرون الدين كالمستنكفين بل أعينهم فى غطاء عند رؤية جمال الملّة وقلوبهم فى عيافة عند هذه الجلوة لا

लेना चाहते हैं चाहे ऐसा करना गुनाहों की ओर दावत दे रहा हो वे जो कुछ भी कहते हैं केवल दिखावे और सहायकों को अपनी ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से कहते हैं। ताकि धनाढ्य लोगों की दानशीलता उन पर बरसे और वे उन से बहुत सा माल लेकर लौटें ताकि वे उनकी क़द्र और क़ीमत बढ़ाएं तथा उनकी हल्की वर्षा को मूसलाधार समझें। और इसलिए वे उनकी मज्लिसों और उनके दान पर दृष्टि रखते हैं। और यदि वे इसमें असफल हो जाएं तो फिर वे अपनी सुबह पर लानत भेजते हैं। उन में से अधिकांश नास्तिकों और नेचरियों जैसा जीवन व्यतीत करते हैं और धर्म को अहंकारियों के समान देखते हैं। अपितु मिल्लते इस्लाम के सौन्दर्य को देख कर उन की आंखों पर पर्दा पड़ जाता है और इस बनाव-सिंगार करके प्रदर्शन के समय उनके दिलों में घृणा पैदा हो जाती है। वे झूठ को शर्म नहीं समझते और राई का पहाड़ बनाते हैं और उन्हें बेलगाम कदापि न छोड़ा जाएगा। क्योंकि हर आज की एक कल भी है। मैं देख रहा हूँ कि अहंकार के बुख़ारों ने उनकी सांसें बन्द कर रखी हैं और उनकी बुनियाद को ध्वस्त कर दिया है।

يـرون الكـذب سُـبّة و يجعلـون لَبنـةً قُبّـة ولـن يُتركـوا سُـدًى وإنّ مـع اليـوم غـدًا وأرى أن أبخـرة الكـبر سـدّت أنفاسـهم وهدّمـت أساسـهم وتـرى أكثرهـم كصـدف بـلا دُرّ و كسُـنبلة مـن غـير بُـرّ يقومـون لتحقـير الشـرفاء لادنى مخالفـة فى الآراء وتجـد فيـهم مـن اتخـذ سـيرته الجفـاء وإلى مـن أحسـن إليـه أسـاء وإذا رأى فى مصيبـة الجـار فـآذى وجفـا وجـار ومـا رحـم ومـا أجـار فكيـف ينصـر الديـن قـوم رضـوا بهـذه الخصائـل و كيـف يُتَوَقّـع فيـهم خـير بتلـك الرزائـل؟ الا الذيـن صلحـوا ومالـوا إلى الصالحـات فـيُرجى أن يـأتى عليـهم يـوم يجعلـهم مـن حفـدة الديـن ومـن الناصريـن بالصـدق والثبـات

तुम उनमें से अधिकतर को ऐसी सीपी पाओगे जिसमें कोई मोती नहीं और ऐसी बाली पाओगे जिसमें कोई दाना नहीं। रायों में थोड़े से मतभेद पर वे शालीन लोगों के तिरस्कार के लिए उठ खड़े होते हैं। तुम उन में से ऐसे लोग पाओगे जिन्होंने बेवफ़ाई को अपना आचरण बना लिया है। जो उनसे अच्छा व्यवहार करे वे उस से बुरा व्यवहार करते हैं। जब वे किसी पड़ोसी को संकट में देखते हैं तो उसे कष्ट देते और ज़ुल्म और बेवफ़ाई करते हैं और दया नहीं करते और न ही पड़ोसी होने का हक़ अदा करते हैं। ऐसी आदतों पर प्रसन्न रहने वाले लोग धर्म की कैसे सहायता करेंगे। इन कमीनी विशेषताओं के होते हुए उनसे किसी भलाई की आशा कैसे की जा सकता है सिवाए उन लोगों के जो नेक हो गए तथा नेकों की ओर आकर्षित हुए। तो आशा की जा सकती है कि उन पर ऐसा समय अवश्य आएगा जो उन्हें धर्म के सहायक श्रद्धा और दृढ़ता के साथ धर्म की सहायता करने वाले बना देगा।

فی ذکر الفَلاسفة وَالمنطقیّین

لعلك تقول بعد ذالك أن الفلاسفة والمنطقیّین یقدرون علی أن یُصلحوا مفاسد هذا الزمان فإنهم یتکلّمون بالحجّة والبرهان ویصلون إلی نتیجة صحیحة بعد ترتیب المقدّمات ولا یبقی الإشکال بعد شهادة الاشکال فی المعضلات فنقول إن هذه العلوم مفیدة بزعمك من غیر شك فی بعض الاوقات وتُثبتُ خیانة من خان ومان وتُنجی من الشبهات ومن تعلّمها یصیر بیانه مُوَجّها وحُلو المذاقة ویتراءی یراعه ملیح السیاقة وإن أهلها یزید رعبا علی الکافرین ویطّلع

दार्शनिकों और तर्कशास्त्रियों के वर्णन में

इसके बाद शायद आप यह कहें कि दर्शनशास्त्री और तर्कशास्त्री इस युग की ख़राबियों का सुधार करने पर समर्थ हैं। इसलिए कि ये लोग तर्क और प्रमाण के साथ बात करते हैं। और मुक़द्दमों (सुग़रा-कुबरा) को क्रम देने के बाद किसी सही परिणाम पर पहुंचते हैं। और पेचीदा मामलों में उदाहरणों की गवाही के बाद कोई आपत्ति शेष नहीं रहती। फिर हम कहते हैं कि आप के विचार के अनुसार ये विद्याएं कभी नि:सन्देह बहुत लाभप्रद हैं और इनके कारण एक ख़यानत करने वाला तथा झूठे की ख़यानत सिद्ध करते और सन्देहों से मुक्ति दिलाते हैं और जो इन विद्याओं को सीखता है उसका वर्णन तार्किक और मधुर रुचि का चरितार्थ होता है। और उसका क़लम सुन्दर पद्धति व्यक्त करता है और विद्याओं के जानने वाले का काफ़िरों पर रोब बढ़ जाता है और वे उपद्रवियों की ख़यानत पर अवगत हो जाता है और उनके द्वारा मनुष्य अपनी और हर बात को साफ़-साफ़ देख लेता है और अपनी बुद्धिमत्ता को उत्तम कर

عـلى خيانـة المفسـدين وبهـا يُزيّـن الإنسـان روايتـه ويستشـف كل أمـر ويُنقّـد درايتـه ويُبكّـت بالحجـة كل مـن يعـوى ويشـوّق الآذان إلى مـا يـروى وينطـق كـدرر فرائـد ولا يُكابـد فيهـا شـدائد ولا يخـاف عنـد النطـق رعـب مانـع ولا يـأتى بـئٍ غـير يانـعٍ ويقتحـم سـبل الاعتيـاص ويسـعى لارتيـاد المنـاص وربمـا يفكـر ويعكـف نفسـه للاصطـلاء ليُنـجّى نفوسًـا مـن جهـد البـلاء هـذا قولـك وقـول مـن يشـابه قلبـه قلبـك ولكـن الحـق أن هـؤلاء من الفلاسـفة والحكمـاء وأهـل العقـل والدهـاء لا يقـدرون عـلى دفـع هـذا البـلاء بـل هـم كبـلاء عظيـم لابنـاء الإسـلام والطلبـاء وكل مـا زَقّـوا صبيـان المسـلمين فهـو ليس إلا كالسّـموم وأخرجوهـم مـن ريـاح طيبـة وتركوهـم فى السّـموم بئسـما علّمـوا وبئسـما

लेता है तथा तर्क एवं प्रमाण के द्वारा हर भोंकने वाले का मुंह बन्द कर देता है और उसका वर्णन कानों को रुचि दिलाता है तथा बोलते समय उसके मुख से नायाब (अप्राप्य) मोती झड़ते हैं और उस (कलाम) में वह किसी प्रकार की परेशानी महसूस नहीं करता और वार्तालाप के समय किसी टोकने वाले के रोब का उसे भय नहीं होता। वह कच्ची नापुख़्ता बातें नहीं करता। वह दुर्गम मार्गों में घुस जाता है और शरण की खोज में लगा रहता है और कभी वह दूसरों को संकट की कठोरता से मुक्ति दिलाने के लिए स्वयं को परिश्रम में डालने की चिन्ता में रहता है। यह तेरा कथन है और उसका कथन है जिसका दिल तेरे दिल के समान है। किन्तु वास्तविकता यह है कि फ़ल्सफ़ी और फ़िलास्फ़र तथा बुद्धिमान लोग इस संकट को दूर करने की शक्ति नहीं रखते। अपितु वे स्वयं इस्लाम के सुपुत्रों के लिए और सत्य के अभिलाषियों के लिए बहुत बड़े संकट हैं। जब कभी भी उन्होंने मुसलमानों के बच्चों को चोगा दिया वह केवल और केवल ज़हर था और उन्होंने उन्हें पवित्र और रुचिकर हवा से निकाल कर गर्म हवा में ला डाला। बहुत ही बुरा है जो उन्होंने सिखाया और क्या ही

تعلّموا

فی ذکر مشائخ هذا الزمان

لعلك تقول أن مشايخ هذا الزمان الذين عُدّوا من أولياء الرحمان هم قوم مصلحون فليحفد إليهم المسلمون فإنهم فانون فی حب حضرة الكبرياء ولا يُضيّعون الوقت فی الزهو والخيلاء بل يريدون أن ينتهج الناس مهجة الاهتداء وينقلوا من فناء الاهواء إلى مقام الفناء وقد آثروا تلاوة القرآن على اللهو بالاقران تراهم جالسين فی الحجرات منقطعين إلى رب الكائنات فاسمع منی إنّا نؤمن بوجود طائفة من الصلحاء فی هذه الامّة ولو كان الناس يُكفّرونهم ويؤذونهم بأنواع

बुरा है जो उन्होंने सीखा।

वर्तमान काल के सूफ़ियों के वर्णन में

शायद आप यह कहें कि इस युग के सूफ़ी लोग जो रहमान ख़ुदा के वली गिने जाते हैं वे सुधार करने वाले लोग हैं। इसलिए चाहिए कि मुसलमान उनकी ओर दौड़ें क्योंकि ये ख़ुदा तआला के प्रेम फ़ानी हैं और अहंकार तथा स्वयं को सबसे अच्छा समझने में समय बर्बाद नहीं करते अपितु वे चाहते हैं कि लोग हिदायत के मार्ग पर चलें और कामवासना संबंधी इच्छाओं के आंगन से फ़ना के स्थान को स्थानान्तरित हो जाएं और उन्होंने साथियों के साथ खेलने-कूदने पर क़ुर्आन की तिलावत को प्राथमिकता दी हुई है। तुम उन्हें कुटियों में संसार के रब्ब की ख़ातिर विच्छिन्न हुए बैठे देखोगे। तो मुझ से उत्तर सुन। हम इस उम्मत में नेक लोगों की एक जमाअत की मौजूदगी को स्वीकार करते हैं। यद्यपि लोग उनको काफ़िर ठहराते और विभिन्न प्रकार के इफ़्तिरा तथा झूठे आरोपों से उन्हें कष्ट देते हैं। परन्तु हम इस युग के अधिकतर

الفرية والتهمة ولكنّا نجد أكثر مشايخ هذا الزمان مُرائين متصلّفين مُتباعدين من سبل الرحمان يُظهرون أنفسهم فى المجالس كالكبش المضطمر وليسوا الا كالذئاب أو النمر يحمدون أنفسهم متنافسين ويقولون إنّا أهل الله ما أطعنا مُذ يَفعنا الا ربّ العالمين وإن نفوسنا مُطهّرة وكؤوسنا مترعة ونحن من الفقراء والمتبتّلين إلى الله ذى العزّة والعلاء ولم يبق فيهم كرامة من غير ذرف الغروب مع عدم رقّة القلوب وما بقى بدعة الا ابتدعوها ولا مكيدة الا تقمّصوها ولا يوجد فى مجالسهم الا رقص يُمزّق به الاردية ويدمى الاقفية وبما وسعت الدنيا عليهم بُدّلت عرائكهم وصار مصلى الحجرات أرائكهم

शेख़ों को दिखावा करने वाले, डींगे मारने वाले और रहमान ख़ुदा के मार्गों से दूर हटे हुए पाते हैं। और मज्लिसों में स्वयं को एक कमज़ोर दुर्बल भेड़ के रूप में प्रकट करते हैं। परन्तु वास्तव में वे भेड़िये या चीते हैं वे अपने नफ़्सों की बढ़-चढ़ कर प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं कि हम वली हैं और चढ़ती जवानी से ही हम ने रब्बुल आलमीन के अतिरिक्त किसी का आज्ञापालन नहीं किया। हमारे नफ़्स पवित्र तथा हमारे जाम भरे हुए हैं हम फ़कीर सिफ़त हैं और ख़ुदा तआला की ओर लौ लगाए हुए हैं। हालांकि टिसुए बहाने के अतिरिक्त उनमें कुछ भी चमत्कार नहीं तथा हार्दिक आर्द्रता से भी वंचित हैं। कोई बिद्अत ऐसी नहीं जिसे उन्होंने ग्रहण न किया हो और कोई चालबाज़ी ऐसी नहीं जिसे ओढ़ना-बिछाना न बना लिया हो। और उनकी मज्लिसों में केवल ऐसा नाच होता है कि जिसके द्वारा लिबास अस्त-व्यस्त होता है और गर्दन लहूलुहान हो जाती है। चूंकि दुनिया उन पर विशाल है इसलिए उनके मिज़ाज परिवर्तित हो गए हैं और हुजरों के मुसल्ले बैठने के स्थानों में बदल गए हैं। और यही उनका अदूरदर्शिता, मन्दबुद्धि और वैध करने के तरीक़ों और शर्म की कमी का कारण है। जब अल्लाह (तआला) किसी मनुष्य से संयम

فهذا هو سبب نقيصة رويتهم ودهائهم وطرق إباحتهم وقلّة حياء هم وإن الله إذا سلب من نفس التقوى الذى هو أشرف النِّعم فجعل تلك النفس كالنَّعَم وإذا ختم على قلب نزع منه نكات العرفان وجعله كجبان وحيل بينه وبين شجاعة الإيمان فيصبحون كالنسوان لا كالفتيان ولا يبقى فيهم من غير حُلىّ النسوة مع شيء من الخيلاء والنخوة وينزع عنهم لباس الحِكَمِ البارعة والكلم البليغة الرائعة ولا يُعطَى لهم حظ من مسك المعارف وريحه الفاتحة تكدّر سراج الإسلام من تكدُّر زيتهم وما هم الا كراوية لبيتهم انقض ظهرهم أثقال العيال فيحسبون همومهم كالجبال الثقال ويحتالون لهم

जो उच्चतम नेमत है छीन ले तो वह उसे चौपाए के समान बना देता है। और जब वह किसी दिल पर मुहर लगा दे तो फिर वह उस से मारिफ़त के नुक्ते छीन लेता है और उसे कायर बना देता है तथा उस मनुष्य के और ईमानी बहादुरी के मध्य रोक डाल दी जाती है और वे औरतों के समान हो जाते हैं न कि जवां मर्द। और उनमें औरतों की तरह बनाव-श्रंगार के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहता। हाँ कुछ घमण्ड और अहंकार रह जाता है और उच्च श्रेणी की हिकमत और उत्तम सुबोध बातों का लिबास उनके शरीर से उतार लिया जाता है तथा उन्हें अध्यात्म ज्ञानों की कस्तूरी और उस के फैलने वाली सुगंध से कुछ भी हिस्सा नहीं दिया जाता। उनके तेल के गंदलेपन से इस्लाम का दीपक भी धुंधला गया है। वे घर के लिए पानी लाने वाले उस ऊंट की तरह हैं जिसकी कमर को अयाल के बोझ ने तोड़ दिया हो। फिर वे अपने रंज-व-ग़म को भारी पर्वत की तरह बोझल समझते हैं और लाभ के लिए हर बहानेबाज़ी प्रयोग करते हैं। उनको प्रतापी ख़ुदा के धर्म से क्या संबंध! उनके चेहरे से उनकी नीयतें और उनके अहंकार से उनके विचार मालूम हो जाते हैं। उन निशानियों के उन पर चरितार्थ होने और अवलोकनों की निरन्तरता से प्रकट हो

كل الاحتيال فما لهم ولدين الله ذى الجلال تعرف رويتهم برواء
هم وخيالهم بخيلا ئهم وقد وضح بصدق العلامات وتوالى
المشاهدات أن أكثر هذه الفقراء ليس لهم حظ من التقاة ولا
رائحة من الحصاة يرون انهتاك حرمة الدين ولا يخرجون من
الحجرات ولا تتوجّع قلوبهم كالحماة بل سرّهم مشاغلهم
بالاغانى والمغنيات والمزامير مع قراءة الابيات ولا يعلمون
ما جرى على أمّة خير الكائنات وما قرءوا من مشايخهم
سبق المواسات يجمعون كل ما يُعطى ولو كان مال الزكاة
والصدقات تحسبهم أحياءً وهم كالاموات الا قليلا من عباد
الله كذرّة فى الفلوات وتجد أكثرهم غريق البدعات والسّيئات

गया है कि इस फ़क़ीरों की प्रचुरता को न संयम से कुछ हिस्सा मिला और न बुद्धि की गंध है। वे धर्म का अपमान अपनी आंखों से देखते हैं परन्तु अपने हुजरों से बाहर नहीं निकलते। उनके दिल धर्म के सहायकों के समान नहीं तड़पते, अपितु गाने और गाने वालियां और संगीत के उपकरणों के साथ शेर पढ़े जाने के कार्य उन्हें प्रसन्न रखते हैं। और वे नहीं जानते कि क़ायनात में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत पर क्या बीत रही है? उन्होंने अपने शेख़ों से हमदर्दी का पाठ नहीं पढ़ा। उन्हें जो कुछ भी दिया जाए वे उसे समेट लेते हैं चाहे वह ज़कात और सदक़ों का माल ही क्यों न हो। तुम उन्हें ज़िन्दा समझते हो हालांकि वे मुर्दों जैसे हैं। सिवाए अल्लाह के कुछ बन्दों के जैसे रेगिस्तान में (एक) कण। तुम उन में से अधिकांश को बिद्अतों और बुराइयों में डूबा पाओगे। उन पर सौ अफ़सोस मरने के बाद वे अल्लाह को क्या उत्तर देंगे। जब भी ईसाइयों तथा ईसाइयत ग्रहण करने वालों की हिम्मत बढ़ती है तो नि:सन्देह इस का गुनाह लापरवाह शेख़ों और उलेमा पर है। ये समस्त फ़ित्ने जो पैदा हुए वे सब इन उलेमा, फ़ुक़रा और उमरा की लापरवाही

فيا أسفا عليهم ما يجيبون الله بعد الممات؟ و كل ما كثر من اجتراء النصارى و المتنصّرين فلا شك أن اثمه على هؤلاء الغافلين من المشايخ و العالمين فإن الفتن كلها ما حدثت الا بتغافل العلماء و الفقراء و الامراء فيُسألون عنها يوم الجزاء قالوا نحن معشر العلماء و الفقراء ثم عملوا عملا غير صالح بالاجتراء و طلبوا رزقهم بالمكائد و الرياء و ترى بعض علماء هم تركوا شغل العلم و أخلدوا إلى الارض و فكر الزراعة و ما حفظوا مقامهم و ماطلبوا فضل الله بالضراعة و حسبوا عزازة فى الفلاحة و نسوا حديث الذلة الذى ورد بالصراحة فالحاصل أنهم اختاروا مشاغل أخرى كالحارثين فكيف يقلبون الطرف

का परिणाम हैं। फिर वे प्रतिफल एवं दण्ड के दिन इसके संबंध में पूछे जाएंगे। उनका दावा तो यह है कि हम उलेमा और फ़ुक़रा की जमाअत हैं। फिर बड़ी ग़ुस्ताख़ी से बुरे कर्म करते हैं और अपनी जीविका छल और दिखावे से तलाश करते हैं। तू देखता है कि उनके उलेमा में से कुछ ज्ञान के कार्य को त्याग चुके हैं और पूर्ण रूप से दुनिया के होकर रह गए हैं। और खेती-बाड़ी की चिन्ता में रहते हैं। उन्होंने अपने मुक़ाम की निगरानी नहीं की और न ही विनय करते हुए अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) मांगा और यह सोचा कि उनका सम्पूर्ण सम्मान खेती बाड़ी में है वे (खेती के बारे में) व्यापक तौर पर आने वाले अपमान की हदीस को भूल गए। सारांश यह है कि उन्होंने खेती-बाड़ी पेशा लोगों जैसे दूसरे कार्यों का चयन कर लिया। फिर वे धर्म को और कैसे निगाह करें और धर्म की सहायता करें। अत: एक ही दिन में खलियान की चिन्ता और उम्मत की चिन्ता कैसे इकट्ठी हो सकती है। जो व्यक्ति कूड़ा-कर्कट पर गिर पड़े उसके लिए शासन के दरवाज़े कभी खोले नहीं जाते। वे विलाप और बैन करने वाली औरतों की तरह लोगों से मांगते हैं। उन्होंने

إلى الدين و ينصرون الدين؟ و كيف يجتمع فى قلب واحد فكر
العرمة وفكر الامّة؟ و من خرّ على دويل لن يفتح عليه باب
الدولة يسألون الناس كالنائحات و النادبات و أضاعوا القائت
فى فكر الاقوات وترى بعضهم يرهنون قبور آباءهم عند
غرماءهم ليتصرّفوا فيما وُقف عليها و ليأكلوا ما عُرض
على أجداث كبراءهم و إن قلتَ يا عافاك الله أحسبت قبر أبيك
شيئًا يُباع ويُشترى يقول اسكت يا فضولى لا تعلم ما نعلم
ونرى ويعدون إلى ألف من كرامات أسلافهم وما يخرج درّ من
خلفهم من غير اخلافهم يدورون بركوة اعتضدوها وعصا
اعتمدوها وسبحة عدّوها ولحًى طوّلوها ومدّوها وحُللٍ

भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजनों की कल्पना में अपना (मौजूद) इतना भोजन जिस से जीवन बना रहे को व्यर्थ कर दिया। उन में से कुछ तुम्हें ऐसे भी दिखाई देंगे जो अपने बाप-दादों की क़बरें अपने क़र्ज़ लेने वालों के पास गिरवी रखते हैं ताकि वे उन क़ब्रों के औक़ाफ़ को अपने अधिकार में लाएं और उनके बड़ों की क़ब्रों पर जो चढ़ावे चढ़ाए जाते हैं उनकी आय खाएं। यदि तू उन्हें कहे कि हे भले आदमी! क्या तू अपने बाप की क़ब्र को ऐसी चीज़ समझता है जिसका क्रय-विक्रय हो सकता है? तो वह उत्तर में कहेगा कि हे बातूनी चुप रह! जो हम जानते और देखते हैं तुम उसे नहीं जान सकते। वे अपने पूर्वजों के चमत्कार हज़ार तक गिनते हैं। उनके थनों में से दूध की बजाए वादा ख़िलाफ़ी निकलती है। वे कटोरा लटकाए, डण्डा थामे, तस्बीह के दाने गिनते, दाढ़ियां बढ़ाए और फैलाए हुए हरे चोले पहने और चेहरों को चमकाए हुए फिरते हैं। जैसे वे अब्दाल हैं या क़ुतुब। परन्तु कुछ देर बाद यह प्रकट हो जाता है कि वे कुत्ते या भेड़िए हैं। उनकी हिम्मतों का अन्त वह थैला है जिसमें दिरहम या फल और माल-व-सम्पत्ति भरी जाती है। तो कानों के नीचे तक छोड़ी हुई लटों के अतिरिक्त उनमें फ़क़ीरी की कोई निशानी नहीं पाता।

خضّروها وبَشرة نضّروها كأنهم أبدال أو أقطاب ثم يظهر بعد برهة أنهم كلاب أو ذئاب وغاية هممهم جراب تُملأ فيه دراهم أو قسب و كناب لا تجد فيهم علامة من فقرهم من غير الذوائب المرسلة إلى تحت الآذان كمثل العلماء الذين لا يعلمون من غير رسم الإمامة والاذان ولا تجد فى حجراتهم أثرا من بركات بل تجد كل أحد أبا ابى زيد فى كذب وهنات يأكلون أموال الناس بادّعاء القطبية والبدلية ولا يعلمون من غير طواف القبور والبدعات الشيطانية وبعضهم فى المجامع يتغنّون و كمثل وليدة المجالس يرقصون وعلى رأس كل سنة لتجديد البدعات يجتمعون تجد فيهم مكيدة السنور والفأرة

उन उलेमा के समान जो इमामत और अज़ान की रस्म के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते। तुम उनके हुजरों में किसी बरकत का निशान तक नहीं पाओगे। अपितु उनमें से प्रत्येक को झूठ और (अन्य) दोषों में अबू ज़ैद (सुरूजी) का भी बाप पाओगे। वे क़ुतुब और अब्दाल के दावेदार बन कर लोगों के माल खाते हैं। और क़ब्रों के चारों ओर चक्कर लगाने तथा शैतानी बिद्अतों के अतिरिक्त कुछ नहीं जानते। उनमें से कुछ मज्मों में गाते और बाज़ारी औरत (गाने वाली) की तरह नाचते हैं। और प्रत्येक वर्ष के प्रारंभ में बिद्अतों के नवीनीकरण के लिए एकत्र होते हैं तुम उनमें बिल्ली और चूहे जैसी चालाकियां तथा सांप और ज़र्द बिच्छू जैसा ज़हर पाओगे। उनमें धर्म का केवल नाम और शरीअत की केवल रस्म पाई जाती है। उन्होंने प्रतापी ख़ुदा के आदेश त्याग दिए हैं और एक बहानेबाज़ व्यक्ति के समान एक नई शरीअत आविष्कृत कर ली है और स्वयं अपनी ओर से भिन्न-भिन्न प्रकार के विर्द (जप) और कार्य बना लिए हैं, जिनका न तो अल्लाह की किताब में और न ही समस्त रसूलों के सरदार और क़ायनात में सर्वोत्तम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आसार में कोई निशान मिलता है। फिर दावा यह करते हैं कि हम ख़ातमुन्नबिय्यीन पर ईमान लाते हैं।

وسُمّ الحيّة والجرارة لا يوجد فيهم من الديانة الا اسمها ولا من الشريعة الا رسمها تركوا أحكام الله ذى الجلال وخرقوا شريعة أخرٰى كالمحتال ونحتوا من عند أنفسهم أنواع الاوراد والاشغال لا يوجد أثرها فى كتاب الله ولا فى آثار سيد النبيين وخير الرجال ثم يقولون إنّا نؤمن بخاتم النبيين وقد خرجوا من الدين كإخوانهم من المبتدعين أَنَزَل عليهم وحى من السماء فنسخ به القرآن وسُنّة سيد الانبياء؟ كلا بل اتّبعوا الشياطين وآثروا الإباحة وأهواء النفس على ما أنزل أرحم الراحمين وجاءوا بمحدثات خارجة من الدين وأحدثوا بدعات بعد نبينا المكين الامين وبدّلوا حُللًا غير حلل المسلمين وقلّبوا الامور أكثرها كأنهم ليسوا من المؤمنين المزامير

हालांकि वे अपने बिद्अती भाइयों की तरह धर्म से बाहर हो चुके हैं। क्या उन पर आकाश से वह्यी उतरी है जिस से क़ुर्आन और सय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत निरस्त हो गई है। कदापि नहीं। अपितु उन्होंने शैतानों का अनुकरण किया है। और दयावानों में सर्वाधिक दयावान ख़ुदा की उतारी हुई (वह्यी) पर उन्होंने वैधता और कामवासना संबंधी इच्छाओं को प्राथमिकता दी है। और धर्म से बाहर बिद्अतें पैदा करते हैं तथा हमारे साहिब मर्तबा और अमीन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद नई-नई बिद्अतें पैदा की हुई हैं। मुसलमानों के लिबासों को छोड़ कर और लिबास पहन लिए हैं। और अधिकतर मामलों को उलट-पलट दिया है, जैसे वे मोमिनों में से नहीं हैं। उन्हें गाना-बजाना क़ुर्आन की तिलावत से अधिक पसन्द है और शाइरों की डींगे उनकी निगाहों में रहमान ख़ुदा की आयतों से अधिक लावण्यता रखती हैं। वे धर्म से इस प्रकार निकल गए हैं जैसे कमान से तीर निकल जाता है। उन्होंने ख़ुदा के आदेशों को पूर्णरूप से कुचल दिया है। तुझे उनमें लेशमात्र भी सुन्नत का अनुकरण दिखाई नहीं देगा और न ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि

أحب إليهم من تلاوة القرآن و دقاقير الشعراء أملح فى أعينهم من آيات الله الرحمان خرجوا من الدين كما يخرج السهم من القوس وداسوا أوامر الله كل الدوس ما ترى فيهم ذرّة من اتّباع السُنّة ولا كفتيل من السير النبوية و كثير منهم فتحوا أبواب الإباحة وأووا إلى عقيدة وحدة الوجود ليكونوا آلهة وليستريحوا من تكاليف العبادة يقولون أن كثيرا من الناس رأوا من دعاء نا وجه الاهواء ليظن ان الامركذالك وهم من الاولياء وليسعى الناس إليهم بدراهم كما يسعون إلى الصلحاء وإذا قُرء عليهم كتاب الله أو قول رسوله لا يُطربهم شيء من ذالك ثم إذا قُرء بيت من الابيات فإذا هم يرقصون ومن لعنه الله فمن يفتح عيونه؟ فليعملوا ما يعملون

वसल्लम के जीवन-चरित्र का लवलेश दिखाई देगा। उनमें से अधिकांश ने वैधता के दरवाज़े खोले हुए हैं और ख़ुदा बनने के लिए और इबादत के अभ्यासों से बचने के लिए वहदतुलवुजूद* की आस्था की शरण लिए हुए हैं। वे कहते हैं कि अधिकतर लोगों की इच्छाएं हमारी दुआ के कारण पूरी हुई हैं ताकि यह विश्वास कर लिया जाए कि वास्तव में ऐसा ही है और वे वास्तव में वलियों में से हैं और ताकि इस प्रकार लोग माल और दौलत लेकर उनकी ओर भागते चले आएं जिस प्रकार वे नेक लोगों की ओर दौड़ कर आते हैं। और जब उन पर ख़ुदा की किताब पढ़ी जाए या ख़ुदा के रसूल का कोई कथन प्रस्तुत किया जाए तो उन्हें उस से कण भर भी ख़ुशी प्राप्त नहीं होती। हाँ जब कोई शेर पढ़ा जाए तो झूमते हुए एकदम नाचने लगते हैं। जिस व्यक्ति पर अल्लाह लानत करे तो फिर भला और कौन है जो उसकी आंख खोले। फिर वे जो चाहें करें।

*वहदतुलवुजूद :- यह सिद्धान्त कि संसार में मौजूद वस्तुओं को ख़ुदा तआला का एक अस्तित्व मानना और उसके अतिरिक्त के अस्तित्व को केवल काल्पनिक समझना। (अनुवादक)

فى ذِكر طوائف أخرى مِن المُسلِمِين

قد سمعتم من قبل ذكر أعيان الإسلام ورجالهم الكرام فلعلكم تظنون أن عامتهم معصومون من السّيئات فاعلموا أنهم كمثل كبرائهم ما غادروا شيئا من ارتكاب المعاصى والمنهيات وتراهم مسلوب الهمّة كثير النهمة هالكين من سم الغفلة يأكل بعضهم بعضا كدود العذرة ويتركون أوامر الله من غير المعذرة قد فشا الكذب بينهم والفسق والفحشاء والبخل والغل والشحناء يشربون كأسا دهاقا من الصهباء ويُصبحون فى القمر والزمر بترك الحياء

मुसलमानों के अन्य गिरोहों के वर्णन में

इस से पूर्व आप इस्लाम के महापुरुषों और प्रतिष्ठित लोगों का ज़िक्र सुन चुके हैं। इसलिए शायद तुम यह ग़ुमान करो कि उनके जन सामान्य बुराइयों से बचे हुए हैं तो स्मरण रहे कि वे अपने बड़ों जैसे ही हैं। गुनाह और अवैध बातों के करने में उन्होंने कोई क़सर उठा नहीं रखी। तुम देखोगे कि वे कम हिम्मत, लालची, लापरवाही के ज़हर के मारे हुए हैं और गन्द के कीड़ों के समान एक-दूसरे को खाते हैं वे बिना किसी उज़्र के अल्लाह के आदेशों को त्याग देते हैं। झूठ, पाप, निर्लज्जता, कृपणता, वैर और शत्रुता उन में सामान्य है। वे लाल मदिरा के छलकते हुए जाम लुढ़ाते हैं और सुबह तक अत्यन्त निर्लज्जता और ढिठाई से जुआ खेलते और राग-व-रंग में लगे रहते हैं। वे दावा यह करते हैं कि हम मुसलमान हैं परन्तु मदिरा की गन्दगी से तौब: नहीं करते। जैसे कि वे ख़ुदा हिसाब करने वाले पर ईमान

يقولون نحن المسلمون ثم لا يتوبون من نجاسة الدنان كأنهم لا يؤمنون بالديّان يكذبون بأدنى طمع فى الشهادات و يجاوزون حد العدل عند المعادات نسوا شروط التقاة و ذهلوا حقوق المؤاخاة و مرضوا بمرض لا ينفعه أسيٌّ ولا فلسفيٌّ و ما استعصم منه ألمعيٌّ ولا غبيٌّ حتى عاد زمان الجاهلية بعد ذهابه و فقد الماء و ختل كل امرء بسرابه و ظهرت فى الاعين خيانته و فى الالسن خيانته و فى الزهادة خيانته و فى العبادة خيانته و ما بقى جريمة الا وهى توجد فى المسلمين و جمعوا فى أعمالهم إتلاف حقوق الله و حقوق المخلوقين يوجد فيهم السارقون و السفاكون و المزورون و الكاذبون و الزانون و الاسارى فى عادات الفسق و الفحشاء و الخائنون الجائرون و عبدة القبور

नहीं रखते वे थोड़े से लालच के लिए गवाहियों में झूठ बोलते हैं और शत्रुता के समय संतुलन की सीमा से बाहर चले जाते हैं। संयम की शर्तों को भूल चुके हैं तथा भाईचारे के अधिकारों को भुला दिया है और ऐसे रोग में ग्रस्त हैं कि कोई उपचारक या दार्शनिक उसे ठीक नहीं कर सकता। इस रोग से न कोई अत्यन्त दक्ष व्यक्ति सुरक्षित रहा न कोई मन्द बुद्धि। यहां तक कि असभ्यता काल रुख़सत होने के पश्चात् फिर लौट आया है। पानी समाप्त हो गया है और युग की मृग-तृष्णा से मनुष्य धोखा खा रहा है। आंखों में, जीभों में, संयम और इबादत में इस (असभ्यता के युग) की बेईमानियां प्रकट हो चुकी हैं और कोई अपराध ऐसा नहीं जो मुसलमानों में पाया न जाता हो। उन्होंने अल्लाह के अधिकारों तथा बन्दों के अधिकारों को व्यर्थ करना अपने कर्मों में जमा किर लिया है। उन में चोर, अत्याचारी, धोखेबाज़, झूठे, व्याभिचारी, दुराचारों की आदतों के क़ैदी, ख़यानत करने वाले, ज़ालिम, क़ब्रों के पुजारी और मुश्रिक वैधता के लिबास में जीवन व्यतीत करने वाले और नास्तिक पाए जाते हैं। और जैसा कि तुझे मालूम ही है कि कोई ऐसा

والمشركون والعائشون فى حلل الإباحة والدهريون ولا يوجد جريمة الا ولهم سهم فيها كما أنتم تعلمون وإن كنتَ تشك فاسأل حدّاد سجنٍ من السجون

فِي ذِكر الفِتن الخارجيَّة

إن أكبر الفتن فى هذه البلاد فتنة الإلحاد والارتداد وترون كثيرا من أهل الردّة يمشون فى بلادنا كالجراد المنتشرة ديس المسلمون تحت أقدام القسوس وقُلّبت قلوبهم وجُعلت طبائعهم كالثوب المعكوس وشُغفوا بمكائد أهل الصلبان ومسائل العصمة والكفارة والقربان وترون أنهم يُرغّبونهم فى دينهم بكل ذريعة وأداة ولو بفتاة ويجذبون كل ذى مجاعة

अपराध नहीं कि जिस में उन का हिस्सा न हो। यदि तुझे इस बारे में कोई सन्देह हो तो नि:सन्देह किसी जेल के दरोग़ा से पूछ ले।

बाह्य फ़ित्नों के वर्णन में

इन इलाक़ों में सबसे बड़ा फ़ित्न: नास्तिकता और मुर्तद होने का फ़ित्न: है। और तुम देख रहे हो कि बहुत से मुर्तद हमारे इन इलाक़ों में अस्त-वयस्त टिड्डियों के समान चल-फिर रहे हैं। पादरियों के क़दमों के नीचे मुसलमान रोंदे गए हैं। उनके दिल और तबियतें उल्टे कपड़े की तरह पलटा खा गई हैं और वे ईसाइयों के छल-प्रपंच, अस्मत, कफ़्फ़ारा और क़ुर्बानी के मामलों पर मुग्ध हो गए हैं। तुम देख रहे हो कि वे (ईसाई) प्रत्येक माध्यम और प्रत्येक दाव से उन्हें अपने धर्म की ओर प्रेरित करते हैं चाहे नौजवान लड़की के द्वारा। वे हर मूर्ख और दुर्दशाग्रस्त व्यक्ति को (हज़रत) मूसा[अ.] के बाद

وبوسَى إلى إلٰهٍ نُحت بعد موسٰى فيجيئهم كل من ارتاد مُضيفًا ليقتاد رغيفًا ويسوق الجهلاء حادى السغب إلى البِيَع التى هى أصل البوار والشغب ويُرغبونهم فى خفض عيش خضل و كانوا من قبل كابن سبيل مرمل و كان الطوى زاد جوى الحشا فآثروا الرغفان على الدين كما ترى وشربوا من كأسهم وتلطّخوا من أدناسهم وإنهم دخلوا ديارنا كطارق إذا عرى فنوّموا الاشقياء ونفوا عن السعداء الكرى وضل كثير من تعليماتهم ولُدِغوا من حَيَواتهم حتى صُبّغوا بصبغتهم ودخلوا فناء ملّتهم وما كان فيهم رجل ينفى ما رابهم ويستلّ السهم الذى انتابهم ووسّعوا الحريّة كل التوسيع وفرّقوا بين

स्वयं बनाए हुए ख़ुदाबन्द की ओर खींचते हैं। इसलिए हर वह व्यक्ति जो मेज़बान की तलाश में होता है वह उनके पास चला आता है ताकि रोटियां तोड़े। भूख का ऊंटों वालों का नग़मा पढ़ने वाले जाहिलों को उन गिर्जों की ओर हांक कर ले जाता है जो तबाही और फ़ित्न:-व फ़साद की जड़ हैं। वे नेमतों और समृद्ध जीवन की प्रेरणा देते हैं जबकि इस से पहले वे ऐसे मुसाफ़िर की तरह थे जिस का रास्ते का खाना समाप्त हो चुका हो और मूर्ख के पेट की जलन को बढ़ा दिया हो। उन्होंने रोटी के धर्म पर प्राथमिक कर लिया है जैसा तुम देख रहे हो। और उन्हीं के जाम से उन्होंने पिया तथा उनके मैल-कुचैल से वे लिप्त हो गए हैं और वे हमारे देश में रात को आने वाले की तरह दाख़िल हुए। उन्होंने भाग्यहीनों को सुला दिया है और नेक लोगों की नींद हराम कर दी है। बहुत हैं जो उन की शिक्षाओं के कारण गुमराह हो गए और उनके सांपों से डसे गए यहां तक कि उन्हीं के रंगों में रंगे हुए और उनकी मिल्लत के आंगन में दाख़िल हो गए। उनमें ऐसा कोई व्यक्ति न रहा जो उनके संदेहों का निवारण करता और उनको निरन्तर लगने वाले तीर निकालता। उन्होंने पूर्णरूप से आज़ादी दे दी तथा माँ और दूध

الامّ والرضيع وارتدّ فوج من المسلمين و كذّبوا وشتموا
سيد المرسلين وترون الآخرين قد قاموا لتوديع الإسلام
وتكذيب خير الانام عُكمت الرحال وأزف الترحال وقد
أظهروا شعار الملّة النصرانية ونضوا عنهم كل ما كان من
الحلل الإيمانية والذين تنصّروا ما تركوا دقيقة من التحقير
والتوهين وأضلّوا خلق الله كالشيطان اللعين فالذين كانوا
من أبناء المسلمين وحفدتهم صاروا من جنودهم وحفدتهم
وأكملوا أفانين الكيد ليتحاشوا لهم كل نوع الصيد ولا
شك أنهم أفسدوا اِفْسادًا عظيمًا وجعلوا إلهًا عظمًا رميمًا
وخدعوا جهلاء الهند بطلاوة العلانية وخبثة النيّة وضيّعوا

पीते बच्चे को एक दूसरे से अलग कर दिया और मुसलमानों की एक फ़ौज मुर्तद हो गई और उन्होंने रसूलों के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को झुठलाया और गालियां दीं और कुछ ऐसे लोग भी देखते हो जो इस्लाम छोड़ने और मख़्लूक़ में सर्वोत्तम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुठलाने के लिए तैयार खड़े हैं (जैसे) कुजावे कस लिए गए हैं और कूच की घड़ी आ पहुंची है। और उन्होंने ईसाई धर्म के तौर-तरीक़ों को अभिव्यक्त किया है और वे ईमानी लिबास जो कभी उन्होंने पहन रखे थे अब उन्हें उतार फेंका है। और वे जो ईसाई हो चुके हैं उन्होंने तिरस्कार और अपमान में कोई कोताही नहीं की। और लानती शैतान की तरह ख़ुदा की मख़्लूक़ को गुमराह किया और वे जो मुसलमानों के बेटे और पोते थे वे उनके लश्करी और सेवक बन गए और रंगारंग की धोखेबाज़ी को चरमोत्कर्ष तक पहुंचा दिया ताकि वे हर प्रकार के शिकार को अपने पास जमा कर लें। और नि:सन्देह उन्होंने बहुत बड़ा फ़साद खड़ा किया और एक सड़ी हड्डी को अपना माबूद बना लिया और बाह्य चमक-दमक और अन्त: मलिनता से हिन्दुस्तानी जाहिलों को धोखा दिया और चांदी में लिपटे हुए गोबर और सफेदी किए

دُرر الإسلام بروث مُفضّض و كنف مُبيّض وصرفوا الناس من الهداية إلى الضلال ومن اليمين إلى الشمال يُصلتون ألسنهم كالعضب الجراز ويتركون متعمّدين طريق التعظيم والاعزاز وبِيَعُهم مناخ للعيس ومحطّ للتعريس وما ترى بلدة من البلاد الا وتجد فيها فوجا من أهل الردّة والارتداد وقد تنصّروا بسهم من المال لا بالسهام و كذالك أُغِيرَ على ثلث ملّة الإسلام وسُلِب منّا أحبابنا وعادا من واخا ومُطرنا حتّى صارت الارض سُواخٰى داخوا بلادنا وأحرقوا أكبادنا وأفسدوا أولادنا وإنهم فرق ثلاث فى الفساد وفى مراتب الارتداد فرقة تركوا بالجهرة دين الاجداد وقوم آخرون ترى صورهم كالمسلمين

हुए बैतुलख़ला (शौचालय) के बदले इस्तेमाल के बहुमूल्य मोती को व्यर्थ कर दिया तथा लोगों को सद्मार्ग से गुमराही की ओर और दाएं से बाएं फेर दिया। तेज़ तलवार के समान जीभों को तेज़ और लम्बा करते हैं और जान-बूझ कर मान-सम्मान के मार्ग को छोड़ देते हैं। उनके गिर्जे, ऊंटों के बाढ़े और आरामगाह हैं। तुम्हें देश में कोई ऐसा शहर दिखाई नहीं देगा जहां मुर्तदों की कोई न कोई फ़ौज नहीं। वे तीरों से नहीं अपितु माल में से हिस्सा लेने के लिए ईसाई बने और इस प्रकार इस्लामी मिल्लत के एक तिहाई हिस्से पर लूट मार की गई और हमारे मित्र हम से छीन लिए गए। जिसने भाईचारा किया उससे शत्रुता की गई और हम पर इतनी वर्षा बरसाई गई कि ज़मीन दलदल बन गई। उन्होंने हमारे देशों को पराजित कर लिया और हमारे घर जला डाले तथा हमारी सन्तान को बिगाड़ दिया। फ़साद और मुर्तद होने की श्रेणियों में वे तीन गिरोह बन गए। एक गिरोह वह है जिसने खुल्लम खुल्ला अपने बाप-दादों के धर्म को त्याग दिया और दूसरे लोग वे हैं जिनके रूप तो मुसलमानों जैसे हैं परन्तु उनके दिल नास्तिकता के कारण कोढ़ी हैं। उन्होंने नवीन विद्याएं पढ़ीं और उनका हल्वा खाया और नास्तिकों के समान हो

و قلوبهم مجذومة من الإلحاد قرأوا العلوم الجديدة وأكلوا تلك العصيدة وصاروا كالملحدين لا يصومون ولا يُصلّون بل تراهم على المتعبّدين الصائمين ضاحكين فهم أقرب إلى الإلحاد من الإيمان وإلى الشيطان من الرحمان لا يؤمنون بالحشر ولا بالجنة والنار ولا بالملائكة ولا بوحى الذى هو مدار شريعة نبيّنا سيد الاخيار دخلوا فى بطن فلاسفة النصرانيين فما خرجوا منه الا فى حُلل الملحدين وثقوا بوميضهم وهو خُلّب واغترّوا بصدقهم وهو قُلّب اسودّت صدورهم كأنها ليلة فتية الشباب غدافية الإهاب وما بقيت الآذان ولا العيون وغشيهم كبر الفلسفة كما يغشى الجنون ويقولون إنّا نشرب النُقاخ

गए न रोज़ा रखते हैं और न नमाज़ पढ़ते हैं। अपितु तू उन्हें इबादत करने वालों और रोज़ेदारों की हंसी उड़ाते देखेगा। वे ईमान की अपेक्षा नास्तिकता के और रहमान की अपेक्षा शैतान के अधिक निकट हैं। वे मरने के बाद जी उठने, स्वर्ग तथा नर्क पर ईमान नहीं रखते और न ही वे फ़रिश्तों और उस वह्यी को मानते हैं जो हमारे सय्यिदुल अंबिया नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत का आधार है। वे ईसाई दार्शनिकों के हल्क़े में दाख़िल हुए और नास्तिकों के लिबास को पहन कर ही बाहर निकले। उन्होंने उसकी चमक-दमक पर भरोसा किया, हालांकि वह केवल धोखा था। उन्होंने उनकी सच्चाई से धोखा खाया। हालांकि वह चालबाज़ी थी। उनके सीने काले हो गए जैसे कि वे एक ऐसी रात हैं जो अपने पूरे जोबन पर हो और काले चमड़े जैसी घोर अंधकारमय हो। न कान बचे और न आंखें। फ़ल्सफ़े की बड़ाई उन पर ऐसी छा चुकी है जैसे उन्माद (बुद्धि पर) छा जाता है वे कहते हैं कि हम साफ पानी पीते हैं जब कि सामान्य लोग गंदला पानी पीते हैं। इनके अतिरिक्त एक और क़ौम है जिन्होंने लिबास तो ईसाइयों जैसा पहन रखा है परन्तु कहते यह हैं कि हम मुसलमान हैं। इसके बावजूद वे नमाज़ और

والعامّة لا يتجرّعون الا الاوساخ وقوم دونهم لبسوا لباس النصرانيين ويقولون إنّا نحن من المسلمين ومع ذالك فرغوا من الصلاة والصيام وإن كانوا لا يضحكون على الإسلام لا ترى شيئا معهم من حلل أهل الإيمان بل ترى شعارهم كشعار أهل الصلبان لا يتزوّجون الا بناتهم ولا يحمدون إلا حصاتهم شروا بالدنيا الشرع والورع كرجل أجبأ الزرع واذا أمعنتَ النظر في وسمهم وسرحت الطرف في ميسمهم ما ترى على وجوههم آثار نور المؤمنين ولا سمت الصالحين فهؤلاء أحداث قومنا يُتّكأ عليهم في الايام المستقبلة ويذكرون بالثناء والمحمدة وترون الإسلام في زماننا هذا كأسيرٍ يُحبس أو كدريّة تُدْعَس

रोज़े से निवृत हैं। यद्यपि वे इस्लाम का मज़ाक़ नहीं उड़ाते, परन्तु तू उन में ईमान वालों की सी प्रकृति नहीं पाएगा। अपितु उनका तौर-तरीक़ा ईसाइयों के समान है। वे उनकी लड़कियों से ही शादी करते हैं और उनकी बुद्धिमत्ता की ही प्रशंसा करते हैं। उन्होंने दुनिया के लिए शरीअत और संयम को बेच दिया है बिल्कुल उस व्यक्ति की तरह जो खेती को उसके तैयार होने से पहले ही बेच देता है। यदि तू उनकी शक्ल-सूरत और चेहरे मोहरे को गहरी नज़र से देखे तो न तो उनके चेहरों पर मोमिनों के प्रकाश के लक्षण दिखाई देंगे और न ही नेक लोगों का तौर-तरीक़ा। ये हैं हमारी क़ौम के नौजवान जिन पर भविष्य का दारोमदार है और उन का प्रशंसा और स्तुति से ज़िक्र होता है। तुम हमारे इस युग में इस्लाम को एक गिरफ़्तार क़ैदी के समान देख रहे हो या फिर उस लक्ष्य के निशान की तरह जिस पर चांदमारी की जाती है। और जो बच्चे पादरियों के स्कूलों में पढ़ते हैं तुम देखो कि उन में से अधिकतर ईसाइयों के समान हो जाते हैं। उन्होंने साफ़ सुथरी चीज़ को छोड़ दिया और मुर्दार को प्रथमिकता दी। गुमराही के गन्द को उन्होंने धीरे-धीरे इस प्रकार जमा कर लिया है जिस प्रकार वे बड़ी-बड़ी प्रचलित विद्याएं

والذين يقرءون فى مدارس القسوس من الصبيان ترى أكثرهم يُشابهون أهل الصلبان تركوا النظيف وآثروا الجيف وتقمّأوا روْث الضلالة كما كانوا يتقمّأون عظام العلوم المروّجة وما خرجوا من المدارس حتى خرجوا من الملّة وعلى الخُرء تداكئوا وعلى القذر تكأكأوا و إن الذين يدرّسون من النصارى شرهم أكبر و تأثيرهم أعظم من قسوس آخرين و إن اكثر صبيان ديننا يقرءون فى مدارس هذه المضلّين فإنّا لله على حالة المسلمين وتأتى نساؤهم المحررات فى بيوت أهل الإسلام ويوسوسن فى صدورهن بأنواع الحِيَل والاهتمام وقد يرتد أحد منهن فيخرجونها كالسارقين فيجرى ما يجرى على قلوب المتعلقين وقد يحصل لهم كثير من يتامى هذا الدين فيُنصّرونهم و هم ألوف عندهم و يزيدون كل يوم من

जमा किया करते हैं और उस समय तक मदरसों से नहीं नकलते जब तक वे मिल्लत (इस्लामिया) से बाहर न हो गए हों। वे गन्दगी पर लपके और गन्द पर उमड़ पड़े। ईसाइयों के टीचरों की बुराई तथा उनका प्रभाव दूसरे पादरियों से बढ़कर है। हमारे धर्म के अधिकतर बच्चे इन गुमराह करने वालों के मदरसों में पढ़ते हैं। मुसलमानों की इस हालत पर इन्ना लिल्लाह ही पढ़ा जा सकता है। उनके कलीसाओं की सेविकाएं मुसलमानों के घरों में आती हैं और उनके दिलों में भिन्न-भिन्न प्रकार के छलों और प्रयासों से भ्रम पैदा करती हैं और इस प्रकार उन औरतों में से कोई न कोई औरत मुर्तद हो जाती है और वे चोरों की तरह उसे लेकर निकल जाते हैं। इस कारण से उसके संबंधियों के दिलों पर जो गुज़रती है वह गुज़रती है। और कभी-कभी उन्हें बहुत से मुस्लिम अनाथ बच्चे मिल जाते हैं तो वे उन्हें ईसाई बना लेते हैं। और वे उनके पास हज़ारों में हैं। और दरिद्र लोगों में से प्रतिदिन यह संख्या बढ़ती जा रही है और उन में से भी जिन के माँ-बाप ताऊन या अन्य

قوم مجدبين ومن الذين ماتت اٰباء هم من الطاعون أو حوادث أخرى فقمشهم القسوس من الارضين فلبثوا كرهنة لديهم حتى صاروا من المتنصّرين وعُرِضَ عليهم الخنزير فأكلوه وقيل لسبّ المصطفٰى فسبُّوه وصاروا أوّل الكافرين

فی علاج هذه الفتن

قد ثبت مما سبق أن هذه الفرق كلهم لا يقدرون على اصلاح الناس ولا على دفع الوسواس الخنّاس ولا أُصطيد بهم إلى هذا الحين صيد المراد وما ارتقى الناس بهذه الذرائع إلى ذُرَى الصدق والسداد وما رأيتم أحدًا منهم أصلح المفسدين أو احتكأ قوله فی قلوب المجرمين أو كفأ وعظه من المنكرات

दुर्घटनाओं से मर जाते हैं तो पादरी उन्हें विभिन्न इलाक़ों से अपने गिर्द जमा कर लेते हैं। फिर वे उनके पास गिरवी रहते हैं यहां तक कि वे ईसाई हो जाएं। उन्हें सुअर प्रस्तुत किया जाता है और वे उसे खाते हैं तथा उन्हें यह कहा जाता है कि (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुस्तफ़ा को गालियां दो और वे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां देते हैं और प्रथम श्रेणी के काफ़िर हो जाते हैं।

इन फ़ित्नों के इलाज के बारे में

पहले वर्णन यह बात सिद्ध हो चुकी है कि यह सब के सब फ़िर्क़े लोगों के सुधार और ख़न्नास शैतान को दूर करने की क़ुदरत नहीं रखते। और अब तक उनके माध्यम से मनोबांछित शिकार हाथ नहीं आया। और न ही उन माध्यम से लोग सच्चाई और सद्मार्ग की चोटियों पर चढ़ सके हैं।

وجعل من التوابين والتوابات و كيف يُرجى منهم صلاح وإن قلوبهم فسدت وصارت كقربة قضئت فهل يهدى الاعمى الاعمٰى؟ أو يُداوى الوعك من لا يقلع عنه الحمّى؟ وهل يوجد فيهم رجل يُوصل إلى نور اليقين؟ وهل يُرِى سبيلا من هو من العمين وهل من الممكن أن يلج فى سم الخياط الهرجاب أو يرعى الغنم الذئاب؟ سلّمنا أن العلماء يعظون ولكن لا نُسلّم أنهم يتعظون وقبلنا أنهم يقولون ولكن لا نقبل أنهم يفعلون وهل عيبٌ أفحش من القول من غير العمل؟ وهل يُتَوَقّع أن يكون خائبٌ مظهرًا للامل؟ فا تركوا كل أحد من هذه الفرق مع كيده و كدّه وتحسّسوا لعل الله يأتى أمرًا من عنده ووالله

तुमने उन में से कोई ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जिसने उपद्रवियों का सुधार किया हो या उसकी बात अपराधियों के दिलों में उतारी हो। या उस के उपदेश और नसीहत ने लोगों को बुराइयों से रोका हो और उन्हें तौब: करने वाले और तौब: करनेवालियां बनाया हो। और उन से नेकी की आशा कैसे की जा सकती है जबकि उनके दिल ही बिगड़े हुए हैं और वे उस मिश्कीज़े के समान हो गए हैं जो बदबूदार हो। क्या एक अंधा दूसरे अंधे को रास्ता दिखा सकता है? या जिसका अपना ज्वर नहीं उतरता क्या वह हमेशा के रोगी का इलाज कर सकता है? क्या उनमें कोई ऐसा व्यक्ति है जो विश्वास के प्रकाश तक पहुंचाने वाला हो? क्या वह जो अंधा है वह मार्ग दिखा सकता है? क्या यह संभव है कि ऊंट सुई के नाके में से गुज़र जाए या भेड़िए भेड़ों की रखवाली करें। हम स्वीकार करते हैं कि उलेमा नसीहत करते हैं। परन्तु हमें यह स्वीकार नहीं कि वे स्वयं नसीहत प्राप्त करते हैं। हम उनकी बातचीत के तो क़ाइल हैं परन्तु उनके आचरण के क़ाइल नहीं। क्या बिना अमल के बात कहने से भी बुरा कोई दोष है। और क्या एक असफल निराश होने वाले (PESSIMIST) से यह आशा की जा सकती है कि वह आशा

إن هـذه فتـن لـن تصلـح بهـذه الذرائـع ولا بشـورى ومُنتَـدى ولا بتجمـير البعـوث عـلى ثغـور العـدا ولا بأسـاة آخريـن وإن هـم الا مـن المتصلّفـين وإن مثـل جاهـل يتصلّـف بعلمـه وعرفانـه كمثـل جـرو صأصـأ قبـل أوانـه أو كذبـاب يسـابق البـازى فى طيرانه فاعلمـوا يـا مـواسى المسـلمين وأسـاة المتألّمـين أن عـلاج القـوم فى السـماء لا فى أيـدى العقـلاء اقـرأوا قصـص السـابقين فى الكتـاب المبين ومـا بُدّلـت سُـنن الله فى الآخِريـن أتطلبـون عـلاج المرضـى مـن ملوككـم وعلمائكـم ومشـائخكم وعقـلائكـم؟ عفـى الله عنكـم لا أفـهم غـرض آرائكـم يـا سـبحان الله أى طريـق اخترتـم؟ وإلى أى شـعب مررتـم؟ أوَ تظنّـون أن الوقـت ليـس وقـت

(OPTIMISM) का द्योतक हो। तो तुम उन फ़िक़्रों में से उसके यत्नों तथा उसके प्रयास सहित छोड़ दो और तुम तलाश करो हो सकता है अल्लाह तआला अपनी ओर से कोई बात प्रकट कर दे। ख़ुदा की क़सम इन फ़ित्नों का सुधार उन उपरोक्त वर्णित माध्यमों से कदापि न होगा और न ही किसी शूरा और कान्फ्रेंस और न ही सेनाओं को शत्रुओं की सरहदों पर जमा करने से और न ही दूसरे उपचारकों से। वे तो केवल डींगे मारने वाले हैं। उस जाहिल का उदाहरण जो अपने ज्ञान और इर्फ़ान पर शेख़ी बघारता है उस पिल्ले जैसा है जो समय से कुछ देर पहले अपनी आंखें खोल दे। या उस मक्खी की तरह है जो उड़ने में बाज़ का मुक़ाबला करे। अत: हे मुसलमानों के हमदर्दों और दुखियों के उपचारको! स्मरण रखो कि इस क़ौम का इलाज आकाश में है न कि बुद्धिमानों के हाथ में। किताब मुबीन (क़ुर्आन) में तुम पहली उम्मतों की घटनाएं पढ़ो और बाद में आने वालों के लिए अल्लाह की सुन्नत बदली नहीं गई क्या आप अपने बादशाहों, उलेमा, शेख़ और बुद्धिमानों से उन रोगियों का इलाज ढूंढते हो। अल्लाह आप को क्षमा करे। आप की रायों का उद्देश्य मेरी समझ से ऊपर है। सुब्हान अल्लाह! तुम ने

الإمام وهو بعيد من هذه الايام؟ وترون بأعينكم غلبة الضلالة وطوفان الجهالة فما لكم لا تعرفون الاوقات ولا تتألّمون على ما فات؟ وإن قيل لكم إن فلانا قد بلغ العشرين وشابه البرزوغ فتفهمون من غير توقف أنه ترعرع وناهز البلوغ فما لكم لا تفهمون مواقيت نُصرة الدين ولا تتركون الشك مع رؤية أنوار اليقين؟ وترون ميسم الإسلام كميسم مريض ديس تحت الآلام وتشاهدون انكفاء كمال الملّة إلى اكمال الذلّة وقد نُسبت من المزايا إلى الخطايا ثم لا يبرح لكم ما نزلت من البلايا ما نرى فيكم خدّام الدين عند طوفان هذه الضلالة ولو طُلبوا على الجعالة بل كل نفس

यह क्या तरीक़ा अपना लिया और किस घाटी की ओर तुम चल निकले। क्या तुम यह सोचते हो कि यह समय इमाम (के प्रकटन) का समय नहीं और वह इस युग से बहुत दूर है। जबकि तुम स्वयं अपनी आंखों से गुमराह के प्रभुत्व और जहालत के तूफ़ान को देख रहे हो। तुम समय को क्यों नहीं पहचानते और जो हाथ से जाता रहा उस पर क्यों दु:ख महसूस नहीं करते। यदि तुम से यह कहा जाए कि अमुक व्यक्ति बीस वर्ष का हो गया है और भरपूर जवान के समान हो गया है तो तुम अविलम्ब यह समझ जाते हो कि वह नवोदित जवान हो गया है और युवावस्था को पहुंच गया है। फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम धर्म की सहायता के मौऊद समय को नहीं समझते? और विश्वास के प्रकाशों के देखने के बावजूद सन्देह को क्यों नहीं त्यागते? तुम इस्लाम के चेहरे को देख रहे हो कि वह एक ऐसे रोगी का चेहरा है कि जो दु:खों के नीचे पांव तले मसला गया। तुम देख रहे हो कि मिल्लते इस्लाम की पराकाषठा अपमान की पराकाषठा की ओर पलट गइ है और उसकी ख़ूबियों को ग़लतियों से सम्बद्ध किया जा रहा है फिर भी तुम को यह महसूस नहीं होता कि इस पर क्या-क्या आपदाएं उतर चुकी हैं। गुमराही

ذهبت إلى اهواء ها وزعمت أن الخير فى استيفاء ها نسوا وصايا الرحمان التى لُقّنوها فى القرآن وتبيّن أنهم استضعفوا سفارة الرسول المقبول واستشعروا تكذيب كتاب الله وردّوا كل ما جاء هم من المنقول واتّخذوا الجدّ عبثًا وحسبوا التبر خبثًا وايم الله لطالما فكّرتُ فى أحوالهم وولجتُ أجمة خيالهم فما وجدتُ فيها من غير أوابد الشهوات وسباع الظلم والظلمات يجوبون الموامى من غير مصاحبة خفير ويُبارزون العدا من غير استصحاب جفير ولا ينفى كلمهم ما راب المرتابين ولا يستسلّون سهم المعترضين بل يُوافقون النصارى فى كثير من الضلالات ويرافقونهم فى أكثر الحالات

के इस तूफ़ान में भी हमें धर्म के सेवक दिखाई नहीं देते। चाहे उन्हें मज़दूरी पर ही मांगा जाए अपितु प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छाओं के पीछे लगा हुआ है और समझता है कि सब भलाई उन इच्छाओं की पूर्ति करने में निहित है। वह रहमान ख़ुदा के उन ताक़ीदी आदेशों को भूल गए जिन की पवित्र क़ुर्आन में उन्हें तल्क़ीन की गई थी। और इस से यह भली-भांति प्रकट हो गया कि उन्होंने रसूल मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सफ़ारत को कमज़ोर समझा और ख़ुदा की किताब के झुठलाने को अपना आचरण बना लिया और जब भी उन के सामने कोई पुस्तकीय बात प्रस्तुत की गई तो उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। गंभीर मामलों को बेकार जाना और शुद्ध सोने को खोटा समझा। अल्लाह की क़सम! मैंने प्राय: उनकी परिस्थितियों पर विचार किया है और उनके विचारों के बन में दाख़िल हुआ तो मैंने उनमें कामुक इच्छाओं के चरिन्दे और अन्याय एवं अंधकारों के दरिन्दों के अतिरिक्त कुछ न पाया। वे किसी रक्षक की संगत के बिना जंगल और रेगिस्तान में मारे-मारे फिरते हैं। और तर्कश (तुणीर) साथ लिए बिना शत्रु से मुक़ाबला करते हैं। उन की बातें संदेह में ग्रस्त लोगों के सन्देहों को दूर नहीं कर सकतीं और

بيد أن النصارى جهروا بذات صدورهم وبرح خفاؤهم وما في خدورهم وأمّا هؤلاء فلا يُقرّون بما لزمهم من العقائد وإن هم الا كشَرَكٍ للصائد يُقابلون القسوس بوجه طليق كحبيب ورفيق لا بلسان ذليق وقلب عتيق وساء هم أن يُستدلّ من القرآن وسرّهم أن يُقال روى الفلان عن الفلان يريدون الرطب بالخطب ليُملئوا بطون الزغب يؤثرون الثرائد على الفرائد ولا يُبالون من عصى دين الله بعد أكل العصائد يبكون على عيشهم المكدّر بالصبح والمساء ولا يقلعون عن البكاء ولا ينزعون إلى الاستحياء ولا ينتهجون سُبل الهدى ولا يذكرون وشك الرّدَى وإذا دُعوا إلى القرى يريدون أن يأكلوا

न ही वे ऐतराज़ कर्ताओं के तीरों को निकालते हैं। अपितु प्राय: गुमराहियों में वे नसारा से अनुकूलता रखते तथा अधिकतर परिस्थितियों में उन का साथ देते हैं। सिवाए इसके कि ईसाइयों ने तो अपने आन्तरिक को प्रकट कर दिया है और उनके दिल का तहख़ाना और भेद प्रकट हो गया है। किन्तु ये लोग अपनी ही ग्रहण की हुई अनिवार्य आस्थाओं का इक़रार नहीं करते। इन का उदाहरण एक शिकारी के जाल के समान है। वे ईसाई पादरियों से एक गहरे यार दोस्त की तरह बड़ी मुस्कराहट के साथ मिलते हैं। न कि तेज़ ज़ुबान और आज़ाद दिल के साथ। पवित्र क़ुर्आन से तर्क देना उन्हें बुरा लगता है। यद्यपि यह बात कि अमुक ने अमुक से यह रिवायत की है उन्हें ख़ुशी पहुंचाती है। भाषणों के बदले माल चाहते हैं ताकि बच्चों का पेट भर सकें। उत्तम भोजनों को अछूते रहस्यों पर प्राथमिकता देते हैं। हल्वे खाने के बाद उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं कि कौन अल्लाह तआला के धर्म की अवज्ञा करता है। वे सुबह-शाम अपने दुर्दशा-ग्रस्त जीवन पर टिसुए बहाते हैं और रोना-धोना नहीं छोड़ते। शर्म और लज्जा की ओर नहीं झुकते और न हिदायत की राहों पर चलते हैं। और वे मौत की निकटता को स्मरण नहीं

القُـرى يقولـون بألسـنهم لا تتّخـذونى كَلا ولا تصنعـوا لاجلى أكلا والقلـب يبغـى الحلـوى واللوزينـج ومـا هـو أحـلى و كل مـا هـو أجـرى فى الحلـوق وأمضـى فى العـروق واللحـم الطـرى والكبـاب الشـامى ومـع ذالـك مـائً يشعشـع بالثلـج ليقمـع هـذه الصـارة ويفثـأ تلـك اللقـم الحـارة ثـم مـع ذالـك يستشـعرون أن لا يودّعـوا الا بدينارين أو يُدفـع إليـهم مـا فى البيـت بغـض العينـين وإذا قُـدّم إليـهم طعـامٌ فى مذاقـه كلام فيلعنـون مـن دعـا إلى القـرى عشـرة لعنـة ويذكرونـه فى كل سـاعة ويسـبّون كـبرا ونخـوة بمـا لـم يحصـل أمنيّتـهم ولـم يـرض طويّتـهم و كذالـك كثـرت مضـراتـهم وانتشـرت معرّاتـهم فكيـف يُـرجى صـلاح الديـن مـن هـذه النـاس؟

रखते। जब उन्हें दावत पर बुलाया जाए तो उनकी इच्छा यही होती है कि समस्त माल एवं सामान हड़प कर जाएं। जीभ से तो यही कहते हैं कि मेरे लिए कष्ट न करें तथा मेरे लिए खाना न बनाएं जबकि दिल यह चाहता है हल्वा, बादाम से तैयार किए खाने उन से भी बढ़कर मीठे खाने हों और फिर चीज़ जो कंठ से आसानी से गुज़रने वाली और रंगों में समाने वाली, ताज़ा गोश्त, शामी कबाब और उसके साथ ही बर्फ़ मिला पानी पिएं ताकि उस से प्यास को समाप्त करें और उन गर्म कौरों को ठण्डा करें। और फिर इसके साथ ही वे यह आशा भी रखते हैं कि (खाने के बाद) उन्हें दो दीनार देकर रुख़सत किया जाए या आंखें बन्द करके घर का समस्त सामान उनके सुपुर्द कर दिया जाए। और उन्हें ऐसा खाना प्रस्तुत कर दिया जाए कि जिसके स्वाद में कोई कमी रह गई हो तो वे दावत पर बुलाने वाले व्यक्ति पर दस लानतें डालते हैं। और हर समय उसकी चर्चा करते रहते हैं और उन्हें अहंकार और घमण्ड के कारण गालियां देते हैं कि उन की इच्छा पूरी और तबियत प्रसन्न नहीं हुई। इसी प्रकार उनकी हानिकारिकताएं बढ़ गई हैं। तथा उनकी बुराइयां फैल गई हैं फिर ऐसे लोगों से धर्म की

وهل يُرجى سيرة الملائك من الخناس؟ بل هم أعداءٌ للدين فى بردة صدّيق الوجه كموحّد والقلب كزنديق يستقرون عيسى فى الاحياء ★ ويُنزّلونه من السماء ويعلمون أنه قد مات ولحق الاموات وخبر موته موجود فى الفرقان فبأى شهادة يؤمنون بعد القرآن ويقولون إنه هو المعصوم من مسّ الشيطان ونسوا ما قال ربّنا

إِنَّ عِبَادِى لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ (الحجر-۴۳)

لا نعلم ما هذه الدناءة وهذه الغفلة أليس سيد الرسل من

★ **हाशिया :-** كذالك يقولون ان الطير ليست من خلق الله فقط بل بعضها من خلق الله وبعضها من خلق عيسىٰ ففكروا ما الفرق بينهم وبين النصارىٰ منه

इसी प्रकार वे यह करते हैं कि परिन्दे केवल अल्लाह की सृष्टि नहीं। अपितु कुछ अल्लाह के पैदा किए हुए हैं। और कुछ ईसा के फिर सोचो कि इन में और ईसाइयों में क्या अन्तर रहा? इसी से

भलाई की क्या आशा की जा सकती है। क्या ख़न्नास लोगों से फ़रिश्तों के आचरण की आशा की जा सकती है। अपितु वे तो दोस्त के लबादे में धर्म के शत्रु हैं। उनके चेहरे तो एकेश्वरवादी हैं और मन नास्तिकों वाले हैं। वे (हज़रत) ईसा[अ.] को ज़िन्दों में तलाश करते हैं और उन्हें आकाश से उतारते हैं। हालांकि वे जानते हैं कि आप मृत्यु पा चुके हैं और मुर्दों से जा मिले हैं। आप की मृत्यु की ख़बर पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। फिर बताओ कि क़ुर्आन के बाद वे किस साक्ष्य को स्वीकार करेंगे। और वे यह भी करते हैं कि बस वही (ईसा अलैहिस्सलाम) शैतान के स्पर्श से पवित्र हैं और वह हमारे रब्ब के कथन

(अलहिज्र-43) إِنَّ عِبَادِى لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ✲

को भूल जाते हैं। हम नहीं जान सके कि यह कैसी कमीनगी और

✲ नि:सन्देह (जो) मेरे बन्दे (हैं) उन पर तुझे कोई प्रभुत्व प्राप्त न होगा।

المعصومين؟ بلى و إن لعنة الله على الكاذبين يا معشر الغافلين إلامَ تنتظرون عيسى وقد قرُبَ يوم الدين؟ أتزعمون أنه من الاحياء بل هو من الميّتين و إنى عارف بقبره فلا تكونوا من الجاهلين اجتمعوا إلىّ أهدكم إن كنتم طالبين وليس ذنب تحت السماء أكبر من القول بحياة عيسٰى و كادت السّماوات أن يتفطّرن به بل هو من الهالكين و والله إنه هو الحق و إنى أُنبِئتُ من القرآن ثم بوحى رب العالمين ومن قال إنه حىّ فقد افترى على الله وخالف قول الكتاب المبين و إنكم تنتظرون نزوله من مدّة مديدة فأين فيكم قريحة سعيدة؟ انظروا أيها المنتظرون الغالون هل وجدتم ما أردتم وما تطلبون؟ وهل

लापरवाही है। क्या रसूलों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मासूमों में से नहीं? हाँ अवश्य हैं। यद्यपि झूठों पर अल्लाह की लानत है। हे लापरवाहो! तुम कब तक ईसाअ. की प्रतीक्षा करोगे। हालांकि क़यामत का दिन क़रीब आ चुका। क्या तुम उन्हें ज़िन्दों में समझते हो, हालांकि वे मृत्यु पा चुके लोगों में दाख़िल हैं। और मैं तो उनकी क़ब्र को भी जानता हूँ। इसलिए जाहिल मत बनो। यदि तुम अभिलाषी हो तो मेरे पास आओ मैं तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करूंगा। आकाश के नीचे ईसाअ. के ज़िन्दा रहने की आस्था से बढ़कर और कोई गुनाह नहीं। क़रीब है उस से आकाश फट जाएं। वास्तविकता यही है कि वह मृत्यु प्राप्त हैं और ख़ुदा की क़सम यही सच्ची बात है। और यह ख़बर मुझे क़ुर्आन और फिर समस्त लोकों के प्रतिपालक की वह्यी से दी गई है। और जो यह कहता है कि वह ज़िन्दा हैं तो वह अल्लाह पर झूठ बांधता है और किताबे मुबीन (क़र्आन) को आदेश का विरोध करता है। तुम एक लम्बी मुद्दत से उनके (ईसा के) उतरने की प्रतीक्षा कर रहे हो। हे अतिश्योक्ति करते हुए प्रतीक्षा करने वालो! सोचो तुम में नेक प्रकृति कहाँ है? क्या तुम्हें अभीष्ट और उद्देश्य मिल गया? क्या तुम्हारे पास अपनी इस ग़लत आस्था का कोई पुख्ता तर्क है? और हे सीमा

أنتم على ثقة من أمر تعتقدون؟ وهل اطمأنّت عليه قلوبكم أيها المعتدون؟ بل تنصرون النصارى وتؤيّدون وارتدّ كثير من الناس بأقوالكم فلا تتركون هذه الكلم ولا تنتهون ثم أنتم تقولون إنّا نجهد كل الجهد للإسلام فأى إسلام تريدونه يا معشر الكرام؟ أتريدون إسلام الشيعة أو إسلام البياضية الذين لا نجاة عندهم من دون وِرد اللعنة؟ أو تعنون من هذا اللفظ الفرقة الوهابية أو المقلّدين أو المعتزلة أو تعنون إسلام المبتدعين من الفقراء والسالكين مسلك الاباحة والفحشاء او اسلام الطبيعيين الجاحدين بالملائكة والجنة والنار والبعث وخوارق الانبياء واستجابة الدعاء والضاحكين على الصوم والصلاة والمؤثرين طرق الاهواء أو إسلام آخر

से बाहर जाने वालो! क्या तुम्हारे दिल इस आस्था पर सन्तुष्ट हैं? अपितु तुम तो ईसाइयों की सहायता और समर्थन कर रहे हो। तुम्हारी इन बातों से बहुत से लोग मुर्तद हो चुके हैं फिर भी तुम इन बातों को नहीं छोड़ते और न ही इस से रुकते हो। फिर तुम कहते हो कि हम इस्लाम के लिए पूर्ण प्रयास कर रहे हैं। हे आदरणीय लोगो! तुम कौन सा इस्लाम चाहते हो? क्या तुम शियों का इस्लाम चाहते हो या बयाज़िया का इस्लाम, जिनके नज़दीक लानत का विर्द (जप) किए बिना मुक्ति नहीं। या फिर इस शब्द से तुम्हारा अभिप्राय फ़िर्क़ा वहाबिय: है या मुक़लिद्दीन या मोतज़िल: अथवा तुम्हारा अभिप्राय बिद्अती फ़ुक़रा और इबाहत★ तथा अश्लील बातें करने वालों की पद्धति अपनाने वालों का इस्लाम है? या नेचरियों का इस्लाम है जो फ़रिश्तों, स्वर्ग, नर्क, मृत्यु के बाद उठना, नबियों के चमत्कार और दुआ की स्वीकारिता के इन्कारी हैं, तथा रोज़े और नमाज़ की हंसी उड़ाते हैं और कामवासना संबंधी इच्छाओं के मार्गों को प्राथमिक रखते हैं। या तुम्हारे दिल में कोई दूसरा ऐसा इस्लाम है जिसके बारे में तुम ने

★धर्मानुसार किसी कार्य का विहित होना। (अनुवादक)

فی قلبکم ما أعثرتم علیه أحدًا من الاحبّاء والاعداء أیها الاعزّة فکّروا فی أنفسکم ما حالة الزمان وقد افترق الامة إلی فِرَقٍ لا یُرجی اتحادهم الا من ید الرحمٰن یُکفّر بعضهم بعضًا وربما انجرّ الامر من الجدال إلی القتال ففکّروا أتستطیعون أن تُصلحوا ذات بینهم وتجمعوهم فی براز واحد بعد إزالة هذه الجبال؟ کلا بل هی أقوال لا تقتدرون علیها أ تقدرون علی فعل هو فعل الله ذی الجلال؟ ولن یجمع الله هؤلاء الا بعد نفخ الصور من السماء وإذا نُفخ فی الصور فجُمعوا جمعًا فلیسمع من یستطیع سمعا ولا نعنی بالصور ههنا ما هو مرکوز فی متخیّلة العامّة بل نعنی به المسیح الموعود الذی قام لهذه الدعوة ولیس صور أعز وأعظم من قلوب المرسلین من

अपने मित्रों और शत्रुओं में से किसी को सूचित नहीं किया। हे अज़ीज़ो! अपने दिल में सोचो कि युग की क्या हालत है? उम्मत इतने फ़िर्क़ों में बंट चुकी है कि रहमान ख़ुदा की सहायता के बिना उसकी एकता की आशा नहीं की जा सकती। उन में से प्रत्येक दूसरे को काफ़िर कहता है। और कभी-कभी तो यह मामला बहस की सीमाओं से निकल कर रक्तपात तक पहुंचता है। फिर विचार करो! कि क्या यह तुम्हारे वश में है कि तुम उन के मध्य सुलह करा सको? और उन (मतभेदों के) पर्वतों को उन के स्थान से हटाकर उन्हें एक खुले मैदान में जमा कर सको? कदापि नहीं। अपितु ये तो वे बातें हैं जिन पर तुम्हें क़ुदरत प्राप्त नहीं। क्या तुम वह काम कर सकते हो जो वास्तव में प्रतापी ख़ुदा का काम है। अल्लाह उन्हें आकाश से बिगुल फूंके जाने के बाद ही एकत्र करेगा। और जब बिगुल फूंका जाएगा तब सब को एकत्र किया जाएगा। तो जो सुन सकता है सुने। यहां बिगुल से हमारा अभिप्राय जो जन सामान्य के विचार में ज़िक्र है। अपितु इस से हमारा अभिप्राय वह मसीह मौऊद है जो इस दावत-व-तब्लीग़ के कर्तव्य के लिए अवतरित हुआ है कोई सूर (बिगुल) अल्लाह तआला

الحضـرة بـل الصـور الحقيقـى قلوبـهم تنفـخ فيهـا ليجمعـوا النـاس عـلى كلمـة واحـدة مـن غـير التفرقـة و كذالـك جـرت سُـنّة الله أنـه يبعـث أحـدًا مـن الامّـة لإصـلاح الامّـة وليجـذب النـاس بـه إلى سـبله المرضيـة ولا يـترك الحـق كالامـر الغمّة لكـن مـع ذالـك آفـة أخـرى وداهيـة عظمـى وهـو أن العـلاج الذى أراده الله لإصلاح هـذه الآفـات ودفـع تلـك البليّـات هـو أمـر لا يرضـى بـه القـوم وعلمـاء هـم وتنظـر إليـه بنظـر الكراهـة عوامـهم و كـبراء هـم فـإن الله بعـث مسـيحه الموعـود عنـد هـذه الفتـن الصليبيـة كمـا بعـث عيسـى ابـن مريـم عنـد اختـلال السلسـلة الموسـوية و كان حقّـا عليـه تطبيـق السلسـلتين لئـلا يكـون فضـل لسلسـة أولى

के भेजे हुओं के दिलों से श्रेष्ठतर एवं उच्चतर नहीं हो सकता अपितु वास्तविक सूर तो उन के दिल होते हैं जिन में फूंका जाता है ताकि वे किसी फूट के बिना लोगों को एक कलिम: पर इकट्ठा करें। और इसी प्रकार अल्लाह तआला की सुन्नत जारी है कि वह उम्मत के सुधार के लिए उम्मत में से ही एक व्यक्ति को अवतरित कर देता है ताकि वह उस व्यक्ति के द्वारा लोगों को अपनी पसंद की हुई राहों की ओर खींच लाए और सच को संदिग्ध मामले की तरह न छोड़े। परन्तु इसके साथ ही एक दूसरी आपदा तथा बड़ा संकट यह है कि इन आपदाओं का सुधार और उन संकटों को दूर करने को लिए अल्लाह तआला ने इरादा किया है वह बात क़ौम और उनके उलेमा को पसन्द नहीं। अपितु उनके जनसामान्य और लीडर उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अल्लाह तआला ने इन सलीबी फ़ित्नों के अवसर पर अपने मसीह मौऊद को भेजा। जिस प्रकार उसने मूस्वी सिलसिले में बिगाड़ पैदा हो जाने के अवसर पर (हज़रत) ईसा बिन मरयम अ. को भेजा था। और इसके लिए आवश्यक था कि वह इन दोनों सिलसिलों में अनुकूलता पैदा करता ताकि पहले सिलसिले को कोई श्रेष्ठता न हो। जैसी जूतों के जोड़े को एक दूसरे से होती है। अत: उस ने हमारे नबी और

وليتطابقا كتطابق النعلين فبعث نبيّنا وسيّدنا محمدًا صلى الله عليه وسلم و جعله مثيل موسى و كلّمه وعلّمه ما علّم ثم لمّا انقضت مدة على هجرة هذا النبى الكريم كمثل مدة كانت بين عيسى والكليم وافترقت الامّة إلى فِرَقٍ وصبت على الإسلام مصائب وبؤسى كما افترقت اليهود وضلّوا فى زمن عيسٰى بعد موسٰى بعث الله مثيل ابن مريم فى هذا الزمان ليتطابق السلسلتان الاول كالاول والآخر كالآخر فى جميع الصفات والالوان فكان هذا مقام الشكر لا مقام الانكار والكفران و كان من الواجب أن يتلقى المسلمون هذا النبأ بإقبال عظيم كالعطشان و يحسبوه من أجلّ منن الرحمن

हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित किया और आप को मसीले मूसा[अ.] बनाया और आप से कलाम किया और आप को जो शिक्षा देनी थी दी फिर जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास पर इतनी ही मुद्दत ग़ुज़री थी जितनी (हज़रत) ईसा[अ.] और मूसा[अ.] कलीमुल्लाह के मध्य बहुत मुद्दत थी (चौदह सौ साल) और उम्मत कई फ़िर्क़ों में बंट गई और इस्लाम पर संकटों और आपदाओं की विपत्ति आ पड़ी। जिस प्रकार मूसा[अ.] के बाद ईसा[अ.] के युग तक यहूदी फ़िर्के को बंट चुके थे और पथभ्रष्ट हो गए थे। तो अल्लाह तआला ने उस युग में मसीह इब्ने मरयम को अवतरित किया। ताकि दोनों सिलसिलों में अनुकूलता पैदा हो जाए। ताकि हर विशेषता और हर रंग में प्रथम, प्रथम की तरह और आख़िर, आख़िर की तरह हो जाए। इसलिए यह कृतज्ञता का स्थान था न कि इन्कार और कृतघ्नता का स्थान। और यह अनिवार्य था कि मुसलमान एक प्यासे की तरह इस शुभ सन्देश का महा स्वागत करते और उसे रहमान ख़ुदा का बहुत बड़ा उपकार जानते। परन्तु क़ौम ने लोगों की जोश से भरी बातों का तो अनुकरण किया तथा पवित्र क़ुर्आन का इन्कार कर दिया और जिस ओर जिस प्रकार इस से पूर्व यहूदियों ने

ولكن القوم اتّبعوا أقوال الناس و كفروا بالقرآن وما آمنوا بمثيل عيسى كما لم تؤمن اليهود بعيسى من قبل بل كذّبوا كما كُذّب فى سابق الزمان فاليوم هم على مكان واحد فى العصيان فرقتان مكذّبتان وقريحتان متشابهتان كذالك ليتم ما قال فيهم خير الإنس والجان ولا يسرّهم الّا أن ينزل عيسى ابن مريم من السماء الثانية واضعًا كفّيه على أجنحة الملا ئكة وأن ينزل فى المهرودتين والبُردين المزعفرين ويسوء هم أن يبعث الله مسيحه الموعود من هذه الامّة كما وعد فى سورة النور والتحريم والفاتحة ومن أصدق من الله قيلا

ईसाअ. को नहीं माना था, इसी प्रकार उन्होंने मसीले ईसा को नहीं माना। अपितु जिस प्रकार पहले युग में झुठलाया गया था उन्होंने भी झुठलाया। इसलिए आज ये सब अवज्ञा में एक ही स्थान पर हैं। दोनों फ़िर्क़े झुठलाने वाले तथा दोनों की आदतें समरंग हैं। इसी प्रकार हुआ ताकि इन्सान और जिन्नों में से सबसे उत्तम सदस्य मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो उनके बारे में फ़रमाया था वह पूरा हुआ। उन्हें तो बस यही पसन्द है कि ईसाअ. इब्ने मरयम दूसरे आकाश से ऐसी हालत में कि उन्होंने फ़रिश्तों के परों पर दोनों हाथ रखे हुए हों और दो ज़र्द ज़ाफ़रानी चादरों में लिपटे हुए उतरें। उन्हें यह बुरा लगता है कि अल्लाह तआला अपने मसीह मौऊद को इस उम्मत में से अवतरित करे। जिस प्रकार उसने सूरह अन्नूर, सूरह अत्तहरीम और सूरह अलफ़ातिहा में वादा फ़रमाया है। हे बुद्धिमानो! बताओ अल्लाह तआला से अधिक कौन सच्चा हो सकता है? वे कहते हैं कि अल्लाह तआला ईसाअ. को उनके पद से गिराएगा और उनके पवित्र जीवन को गन्दा कर देगा। और किसी अपराध के बिना उन्हें इस दारुलइब्तिला में वापस लाएगा। यह सर्वथा आरोप है और उनके पास इसका कोई सबूत नहीं। वास्तविकता यह है कि अल्लाह ने उन्हें मृत्यु दी और स्वर्ग में दाख़िल किया जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में ज़िक्र है और उनकी क़ब्र इस इलाक़े

يا ذوى الفطنة يقولون إن الله يحطّ عيسى من مقامه و يُكدّر صفو أيّامه و يُعيده إلى دار المحن من غير اجترامه وما هذا الا بهتان وما عندهم عليها من برهان بل توفّاه الله وأدخله فى الجِنان كما ذكره فى القرآن وقبره قريب من هذه البلدان وإن طلبتم المزيد من البيان فتعالوا أقص عليكم قِصّته الثابتة عند المسلمين وأهل الصلبان وليس هى من مُسلّمات فرقة فقط دون الاخرى بل أمرٌ اتفق عليه كل من كان من أولى النهى وما كان حديثًا يُفترى وإنّا رأيناها بنظر أقصٰى وما زاغ البصر وما طغٰى وثبت بثبوت قطعىّ أن عيسٰى هاجر إلى مُلك كشمير بعد ما نجاه الله من الصليب بفضل كبير ★

★**हाशिया :-** قَدْ رَئينَا قَرِيْبًا من الف مجلدات من الكتب الطبيّة فوجدنا فيها نسخة مباركةً يُسَمّٰى مرهم عيسٰى عند هٰذه الفرقة و ثبت بشهادات اطباء الروميّين واليونانيين واليهود والنصارىٰ وغيرهم من الحاذقين ان هذه النسخة من تركيب الحواريين و كتب كلهم فى كتبهم انها صنعت لجراحات عيسٰى و كذالك كتب فى قانون الشيخ ابى على سينا فانظروا يا اولى النهٰى هذا هو الذى رُفِعَ الى السّمٰوات العُلٰى منه

अनुवाद:- हमने तिब्ब की लगभग एक हज़ार पुस्तकें देखीं और उनमें यह

के क़रीब है और यदि तुम अधिक स्पष्टीकरण चाहते हो तो आओ मैं मुसलमानों और ईसाइयों के यहां उनकी प्रमाणित घटनाएं वर्णन करूं और ये ऐसी घटनाएं नहीं जो केवल एक फ़िर्क़े की मान्यताओं में से हों अपितु यह ऐसी बात है जिस पर प्रत्येक बुद्धिमान की सहमति है और मनगढ़त बात नहीं और हम ने उसे दूरदर्शी दृष्टि से देखा है उसके बारे में न तो दृष्टि टेढ़ी हुई और न सीमा से बढ़ी और यह (बात) निश्चित सबूत से सिद्ध है कि ईसा[अ.] ने कश्मीर देश की ओर हिजरत की। इसके बाद कि अल्लाह ताआला ने अपना बड़ा फ़ज़्ल करते हुए उन्हें सलीब से मुक्ति दी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहां एक लम्बे

ولبث فيه إلى مدّة طويلة حتى مات

و لحق الاموات و قبره موجود إلى الآن فى بلدة سِرِىْ نَرْ التى هى من أعظم أمصار هذه الخطّة وانعقد عليه إجماع سكان تلك الناحية وتواتر على لسان أهلها أنه قبر نبى كان ابن ملكٍ و كان من بنى إسرائيل و كان اسمه يوزآسف فليسألهم من يطلب الدليل واشتهر بين عامّتهم أن اسمه

मुबारक नुस्ख़: पाया जो उस गिरोह (तबीबों) के यहां मरहम-ए-ईसा के नाम से प्रसिद्ध है और रूमी, यूनानी यहूदी और ईसाई तथा अन्य दक्ष तबीबों की साक्ष्यों से सिद्ध है कि यह नुस्ख: हवारियों का बनाया हुआ है और इन सब ने अपनी पुस्तकों में यह लिखा है कि यह (मरहम) ईसा अलैहिस्सलाम के ज़ख़्मों के लिए बनाई गई थी। इसी प्रकार शेख़ बू अली सीना की पुस्तक "अलक़ानून" में भी यह दर्ज है। इसलिए हे बुद्धिमानो! विचार करो कि क्या तुम इस मसीह के बारे में कह रहे हो कि वह बुलन्द आकाशों की ओर उठा लिया गया। इसी से।

समय तक रहते रहे और वहीं मृत्यु पाई।

और मृत्यु पा चुकों में सम्मिलित हो गए और उनकी कब्र अब तक श्रीनगर शहर में मौजूद है जो इस क्षेत्र के बड़े शहरों में से एक है तथा इस इलाक़े के निवासियों का इस आस्था पर इज्मा है और वहां के लोगों की जीभ पर (यह रिवायत) निरन्तर चली आती है कि वह बनी इस्राईल के एक नबी की क़ब्र है जो शाहजहां था और उसका नाम यूज आसिफ़ है। अत: उन से पूछ ले जो सबूत का अभिलाषी है। और वहां के सामान्य लोगों में यह बात प्रसिद्ध है कि उस का असल नाम ईसा साहिब था और वह नबियों में से था और लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व उसने कश्मीर की ओर हिजरत की थी। उन लोगों ने इन ख़बरों पर सहमति की है अपितु उन के पास ऐसी प्राचीन पुस्तकें हैं जिन में ये समस्त घटनाएं अरबी और फ़ारसी में मौजूद हैं। उनमें से एक पुस्तक का नाम "इक्मालुद्दीन" है तथा अन्य बुहत प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। और मैंने ईसाइयों की पुस्तकों में देखा है कि ये लोग यूज़

الاصلى عيسٰى صاحب و كان من الانبياء وهاجر إلى كشمير
فى زمان مضى عليه من نحو ١٩٠٠سنة واتفقوا على هذه الانباء
بل عندهم كتب قديمة توجد فيها هذه القصص فى العربية
والفارسية ومنها كتاب سُمّى إكمال الدين و كتب أخرى
كثيرة الشهرة وقد رأيت فى كتب المسيحيين أنهم يزعمون
أن يوزآسف كان تلميذا من تلامذة المسيح وقد كتبوا
هذا الامر بالتصريح ولا يوجد قوم من اقوامهم الّا وهم
ترجموا هذه القصة فى لسانهم وعمّروا بيعة على اسمه فى
بعض بلدانهم ولا شكّ أن زعم كونه تلميذًا باطل بالبداهة
فإن أحدًا من تلامذة عيسى ما كان ابن ملك وما سمع منهم
دعوى النبوّة ثم مع ذالك كان يوزآسف سَمّى كتابه الإنجيل

आसिफ़ को मसीह के शागिर्दों में से एक शागिर्द समझते हैं। और उन्होंने यह बात स्पष्टता के साथ लिखी है और यहां की क़ौमों में से प्रत्येक क़ौम ने अपनी-अपनी भाषाओं में इस घटना का अनुवाद किया है और उन्होंने अपने कुछ इलाक़ों में उसके नाम पर गिर्जा का भी निर्माण किया है। और इस में कोई सन्देह नहीं कि उन का यह सोचना कि वह व्यक्ति मसीह का शागिर्द था स्पष्ट तौर पर असत्य है क्योंकि ईसा के शागिर्द में से कोई एक भी शहज़ादा न था और उनसे नुबुव्वत का दावा भी नहीं सुना गया। इसके अतिरिक्त यूज़ आसिफ़ ने अपनी किताब का नाम इंजील रखा था और साहिब इंजील केवल ईसा ही थे फिर जो सच प्रकट हो गया है उसे पकड़ ले और स्वयं निर्मित बातों को त्याग दे। यदि तुझे विवरण चाहिए तो "इकमालुद्दीन" नामक पुस्तक को पढ़। उसमें तू वह सब कुछ पाएगा जिस से प्यासी रूह को सांत्वना मिल जाए फिर इस बात का समर्थन इस से भी होता है कि कश्मीर के अधिकतर शहरों के नाम प्राचीन बस्तियों के नामों पर रखे गए हैं। अर्थात् उस ज़मीन के शहरों और संलग्न बस्तियों के नाम जहां मसीह

وما كان صاحب الإنجيل الا عيسى فخذ ما حصحص من الحق واترك الاقاويل وإن كنتَ تطلب التفصيل فاقرأ كتابا سُمّى بإكمال الدين تجد فيه كل ما تسكن الغليل ثم من مؤيّدات هذا القول أن كثيرا من مدائن كشمير سُمّى بأسماء المدن القديمة أعنى مُدُنًا كانت فى أرض بعث المسيح وما لحقها من القرى القريبة كحمص وجلجات واسكردو وغيرها التى تركناها من خوف الإطالة وهذا المقام ليس كمقام تمرّ عليه كغافلين بل هو المنبع للحقيقة المخفيّة التى سُمّيت النصارى لها ولقد سمّاهم الله بهذا الاسم فى سورة الفاتحة ليشير إلى هذه الضلالة وليشير إلى ان عقيدة حياة المسيح أمّ ضلالا تهم كمثل أمّ الكتاب من الصحف المطهّرة فإنهم لو لم يرفعوه

अवतरित किए गए थे। जैसा कि हम्स, जलजात (गिलगित) और इस्करदो इत्यादि लम्बाई के भय से हम ने बहुत से नाम छोड़ दिए हैं। और यह ऐसा स्थान नहीं कि जिस स्थान से लापरवाहों के समान गुज़र जाया जाए। अपितु वह गुप्त सच्चाई का उद्गम है कि जिस के कारण उन ईसाइयों का नाम ضالّين (गुमराह) रखा गया। और अल्लाह तआला न सूरह फ़ातिहा में उन्हें इसी नाम से नामित किया है ताकि वह इस गुमराही की ओर संकेत करें कि मसीह के ज़िन्दा रहने की आस्था उनकी गुमराहियों की जड़ है। जिस प्रकार صُحُفِ مُطَهَّرہ (पवित्र ग्रन्थ) (पवित्र क़ुर्आन) की जड़ सूरह फ़ातिहा है। इसलिए यदि वे उनका पार्थिव शरीर के साथ आकाश की ओर रफ़ा न करते तो उन्हें मा'बूद न बना सकते। और यह उनके लिए संभव नहीं कि वे इस आस्था से रुजू किए बिना तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर वापस आ सकें तो अल्लाह ने इस उम्मत पर दया करते हुए उसकी समस्या का हल किया और नितान्त स्पष्ट सबूत के साथ यह सिद्ध किया कि ईसा सलीब पर नहीं मारे गए और न वह आकाश पर उठाए गए। आप का रफ़ा कोई नई बात

إلى السماء بجسمه العنصرى لما جعلوه من الآلهة وما كان لهم أن يرجعوا الى التوحيد من غير أن يرجعوا من هذه العقيدة فكشف الله هذه العقدة رُحمًا على هذه الامّة وأثبت بثبوت بيّن واضح أن عيسى ما صُلب وما رُفع إلى السماء وما كان رفعه أمرًا جديدا مخصوصا به بل كان رفع الروح فقط كمثل رفع اخوانه من الانبياء وأمّا ذكر رفعه بالخصوصية فى القرآن فكان لذبّ ما زعم اليهود وأهل الصلبان فإنهم ظنوا أنه صُلب ولُعن بحكم التوراة واللعن يُنافى الرفع بل هو ضدّه كما لا يخفَى على ذوى الحصاة فردّ الله على هاتين الطائفتين بقوله بَلْ رَّفَعَهُ اللهُ اِلَيْهِ والمقصود منه أنه ليس بملعون بل من الذين يُرفعون ويُكرمون أمام عينيه وما كان انكار اليهود الا

नहीं जो केवल आप के अस्तित्व से विशिष्ट हो अपितु यह केवल रूह का रफ़ा था, जैसा कि आप के दूसरे नबी भाइयों का रफ़ा हुआ। और यह जो पवित्र क़ुर्आन में आप के रफ़ा का विशेष तौर से ज़िक्र है तो वह यहूदियों और ईसाइयों के काल्पनिक विचारों के खण्डन करने के लिए था। क्योंकि उनका यह गुमान था कि आप[अ.] सलीब दिए गए और तौरात के आदेशानुसार मलऊन ठहरे। और जैसा कि बुद्धिमानों पर यह बात गुप्त नहीं कि लानत रफ़ा के विपरीत अपितु उसकी उलट है इसलिए अल्लाह तआला ने

(अन्निसा-159) بَلْ رَّفَعَهُ اللهُ اِلَيْهِ

कह कर इन दोनों गिरोहों का रद्द किया है और इस से अभीष्ट यह है कि आप मलऊन नहीं अपितु आप[अ.] उन लोगों में से हैं जिन का रफ़ा किया जाता है। और ख़ुदा की निगाहों में आदरणीय ठहराते हैं। यहूदियों का इन्कार उस रूहानी रफ़ा से था जिस का पात्र मस्लूब नहीं हो सकता। और उनके नज़दीक शारीरिक रफ़ा मुक्ति का आधार नहीं। तो इस बारे में बहस व्यर्थ है जिससे लानत और गुनाह अनिवार्य नहीं आते। क्योंकि यह स्पष्ट है

من الرفع الروحانی الذی لا یستحقّه المصلوب ولیس عندهم رفع الجسم مدار النجاة فالبحث عنه لغو لا یلزم منه اللعن والذنوب فإن إبراهیم وإسحاق ویعقوب وموسٰی ما رُفع أحدٌ منهم إلی السماء بجسمه العنصری کما لا یخفَی ولا شك أنهم بعدوا من اللعنة وجُعلوا من المقرّبین ونجوا بفضل الله بل کانوا سادة الناجین فلو کان رفع الجسم إلی السماء من شرائط النجاة لکان عقیدة الیهود فی أنبیائهم أنهم رُفعوا مع الجسم إلی السماوات فالحاصل أن رفع الجسم ما کان عند الیهود من علامات أهل الإیمان وما کان إنکارهم الا من رفع روح عیسی وکذٰلك یقولون إلی هذا الزمان فإن فرضنا أن قوله تعالٰی بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیْهِ

कि इब्राहीम[अ], इस्हाक़[अ], याक़ूब[अ] और मूसा[अ] में से किसी का भी पार्थिव शरीर से आकाश की ओर रफ़ा नहीं हुआ। और इसमें नि:सन्देह वे सब लानत से दूर रखे गए और उन्हें सानिध्य प्राप्त बनाया गया। और उन्होंने अल्लाह की कृपा से मुक्ति पाई अपितु मुक्ति पाने वालों के सरदार ठहरे। यदि आकाश की ओर शारीरिक रफ़ा मुक्ति की शर्तों में से होता तो यहूदी अपने नबियों के बारे में नि:सन्देह यह आस्था रखते कि वे सब शरीर के साथ आकाशों की ओर उठाए गए हैं। सारांश यह कि यहूदियों के नज़दीक शारीरिक रफ़ा अहले ईमान की निशानियों में से नहीं और उनका इन्कार केवल ईसा के रूहानी रफ़ा से था और आज तक वे ऐसा ही कह रहे हैं। फिर यदि हम मान लें कि अल्लाह तआला का आदेश بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَیْهِ हज़रत ईसा[अ] के आकाश की ओर शारीरिक रफ़ा के वर्णन के लिए है तो फिर उन के रूहानी रफ़ा का ज़िक्र कहां है कि जिस में उनकी लानत से पवित्रता और बरी होने की गवाही है। हालांकि इसके साथ ही इसका ज़िक्र करना यहूदियों और ईसाइयों के ग़लती से अपनाई हुई आस्था के खण्डन के लिए अनिवार्य था। यदि तुम संयम और प्रतिभा रखते हो तो तुम्हारे लिए यही

لبيان رفع جسم عيسى إلى السماء فأين ذكر رفع روحه الذى فيه تطهيره من اللعنة وشهادة الإبراء مع أن ذكره كان واجبا لرد ما زعم اليهود والنصارى من الخطأ و كفاك هذا إن كنت من أهل الرشد والدهاء أتظن أن الله ترك بيان رفع الروح الذى يُنجّى عيسى مما أُفتِيَ عليه فى الشريعة الموسوية وتصدّى لذكر رفع الجسم الذى لا يتعلّق بأمر يستلزم اللعنة عند هذه الفرقة؟ بل امر لغو اشتهر بين زُمع النصارىٰ والعامة وليس تحته شيء من الحقيقة وما حمل النصارى على ذالك الا طعن اليهود بالإصرار وقولهم أن عيسى ملعون بما صُلب كالاشرار والمصلوب ملعون بحكم التوراة وليس ههنا سعة

पर्याप्त है। क्या तुम विचार करते हो कि अल्लाह तआला ने उस रूहानी रफ़ा के वर्णन को छोड़ दिया है जिसने ईसा[अ.] को उस फ़त्वे से मुक्ति दिलाई जो मूस्वी शरीअतों में उनके विरुद्ध था और उस (अल्लाह) ने शारीरिक रफ़ा का ज़िक्र आरंभ कर दिया जिस का इस मामले के साथ कोई संबंध नहीं जो इस फ़िर्क़े के नज़दीक लानत को अनिवार्य कर देता है अपितु यह एक व्यर्थ बात है जो कमीने ईसाइयों और जन सामान्य में फैल गयी है तथा जिसके अन्दर कोई वास्तविकता नहीं। और ईसाइयों को यहूदियों की आग्रह के साथ भर्त्सना ने ही इस पर उभारा तथा उनके इस कथन ने कि ईसा अ. इस कारण से मलऊन है कि वह दुष्कर्मियों की तरह सलीब दिया गया और तौरात के आदेशानुसार मस्लूब मलऊन होता है। यहां कोई भागने की गुंजायश नहीं रहती। इस भर्त्सना के कारण ईसाइयों पर ज़मीन तंग हो गई और वे यहूदियों के हाथों में क़ैदियों के समान हो गए। तो उन्होंने ईसा[अ.] के आकाश पर चढ़ने का बहाना अपनी ओर से बना लिया ताकि वे इस इफ़्तिरा के द्वारा उन्हें लानत से पवित्र ठहराएगा। और इस प्रसिद्ध घटना से जो ख़ास-व-आम में ख्याति पा गयी। कोई भागने का मार्ग न था। सलीब दिया जाना समस्त

الفرار فضاقت الارض بهذا الطعن على النصارى وصاروا فى أيدى اليهود كالاسارى فنحتوا من عند أنفسهم حيلة صعود عيسٰى إلى السماء لعلّهم يُطهّروه من اللعنة بهذا الافتراء وما كان مفرّ من تلك الحادثة الشهيرة التى اشتهرت بين الخواص والعوام فإن الصليب كان موجبا للعنة باتّفاق جميع فرق اليهود وعلمائهم العظام فلذالك نُحِتت قصة صعود المسيح مع الجسم حيلة للابراء فما قُبِلت لعدم الشهداء فرجعوا مضطرّين إلى قبول إلزام اللعنة وقالوا حملها المسيح تنجيةً للإمّة وما كانت هذه المعاذير الا كخبط عشواء ثم بعد مدّة

यहूदी फ़िर्क़ों और उनके बड़े-बड़े उलेमा के नज़दीक सर्व सम्मति से लानत का कारण था। अत: इसी कारण से मसीह[अ.] के शरीर के साथ आकाश पर चढ़ जाने के क़िस्से को उनकी बरीयत के उपाए के तौर पर बनाया गया। परन्तु उसको गवाहों के न होने के कारण स्वीकार न किया गया। तो वे लानत के आरोप को स्वीकार करने पर विवश हो गए। और उन्होंने यह कहना आरंभ कर दिया कि मसीह ने उम्मत की मुक्ति के लिए उस लानत को स्वयं उठा लिया है। और यह सब बहाने केवल टामकटोइयां थे। फिर कुछ मुद्दत के बाद वे कामवासना संबंधी इच्छाओं के पीछे लग गए और जानते-बूझते हुए इब्ने मरयम को अल्लाह का भागीदार बना लिया। और मसीह का चढ़ना और उनका लानती होना तीन सौ वर्ष के पश्चात् मसीहियों के यहां आस्था के तौर पर जारी हो गया। तत्पश्चात् तीन सदियों के बाद फ़ैज आवज के मुसलमानों ने इन ईसाइयों की कुछ आस्थाओं तथा विचारों का अनुपालन किया। अल्लाह तुम्हें हिदायत का मार्ग दिखाए। तुम्हें यह अच्छी तरह से जान लेना चाहिए कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईसा[अ.] के मेराज की रात में मुर्दों की रूहों में ही देखा। और इसमें बुद्धिमानों के लिए एक महान निशान है। मृत्यु के पश्चात् हर मोमिन की रूह

اتّبعوا الاهواء وجعلوا متعمّدين ابن مريم لله كشركاء وصار صعود المسيح وحمله اللعنة عقيدة بعد ثلاث مائة سنة عند المسيحيين ثم تبع بعض خيالاتهم بعد القرون الثلاثة الفيج الاعوج من المسلمين واعلم أرشدك الله أن رسولنا صلعم ما رأى عيسى ليلة المعراج الا فى أرواح الاموات وإنّ فى ذالك لآية لذوى الحصاة وكل مؤمن يُرفع روحه بعد الموت وتُفتح له أبواب السماوات فكيف وصل المسيح إلى الموتى ومقاماتهم مع أنه كان فى ربقة الحياة؟ فاعلم أنه زور لا صدق فيه وقد نُسج عند استهزاء اليهود ولعنهم بنص التوراة لا يُقال أن عيسى

का रफ़ा किया है और उसके लिए आकाशों के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। फिर बताओ कि मसीह[अ.] किस प्रकार ज़िन्दा होने के बावजूद मुर्दों और उनके स्थानों तक पहुंच गए? जान लीजिए कि ऐसी आस्था झूठी हैं। इसमें कोई सच्चाई नहीं। इस ग़लत आस्था के ताने-बाने यहूदियों के मसीह[अ.] के साथ उपहास और तौरात के स्पष्ट आदेश के अनुसार आप पर लानत डालने के अवसर पर बुने गए। यह नहीं कहा जा सकता कि ईसा[अ.] मुर्दों से उसी प्रकार मिले जैसे हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन से मेराज रूहानी तौर पर जागने के साथ एक उत्तम कश्फ़ था जैसा कि यह बात रौशन बुद्धि पर गुप्त नहीं। और हमारे सय्यिद-व-मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह का आकाश की ओर चढ़ना प्रकाशमान शरीर के साथ जो इस मिट्टी से सृष्टि किया हुआ भौतिक शरीर के अतिरिक्त था। और किसी ज़मीनी शरीर के लिए यह संभव नहीं कि वह आकाश की ओर उठाया जाए। यह श्रेष्ठता और सम्मान वाले ख़ुदा का वादा है। यदि तुम्हें सन्देह हो तो اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا اَحْيَاءً وَاَمْوَاتًا★ पढ़ो और

★ क्या हमने पृथ्वी को समेटने वाला नहीं बनाया? ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी। (अलमुर्सलात -26,27)

لقى الموتى كما لقيهم نبيّنا ليلة المعراج فإن المعراج على المذهب الصحيح كان كشفا لطيفا مع اليقظة الروحانية كما لا يخفَى على العقل الوهّاج وماصعد إلى السماء الا روح سيدنا ونبيّنا مع جسم نورانى الذى هو غير الجسم العنصرى الذى ما خُلق من التُربة وما كان لجسمٍ أرضىّ أن يُرفع إلى السماء وعدٌ منالله ذى الجبروت والعزّة وإن كنتَ فى ريب فاقرأ فَلَمّا تَوَفَّيْتَنِىْ فانظر أتُكذّب القرآن لابن مريم و اتّق الله تُقاتا وانظر فى قوله ولا تؤذربك كما آذيتنى وقد سأل المشركون سيدنا صلى الله عليه وسلم أن يرقى فى السماء إن كان صادقا مقبولا فقيل قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا فما ظنّك أليس ابن مريم بشرا كمثل خير المرسلين؟ أو تفترى على الله

विचार करो। क्या तुम इब्ने मरयम के लिए पवित्र क़ुर्आन को झुठलाओगे? अल्लाह से बहुत डरो! और उसके आदेश ❊ فَلَمّا تَوَفَّيْتَنِىْ पर विचार करो। और तुम अपने रब्ब को वैसे कष्ट न पहुंचाओ जिस प्रकार तुम ने मुझे कष्ट पहुंचाया है। मुश्रिकों ने हमारे सय्यिद-व-मौला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह मांगा था कि यदि वह सच्चे हैं और मक़्बूल (ख़ुदा की बारगाह) हैं तो आकाश पर चढ़ कर दिखाएं। तो कहा गया कि आप इन लोगों से कह दें कि قُلْ سُبْحَانَ رَبِّىْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ★ तुम्हारा क्या विचार है क्या इब्ने मरयम समस्त रसूलों के सरदार की तरह बशर (मनुष्य) न थे? या फिर तुम अल्लाह पर इफ़्तिरा करते हो। और उस मसीह को अफ़ज़लुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्राथमिकता देते हो? सुनो ईसाअ. आकाश पर नहीं चढ़े। और स्मरण रखो कि झूठों पर

❊ और जब तुम ने मुझे मृत्यु दी (अलमाइदह-118)

★ तू कह दे कि मेरा रब्ब (इन बातों से) पवित्र है (और) मैं तो एक बशर रसूल के अतिरिक्त कुछ नहीं। (अलइस्रा-94)

وتُقدّمه على أفضل النبيين؟ ألا إنه ما صعد إلى السماء ألا ان لعنة الله على الكاذبين وشهد الله أنه قد مات ومن أصدق من الله رب العالمين؟ ألا تُفكّر فى قوله عز اسمه أو على قلبك القُفل؟ وقد انعقد الإجماع عليه قبل كل إجماع من الصحابة ورجع الفاروق من قوله بعد سماع هذه الآية فما لك لا ترجع من قولك وقد قرأنا عليك كثيرا من الآيات؟ أتكفر بالقرآن أو نسيت يوم المجازات؟ وقد قال الله فكيف عاش عيسى إلى الالفين فى السماء ما لكم لا تُفكّرون؟فالحق والحق أقول إن عيسى مات ورُفع روحه ولحِق الاموات وأمّا المسيح الموعود فهو منكم كما وعد الله فى سورة النور وهو أمر واضح وليس كالسرّ المستور وإنّه إمامُكم منكم كما جاء

अल्लाह की लानत है। और अल्लाह तआला ने यह गवाही दी है कि वह मृत्यु पा गए हैं और रब्बुल आलमीन ख़ुदा से बढ़कर कौन सच्चा है? क्या तुम अल्लाह अज़्ज़ा इस्मुहू के कथन* وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ पर विचार नहीं करते या तुम्हारे दिल पर ताला पड़ा है। सहाबा का किसी भी इज़्मा से पूर्व इस पर इज़्मा हुआ। और इसी आयत के सुनने के बाद हज़रत उमर फ़ारूकक़रज़ि. ने अपने कथन से रुजू किया। फिर तुझे क्या है कि तू अपने कथन से रुजू नहीं करता। हालांकि हम ने तेरे सामने बहुत सी आयतें प्रस्तुत की हैं। क्या तू क़ुर्आन का इन्कार करता है या फिर प्रतिफल एवं दण्ड के दिन को भूल गया है। अल्लाह का आदेश है★ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ फिर ईसाअ. किस प्रकार दो हज़ार साल से आकाश में ज़िन्दा हैं। तुम्हें क्या हो गया कि सोच-विचार नहीं

* और मुहम्मद नहीं है परन्तु एक रसूल नि:सन्देह इस से पूर्व रसूल गुज़र चुके हैं। (आले इमरान-145)

★ तुम इसी में जिओगे और इसी में मरोगे। (अल आराफ़-26)

فی حدیث البخاری والمسلم ومن کفر بشهادة القرآن وشهادة الحدیث فهو لیس بمسلم وقد أخبرنا التاریخ الصحیح الثابت أن عیسی ما مات علی الصلیب وهذا أمر قد وُجِد مثله قبله ولیس من الإعاجیب وشهدت الإناجیل کلها أن الحواریین رأوه بعد ما خرج من القبر وقصد الوطن والإخوان ومشوا معه إلی سبعین فرسخ وباتوا معه وأکلوا معه اللحم والرغفان فیا حسرة علیك إن کنتَ بعد ذالك تطلب البرهان أتظن أن سلّم السماء ما کان الا علی سبعین میل من مقام الصلیب؟ فاضطر عیسی إلی أن یفرّ و یبلّغ نفسه إلی سلمها العجیب؟ بل فرّ مهاجرا علی سُنّة الإنبیاء خوفا من الإعداء و کان یخاف

करते। सच यही है और मैं सच बात ही कहता हूँ कि ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं। और उनकी रूह रफ़ा किया गया और वह मृत्यु प्राप्तों में जा सम्मिलित हुए। जहां तक मसीह मौऊद का संबंध है तो वह तुम में से होगा, जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरह अन्नूर में वादा फ़रमाया है। और यह बिल्कुल स्पष्ट बात है कोई गुप्त रहस्य नहीं। और फिर यह कि वह तुम ही में से तुम्हारा इमाम होगा। जैसा कि बुख़ारी की हदीस और मुस्लिम में आया है। और जिसने क़ुर्आन की गवाही तथा हदीस की गवाही का इन्कार किया तो वह मुसलमान नहीं। हमें प्रमाणित सही इतिहास ने बताया है कि ईसा[अ.] ने सलीब पर मृत्यु नहीं पाई। और यह वह बात है कि जिसका पहले भी उदाहरण मौजूद है। और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। समस्त इंजीलों ने गवाही दी है कि हवारियों ने उन्हें क़ब्र से निकलने के बाद देखा जब उन्होंने वतन और भाइयों के पास जाने का इरादा किया और वे आप[अ.] के साथ सत्तर मील तक चले। आप[अ.] के साथ रात गुज़ारी तथा आप के साथ मिल कर गोश्त और रोटी खाई। यदि इसके बाद भी तुम तर्क मांग रहे हो तो तुम पर सौ अफ़सोस। क्या तुम विचार करते हो कि सलीब के स्थान

استقصاء خبره واستبانة سرّه فلذالك اختار طريقا منكرًا مجهولا عسير المعرفة الذى كان بين القرى السامرية فإن اليهود كانوا يُعافونها ولا يمشون عليها من العيافة والنفرة فانظر فى صورة سبل موامى اقتحمها على قدم الخيفة وإنّا سنرسم صورتها ههنا لتزداد فى البصيرة ولتعلم أن صعود عيسى إلى السماء تُهمة عليه ومن أشنع الفرية أكان فى السماء قبيلة من بنى إسرائيل فدلف إليهم لإتمام الحجّة؟ ولما لم يكن الامر كذالك فأى ضرورة نقل أقدامه إلى السماء؟ وما العذر عنده إنه لِمَ لم يُبلّغ دعوته إلى قومه المنتشرين فى البلاد والمحتاجين إلى الاهتداء؟ والعجب كل العجب أن الناس يُسمّونه

केवल सत्तर मील दूर आकाश के लिए सीढ़ी लगी हुई थी। तो ईसा अलैहिस्सलाम विवश हुए कि वह भागें और उस अद्भुत सीढ़ी तक स्वयं को पहुंचाएं। नहीं अपितु आप[अ.] नबियों की सुन्नत के बिल्कुल अनुसार दुश्मनों के भय से हिजरत करते हुए भागे थे। आप अपनी ख़बर के सार्वजनिक होने से तथा राज़ के खुल जाने से भयभीत थे। इसलिए आपने अजनबी, अज्ञात और अप्रसिद्ध मार्ग अपनाया जो सामिरी बस्तियों में से होकर गुज़रता था। क्योंकि यहूदी इन बस्तियों से नफ़रत करते थे और वे इस नफ़रत और पसन्द न होने के कारण से उन से नहीं गुज़रते थे। इसलिए इन बियाबानों के रास्तों का नक़्शा देख जिन रास्तों पर आप डरते-डरते चले। विवेक में वृद्धि के लिए हम यहां उन का नक़्शा प्रस्तुत करते हैं। ताकि तुझे यह मालूम हो जाए कि ईसा (अलैहिस्सलाम) का आकाश की ओर चढ़ना आप पर एक बहुत बड़ा इल्ज़ाम और एक घिनौना आरोप है। क्या आकाश पर बनी इस्राईल का कोई क़बीला था कि हुज्जत पूर्ण करने के लिए आप[अ.] उन की ओर चल दिए। जब ऐसी कोई बात न थी तो आप[अ.] को ऐसी कौन सी आवश्यकता आ पड़ी थी कि आप आकाश की ओर क़दम बढ़ाते। और

نبيّا سيّاحًا وقالوا إنه سلك فى سيره مسالك لم يرضها السيرُ ولا اهتدت إليه الطيرُ وطوى كل الارض أو أكثرها ووطأ حمى الامن وغير الامن ورأى كل ما كان موجودًا فى الزمن ومع ذالك يقولون أنه رُفع عند واقعة الصليب من غير توقّفٍ إلى السماء وما برح أرض وطنه حتى دُعِىَ إلى حضرة الكبرياء فما هذه التناقض أتفهمون؟ وما هذه الاختلاف أتوفّقون؟ فالحق والحق أقول إن القول الآخر صحيح وأمّا القول بالرفع فهو مردود قبيح فإن الصعود إلى السماء قبل تكميل الدعوة إلى القبائل كلهم كانت معصية صريحة وجريمة قبيحة ومن المعلوم أن بنى إسرائيل فى عهد عيسى عليه السلام كانوا

आप[अ.] के पास क्या बहाना हुआ कि आप ने उन इलाक़ों में अपने बिखरी क़ौम को धर्म की दावत न पहुंचाई जो कि मार्ग-दर्शन की अत्यन्त मुहताज थी। और फिर सर्वाधिक आश्चर्य की यह बात है कि लोग आप को पर्यटक नबी के नाम से नामित करते हैं और कहते हैं कि आप अपने सफ़र में उन मार्गों पर चले हैं जिन पर अन्य कोई नहीं चला। और न वहां कोई परिन्दा फ़टका। आप[अ.] ने समस्त इलाक़े या उसके अधिकांश भाग को पार किया तथा अमन से भरपूर और ख़तरों से भरपूर रास्तों को तय किया। इसके बावजूद वे कहते हैं कि आप[अ.] सलीब की घटना के अवसर पर अविलम्ब आकाश की ओर उठा लिए गए। और जब तक अल्लाह तआला की ओर से बुला न लिए गए आप[अ.] अपनी सरज़मीन मातृभूमि में ही ठहरे रहे। यह क्या विरोधाभास है क्या तुम समझा सकते हो? और क्या मतभेद है क्या तुम अनुकूलता कर सकते हो? सच यह है और मैं बिल्कुल सच-सच सहता हूँ कि अन्तिम बात सही है और (शारीरिक) रफ़ा वाली बात बहिष्कृत और बुरी है। क्योंकि अपने समस्त क़बीलों को सच का सन्देश पहुंचाने के कर्तव्य की पूर्ति से पूर्व आकाश की ओर चढ़ना एक खुला पाप था तथा एक संगीन अपराध। और यह मालूम है

متفرّقين منتشرين فى بلاد الهند و فارس و كشمير فكان فرضه أن يُدركهم و يُلاقيهم و يهديهم إلى صراط الرب القدير و ترك الفرض معصية و الإعراض عن قوم منتظرين ضالين جريمة كبيرة تعالى شأن الانبياء المعصومين من هذه الجرائم التى هى أشنع الذمائم ثم بعد ذالك نكتب صورة سبيل اختارها المسيح عند هجرته و هى هذه

कि ईसा अलैहिस्सलाम के युग में बनी इस्राईल, हिन्दुस्तान, ईरान और कश्मीर के इलाकों में जगह-जगह फैले हुए थे। और यह आपका कर्तव्य था कि आप उनके पास पहुंचते, उनसे मिलते और रब्बे क़दीर के मार्ग की ओर उनका मार्ग-दर्शन करते। कर्तव्य का त्याग करना पाप है। और ऐसी क़ौम की उपेक्षा करना जो (एक हादी की) प्रतीक्षक हो तथा पथभ्रष्ट हो एक बहुत बड़ा अपराध है। और मासूम नबियों की प्रतिष्ठा उन गुनाहों से जो अत्यन्त निन्दनीय हैं ऊपर है। अब इसके बाद हम उन मार्गों का नक़्शा दर्ज करते हैं जिन्हें मसीह[अ.] ने हिजरत के समय ग्रहण किया। वह नक्शा यह है :-

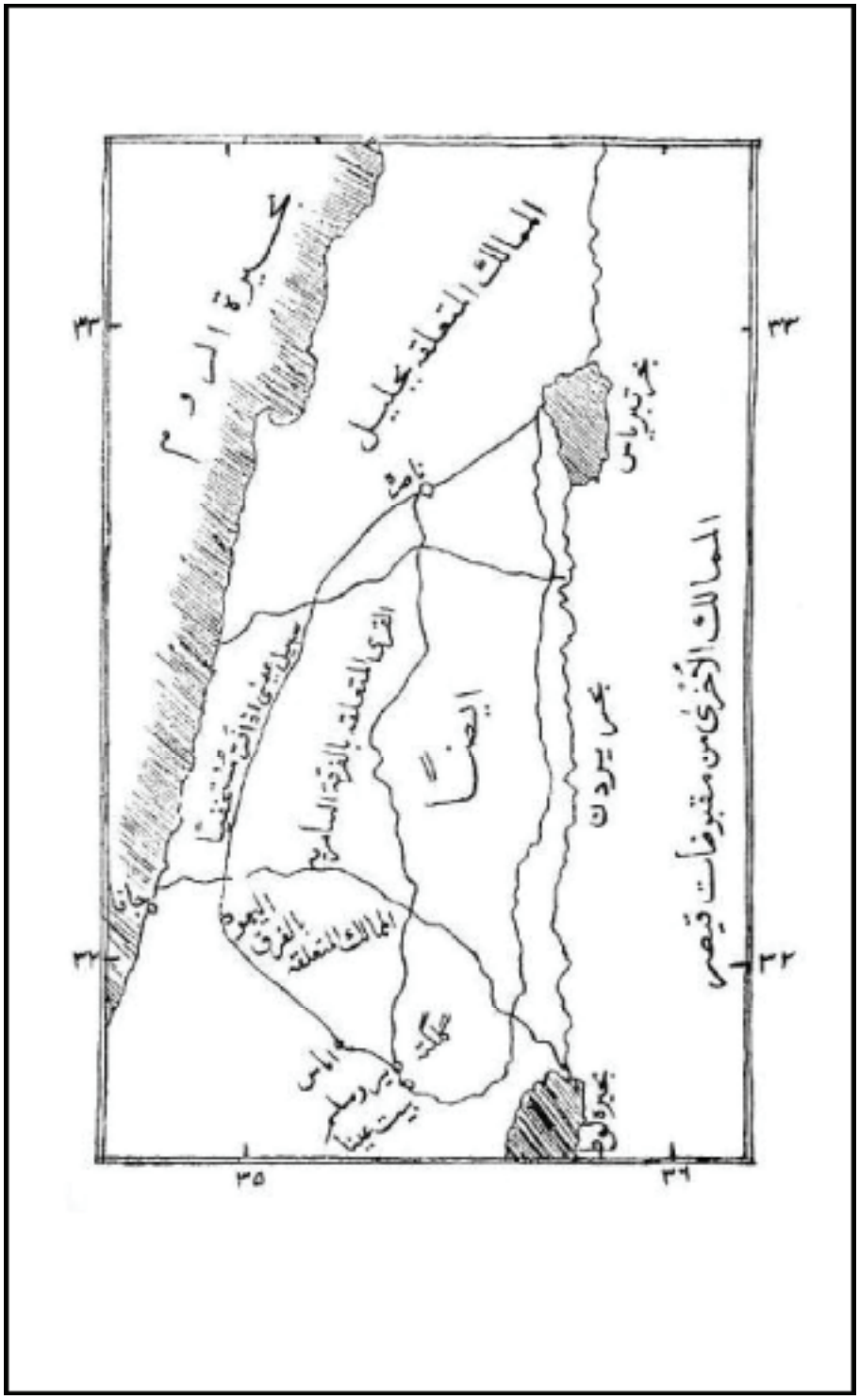
بحيرة الـ و م
الممالك المتعلقة بجليل
بحيرة طبريا
الممالك الأخرى من مقبوضات قيصر
الجليل
الممالك المتعلقة بالقرف البحور
بحر ميرون
بحيرة ملح

فحاصل الكلام إنه لا شك و لا شُبهة و لا ريب أن عيسٰى لمّا منّ الله عليه بتخليصه من بليّة الصليب هاجر مع أمّه وبعض صحابته إلى كشمير وربوته التى كانت ذات قرار ومعين ومجمع الاعاجيب و إليه أشار ربنا ناصر النبيين ومعين المستضعفين فى قوله وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّ اٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِيْنٍ(المومنون-۵۱) ولا شك أن الإيواء لا يكون الا بعد مصيبة وتعب و كربة ولا يُستعمل هذا اللفظ الا بهذا المعنى وهذا هو الحق من غير شك وشُبهَة ★ ولا يتحقق هذه

★**हाशिया :-** اعلم ان لفظ الايواء باحدٍ من مشتقاته قدجاء فى كثيرٍ من مواضع القراٰن و كلهاذكر فى محل العصم من البلاء بطريق الامتنان كماقال الله تعالٰى اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْماً فَاٰوٰى(الضحیٰ-۷) وما اراد منه الا الاراحة بعد الاذى وقال فى مقام اٰخر اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰكُمْ(الانفال-۲۷) فانظروا كيف صرح حقيقة الايواء و بهاداوا كم وقال حكاية عن ابن نوح سَاٰوِىْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِىْ مِنَ الْمَاءِ(هود-۴۴) فما كان قصده جبلا رفيعا الا بعد رؤية البلاء فبينوا لنا ايّ بلاءٍ نزل على ابن مريم

ख़ुलासा कलाम यह है कि इसमें कण भर भी सन्देह एवं आशंका नहीं कि जब अल्लाह तआला ने उपकार करते हुए ईसाअ. को सलीब के संकट से मुक्ति प्रदान की तो आप ने अपनी आदरणीय माँ तथा अपने कुछ सहाबियों के साथ कश्मीर और उसकी ऊंचाइयों की ओर जो दिल का क़रार प्रदान करने वाली और झरनों वाली सरज़मीन तथा हर प्रकार के चमत्कारों का संग्रह थी हिजरत की। और इसी ओर हमारे प्रतिपालक ने जो समस्त नबियों का सहायक है अपने इस कथन

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّ اٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِيْنٍ ﴿۵۱﴾
(अलमोमिनून-51)

الحـالة المُقَلقِـلة فی سـوانح المسـیح الا عنـد واقعـة الصلیـب

ومعہ علی امّہ اشد من بلاء الصلیب ثم ایّ مکان اٰواھما اللہ الیہ من دون ربوۃ کشمیر بعد ذالک الیوم العصیب أتکفرون بما اظھرہ اللہ وان یوم الحساب قریب منہ

जान ले किसी के लिए शब्द आवा का प्रयोग अपने मस्दरों में क़ुर्आन में कई स्थानों में प्रयोग हुआ है और हर जगह उसका ज़िक्र उपकार करते हुए किसी बला से सुरक्षित रहने के लिए अवसर पर किया गया है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया اَلَمْ یَجِدْکَ یَتِیْماً فَاٰوٰی (अज़्ज़ुहा-7) इस कष्ट के बाद आराम पहुंचाना ही अभिप्राय है और एक दूसरे स्थान पर फ़रमाया

اِذْاَنْتُمْ قَلِیْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِی الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ یَّتَخَطَّفَکُمُ النَّاسُ فَاٰوٰ کُمْ

(27 -अलअन्फ़ाल)

इसलिए विचार करो कि उस (अल्लाह) ने किस प्रकार आवा की वास्तविकता को स्पष्ट किया और उस के द्वारा तुम्हारा इलाज किया और नूह के बेटे का क़िस्से के तौर पर यह वर्णन कि इसमें भी उसने बला (संकट) देखने के बाद ही बुलन्द पर्वत की ओर चला अब हमें बताओ कि इब्ने मरयम और उनके साथ उनकी माँ पर सलीब के संकट से बढ़कर कौन सा संकट उतरा था? और फिर अल्लाह ने उन दोनों को उस कठिन घड़ी के बाद कश्मीर की उस बुलन्द जगह के अतिरिक्त किस जगह शरण दी? क्या तुम इस बात का इन्कार करोगे जिसको अल्लाह तआला ने अभिव्यक्त किया? और नि:सन्देह हिसाब की घड़ी बहुत क़रीब है। इसी से।

अनुवाद - और हमने इब्ने मरयम और उसकी मां को एक निशान बनाया और हमने उन दोनों को एक ऊंचे स्थान पर शरण दी जो ठहरने के योग्य और बहते हुए पानियों वाला था।

में संकेत किया है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि संकट, कष्ट और व्याकुलता के पश्चात् ही आवाअ (शरण देना) होता है। और यह शब्द इन्हीं मायनों में प्रयोग होता है। और यह बात कि सन्देह एवं आशंका के बिना बिल्कुल सच है। और मसीह (अलैहिस्सलाम) के जीवन चरित्र में यह क़लक़ पैदा करने वाली हालत केवल सलीब की घटना के अवसर पर ही प्रमाणित

وليستربوة فى الارتفاع فى جميع الدنيا من البعيد والقريب كمثل ارتفاع جبال كشمير و كمثل ما يتعلّق بشعبها عند العليم الاريب ولا يسع لك تخطئة هذا الكلام من غير التصويب وأمّا لفظ القرار فى الآية فيدل على الاستقرار فى تلك الخطة بالامن والعافية من غير مزاحمة الكفرة الفجرة ولا شك أن عيسٰى عليه السلام ما كان له قرار فى أرض الشام و كان يخرجه من أرض إلى أرض اليهود الذين كانوا من الاشقياء واللئام فما رأى قرارًا الا فى خطّة كشمير وإليه أشار فى هذه الآية ربنا الخبير وأمّا الماء المعين فهى إشارة إلى عيون صافية وينابيع منفجرة توجد فى هذه الخطّة ولذالك شبّه الناس تلك

हुई थी। और बुद्धिमान आलिम के नज़दीक समस्त संसार के दूर तथा निकट में बुलन्दी की दृष्टि से कोई बुलन्द स्थान कश्मीर बुलन्द-व-बाला पर्वत तथा उसके पर्वत की श्रंखला की बुलंदियों जैसा नहीं है और तुम्हारे लिए मेरी इस बात में ग़लती। निकालने और उसके सही होने का इक़रार करने के अतिरिक्त कोई गुंजायश नहीं। इस (पवित्र) आयत में जो क़रार का शब्द है वह इस क्षेत्र में काफ़िरों और दुराचारियों की रोक के बिना अमन और शान्ति से रहने पर मार्ग-दर्शन करता है। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि ईसा अलैहिस्सलाम के लिए शाम की सरज़मीन में ऐसा क़रार प्राप्त न था। और दुर्भाग्यशाली तथा कमीने यहूदी उन्हें एक इलाक़े से दूसरे इलाक़े में निकालते रहते थे उन्होंने केवल कश्मीर के क्षेत्र में क़रार पाया। और उसी की ओर हमारे ख़बीर रब्ब ने इस आयत में संकेत किया है और اَلْمَآءِ الْمَعِيْنِ से इन साफ़ और जारी झरनों की ओर संकेत है जो इस क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसी लिए लोगों ने इस सरज़मीन को स्वर्ग से उपमा दी है। मसीह के आकाश की ओर चढ़ने का शब्द न तो मती की इंजील में पाया जाता है और न ही यूहन्ना की इंजील में। हाँ सलीब के बाद उनके गलील की ओर

الارض بالجنّة ولا يوجد لفظ صعود المسيح إلى السماء فى إنجيل متى ولا فى إنجيل يوحنّا ويوجد سَفَره إلى جليل بعد الصليب وهذا هو الحق وبه آمنّا وقد أخفَى الحواريون هذا السفر خوفا من تعاقب اليهود وأظهروا أنّه رُفع إلى السماء ليكون جوابا لفتوى اللعنة وليصرف خيال العدوّ الحسود ثم خلف من بعدهم خلف كثير الإطراء قليل الدهاء وحسبوا هذه التورية حقيقة كما هى سيرة الجهلاء وجعلوا ابن مريم إلهًا بل أجلسوه على عرش حضرة الكبرياء وما كان الامر الا من حِيَل الإخفاء وما كان معه مقدار شبر من الارتقاء وقد سمعتَ أنه مات فى أرض كشمير وقبره معروف عند صغير و كبير فلا تجعلوا الموتٰى

सफ़र करने का ज़िक्र पाया जाता है और यही वास्तविकता है और इस पर हमारा ईमान है। हवारियों ने इस सफ़र को यहूदियों के पीछा करने के भय से गुप्त रखा और यह प्रकट किया कि वे आकाश की ओर उठाए गए हैं ताकि लानत के फ़त्वे का उत्तर हो और ईर्ष्यालु शत्रु का ध्यान दूसरी ओर फिर जाए। फिर उनके बाद उनके ऐसे कपूत जानशीन हुए जिनमें अतिरंजित होना अधिक और बुद्धि कम थी। और जैसा कि जाहिलों का आचरण है उन्होंने उस तौरिये* को वास्तविकता समझा और इब्ने मरयम को मा'बूद (उपास्य) बना लिया। अपितु उन्हें ख़ुदा तआला के अर्श पर ला बिठाया। हालांकि यह केवल मामले को गुप्त रखने का एक बहाना था और इस बात के साथ आकाश पर चढ़ने का बालिश्त भर भी संबंध न था। यह तो तुम ने सुन ही लिया कि आप[अ] ने कश्मीर की सरज़मीन में मृत्यु पाई और हर छोटे-बड़े के नज़दीक उनकी क़ब्र प्रसिद्ध है। इसलिए तुम मुर्दों को मा'बूद न बनाओ। हाँ उनके लिए क्षमा मांगो और अपने जलील-व-क़दीर रब्ब की तौहीद का इक़रार करो। क़रीब है कि इस झूठ

* **तौरिया:**- मुनाफ़क़त, कपटाचार (अनुवादक)

إلهًا واستغفروا لهم ووحّدوا ربكم الجليل القدير تكاد السّماوات تتفطّرن من هذا الزور ووالله إنّه ميّت فاتّقوا الله ويوم النشور وصلّوا على محمّدٍ انِلذى جاء كم بالنور و كان على النور ومن النور وقد ذكرنا أن المسلمين يقولون أن القبر المذكور قبر عيسى وإن النصارى يقولون إن هذا القبر قبر أحد من تلاميذه فالامر محصور فى الشقين كما ترى ولا سبيل إلى الشق الثانى وليس هو الا كالاهواء والامانى فإن الحواريين ما كانوا الا تلامذة المسيح ومن صحابته المخصوصين ومن أنصاره المنتخبين وما سُمّىَ أحد منهم ابن ملك ولا نبيّا وما كانوا الا خُدّام المسيح فتقرر أنه قبر نبى الله عيسى وأى دليل تطلب بعد

से आकाश फट जाएं। ख़ुदा की क़सम वह (मसीह[अ]) मृत्यु प्राप्त हैं। इसलिए अल्लाह और उस दिन से डरो जब उठाए जाओगे। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजो जो तुम्हारे लिए प्रकाश लेकर आए। प्रकाश पर सफल थे और साक्षात् प्रकाश थे। हम यह वर्णन कर चुके हैं कि मुसलमान यह कहते हैं कि ज़िक्र की गई क़ब्र ईसा की क़ब्र है। और ईसाई कहते हैं कि यह क़ब्र आपके किसी शागिर्द की है जैसा कि तुम अवलोकन कर रहे हो। यह मामला दो भागों में सीमित है और दूसरे भाग की कोई गुंजायश नहीं। और वे तो केवल कामवासना संबंधी इच्छाएं हैं और कामनाएं हैं। क्योंकि हवारी मसीह के केवल शागिर्द और विशेष सहाबा आप के चुने हुए सहायक ही थे। और उनमें से कोई भी शहज़ादे और नबी के नाम से नामित नहीं था। वे केवल मसीह के सेवक थे। अत: सिद्ध हुआ कि वह क़ब्र ख़ुदा के नबी ईसा की है। इस स्पष्ट सबूत के बाद और कौन सा प्रमाण तुम मांगते हो (यदि प्रमाण मांगना हो तो) उस क़ौम से पूछ जिन्होंने उन्हें आकाश पर चढ़ाया है तथा मूर्खों के समान उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। एक जवां मर्द के लिए उस

هـذا الثبـوت الصريـح؟ فاسـأل قومًـا رفعـوه إلى السـماء وينتظـرون رجوعـه كالحمقـى والمـوت خـير للفـتى مـن جهـالة هـى أظهـر وأجلى فاليـوم ظهـر صـدق قـول الله عـزّ وجل فَلَمَّـا تَوَفَّيْتَنِيْ وبطـل مـا كانـوا يفـترون فسـبحان الذى أحـق الحـق وأبطـل الباطـل وأظهـر مـا كانـوا يكتمـون توبـوا إلى الله أيهـا المعتـدون وبـأىّ حديـث بعـد ذالـك تتمسّكون؟ ولسـتُ أريـد أن أطـوّل هـذا البحـث فى هـذه الرسـالة الموجـزة وقـد كتبنـا لـك بقـدر الكفايـة فـإن شـئتَ فاقـرأ كتـبى المطـوّلة فى العربيـة ولكـنى أرى أن أُزيـد علمـك فى معـنى اسـم يوز آسـف الذى هـو اسـم ثـانى لصاحـب القـبر عند سـكان هـذه الخطّة وعنـد النصـارى كلـهم مـن غـير الاختـلاف والتفرقـة فاعلـم أنهـا

जहालत से जो बिल्कुल प्रकट और स्पष्ट है मौत कहीं उत्तम है। फिर आज अल्लाह तआला के कथन

(अलमाइदह-118) فَلَمَّـا تَوَفَّيْتَنِيْ

की सच्चाई प्रकट हो गई और उनका इफ़्तिरा झूठा हो गया। अत: पवित्र है वह अस्तित्व जिसने सच को सच और झूठ को झूठ कर दिखाया और जो वे छुपा रहे थे उसे प्रकट कर दिया। हे सीमा का अतिक्रमण करने वालो! अल्लाह की ओर रुजू करो। तुम इसके पश्चात् किस बात से चिमटे हुए हो? मैं इस संक्षिप्त पुस्तक में इस बहस को लम्बा करना नहीं चाहता। आवश्यकतानुसार हमने तुम्हारे लिए लिख दिया है। यदि तुम चाहो तो मेरी इन विस्तृत अरबी पुस्तकों का अध्ययन करो। किन्तु मैं तुम्हारे ज्ञान में वृद्धि करने के लिए चाहता हूँ कि यूज़ आसिफ़ नाम के अर्थों के संबंध में बताऊं जो इलाक़े के निवासियों के नज़दीक साहिबे क़ब्र का दूसरा नाम है। इसी प्रकार बिना किसी मतभेद और फूट के समस्त ईसाई भी ऐसा ही समझते हैं। स्मरण रहे कि (यूज़ आसिफ़) इब्रानी कलिमा है जो दो शब्दों शब्द यसू और शब्द आसिफ़ से मिश्रित है। और यसू के

كلمة عبرانية مركّبة من لفظ يسوع ولفظ آسف ومعنى يسوع النجاة★ ويستعمل فى الذى نجا من الحوادث والعواصف وأمّا

★**हाशिया :-** كان من عادة اليهود انهم يسمون اطفالهم يسوع اعنى النجاة على سبيل التفاول وطلب العصمة من امراض الجدرى وخروج الاسنان والحصبةخوفًا من موت الاطفال بهذه الامراض المخوفة فكذالك سمّت مريم ابنه يسوع اعنى عيسٰى وتمنّت ان يعيش ولا يموت بالجدرى وامراض أُخُرى والذين يقولون ان معنى يسوع المنجّى فهم كذّابون دجّالون يكتمون الحق ويفترون ويضلون الناس ويخدعون فاسئل اهل اللسان ان كنت من الذين يرتابون منه

यहूदियों का यह सामान्य तरीक़ा था कि वे फाल के तौर पर और चेचक, दांत निकालने और ख़सरे के इन भयानक रोगों के परिणाम स्वरूप बच्चों के मर जाने के भय से सुरक्षा चाहते हुए अपने बच्चों का नाम यसू अर्थात् मुक्ति रखते थे। यही कारण था कि मरयम (अलैहिस्सलाम) के अपने बेटे का नाम यसू अर्थात् ईसा रखा। वह चाहती थीं कि वह जीवन पाए और चेचक तथा दूसरे रोगों के कारण मर न जाए। जो लोग यह कहते हैं कि यसू के मायने मुनज़्ज़ी (मुक्ति दाता) के हैं वे झूठे और दज्जाल हैं वे सच को छुपाते और इफ़्तिरा करते हैं। वे लोगों को गुमराह करते और उन्हें धोखा देते हैं। यदि तुम सन्देह करने वालों में से हो तो नि:सन्देह मातृ भाषियों से पूछ लो। इसी से।

मायने मुक्ति के हैं। और यह उस व्यक्ति के बारे में प्रयोग किया जाता है जो दुर्घटना और आंधियों से बच गया हो। और आसिफ़ शब्द का अर्थ है बिखरे गिरोहों को एकत्र करने वाला। और यही नाम मसीह का इंजील में लिखा है जो अहले इल्म-व-मारिफ़त पर गुप्त नहीं। इसी प्रकार बनी इस्राईल के नबियों के कुछ ग्रन्थों में भी ऐसा ही आया है। यह बात ईसाइयों के यहां मान्य है। आवश्यकता नहीं कि हम विस्तृत चर्चा करें। तो इस स्थान पर यह बात सिद्ध हो गयी कि ईसा[अ.] ने मस्लूब होकर मृत्यु नहीं पाई। अपितु अल्लाह तआला ने उन्हें सलीब से मुक्ति दी और उन्हें

لفظ آسف فمعناه جامع الفرق المنتشرة وهو اسم المسيح فى الإنجيل كما لا يخفى على ذوى العلم والخبرة و كذالك جاء فى بعض صحف أنبياء بنى إسرائيل وهذا أمر مُسَلّمٌ عند النصارى فلا حاجة إلى أن نذكر الاقاويل فثبت من هذا المقام أن عيسى لم يمت مصلوبًا بل نجّاه الله من الصليب وما تركه معتوبًا ثم هاجر عيسى ليستقرىَ ويجمع شتات قبائل من بنى إسرائيل وشعوبًا فبلغ كشمير وألقى عصا التسيار فى تلك الخطّة إلى أن مات ودُفن فى محلّة خان يار مع بعض الاحبّة وإنْ تُحقق أن رسم الكتبة لتعريف القبور كان فى زمن المسيح ولا اخال الا كذالك بالعلم الصحيح لافتَى العقل أن قبره عليه السلام لا يخلو من هذه الآثار وإنْ كُشِفَ لظهر كثير من الشواهد وبيّنات من الاسرار فندعو الله أن يجعل كذالك ويقطع دابر الكفّار وإنّا أخذنا عكس قبر المسيح فكان هكذا ومن رآه فكأنه رأى قبر عيسى

क्रोध के नीचे न रहने दिया। फिर ईसा (अलैहिस्सलाम) ने हिजरत की ताकि बनी इस्राईल के बिखरे हुए क़बीलों और क़ौमों को तलाश करें और एकत्र करें। इसलिए आप कश्मीर पहुंचे और इसी इलाक़े में ठहर गए यहां तक कि वह यहीं पर मृत्यु प्राप्त हुए। और अपने कुछ प्रिय साथियों के साथ मुहल्ला ख़ानयार में दफ़्न हुए। यदि यह बात सिद्ध हो जाए कि मसीह के युग में क़ब्रों की पहचान के लिए कत्बे लिखे जाते थे और मैं सही जानकारी के आधार पर ऐसा ही समझता हूँ तो विश्वास के साथ बुद्धि इस बात का फ़त्वा देती है कि आप[अ] की कब्र उन लक्षणों और निशानों से रिक्त नहीं। और यदि क़ब्र खोली जाए तो रहस्यों और भेदों के गवाह तथा स्पष्ट बातें प्रचुरता से प्रकट होंगी। अत: हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह ऐसा ही करे और काफ़िरों की जड़ काट दे। और हम ने

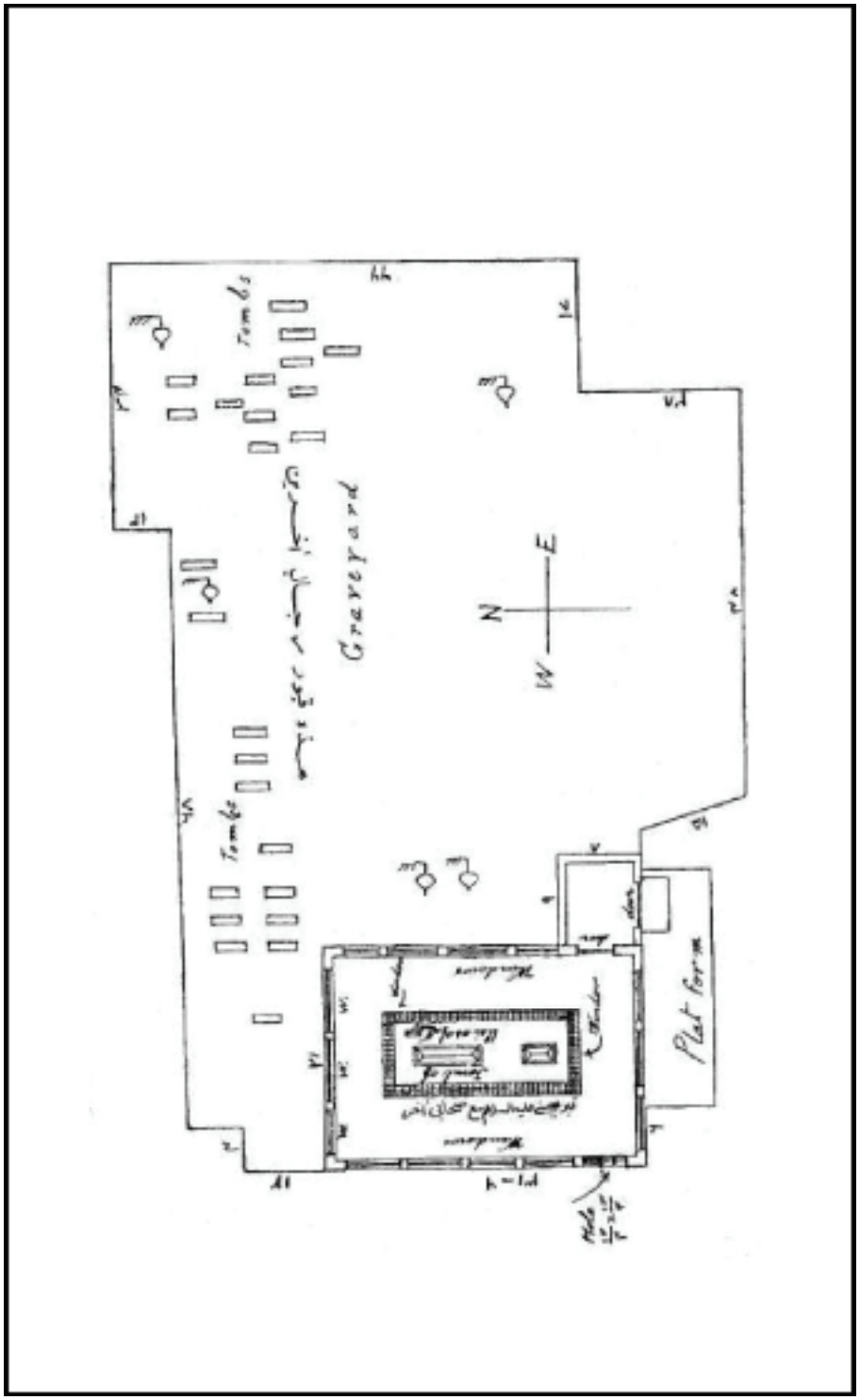
Graveyard
Tombs
Tombs
N
E
W
Plat form

ثم بعد ذالك نكتب أسماء رجال ثقاة من سُكّان تلك البلدة الذين شهدوا أنه قبر نبي الله عيسٰى يوز آسف من غير الشك والشبهة و هم هؤلاء ★

★ **हाशिया :-** كانت هذه الشهداء الوفًا ولكناقتعنابهذاالقدرو كلهم عمائدالقوم ومشاهيرهم وصلحاء هم۔منه

उन गवाहों की संख्या हज़ारों में लेकिन हम ने इतने ही नामों पर्याप्त समझा है यह सब क़ौम के अमाए दीन और मशाहीर और क़ौम के सुल्हा हैं। इसी से।

मसीह की क़ब्र का नक़्शा तैयार किया है जो बिल्कुल वैसा ही है। और जो उसे देखेगा तो जैसे उसने ईसा[अ.] की क़ब्र देख ली। फिर तत्पश्चात् हम उस शहर के रहने वाले उन विश्वसनीय लोगों के नाम दर्ज करते हैं जिन्होंने (इस बात की) गवाही दी है कि नि:सन्देह यह क़ब्र अल्लाह के नबी ईसा यूज़ आसिफ़ की ही है।

नबी के दर्शन-स्थान ख़ानयार-श्रीनगर-कश्मीर

1. मौलवी रसूल साहिब मीर वाइज़ कश्मीर इब्ने मुहम्मद यह्या साहिब (स्वर्गीय)
2. मौलवी अहमदुल्लाह वाइज़ बिरादर वाइज़ रसूल मीर वाइज़ कश्मीर
3. वाइज़ मुहम्मद सादुद्दीन अतीक़ उफ़िया अन्हु और मीर वाइज़
4. अज़ीज़ुल्लाह शाह मुहल्ला काचगरी
5. हाजी नूरुद्दीन वकील उर्फ़ ईदगाही
6. अज़ीज़ मीर नम्बरदार कस्बा-पानपुर-ज़ैलदार
7. मेहर मुंशी अब्दुस्समद वकील अदालत निवासी फतह कदल
8. मेहर अली हाजी ग़ुलाम रसूल ताजिर निवासी मुहल्ला मालिकपुरा ज़िला- ज़ानी कदल
9. मेहर अब्दुल जब्बार-ख़ानयार
10. मेहर अहमद ख़ान ताजिर इस्लामाबाद
11. मेहर मुहम्मद सुल्तान मीर रजोरी कदल

12.मम्माजीव सर्राफ कदल
13. हकीम मेहदी साहिब इमामिया निवासी बाग़बानपुरा ज़िला संगीन दरवाज़ा
14.हकीम ज़ाफ़र साहिब इमामिया निवासी बाग़बानपुरा
15.मुहम्मद अज़ीम साहिब इमामिया निवासी बाग़बानपुरा
16.मिर्ज़ा मुहम्मद बेग़ साहिब ठेकेदार इमामिया मुहल्ला मदीना साहिब
17.अहमद कुलः मण्डी बल, ज़िला-नौशहरा इमामिया
18.हकीम अली नक़ी साहिब इमामिया
19.हकीम अब्दुर्रहमान साहिब इमामिया तहसीलदार
20.मौलवी हैदर अली साहिब इब्न मुस्तफ़ा साहिब इमामिया सनदयाफ्तः
कर्बला ---- मुजतहिद फ़िर्क़ा इमामिया
21.मौलवी मुफ़्ती अज़ीज़ुद्दीन (स्वर्गीय)
22.मेहर मुफ़्ती मौलवी ज़ियाउद्दीन साहिब
23.मौलवी सदरुद्दीन टीचर मदरसा हमदानियः इमाम मस्जिद बाज़ापुरा
24.मेहर अब्दुल ग़नी क्लाशपुरी इमाम मस्जिद
25.हबीबुल्लाह जिल्द साज़ संलग्न जामिअ मस्जिद
26.अब्दुल ख़ालिक़ खांडीपुरा तहसील हरीपुर
27.मेहरी अब्दुल्लाह शेख़ मुहल्ला वडी कदल असल तर्कावान गामी
28.हबीब बेग़ नम्बरदार मेवा फ़रोशान हब्बा कदल श्रीनगर
29.अहमद ज्योज़ीनः कदल कश्मीर
30.मेहरी ग़ुलाम मुहियुद्दीन ज़रगर मुहल्ला कच्चाबल क़िला खानयार
31.अब्दुल्लाह जियो ताजिर मेवाजात सरकारी श्रीनगर
32.मुहम्मद ख़िज्र निवासी आली कदल श्रीनगर
33.अब्दुल ग़फ़्फ़ार पुत्र मूसा ज्यो हिन्दो नरौरा
34.मेहर अली वानी पुत्र सिद्दीक़वानी बूटा कदल
35.मेहर ग़ुलाम नबी शाह हुसैनी
36.मेहर अब्दुर्रहीम इमाम मस्जिद कहनगोह, तहसील तिराल
37.मेहर अहमद शाह श्रीनगर
38.यूसुफ़ शाह नरौरा श्रीनगर
39.मेहर अमीर बावा गरगरी मुहल्ला श्रीनगर
40.अब्दुल अली वाइज़ चमरदौरी श्रीनगर
41.मीर राज मुहम्मद कर्नाह वज़ारत पहाड़

42.लिस्सा जियो हाफ़िज़ टेंकी पुरा श्रीनगर
43.ख़िज्र जियो तार फरोश
44.मेहर अब्दुल्लाह जियो पुत्र अकबर साहिब दरवेश ख़्वाजा बाज़ार
45.मुहम्मद शाह पुत्र उमर शाह मुहल्ला डैडी कदल
46.नबा शाह इमाम मस्जिद गाब कदल
47.मेहदी ख़ालिक़ शाह सेवक दरगाह शेख़ नूरुद्दीन नूरानी चिरार शरीफ़
48.ग़ुलाम मुहम्मद हकीम मुत्तसिल डलहसन मुहल्ला
49.अब्दुल ग़नी नायद कदल
50.मेहर क़मरुद्दीन दुकानदार ज़ीना कदल
51.मेहर पीर मजीद बाबा इन्दरवारी
52.इस्माईल ज्यो डोबी
53.मेहर मजीद शाह पीर इन्दरवारी
54.सैफ़ुल्लाह शाह ख़ादिम दरगाह इन्दरवारी
55.क़ादिर दोबे
56.मेहर मौलवी ग़ुलाम मुहियुद्दीन कीमोह तहसील हरीपुर
57.मुहम्मद सिद्दीक़ पापोश फरोश मुहल्ला शम्सवारी
58.मुहम्मद इस्कन्दर
59.मुहम्मद उमर
60. लिस्सा बट
61.मौलवी अब्दुल्लाह शाह
62. हाजी मुहम्मद कलांदरी
63.मुहम्मद इस्माईल मीर मस्गर मुहल्ला दरीबल
64.अब्दुल क़ादिर कीमोह, तहसील हरीपुर
65.अहमद जियो चीटगर मुहल्ला कलांदौरी
66.मुहम्मद जियो ज़रगर पुत्र रसूल जियो फतह कदल
67.अब्दुल अज़ीज़ मस्गर पुत्र अब्दुल ग़नी मुहल्ला अन्दरबारी
68.अहमद ज्यो मस्गर पुत्र रमज़ान ज्यो दरीबल
69.मुहम्मद ज्यो मीर मुहल्ला दरीबल
70.असद ज्यो मीर मुहल्ला जानी कदल
71.पीर नूरुद्दीन क़ुरैशी मुहल्ला बटमालो साहिब इमाम मस्जिद
72.मेहर ग़ुलाम हसन बिन नूरुद्दीन मर्जानपुरी सफ़ा कदल

المؤلف میرزا غلام احمدالقادیانی

ولما ثبت موت عیسی وثبت ضرورة مسیح یکسر الصلیب فی هذا الزمان فما رأیکم یافتیان؟ أیُهلك الله هذه الاٴمّة فی أیدی أهل الصلبان أو یبعث رجلا یُجدّد الدین و یحفظ الجدران؟ فو الله إنی أنا ذالك المسیح الموعود فضلا من الله المنان الودود و أنا صاحب الفصوص و الحارس عند غارات اللصوص و ترس الدین من الرحمان عند طعن الاٴدیان ألا تفکّرون فی السلسلتین سلسلة موسی و سلسلة سید الکونین؟ و قد أقررتم

लेखक-मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलक़ादियानी

और जब ईसा[अ.] की मृत्यु सिद्ध हो गई और उस मसीह की आवश्यकता भी सिद्ध हो गई जो इस युग में सलीब तोड़ेगा। तो हे जवानो! फिर तुम्हारी क्या राय है? क्या अल्लाह इस उम्मत को ईसाइयों के हाथों तबाह करेगा या ऐसा व्यक्ति भेजेगा जो धर्म का नवीनीकरण करने तथा उस की चार दीवारी की रक्षा करने वाला हो? **ख़ुदा की क़सम! मैं बड़ी नेमत देने वाले बहुत प्रेम करने वाले की कृपा से वही मसीह मौऊद हूँ।** और मैं ही नगीनों वाला (रूहानी स्रोत) तथा चोर उचक्कों की लूटमार के समय रक्षा करने वाला और अन्य धर्मों को तान: देने के समय रहमान ख़ुदा की ओर से धर्मार्थ ढाल हूँ। क्या तुम इन दो सिलसिलों के बारे में विचार नहीं करते? अर्थात् मूसा[अ.] का सिलसिला और सय्यिदुल कोनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सिलसिला। और तुम इस बात का इक़रार कर चुके हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को (मुहम्मदी) सिलसिले का प्रारंभ में मूसा का मसील बनाया गया। फिर तुम्हें क्या हो गया है कि इस

أنه صلى الله عليه وسلم جُعل فى مبدأ السلسلة مثيل موسى فما لكم لا ترون فى آخر السلسلة مثيل عيسى؟ واعلموا أنكم تعلمون ضرورة مرسل من الله ثم تتجاهلون وترون مفاسد الزمان ثم تتعامون وتشاهدون ما صُبّ على الإسلام ثم تنامون ودُعيتم لتكونوا أنصار الإسلام ثم أنتم للنصارى تحاجّون أتحاربون الله لتعجزونه؟ والله غالب على أمره ولكن لا تعلمون وقد قرب أجلكم المقدّر فما لكم لا تتّقون؟ أتظنون أنى افتريتُ على الله وتعلمون مآل قوم كانوا يفترون ألا لعنة الله على الذين يفترون على الله وكذالك لعنة الله على الذين يُكذّبون الحق لمّا جاءهم ويُعرضون ألا تنظرون إلى الزمان أو على القلوب

मुहम्मदी सिलसिले के अन्त में मसीले ईसा को नहीं देखते। जान लो कि तुम अल्लाह तआला की ओर से एक (ख़ुदा के)भेजे हुए की आवश्यकता का ज्ञान रखते हो फिर भी जाहिल बनते हो और युग की ख़राबियों को देखते हो। फिर जान-बूझ कर अंधे बन जाते हो। इस्लाम पर जो विपत्ति पड़ी हुई है उसका अवलोकन करते हो फिर भी सोए रहते हो। तुम्हें इस्लाम के सहायक बनने की दावत दी गई परन्तु तुम नसारा की सहायता में दलीलबाज़ी करते हो। क्या तुम अल्लाह को असमर्थ करने के लिए उस से युद्ध करते हो? और अल्लाह तआला अपने हर मामले पर विजयी है परन्तु तुम नहीं जानते। तुम्हारी मुक़द्दर मौत आ पहुंची। फिर क्या कारण है कि तुम संयम से काम नहीं लेते। क्या तुम गुमान करते हो कि मैंने अल्लाह पर इफ़्तिरा बांधा है। हालांकि तुम इफ़्तिरा करने वाली क़ौम के अंजाम को ख़ूब जानते हो। सुनो कि अल्लाह की लानत है उन लोगों पर कि जब उन के पास सच आए तो वे उसे झुठलाते और उस से मुंह फेर लेते हैं। क्या तुम युग पर दृष्टि नहीं डालते या यह कि उद्दण्डता के कारण दिलों पर ताले पड़े हुए हैं। क्या तुम आशा रखते हो कि तुम बिगड़े कर्म और ईमान को अपने

أقفال من الطغيان؟ أتطمعون أن تصلحوا بأيديكم ما فسد من العمل والإيمان؟ ولا يهدى الاعمٰى أعمٰى آخر وقد مضت سُنّة الرحمان فاعلموا أن السكينة التى تُطهّر من الذنوب وتنزل فى القلوب وتنقل إلى ديار المحبوب وتُخرِجُ من الظلمات وتُنَجّى من الجهلات لا تتولّد هذه السكينة الا بتوسيط قوم يُرسلون من السماء ويُبعَثون من حضرة الكبرياء وكذالك جرت سُنّة الله لإصلاح أهل الاهواء فيُكَذّبُ هؤلاء السادات فى أوّل أمرهم والابتداء ويؤذَوْنَ من أيدى الاشقياء ويُقال فيهم ما يؤذيهم من البهتان والتهمة والافتراء ثم يُرَدّ الكرّةُ لهم فيُلقَى فى قلوبهم أن يرجعوا إلى ربّهم بالتضرّع والابتهال

हाथों से सुधार कर लोगे। और एक अंधा दूसरे अंधे का मार्ग दर्शन नहीं कर सकता। और रहमान ख़ुदा की सुन्नत जारी और प्रचलित है। स्मरण रखो कि वह आराम जो पापों से पवित्र करे और दिलों में उतरे प्रियतम के देश की ओर ले जाए। अंधकारों से बाहर निकाले और जहालतों से मुक्ति दे। ऐसा आराम केवल और केवल उन लोगों के माध्यम से पैदा होता है जो आकाश से भेजे जाते हैं और अल्लाह के पास से अवतरित होते हैं। लोभ-लालच के पुजारियों के सुधार के लिए अल्लाह की यही सुन्नत जारी है। शुरू-शुरू में इन बुज़ुर्गों को झुठलाया जाता है और अभागों के हाथों उन्हें कष्ट दिया जाता है और उनके बारे में आरोप, इल्ज़ाम और इफ़्तिरा की ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो उन्हें कष्ट देती हैं। फिर उनकी बारी आती है तथा उन के दिलों में यह बात डाली जाती है कि वे विजय, विनम्रता और दुआ के साथ अपने रब्ब की ओर रुजू करें इस पर वे अल्लाह की ओर आकर्षित होते हुए विजय के अभिलाषी होते हैं। वे गिड़गिड़ाते और विनय ग्रहण करते हैं जिस पर अल्लाह उन पर ऐसी दया-दृष्टि डालता है जो वह अपने प्यारों पर सदैव डाला करता है और वे मदद दिए जाते हैं। वह हर उद्दण्ड, शत्रु और

والدعاء فيُقبِلون على الله ويستفتحون ويبتهلون ويتضرّعون فينظر الله إليهم بنظرٍ ينظر إلى أحبّائه ويُنصَرون فيخيب كل جبّار عنيد معتدٍ فى الظنون ويجعل الله خاتمة الامر لاولیائه الذين كانوا يُضحَكُ عليهم ويُستضعفون ويقضى الامر ويُعلَى شأنهم ويُهلك قوم كانوا يُفسدون كذالك جرت سُنن الله لقوم يطيعون أمره ولا يفترون ولا يبتغون الا عزّة الله وجلاله وهم من أنفسهم فانون فينصرهم الله الذى يرى ما فى صدورهم ولا يُتركون وإنهم أمناء الله على الارض ورحمة الله من السماء وغيث الفضل على البريّة لا ينطقون إلا بإنطاق الروح ولا يتكلمون الا بالحكمة والموعظة الحسنة يأتون بترياق لا

बद्गुमानियों में सीमा से बढ़ने वाले को असफल एवं नामुराद करता है। और अल्लाह तआला इस बात का अंजाम अपने उन वलियों के पक्ष में करता है जिन की हंसी उड़ाई जाती है और वे कमज़ोर समझे जाते थे और मामले का फ़ैसला कर दिया जाता है और उनकी शान बुलन्द की जाती है और फ़साद करने वालों को मार दिया जाता है ऐसी क़ौम जो उसके आदेश को मानती और कोताही नहीं करती और केवल अल्लाह का सम्मान एवं प्रताप की इच्छुक हो। और जिन्होंने स्वयं को उसके अस्तित्व में फ़ना कर दिया हो उनके लिए अल्लाह की यही सुन्नत जारी है। फिर वह अल्लाह जो उनके सीनों के राज़ जानता है उनकी सहायता करता है तथा वे बेयार व मददगार छोड़े नहीं जाते। ऐसे लोग ज़मीन पर अल्लाह के अमीन हैं और आकाश से बरसने वाली अल्लाह की रहमत (दया) और सृष्टि पर ख़ुदा की कृपा-वृष्टि होते हैं। वे केवल रूहुलक़ुदूस के बुलाए बोलते हैं तथा केवल हिकमत और उत्तम नसीहत की बातें करते हैं और ऐसा विषनाशक लाते हैं जो किसी व्यक्ति को तर्कशास्त्र और दर्शन शास्त्र और भौतिक परस्त तथा रूहानियत से वंचित उलेमा की बातों और बौद्धिक चालाकियों से प्राप्त नहीं हो सकता

يتيسر لاحد من المنطق ولا من الفلسفة ولا بكلمات علماء الظاهر المحرومين من الروحانية ولا بحيلة من الحيل العقلية بل لا يحيٰى أحدٌ الا بتوسيط هذه الاحياء من يد الحضرة وكذالك اقتضت عادة الله ذى الجلال والعزّة ولا يُفتح ما قفّله الله الا بهذه المقاليد ولا ينزل أمره الا بتوسط هذه الصناديد وإن الارض ما صلحت قط وما أنبتت الا بماء من السماء والماء وحى الله الذى ينزل فى حلل سحب الانبياء وكفاك هذا إن كنتَ من ذوى الدهاء وإن كنتَ لا تقبل الحق ولا تطلبه فاطلب النور من الخفافيش والثمرات من الحشيش وقد نبّهناك فيما مضى وأشرنا إلى عبد اختاره الله لهذا الامر واصطفٰى ولا يراه الا

अपितु यदि किसी को जीवन मिलता है तो केवल अल्लाह के हाथ से उन जीवन पाने वालों के माध्यम से और यही प्रतापवान ख़ुदा रब्बुल इज़्ज़त के दस्तूर की मांग है और जिसे अल्लाह तआला ने ताला लगा दिया वह केवल उन्हीं चाबियों से खुलता है और ख़ुदा का आदेश उन्हीं चुने हुए लोगों के माध्यम से उतरता है। आकाशीय पानी के बिना न तो ज़मीन किसी योग्य हो सकती है और न ही कुछ उगा सकती है। वह आकाशीय पानी ख़ुदा की वह वह्यी है जो नबियों के बादल के रूप में उतरती है। और तेरे लिए यह पर्याप्त है यदि तू बुद्धिमानों में से है। और यदि तू सच को स्वीकार नहीं करता तथा तुझे उसकी खोज नहीं है तो जा और चमगादड़ों से प्रकाश प्राप्त कर और ख़ुश्क़ घास से फल तलाश कर। हमने अपने पहले वर्णन में तुझे अच्छी तरह से सतर्क कर दिया है और उस बन्दे की ओर संकेत कर दिया है जिसे अल्लाह ने इस बात के लिए चुना और निर्वाचित किया, उसे वही मनुष्य देख सकता है जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे और दिखाए। इसलिए तू अल्लाह से दुआ कर कि वह तेरी आंख को उस आंख से एक से इरादे तथा परस्पर मेल-मिलाप तथा प्रेम पैदा करने के लिए खोले जो सृष्टि के

مـن هـداه الله و أرى فـادع الله ليفتـح عينـك لتوانس عينـا جـرت للـورى فـإن القـوم قـد اشـرفوا عـلى الهـلاك فى باديـة الضـلالة كإسـماعيل مـن العطـش فى أرض الغربـة فرحمـهم الله عـلى رأس هـذه المائـة وفجّـر ينبوعـا لاهـل التّقـى ليروى أكبادهـم وأولادهـم ويُنجّيـهم مـن الـردى فهـل فيكـم مـن يطلـب مائـًا أصفـى؟ وهـذا آخـر مـا قلنـا فى هـذا الكتـاب لمـن اتّعـظ ووعٰـى والسـلام عـلىٰ مـن اتّبـع الهـدىٰ

تـــــمّـــــت

लिए आंसू बहाने वाला है। नि:सन्देह यह क़ौम गुमराही के बियाबान में मौत के इतना निकट पहुंच चुकी थी जैसे (हज़रत) इस्माईल[अ.] अजनबी सरज़मीन में प्यास की तीव्रता के कारण थे। फिर अल्लाह ने इस सदी के सर पर उन पर दया और संयमियों के लिये एक झरना जारी कर दिया ताकि वह उनके पुत्र और उनकी सन्तानों को सैराब करे और उन्हें मौत से मुक्ति दे। तुम में से कोई है जो इस निथरे हुए पानी का अभिलाषी हो। यह वह अन्तिम बात है जो हम ने इस पुस्तक में उस व्यक्ति के लिए कह दी है जो नसीहत प्राप्त करे तथा उसे स्मरण रखे। और सलामती हो उस पर जिस ने हिदायत का अनुकरण किया।

समाप्तम

ألّف هذه الرسالة إتماما للحجّة وتبليغًا لامر حضرة العزّة المسيح الموعود والمهدى المعهود والإمام المنتظر المؤيّد من الله الصمد ميرزا غلام أحمدٌ القادياني الهندى الفنجابى نصره الله وأيّد وقد تمّت فى الشهر المبارك ربيع الاول سنة ١٣٢٠ من الهجرة النبوية على صاحبها السّلام والتحيّة والصلواة المرضيّة

यह पुस्तक हुज्जत पूर्ण करने और महामान्य हज़रत मसीह मौऊद, महदी मौऊद और नि:स्पृह ख़ुदा से समर्थन प्राप्त इमाम मुंतज़र (जिसकी प्रतीक्षा की जा रही हो) मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी हिन्दी, पंजाबी। अल्लाह उनकी सहायता और समर्थन करे ने मिशन के प्रकाशन के उद्देश्य से लिखी और रबीउल अव्वल 1320 हिज्री नबवी (आप पर सलामती, दरूद और दुआ हो) के मुबारक महीने में पूर्ण हुई।